आज़ादी का अमृत महोत्सव
1947-2022

सामाजिक विज्ञान

पाठ्यपुस्तक

वेद-भूषण - I वर्ष / प्रथमा - I वर्ष / कक्षा छठीं

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड

(शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा स्थापित एवं मान्यता प्राप्त)

उपह्वरेगिरीणा ँसङ्गमेचनदीनाम् ॥ धियाविप्रोऽअजायत॥
दिवस्तारयन्ति सप्त सूर्यस्य रश्मय:।
एको अन्यच्चकृषे विश्वमानुषक्।
आयङ्गौ: पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुर: ॥
तेज: पृथिव्यामधि यत्सम्बभूव।
त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ।
अप्सु ते जन्म दिवि ते सधस्थम्।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)
(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)
Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in

सामाजिक विज्ञान

पाठ्यपुस्तक

वेद-भूषण - I वर्ष / प्रथमा - I वर्ष / कक्षा छठीं

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड

(शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा स्थापित एवं मान्यता प्राप्त)

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - 456006 (म.प्र.)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in

लेखकगण :- 1. डॉ. प्रकाश प्रपन्न त्रिपाठी
राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, उज्जैन (मध्यप्रदेश)
2. श्री रविन्द्र कुमार शर्मा
श्री वीर हनुमान ऋषिकुल वेद विद्यालय, ग्रा. नांगल भरड़ा, चौमू,
जयपुर (राजस्थान)
3. श्री विजेन्द्र सिंह हाड़ा
श्री कर्णेश्वर वेद विद्यालय, कनवास, कोटा (राजस्थान)
4. श्री विक्रम कुमार बासनीवाल
श्री मुनिकुल ब्रह्मचर्याश्रम वेद संस्थानम्, बरुन्दनी (राजस्थान)
5. श्री अभिजीत राजपूत
राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, उज्जैन (मध्यप्रदेश)

आवरण एवं सज्जा :- श्री शैलेन्द्र डोडिया
चित्राङ्कन :- .....
तकनीकी सहयोग, टङ्कण
एवं संशोधन :- 1. श्रीमती किरण परमार
2. श्री अनिल चौहान
3. श्री नरेन्द्र सोलंकी
अक्षरविन्यास :- .....
पुस्तक परामर्श :- .....
© महर्षिसान्दीपनिराष्ट्रियवेदविद्याप्रतिष्ठानम्, उज्जयिनी
ISBN :- .....
मूल्य :- .....
संस्करण :- .....
प्रकाशित प्रति :- .....
पेपर उपयोगः :- आर.सी.टी.बी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित
प्रकाशक :- महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रिय वेदविद्या प्रतिष्ठान
(शिक्षामन्त्रालय भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था)
वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - 456006 (म.प्र.)
email : msrvvpujn@gmail.com,
Web : msrvvp.ac.in
दूरभाषा (0734) 2502255, 2502254

प्रस्तावना

(राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के आलोक में)

शिक्षा मन्त्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग), भारत सरकार ने माननीय शिक्षा मन्त्री जी (तत्कालीन मानव संसाधन विकास मन्त्री) की अध्यक्षता में राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान की स्थापना दिल्ली में 20 जनवरी, 1987 को सोसायटी पञ्जीकरण अधिनियम, 1860 के तहत की थी। भारत सरकार ने वेदों की श्रुति परम्परा का संरक्षण, संवर्धन, प्रसार और विकास के लिए प्रतिष्ठान की स्थापना का संकल्प संख्या 6-3/85-SKT-IV दिनाङ्क 30-3-1987 को भारत के राजपत्र में अधिसूचित किया था। वेदों के अध्ययन की श्रुति परम्परा (वेद संहिता, पद पाठ से घनपाठ तक, वेदाङ्ग, वेद भाष्य आदि), वेदों का पाठ संरक्षण, वैदिक स्वर तथा वैज्ञानिक आधार पर वेदों की व्याख्या का दायित्व वेद विद्या प्रतिष्ठान को दिया गया था। वर्ष 1993 में राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान के कार्यालय को उज्जैन में स्थानान्तरित करने के पश्चात् संगठन का नाम महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान कर दिया गया। वर्तमान में यह संगठन मध्यप्रदेश सरकार द्वारा प्रदत्त भूमि- परिसर, महाकाल नगरी, उज्जैन में स्थित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 के संशोधित नीति-1992 और कार्यप्रणाली (प्रोग्राम ऑफ एक्शन)-1992 में भी वैदिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान को उत्तरदायित्व दिया गया था। भारत के प्राचीन ज्ञान कोष, मौखिक परम्परा और इस तरह की शिक्षा के लिए पारम्परिक गुरुओं को संयोजित करने के उद्देश्य को 1992 के कार्यप्रणाली (प्रोग्राम ऑफ एक्शन) में उल्लेखित किया गया था।

राष्ट्र की आकांक्षाओं के अनुरूप, राष्ट्रीय स्तर पर वेद और संस्कृत शिक्षा के लिए एक बोर्ड की स्थापना के पक्ष में राष्ट्रीय सहमति, जनादेश, नीति, विशिष्ट उद्देश्य और कार्यान्वयन रणनीतियों के अनुरूप, भारत सरकार के माननीय शिक्षा मन्त्रीजी की अध्यक्षता में महासभा और शासी परिषद् के समावेश में ''महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड'' की स्थापना 2019 में हुई है। MSRVVP का वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड भी वैदिक शिक्षा का एक भाग है और MSRVVP के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक है जैसा कि MoA और नियमों में संकल्पना की गई है। महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड को शिक्षा मन्त्रालय,भारत सरकार तथा भारतीय विश्वविद्यालय संघ,

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त है।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय द्वारा वर्ष 2015 में श्री एन. गोपालस्वामी (पूर्व चुनाव आयुक्त) की अध्यक्षता में गठित समिति ''संस्कृत के विकास के लिए विजन और रोडमैप - दस वर्षीय परिप्रेक्ष्य योजना'' की रिपोर्ट में अनुशंसा की गई है कि माध्यमिक विद्यालय स्तर तक वेद संस्कृत शिक्षा के पाठ्यक्रम मानकीकरण, संबद्धता, परीक्षा मान्यता, प्रमाणीकरण के लिए राष्ट्रस्तर पर वेद संस्कृत परीक्षा बोर्ड की स्थापना की जाए। समिति की अनुशंसा थी कि प्राथमिक स्तर का वैदिक एवं संस्कृत अध्ययन अभिप्रेरक, सम्प्रेरक एवं आनन्ददायी होना चाहिए। आधुनिक शिक्षा के विषयों को वैदिक और संस्कृत पाठशालाओं में सन्तुलित रूप से सम्मिलित करना भी आवश्यक है। इन पाठशालाओं की पाठ्यक्रम सामग्री को समकालीन समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप और प्राचीन ज्ञान का उपयोग करते हुए आधुनिक समस्याओं का समाधान खोजने के लिए प्रारूपित किया जाना चाहिए।

वेद पाठशालाओं के सम्बन्ध में समिति ने यह संस्तुति की है कि संस्कृत और आधुनिक विषयों की श्रेणीबद्ध सामग्री के परिचय के साथ-साथ वेद पाठ कौशल संवर्धन और वेद उच्चारण में मानकीकरण की आवश्यकता है ताकि वेद छात्र अन्ततः वेद भाष्य के अध्ययन तक पहुंच सकें और छात्रों को आगे की पढ़ाई के लिए मुख्यधारा में लाया जा सके। उचित स्तर पर वेदों के विकृति पाठ के अध्ययन पर बढ़ावा दिया जाना चाहिए। समिति के सदस्यों ने यह भी चिंता व्यक्त की है कि वैदिक सस्वर पाठ पूरे भारत में समान रूप से नहीं फैला है, इसलिए वैदिक सस्वर पाठ की शैलियों और शिक्षण पद्धति की क्षेत्रीय विविधताओं में हस्तक्षेप किए बिना स्थिति में सुधार के लिए उचित कदम उठाया जाना है।

यह भी अनुभव किया गया कि वेद और संस्कृत अविभाज्य हैं और एक दूसरे के पूरक हैं और देश भर में सभी वेद पाठशालाओं और संस्कृत पाठशालाओं के लिए परीक्षा मान्यता और सम्बद्धता की समस्याएँ समान है, इसलिए दोनों के लिए एक साथ वेद संस्कृत हेतु एक बोर्ड का गठन किया जा सकता है। समिति ने यह पाया कि बोर्ड द्वारा आयोजित परीक्षाओं को कानूनी रूप से वैध मान्यता प्राप्त होनी चाहिए, जो शिक्षा की आधुनिक बोर्ड प्रणाली के साथ समानता रखे। समिति ने पाया कि महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान उज्जैन को ''महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत विद्या परिषद्'' के नाम से

परीक्षा बोर्ड का दर्जा दिया जाये, जिसका मुख्यालय उज्जैन में रहे। परीक्षा बोर्ड होने के अतिरिक्त अब तक जो सभी वेद कार्यक्रम और वेद पर गतिविधियाँ हैं, वे सभी प्रतिष्ठान में जारी रहेंगे।

वैदिक शिक्षा का प्रचार भारत की गौरवशाली ज्ञान परम्परा का एक व्यापक अध्ययन है और इसमें वैदिक अध्ययन (वेद संहिता, पद पाठ से घनपाठ तक, स्वर का सम्यक् प्रयोग ज्ञान आदि), सस्वर पाठ कौशल, मन्त्र उच्चारण और संस्कृत ज्ञान प्रणाली सामग्री की बहुस्तरीय श्रुति परम्परा सम्मिलित है। प्रतिष्ठान में NEP 2020 अनुरूप 3 + 4 (सात साल तक) के वेद अध्ययन की योजना में पारम्परिक छात्रों को मुख्य धारा में लाने की नीति के परिप्रेक्ष्य में अन्य विभिन्न आधुनिक विषयों जैसे संस्कृत, अंग्रेजी, मातृभाषा, गणित, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान, दर्शन, योग, वैदिक कृषि आदि पाठ्यक्रम के अनुसार तथा वैदिक शिक्षा पर केन्द्रित नीति निर्धारक निकायों में राष्ट्रीय सहमति, समय की उपलब्धता के आधार पर सभी अध्ययन संयोजित हैं। अध्ययन की यह योजना NEP 2020 के परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान प्रणाली पर ध्यान केन्द्रित करने वाले पाठ्यक्रम सामग्री में आधुनिक ज्ञान के साथ एवं भारतीय ग्रंथों से तैयार वैदिक ज्ञान के उपयुक्त सामग्री के साथ है।

प्रतिष्ठान बोर्ड की वेद पाठशालाओं, गुरु शिष्य ईकाइयों और गुरुकुलों में, पाठ्यक्रम मुख्य रूप से सम्पूर्ण सस्वर कण्ठस्थीकरण के साथ संपूर्ण वेद शाखा का अध्ययन होता है तथा संस्कृत, अंग्रेजी, मातृभाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान, दर्शन, योग, वैदिक कृषि और SUPW जैसे अतिरिक्त सहायक विषयों के साथ वेद अध्ययन होता है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि वेदों की 1131 शाखाएँ सस्वर पाठ के साथ थे, अर्थात् 21 ऋग्वेद में, 101 यजुर्वेद में, 1000 सामवेद में और 9 अथर्ववेद में। समय के साथ इन शाखाओं की एक बड़ी संख्या विलुप्त हो गई और वर्तमान में केवल 10 शाखाएँ, अर्थात् ऋग्वेद में एक, यजुर्वेद में 4, सामवेद में 3 और अथर्ववेद में 2 सस्वर पाठ के रूप में विद्यमान हैं, जिन पर भारतीय ज्ञान प्रणाली आधारित है, इन 10 शाखाओं के संबंध में भी बहुत कम प्रतिनिधि वेदपाठी पंडित है जो श्रुति परम्परा/पाठ/वेद ज्ञान परम्परा को उसके प्राचीन और पूर्ण रूप में संरक्षित किये हुए हैं। जब तक श्रुति परम्परा के अनुसार वैदिक शिक्षा पर मूलरूप से ध्यान नहीं दिया जाएगा, तब तक यह व्यवस्था सुदृढ नहीं हो पायेगी। वैदिक श्रुति परम्परा की श्रुति अध्ययनों के पहलुओं को सामान्य/अध्ययन में स्कूल में न तो पढ़ाया जाता है

और न ही किसी स्कूली शिक्षा के पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाता है, और न ही स्कूलों/बोर्डों के पास उन्हें आधुनिक स्कूल पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने और सञ्चालित करने की विशेषज्ञता है।

वैदिक छात्र जो श्रुति परम्परा / वेद का पाठ सीखते हैं, वे दूर-दराज के गाँवों, सीमावर्ती गाँवों आदि में वेद गुरुकुलों में, वेद पाठशालाओं में, वैदिक आश्रमों में हैं, और वेद अध्ययन के लिए उनका समर्पण लगभग 1900 - 2100 घण्टे प्रतिवर्ष है। जो अन्य स्कूल बोर्ड की सीखने की प्रणाली के समय से दोगुना है और वैदिक छात्रों को ''गुरु-मुख-उच्चारण अनुच्चारण'' - वेद गुरु के सामने बैठकर शब्दशः उच्चारण सीखना होता है, संपूर्ण वेद, शब्दशः उच्चारण (उदात्त, अनुदात्त, स्वरित आदि) के साथ कण्ठस्थ करना होता है और स्मृति के बल पर बिना किसी पुस्तक/पोथी को देखे।

ज्ञात हो कि इस प्रकार के वैदिक अध्ययन, वेद मन्त्रपाठ की रीति, गुरु शिष्य की अखण्ड मौखिक परम्परा से प्रचलित क्रम के कारण वेदों के मौखिक प्रसारण को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत रूप में यूनेस्को-विश्व मौखिक विरासत सूची में मान्यता प्राप्त हुई है। इसलिए, सदियों पुरानी वैदिक शिक्षा (श्रुति परम्परा/सस्वर पाठ/वेद ज्ञान परम्परा) की प्राचीनता और सम्पूर्ण अखण्डता को बनाए रखने के लिए सुयोग्य कार्यनीति की आवश्यकता है। इसलिए, प्रतिष्ठान और इस बोर्ड ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 द्वारा निर्धारित कौशल और व्यावसायिक विषयों के साथ-साथ आधुनिक विषयों जैसे संस्कृत, अंग्रेजी, मातृभाषा, गणित, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान, दर्शन, योग, वैदिक कृषि आदि के साथ विशिष्ट प्रकार के वेद पाठ्यक्रम को अपनाया है।

कोई भी व्यक्ति तब सुखी होकर जी सकता है जब वह परा-विद्या और अपरा-विद्या दोनों का अध्ययन करता है। वेदों में से भौतिक ज्ञान, उनकी सहायक शाखाएँ और भौतिक रुचि के विषय अपरा-विद्या कहलाते थे। सर्वोच्च वास्तविकता का ज्ञान, उपनिषदों की अंतिम खोज, परा-विद्या कहलाती है। वेद और उसके सहायक के रूप में अध्ययन किए जाने वाले विषयों की कुल संख्या 14 है। विद्या की 14 शाखाएँ ये हैं - चार वेद, छह वेदांग, मीमांसा (पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा), न्याय, पुराण और धर्मशास्त्र। आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद और अर्थशास्त्र सहित चौदह विद्याएं अठारह हो जाते हैं। सदियों से भारत उपमहाद्वीप में सभी शिक्षा संस्कृत भाषा में ही थी, क्योंकि इस उपमहाद्वीप में लम्बे समय तक संस्कृत बोली जाने वाली भाषा रही। इसलिए वेद भी सुलभता से समझे जाते थे।

तक्षशिला के विद्यालयों के सम्बन्ध में अठारह शिल्प-या औद्योगिक और तकनीकी कला और शिल्प का उल्लेख किया गया है। छान्दोग्य उपनिषद् तथा नीति ग्रन्थों में भी इन का विवरण है। निम्नलिखित 18 कौशल/व्यावसायिक विषय अध्ययन के विषय बताए गए हैं- (1) गायन सङ्गीत (2) वाद्य सङ्गीत (3) नृत्य (4) चित्रकला (5) गणित (6) लेखाशास्त्र (7) इञ्जीनियरिङ्ग (8) मूर्तिकला (9) प्रजनन (10) वाणिज्य (11) चिकित्सा (12) कृषि (13) परिवहन और कानून (14) प्रशासनिक प्रशिक्षण (15) तीरंदाजी, किला निर्माण और सैन्य कला (16) नये वस्तु या उपज का निर्माण । उपर्युक्त कला और शिल्प में तकनीकी शिक्षा के लिए प्राचीन भारत में एक प्रशिक्षु प्रणाली विकसित की गई थी। विद्या और अविद्या मनुष्य को इस प्रपञ्च में सन्तुष्ट जीवन व्यतीत करने के लिए समर्थ और परलोक में मुक्ति योग्य सिद्ध करती है ।

दुनिया की सबसे पुरानी सभ्यताओं में सर्व प्रथम भारतीय सभ्यता में शास्त्रों, विज्ञान और प्रौद्योगिकी को सीखने की एक विशाल एवं सुदृढ परम्परा रही है। भारत प्राचीन काल से ही ऋषियों, ज्ञानियों और संतों की भूमि के साथ-साथ विद्वानों और वैज्ञानिकों की भूमि भी रही है। शोध से पता चला है कि भारत सीखने सिखाने (विद्या-आध्यात्मिक ज्ञान और अविद्या- भौतिक ज्ञान) के क्षेत्र में विश्व गुरु तो था ही, सक्रिय रूप से भी सम्पूर्ण प्रपञ्च में योगदान दे रहा था और भारत में आधुनिक विश्वविद्यालयों जैसे सीखने के विशाल केन्द्र स्थापित किए गए थे, जहाँ हजारों शिक्षार्थी आते थे। प्राचीन ऋषियों द्वारा खोजी गई कई विज्ञान और प्रौद्योगिकी तकनीकी, सीखने की पद्धतियाँ, सिद्धान्तों और तकनीकों ने कई पहलुओं पर हमारे विश्व के ज्ञान के मूल सिद्धान्तों को बनाया और प्रबल किया है, खगोल विज्ञान, भौतिकी, रसायन विज्ञान, गणित, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, ध्वन्यात्मकता, व्याकरण आदि पर दुनिया में भारत का योगदान समझा जाता है। प्रत्येक भारतीय बालक, बालिका द्वारा इस महान् देश का गौरवान्वित नागरिक होने के कारण इन विषयों का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिये। भारत की संसद के प्रवेश द्वार पर उद्धृत ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' जैसे भारत के विचार और विभिन्न अवसरों पर संवैधानिक प्राधिकरणों द्वारा उद्धृत कई वेद मंत्र के अर्थ वेदों के अध्ययन से ही ज्ञात होते हैं और उन पर मनन करके ही वास्तविक प्रेरणा प्राप्त की जा सकती है। वेदों और सम्पूर्ण वैदिक साहित्य में "सत, चित, आनंद" के रूप में सभी प्राणियों की अन्तर्निहित समानता पर जोर दिया गया है।

यह भी उल्लेख किया गया है कि वेद वैज्ञानिक ज्ञान के स्त्रोत हैं और हमें आधुनिक समस्याओं के समाधान के लिए वेदों और भारतीय शास्त्रों के स्त्रोतों की ओर पुनः निष्ठा से देखना होगा। जब तक छात्रों को वेदों का पाठ, शुद्ध वैदिक ज्ञान सामग्री और वैदिक दर्शन को आध्यात्मिक ज्ञान और वैज्ञानिक ज्ञान के रूप में नहीं पढ़ाया जाता है, तब तक आधुनिक भारत की आकांक्षा को पूरा करने के लिए वेदों के सन्देश का प्रसार पूर्ण रूप से सम्भव नहीं है।

वेद की शिक्षा (वैदिक मौखिक एवं श्रुति परंपरा/वेद पाठ/वेद ज्ञान परम्परा) केवल धार्मिक शिक्षा नहीं है। यह कहना अनुचित होगा कि वेदों का अध्ययन केवल धार्मिक निर्देश है। वेद केवल धार्मिक ग्रन्थ नहीं हैं और इनमें केवल धार्मिक सिद्धान्त ही नहीं हैं, बल्कि वेद शुद्ध ज्ञान के कोष है, मानव जीवन की कुञ्जी वेदों में है इसलिए, वेदों में निर्देश या शिक्षा को केवल "धार्मिक शिक्षा/धार्मिक निर्देश" के रूप में नहीं माना जा सकता है।

2004 की सिविल अपील संख्या 6736 में माननीय सर्वोच्च न्यायालय (AIR 2013: 15 SCC 677); (निर्णय की दिनाङ्क- 3 जुलाई 2013), जैसा कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय में यह स्पष्ट है कि वेद केवल धार्मिक ग्रन्थ नहीं हैं। वेदों में गणित, खगोल विज्ञान, मौसम विज्ञान, रसायन विज्ञान, हाइड्रोलिक्स, भौतिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी, कृषि, दर्शन, योग, शिक्षा, काव्यशास्त्र, व्याकरण, भाषा विज्ञान आदि के विषय सम्मिलित हैं, जिन्हें माननीय भारतीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा प्रकाशित किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुपालन में प्रतिष्ठान एवं बोर्ड के माध्यम से वैदिक शिक्षा -

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भारतीय ज्ञान प्रणाली 'संस्कृत ज्ञान प्रणाली' के रूप में भी जाना जाता है, उनके महत्त्व और पाठ्यक्रम में उनका समावेश और विविध विषयों के संयोजन में लचीले दृष्टिकोण को मजबूती से प्रदर्शित किया गया है। कला एवं मानविकी के छात्र भी विज्ञान सीखेंगे, प्रयास करना होगा कि सभी व्यावसायिक विषय और व्यावहारिक कौशलों (सॉफ्ट स्किल्स) को प्राप्त करें। कला, विज्ञान और अन्य क्षेत्रों में भारत की गौरवशाली परम्परा इस तरह की शिक्षा की ओर बढ़ने में सहायक होगी। भारत की समृद्ध, विविध प्राचीन और आधुनिक संस्कृति और ज्ञान प्रणालियों और परम्पराओं को संयोजित करने और उससे प्रेरणा पाने हेतु यह नीति बनायी गयी है। भारत की शास्त्रीय भाषाओं और साहित्य के महत्त्व, प्रासङ्गिकता और सुन्दरता की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। संस्कृत,

संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्णित एक महत्त्वपूर्ण आधुनिक भाषा है यदि सम्पूर्ण लैटिन और ग्रीक साहित्य को मिलाकर भी इसकी तुलना की जाए तो भी वह संस्कृत शास्त्रीय साहित्य की बराबरी नहीं कर सकता। संस्कृत साहित्य में गणित, दर्शन, व्याकरण, सङ्गीत, राजनीति, चिकित्सा, वास्तुकला, धातुविज्ञान, नाटक, कविता, कहानी, और बहुत कुछ (जिन्हें "संस्कृत ज्ञान प्रणालियों" के रूप में जाना जाता है) के विशाल भण्डार हैं । विश्व विरासत के लिए इन समृद्ध संस्कृत ज्ञान प्रणाली विरासतों को न केवल पोषण और भविष्य के लिए संरक्षित किया जाना चाहिए बल्कि हमारी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से शोध कराकर इन्हें बढ़ाते हुए नए उपयोगों में भी रखा जाना चाहिए। इन सबको हजारों वर्षों में जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों द्वारा, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के एक विस्तृत जीवन्त दर्शन के साथ लिखा गया है । संस्कृत को रूचिकर और अनुभावात्मक होने के साथ-साथ समकालीन रूप से प्रासङ्गिक विधियों से पढ़ाया जाएगा । संस्कृत ज्ञान प्रणाली का उपयोग विशेष रूप से ध्वनि और उच्चारण के माध्यम से है। फाउंडेशन और माध्यमिक स्कूल स्तर पर संस्कृत की पाठ्यपुस्तकों को संस्कृत के माध्यम से संस्कृत पढ़ाने (एस्.टी.एस्.) और इसके अध्ययन को आनन्ददायी बनाने के लिए सरल मानक संस्कृत (एस्.एस्.एस्.) में लिखा जाना है। ध्वन्यात्मकता और उच्चारण वेदों की मौखिक परम्परा पर लागू होता है। वैदिक शिक्षा ध्वन्यात्मकता और उच्चारण पर आधारित है।

कला और विज्ञान के बीच, पाठ्यक्रम और पाठ्येतर गतिविधियों के बीच, व्यावसायिक और शैक्षणिक धाराओं, आदि के बीच कोई स्पष्ट विभेद नहीं किया गया है। सभी ज्ञान की एकता और अखण्डता को सुनिश्चित करने के लिए, एक बहु-विषयक दुनिया के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल के बीच एक बहु-विषयक (Multi-Disciplinary) एवं समग्र शिक्षा के विकास पर बल दिया गया है। नैतिकता, मानवीय और संवैधानिक मूल्य जैसे, सहानुभूति, दूसरों के लिए सम्मान, स्वच्छता, शिष्टाचार, लोकतान्त्रिक भावना, सेवा की भावना, सार्वजनिक सम्पत्ति के लिए सम्मान, वैज्ञानिक चिन्तन, स्वतन्त्रता, उत्तरदायित्व, बहुलतावाद, समानता और न्याय पर जोर दिया गया है ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बिन्दु क्रं. 4.23 में अनिवार्य विषयों, कौशलों और क्षमताओं का शिक्षाक्रमीय एकीकरण के विषय में निर्देश है। विद्यार्थियों को अपने व्यक्तिगत पाठ्यक्रम को चुनने में बड़ी मात्रा में लचीले विकल्प मिलेगें, लेकिन आज की तेजी से बदलती दुनिया में सभी विद्यार्थियों को

एक अच्छे, सफल, अनुभवी, अनुकूलनीय और उत्पादक व्यक्ति बनने के लिए कुछ विषयों, कौशलों और क्षमताओं को सीखना भी आवश्यक है। वैज्ञानिक स्वभाव और साक्ष्य आधारित सोच, रचनात्मकता और नवीनता, सौंदर्यशास्त्र और कला की भावना, मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति और संवाद, स्वास्थ्य और पोषण, शारीरिक शिक्षा, शारीरिक दक्षता, स्वास्थ्य और खेल, सहयोग और टीम वर्क, समस्या को हल करने और तार्किक चिन्तन, व्यावसायिक एक्सपोजर और कौशल, डिजिटल साक्षरता, कोडिंग और कम्प्यूटेशनल चिन्तन, नैतिकता और नैतिक तर्क, मानव और संवैधानिक मूल्यों का ज्ञान और अभ्यास, लिङ्ग संवेदनशीलता, मौलिक कर्तव्य, नागरिकता कौशल और मूल्य, भारत का ज्ञान, पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता, जिसमें पानी और संसाधन संरक्षण, स्वच्छता और साफ-सफाई, समसामयिक घटना और स्थानीय समुदायों, राज्यों, देश और दुनिया द्वारा जिन महत्त्वपूर्ण मुद्दों का सामना किया जा रहा है उनका ज्ञान, भाषाओं में प्रवीणता के अलावा, इन कौशलों में सम्मिलित है। बच्चों के भाषा कौशल संवर्धन के लिए और इन समृद्ध भाषाओं और उनके कलात्मक निधि के संरक्षण के लिए, सार्वजनिक या निजी सभी विद्यालयों में सभी छात्रों को भारत की एक शास्त्रीय भाषा और उससे सम्बन्धित साहित्य सीखने का कम से कम दो साल का विकल्प मिलेगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बिन्दु क्रं. 4.27 में "भारत का ज्ञान" के विषय में महत्त्वपूर्ण निर्देश है। "भारत का ज्ञान" में आधुनिक भारत और उसकी सफलताओं और चुनौतियों के प्रति प्राचीन भारत का ज्ञान और उसका योगदान - भारतीय ज्ञान प्रणाली जैसे गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि, इंजीनियरिंग, भाषा विज्ञान, साहित्य, खेल के साथ –साथ शासन, राजव्यवस्था, संरक्षण आदि जहाँ भी प्रासङ्गिक हो, विषयों में सम्मिलित किया जाएगा। इसमें औषधीय प्रथाओं, वन प्रबन्धन, पारम्परिक (जैविक) फसल की खेती, प्राकृतिक खेती, स्वदेशी खेलों, विज्ञान और अन्य क्षेत्रों में प्राचीन और आधुनिक भारत के प्रेरणादायक व्यक्तित्वों पर ज्ञानदायी विषय हो सकेंगे।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बिन्दु क्रं. 11.1 में समग्र और बहु-विषयक शिक्षा की ओर प्रवृत्त करने के निर्देश हैं। भारत में समग्र एवं बहु-विषयक विधि से सीखने की एक प्राचीन परम्परा पर बल दिया गया है, तक्षशिला और नालन्दा जैसे विश्वविद्यालयों के उल्लेख सहित 64 कलाओं के ज्ञान के रूप में गायन और चित्रकला, वैज्ञानिक क्षेत्र जैसे रसायनशास्त्र और गणित, व्यावसायिक क्षेत्र जैसे बढ़ई का काम और कपड़े सिलने का कार्य, व्यावसायिक कार्य जैसे औषधि तथा अभियान्त्रिकी और साथ ही साथ

सम्प्रेषण, चर्चा और वाद-संवाद करने के व्यावहारिक कौशल (सॉफ्ट स्किल्स) भी सम्मिलित है । यह विचार है कि गणित, विज्ञान, व्यावसायिक विषयों और सॉफ्ट स्किल सहित रचनात्मक मानव प्रयास की सभी शाखाओं को 'कला' माना जाना चाहिए, जिसका मूल भारत है। 'कई कलाओं के ज्ञान' या जिसे आधुनिक समय में प्राय: 'उदार कला' कहा जाता है (अर्थात्, कलाओं की एक उदार धारणा) की इस धारणा को भारतीय शिक्षा में वापस लाया जाना चाहिए, क्योंकि यह ठीक उसी तरह की शिक्षा है जो 21वीं सदी के लिए आवश्यक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बिन्दु क्रं. 22.1 में भारतीय भाषाओं, कला और संस्कृति का संवर्धन हेतु निर्देश हैं। भारत संस्कृति का समृद्ध भण्डार है – जो हजारों वर्षों में विकसित हुआ है, और यहाँ की कला, साहित्यिक कृतियों, प्रथाओं, परम्पराओं, भाषायी अभिव्यक्तियों, कलाकृतियों, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों के स्थलों इत्यादि में परिलक्षित होता हुआ दिखता है। भारत में भ्रमण, भारतीय अतिथि सत्कार का अनुभव होना, भारत के आकर्षक हस्तशिल्प एवं हाथ से बने कपड़ों को खरीदना, भारत के प्राचीन साहित्य को पढ़ना, योग एवं ध्यान का अभ्यास करना, भारतीय दर्शनशास्त्र से प्रेरित होना, भारत के अनुपम त्यौहारों में भाग लेना, भारत के वैविध्यपूर्ण सङ्गीत एवं कला की सराहना करना और भारतीय फिल्मों को देखना आदि ऐसे कुछ आयाम हैं जिनके माध्यम से दुनिया भर के करोड़ो लोग प्रतिदिन इस सांस्कृतिक विरासत में सम्मिलित होते हैं, इसका आनन्द उठाते हैं और लाभ प्राप्त करते हैं ।

यही सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक सम्पदा है भारत की इस सांस्कृतिक सम्पदा का संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार, देश की उच्चतर प्राथमिकता होनी चाहिए क्योंकि इस देश की पहचान के साथ-साथ इसकी अर्थव्यवस्था के लिए भी बहुत महत्त्वपूर्ण है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बिन्दु क्रं. 22.2 में कलाओं के विषय में निर्देश हैं। भारतीय कला एवं संस्कृति का संवर्धन राष्ट्र एवं राष्ट्र के नागरिकों के लिए महत्त्वपूर्ण है । बच्चों में अपनी पहचान और अपनेपन के भाव तथा अन्य संस्कृतियों और पहचानों की सराहना का भाव पैदा करने के लिए सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति जैसी प्रमुख क्षमताओं को बच्चों में विकसित करना जरूरी है। बच्चों में अपने सांस्कृतिक इतिहास, कला, भाषा एवं परम्परा की भावना और ज्ञान के विकास द्वारा ही एकता,

सकारात्मक सांस्कृतिक पहचान और आत्म-सम्मान निर्मित किया जा सकता है । अत: व्यक्तिगत एवं सामाजिक कल्याण के लिए सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति का योगदान महत्त्वपूर्ण है ।

प्रतिष्ठान की मुख्य वैदिक शिक्षा (वेदों की श्रुति या मौखिक परम्परा/वेद पाठ/वैदिक ज्ञान परम्परा) सहित अन्य आवश्यक आधुनिक विषय- संस्कृत, अंग्रेजी, मातृभाषा, गणित, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान, दर्शन, योग, वैदिक कृषि, भारतीय कला, SUPW आदि महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड की पाठ्य पुस्तकों की नींव/ स्रोत भारतीय ज्ञान परम्परा (IKS) विषयों की अनुप्रविष्टि (इनपुट) पर आधारित हैं। ये सभी निर्देश राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दिशानिर्देशों के अनुरूप है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन के शैक्षिक चिन्तकों, प्राधिकरणों के परामर्श एवं नीति को ध्यान में रखते हुए प्रारूप पुस्तकें पीडीएफ फॉर्मेट में उपलब्ध करायी गयी हैं। इन पुस्तकों को भविष्य में NCF के अनुरूप अद्यतन किया जाएगा और अन्त में प्रिन्ट रूप में उपलब्ध कराया जाएगा।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन के राष्ट्रीय आदर्श वेदविद्यालय के अध्यापक महानुभावों ने, वेद अध्यापन (वैदिक मौखिक एवं श्रुति परम्परा/वेद पाठ/वेद ज्ञान परम्परा) में समर्पित आचार्यों ने, सम्बद्ध वेद पाठशालओं के संस्कृत एवं आधुनिक विषयों के अध्यापकों ने, आधुनिक विषय पाठ्यपुस्तकों को इस रूप में प्रस्तुत करने में पिछले दो वर्षों में अथक परिश्रम किया है। उन सभी को हृदय की गहराई से धन्यवाद समर्पण करता हूँ। राष्ट्र स्तर के विविध विशेषज्ञों ने समय-समय पर पधार कर पाठ्यपुस्तकों में गुणवत्ता लाने में विशेष सहायता प्रदान की है। उन सभी विशेषज्ञों एवं विद्यालयों के अध्यापक महानुभावों को भी धन्यवाद अर्पित करता हूँ। अक्षर योजना हेतु, चित्राङ्कन हेतु, पेज सेटिंग हेतु मेरे सहयोगी कर्मचारियों ने कार्य किया है, उन सभी को हृदय की गहराई से कृतज्ञता समर्पण करता हूँ।

पाठ्य पुस्तकों की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए रचनात्मक आलोचना सहित सभी सुझावों का स्वागत है।

आपरितोषात् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्।

बलवदपि शिक्षितानाम् आत्मन्यप्रत्ययं चेतः॥

(अभिज्ञानशाकुन्तलम् १.०२)

(जब तक विद्वानों को पूर्ण सन्तुष्टि न हो जाए तब तक विशिष्ट प्रयोग को सब तरह से सफल नहीं मानता क्योंकि प्रयोग में विशेष योग्यता प्राप्त विद्वान भी पहले प्रयोग के सफलता में आश्वस्त नहीं रहता है।)

प्रो. विरूपाक्ष वि जड्डीपाल्

सचिव

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड

पाठ्यपुस्तक के आलोक में

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के आलोक में राष्ट्रीय उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, भारत सरकार द्वारा संस्थापित महर्षि सान्दीपनि वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड, उज्जैन (म.प्र.) द्वारा देश भर में मान्यता प्राप्त वेद पाठशालाओं/गुरु शिष्य इकाइयों में अध्ययनरत वेद भूषण प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम एवं वेद विभूषण प्रथम और द्वितीय वर्ष तथा स्कूली शिक्षा में छठीं, सातवीं, आठवीं, नवीं, दसवीं, ग्याराहवीं एवं बाराहवीं कक्षा के छात्रों के लिए एन.सी.ई.आर.टी. एवं राज्य शिक्षा बोर्डों तथा भारतीय ज्ञान परम्परा विषयक विविध प्रकाशित स्त्रोतों के मानक अनुसार सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष हो रहा है।

सामाजिक विज्ञान में सम्मिलित विषय यथा भूगोल, इतिहास, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र आदि हमें, समाज को समझने में बहुविध सहायता प्रदान करते हैं। इसी समझ के आधार पर हम अपने भविष्य को व्यक्तिगत और सामाजिक व्यवहार की दृष्टि से उत्कृष्टतम बनाने का प्रयत्न करते हैं। यह सम्पूर्ण विश्व हजारों-लाखों वर्ष पूर्व से समयानुरूप विविध घटनाओं और परिवर्तनों का परिणाम है। इन घटनाओं परिवर्तनों और परिणामों को जानने व समझने में सामाजिक विज्ञान की यह पाठ्यपुस्तक निश्चित ही सहायक है।

सामाजिक विज्ञान की पुस्तक में अधिकांश विषयों को वैदिक वाङ्मय के सैद्धान्तिक स्वरूप और उपयोगिता को दृष्टि में रखकर जोड़ा गया है, जिससे अध्येताओं को भारतीयता और सांस्कृतिक गौरव का निश्चय ही अनुभव होगा। इस पुस्तक में विविध मानचित्रों, चित्रों एवं अद्यतन आँकड़ों को समाहित कर छात्रों के लिए अधिक उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। पाठ्यपुस्तक निर्माण कार्य में समय समय पर माननीय सचिव महोदय का मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा है। सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक के विषय सङ्कलन, मन्त्र सङ्कलन, शब्द विन्यास, त्रुटि सुधार आदि की दृष्टि से राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय के समस्त आचार्यों एवं अध्यापकों का योगदान रहा है, विशेषतया श्री आयुष शुक्ला एवं श्री अभिजीत सिंह राजपूत जी का साथ ही विविध विद्यालयों के सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों श्री विजेन्द्र सिंह हाड़ा, श्री विक्रम बासनीवाल, श्री अनिल शर्मा, श्री मुकेश कुशवाहा, श्री लक्ष्मीकान्त मिश्र, श्री अमरेश चन्द्र पाण्डेय, श्री नरेन्द्र सिंह, श्रीमती अनुपमा त्रिवेदी, श्रीमती नेहा मैथिल जी का भी अभूतपूर्व सहयोग

प्राप्त हुआ है। इन सब के साथ टङ्कण कार्य में श्रीमती किरण परमार का कार्य अति सराहनीय रहा है। इस सहयोग के लिए आप सभी को हृदय से धन्यवाद अर्पित करते हैं।

हमारा प्रयास सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक को वैदिक विद्यार्थियों के लिए सतत् अधिकतम उपयोगी बनाने का रहा है, क्योंकि सामाजिक विज्ञान एक गतिशील विषय होने के कारण सामाजिक विज्ञान की पुस्तक में पाठ्य सामग्री के संशोधन एवं परिवर्धन की आवश्यकता सदैव बनी रहती है। इस सन्दर्भ में सम्मानित शिक्षकों, विषय विशेषज्ञों तथा सामाजिक विज्ञान में अभिरुचि रखने वाले विद्वानों के सुझावों का सदैव स्वागत है।

सादर धन्यवाद

दिनाङ्क-

डॉ. प्रकाश प्रपन्न त्रिपाठी

रवीन्द्र कुमार शर्मा

विषयानुक्रमणिका

क्रम संख्या	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
	भूगोल	1
अध्याय–1	हमारा सौरमण्डल	2-12
अध्याय–2	प्रतिदर्श (ग्लोब) एवं मानचित्र	13-23
अध्याय–3	पृथिवी की गतियाँ एवं परिमण्डल	24-37
अध्याय–4	भारत का भौगोलिक स्वरूप, वन एवं वन्यजीव	38-46
	इतिहास	47
अध्याय– 5	इतिहास : आधार एवं प्रमाण	48-55
अध्याय– 6	भारत में प्रागैतिहासिक काल	56-64
अध्याय– 7	भारत में धातु कालीन संस्कृतियाँ	65-72
अध्याय– 8	वैदिक संस्कृति और महाजनपद् काल	73-92
अध्याय– 9	प्राचीन भारतीय राजवंश एवं साम्राज्य	93-109
अध्याय–10	भारत- एक पारम्परिक समझ	110-122
	नागरिक जीवन	123
अध्याय–11	सरकार एवं लोकतन्त्र	124-129
अध्याय–12	पञ्चायती राज व्यवस्था	130-135
अध्याय–13	ग्रामीण एवं नगरीय प्रशासन तथा आजीविका के साधन	136-146
अध्याय-14	भारत में विविधता	147-152
	आदर्श प्रश्न पत्र	153-161

वेदभूषण प्रथम वर्ष

भूगोल

अध्याय- 1

हमारा सौरमण्डल

आइये जानें- ब्रह्माण्ड, आकाश गङ्गा, हमारा सौरमण्डल, ग्रह, उपग्रह, क्षुद्रग्रह, उल्कापिण्ड, ग्रहण, ग्रहणकाल का आध्यात्मिक महत्त्व।

ब्रह्माण्ड (Universe)- असंख्य खगोलीय पिण्डों से युक्त अनन्त आकाश को **ब्रह्माण्ड** कहते हैं।

चित्र-1.1, ब्रह्माण्ड

आकाश में सूर्यास्त के पश्चात् अगणित बिन्दुओं की भाँति धुँधले या चमकते हुए दिखाई देने वाले पिण्डों को **आकाशीय** या **खगोलीय पिण्ड** कहते हैं। ज्ञान के प्राचीनतम स्रोत वैदिक वाङ्मय में ब्रह्माण्ड के विस्तृत स्वरूप का उल्लेख हुआ है- **सप्त दिशो नाना सूर्या:** (ऋ. 9.114.3) अर्थात् सातों दिशाओं में अनेक सूर्य विद्यमान हैं। **सोमापूषणा जननना रयीणां जननना दिवो जननना पृथिव्या:। जातौ विश्वस्य भुवनस्य गोपौ॥** (ऋ. 2. 40. 1) अर्थात् सोम और पूषा से ही द्यूलोक और पृथिवी उत्पन्न हुई है। सोम और पूषा देवता सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की रक्षा करते हैं।

आकाश गङ्गा (Galaxy)- आकाश को यदि हम सूक्ष्मता से देखें तो अनेक तारे हमें विविध समूहों में जल प्रवाह की भाँति प्रतीत होते हैं। इन तारा समूहों को **आकाश गङ्गा** कहते हैं। इनकी संख्या अनन्त है। अनुमानतः ब्रह्माण्ड में लगभग एक सौ अरब आकाश गङ्गाएँ स्थित हैं। प्रत्येक आकाश गङ्गा में एक सौ अरब या उससे भी अधिक तारे, तारा समूह एवं सौरमण्डल स्थित हैं। इनमें से एक आकाश गङ्गा का सदस्य हमारा सौरमण्डल भी है। इस आकाश गङ्गा को **मन्दाकिनी**, **देवनदी**, **स्वर्ण गङ्गा**, **नागवीथी** जैसे नामों से भी जाना जाता है। आकाश में इसकी पहचान झिलमिलाते हुए अर्धचक्राकृति या नागाकृति जैसी मेखला के रूप में की गई है।

हमारा सौरमण्डल (Our Solar System)- मन्दाकिनी आकाश गङ्गा में अनेक सौरमण्डल विद्यमान हैं। हमारे सौरमण्डल का निर्माण सूर्य, आठ ग्रह, उपग्रह, क्षुद्रग्रहों, पुच्छल तारें और उल्का पिण्डों से मिलकर हुआ है। हमारी पृथिवी भी इसकी एक सदस्य है।

सूर्य (Sun)- हमारे सौरमण्डल का मुखिया, जन्मदाता या नियामक सूर्य है। यह विशाल अग्नि पिण्ड की भाँति अनन्त ऊर्जा एवं प्रकाश का स्रोत है। खगोलीय भाषा में वे आकाशीय पिण्ड जिनमें स्वयं की ऊर्जा और प्रकाश विद्यमान है, **तारे** कहलाते हैं। अत: सूर्य एक तारा है। सूर्य के केन्द्रीय भाग में हाइड्रोजन के परमाणुओं की नाभिकीय संलयन क्रिया द्वारा हीलियम गैसों के निर्माण से उत्पन्न होने वाली अनन्त ऊर्जा एवं गुरुत्वाकर्षण के कारण सौर परिवार के सभी पिण्ड अपनी कक्षा में गतिशील, नियमित, नियन्त्रित और प्रकाशित हैं। सूर्य पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर अपने अक्ष के परित: 27 दिनों में तथा मन्दाकिनी के केन्द्र की एक परिक्रमा 251 किलोमीटर प्रति सेकेण्ड की गति से 25 करोड़ वर्ष में पूरी कर लेता है। सूर्य की सतह का निर्माण- हाइड्रोजन, हीलियम, लोहा, निकिल, ऑक्सीजन, सिलिकॉन, सल्फर, मैग्नीशियम, कार्बन, नियॉन, कैल्शियम एवं क्रोमियम तत्वों से मिलकर हुआ है।

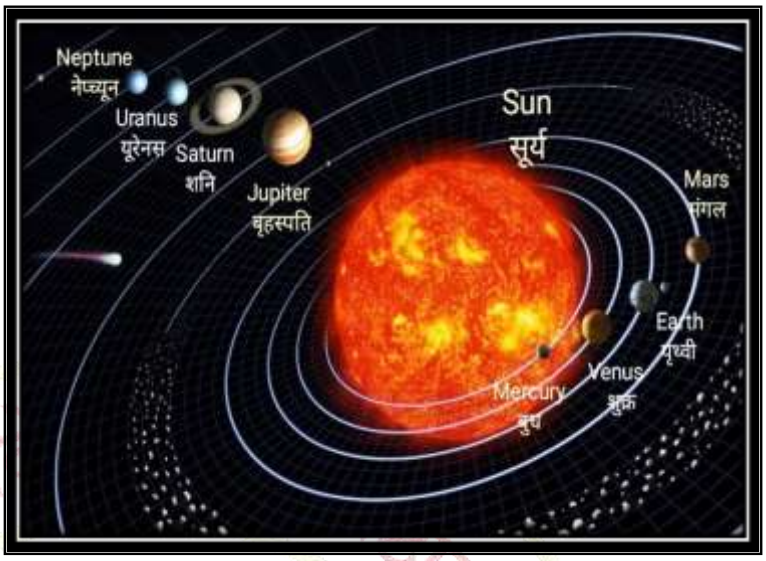

चित्र-1.2, हमारा सौरमण्डल

चित्र-1.3, हमारी पृथिवी

भारतीय ज्ञान-विज्ञान परम्परा के अनन्त स्रोत वैदिक वाङ्मय में हजारों वर्ष पूर्व ब्रह्माण्ड और सृष्टि रचना विषयक अनेक तथ्य प्राप्त होते हैं, जिन्हें आधुनिक विज्ञान भी मानता है। सूर्य के लिए कहा गया है– **अग्निं तं मन्ये यो वसु:। (यजु. 15.41)** अर्थात् सूर्य अग्नि रूप एवं वसु (आश्रयदाता) है। **अव दिवस्तारयन्ति सप्त सूर्यस्य रश्मय: (अथर्व. 7.107.1)** अर्थात् इसकी सात किरणें (सुषुम्णा, सुरादना, उदन्वसु, विश्वकर्मा, उदावसु, विश्वन्यचा और हरिकेश) आकाश से वृष्टि करती हैं। **एको अन्यत् चकृषे विश्वमानुषक्, (ऋ. 1.52.14)** अर्थात् सूर्य समस्त संसार को अपने आकर्षण से अन्तरिक्ष में रोके हुए है।

ग्रह (Planets)- वे आकाशीय पिण्ड, जो किसी तारे के ऊर्जा और प्रकाश से ऊर्जावान और प्रकाशित होते हैं तथा उस तारे के चारों ओर परिक्रमण करते हैं, **ग्रह** कहलाते हैं। सूर्य से दूरी के क्रम में ग्रहों को दो श्रेणियों में रखा गया है- **आन्तरिक ग्रह**- बुध, शुक्र, पृथिवी एवं मङ्गल तथा **बाह्य ग्रह**- बृहस्पति, शनि, अरुण एवं वरुण हैं। ये हल्के पदार्थों (गैसों) से बने हैं तथा आकार में बड़े होने के कारण इन्हें **गैसीय दानव**, **ग्रेट प्लेनेट्स** अथवा **महाग्रह** भी कहा जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय खगोलीय संघ 2006 के अनुसार हमारे सौरमण्डल में आठ ग्रह सूर्य से दूरी के क्रम में बुध (Mercury), शुक्र (Venus), पृथिवी (Earth), मङ्गल (Mars), बृहस्पति (Jupiter), शनि (Saturn), अरुण (Uranus) तथा वरुण (Neptune) हैं।

1. **बुध-** बुध ग्रह हमारे सौरमण्डल का सबसे छोटा तथा सूर्य से सबसे निकट का ग्रह है। यह अपनी कक्षा में सूर्य की एक परिक्रमा लगभग 88 दिनों में तथा अपने अक्ष के परितः एक घूर्णन लगभग 59 दिनों में पूर्ण कर लेता है। सूर्य के निकट होने के कारण इस ग्रह पर ऊष्मा अधिक है। अत: इस ग्रह पर जीवन के उपयुक्त वायुमण्डल का अभाव है। इस ग्रह का कोई उपग्रह नहीं है।
2. **शुक्र-** सूर्य से दूरी के क्रम में शुक्र दूसरा ग्रह है। यह सूर्य की एक परिक्रमा 224.7 दिनों में पूरी करता है। अपने अक्ष के परितः एक घूर्णन 243 दिनों में पूरी करता है। शुक्र, सूर्योदय एवं सूर्यास्त के बाद थोड़े समय के लिए ही अधिकतम चमक बिखेरता है इसलिए भारतीय संस्कृति में इसे **भोर और सांझ का तारा** कहा गया है। पृथिवी के समान आकार, गुरुत्वाकर्षण और संरचना के कारण इसे **पृथिवी की जुड़वा बहन** भी कहा जाता है। इसका व्यास 12,092 कि.मी. है। जो पृथिवी की तुलना में मात्र 650 कि.मी. ही कम है। कार्बनडाई ऑक्साइड की अधिकता के कारण शुक्र हमारे सौरमण्डल का सर्वाधिक गर्म ग्रह है। इस ग्रह का अभी तक कोई उपग्रह ज्ञात नहीं है।
3. **पृथिवी-** सूर्य से दूरी के क्रम में पृथिवी तीसरा ग्रह है। आकार में यह हमारे सौरमण्डल का पांचवा सबसे बड़ा ग्रह है। इसका व्यास 12,742 किलोमीटर है। रेडियोधर्मी डेटिंग के अनुसार पृथिवी की आयु लगभग 4.54 बिलियन वर्ष है। पृथिवी ध्रुवों पर चपटी होने के कारण इसके आकार को भू-आभ (पृथिवी का समान आकार) कहते हैं। यह अपने अक्ष पर $23\frac{1}{2}^0$ उत्तर की ओर झुकी हुई है। पृथिवी सूर्य की एक परिक्रमा 365 दिन 6 घण्टे (365¼ दिनों) में पूरी कर लेती है तथा अपने अक्ष के परित: एक परिभ्रमण लगभग 24 घण्टे में पूर्ण करती है। हमारे ब्रह्माण्ड में ज्ञात रूप में पृथिवी ही वह पिण्ड है, जहाँ जीवन है। सूर्य से पृथिवी की दूरी लगभग 15 करोड़ 19 लाख 30 हजार किलोमीटर है। सूर्य के प्रकाश को पृथिवी पर पहुँचने में लगभग 8.3 मिनट का समय लगता है। प्रकाश की गति 3 लाख किलोमीटर प्रति

सेकण्ड है। इस बात की पुष्टि प्राचीन भारतीय खगोलशास्त्री आर्यभट्ट ने भी की है। जीवन की दृष्टि से हमारी पृथिवी पर जलीय, स्थलीय, नभचर जीव एवं वनस्पतियाँ विविधरूपों में विद्यमान हैं। पृथिवी के लगभग 71% भाग पर जल है। अतः अन्तरिक्ष से इसका रङ्ग नीला और वनस्पतियों के कारण हरीतिमा लिए हुए दिखाई देती है। अतः इसे **नीला ग्रह** भी कहा जाता है। हमारी पृथिवी का एकमात्र उपग्रह चन्द्रमा है।

वैदिक वाङ्मय में पृथिवी का बहुविध वर्णन प्राप्त होता है। **आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। (अथर्व 20.48.4 एवं यजु. 3.6)** अर्थात् नाना वर्णों वाली पृथिवी सूर्य की परिक्रमा करती हुई अन्तरिक्ष में रहती है। **तेजः पृथिव्यामधि यत्सम्बभूव। (साम. 1844),** पृथिवी (के केन्द्र) में तेज अर्थात् आग्नेय ऊर्जा विद्यमान है।

4. **मङ्गल-** सूर्य से दूरी के क्रम में चौथा ग्रह मङ्गल है। इसके तल की चमक लाल है, अतः इसे **लाल रङ्ग का ग्रह** भी कहते हैं। यह अपने अक्ष के परितः एक घूर्णन लगभग एक दिन (24 घण्टे) में तथा अपनी कक्षा में सूर्य की एक परिक्रमा 687 दिनों में पूरी करता है। इस ग्रह पर अत्यन्त विरल वायुमण्डल के साथ ही जल की सम्भावना भी पाई गई है। अतः पृथिवी के बाद मङ्गल ही दूसरा ग्रह है, जहाँ जीवन की सम्भावना का अन्वेषण किया जा रहा है। जीवन विषयक समानताएं पृथिवी और मङ्गल ग्रह में पाई गई हैं। पृथिवी की भांति यह भी एक स्थलीय ग्रह है। इस ग्रह के दो उपग्रह– फोबोस एवं डिमोस हैं। डिमोस हमारे सौरमण्डल का सबसे छोटा उपग्रह है। मङ्गल ग्रह का सबसे ऊंचा पर्वत **निक्स ओलम्पिया**, जो पृथिवी के सर्वोच्च पर्वत शिखर एवरेस्ट से तीन गुना ऊंचा है। विश्व के अनेक देशों ने मङ्गल ग्रह पर जीवन की तलाश के लिए अनेक अभियान चलाये इसी कड़ी में भारत ने मार्श आर्बिटर मिशन नाम से 5 नवम्बर सन् 2013 को प्रारंभ किया। 24 सितम्बर सन् 2014 को अपना यान मङ्गल पर उतारकर अपने प्रथम प्रयास में ही आंशिक सफलता प्राप्त की।

5. **बृहस्पति-** यह सूर्य से दूरी के क्रम में पाँचवाँ एवं सौरमण्डल का सबसे बड़ा ग्रह है। यह मुख्य रूप से गैसों का विशाल पिण्ड है। हमारे सौरमण्डल में इसे बाह्य ग्रहों की श्रेणी में रखा गया है। यह एक शक्तिशाली चुम्बकीय क्षेत्र एवं एक धुँधले ग्रहीय वलय प्रणाली से घिरा है। शोध से ज्ञात हुआ कि इस ग्रह के 79 उपग्रह हैं। बृहस्पति ग्रह का **गैनिमीड** नामक उपग्रह हमारे सौरमण्डल का सबसे बड़ा उपग्रह है। बृहस्पति ग्रह की विशालता और अधिक संख्या में उपग्रह होने के कारण इसे लघु सौर–तन्त्र भी कहा जाता है। बृहस्पति के वायुमण्डल में हाइड्रोजन, हीलियम, मीथेन और अमोनिया जैसी गैस पाई जाती हैं। यह अपने अक्ष के परितः एक घूर्णन लगभग 9 घण्टे 56 मिनट में तथा अपनी कक्षा में सूर्य की एक परिक्रमा लगभग 11 वर्ष 9 माह में पूर्ण करता है।

6. **शनि-** सूर्य से ग्रह दूरी के क्रम में हमारे सौरमण्डल का छठा तथा विशालता में दूसरा बड़ा ग्रह शनि है। यह अपने अक्ष के परितः एक घूर्णन 10 घण्टे 40 मिनट में तथा सूर्य की एक परिक्रमा 29 वर्ष 5 माह में पूरी करता है। इस ग्रह की विशेषता यह है कि इसके चारों ओर विकसित वलय (अर्थात् कंगनाकृति घेरा) है। इन वलयों की संख्या सात बताई गई है। इन वलयों का निर्माण चट्टानी अवशेष एवं धूल तथा बर्फ के कणों से मिलकर हुआ है। शनि के कुल 62 उपग्रह हैं। **टिटान** इसका सबसे बड़ा उपग्रह है, जो कि आकार में बुध के बराबर है। हमारे सौरमण्डल में यह अन्तिम ग्रह है, जिसे नग्न आंखों से देखा जा सकता है। आकाश में इसकी पहचान पीले तारे के रुप में की गई है।
7. **अरुण-** सूर्य से दूरी के क्रम में सातवाँ तथा आकार में तीसरा बड़ा ग्रह अरुण है। यह अपने अक्ष पर अधिकतम लम्बवत स्थित होने के कारण इसे **लेटा हुआ ग्रह** भी कहा जाता है। अरुण 17 घण्टे 14 मिनट में अपने अक्ष के परितः एक घूर्णन पूरा कर लेता है।यह अपनी कक्षा में पूर्व से पश्चिम की ओर सूर्य की एक परिक्रमा 84 वर्षों में पूरी करता है। अरुण ग्रह के भी वलय हैं, जिनकी संख्या पाँच है। इस ग्रह के कुल ज्ञात उपग्रह 27 हैं। इस ग्रह की खोज मार्च 1781 में William Herschel ने की थी। हमारे सौरमण्डल में इस ग्रह को दूरबीन की सहायता से देखा जा सकता है।
8. **वरुण-** वरुण, सूर्य से दूरी के क्रम में आठवां एवं आकार में चौथा सबसे बड़ा ग्रह है। यह ग्रह अपने अक्ष पर एक घूर्णन लगभग 16 घण्टे 7 मिनट एवं सूर्य की एक परिक्रमा 165 वर्षों में पूरी करता है। इस ग्रह के कुल 13 उपग्रह हैं। अन्तरिक्ष में यह हल्के पीले रङ्ग का दिखाई देता है।

उपग्रह (Satellite)- वे आकाशीय पिण्ड है, जो अपने–अपने ग्रह पिण्डों की परिक्रमा करते हैं उपग्रह कहलाते हैं। ग्रहों की ही भाँति इनका भी स्वयं का प्रकाश नहीं होता तथा सूर्य के प्रकाश से ही यह प्रकाशित होते हैं। ग्रहों की ही भाँति इनका भी परिक्रमापथ दीर्घवृत्ताकार होता है। उपग्रह दो प्रकार के होते हैं– प्राकृतिक और कृत्रिम उपग्रह।

क. प्राकृतिक उपग्रह(Natural Satellite)- वे आकाशीय पिण्ड जो सौरमण्डल में विशिष्ट अन्तरिक्षीय घटनाओं के परिणामस्वरूप उसके उपांग बने उन्हें **प्राकृतिक उपग्रह** कहते हैं। जिस प्रकार हमारे सौरमण्डल में ग्रह, सूर्य (तारा) की परिक्रमा करते हैं, उसी प्रकार उपग्रह भी अपनी कक्षा में स्थित होकर अपने-अपने ग्रहों की परिक्रमा करते हैं। चन्द्रमा, डिमोस, फोबोस, गैनिमीड आदि प्राकृतिक उपग्रह हैं।

चन्द्रमा (Moon)- पृथिवी और थीया नामक आकाशीय ग्रह के आपस में टकराने से लगभग 4.5 करोड़ वर्ष पूर्व चन्द्रमा की उत्पत्ति हुई। चन्द्रमा हमारी पृथिवी से स्पष्ट एवं बड़ा दिखाई देने वाला एक आकाशीय पिण्ड है, जो पृथिवी का एकमात्र उपग्रह है। आकार में यह हमारे सौर परिवार का पाँचवा विशाल उपग्रह है। इसे जीवाश्म ग्रह भी कहा जाता है। पृथिवी से चन्द्रमा की दूरी लगभग 3,84,365 किलोमीटर है। इसका व्यास 3480 किलोमीटर है। यह पृथिवी की एक परिक्रमा लगभग 27 दिन 8 घन्टे में पूर्ण करता है। इतने ही समय में अपने अक्ष के परितः भी एक चक्कर पूरा कर लेता है। यहाँ पर न तो जल और न ही प्राणवायु है। वैदिक वाङ्मय में चन्द्रमा के सन्दर्भ में उल्लेख आया है– **त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ। (ऋ. 1.91.22 एवं यजु. 34.22),** अर्थात् चन्द्रमा ने अपने प्रकाश से (पृथिवी पर) अन्धकार को हटाया है। **अप्सु ते जन्म दिवि ते सधस्थम्। (अथर्व 6.80.3)** अर्थात् चन्द्रमा की उत्पत्ति, जल (यहाँ जल या जलराशि अर्थात् समुद्र, अन्तरिक्ष का अर्थदायक भी है) से हुई है और यह अन्तरिक्ष में स्थित है। **ऋतूँरन्यो विदधज्जायते पुनः। (ऋ. 10.85.18)** अर्थात् यह ऋतुओं का निर्माण करता है।

चित्र-1.4, चन्द्रमा

क्या आप जानते हैं-

- प्रकाश द्वारा एक वर्ष में तय की गई दूरी को प्रकाश वर्ष कहते हैं। प्रकाश की गति तीन लाख कि.मी. प्रति सेकेण्ड है। दूरी मापन की इस इकाई से खगोलीय पिण्डों की दूरी की मापी जाती है।
- भारतीय वैज्ञानिकों के द्वारा चन्द्रयान–I (मानवरहित) 22 अक्टूबर, 2008 को चन्द्र यात्रा के लिए सफलतापूर्वक भेजा गया। द्वितीय चन्द्रयान 22 जुलाई, 2019 को श्रीहरीकोटा से प्रक्षेपित किया गया।

अन्तरिक्ष में चन्द्रमा ही एक ऐसा पिण्ड है, जहाँ मानव ने पहली बार सफलतापूर्वक कदम रखा। सोवियत संघ का लूना-I चन्द्रयान 02 जनवरी, 1959 चन्द्रमा के पास से गुजरा। लूना-II चन्द्रयान 13 सितम्बर, 1959 चन्द्रमा की भूमि पर उतरा। नील आर्मस्ट्रांग प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने चन्द्रमा की सतह पर 21 जुलाई 1970 में कदम रखा था।

ख. **कृत्रिम उपग्रह** (Artificial Satellite)- पृथिवी से अन्तरिक्ष में प्रक्षेपित कर पृथिवी की कक्षा में स्थापित किये गये वे मानव निर्मित उपकरण, जो पृथिवी की निश्चित कक्षा में परिक्रमा करते हैं, **कृत्रिम उपग्रह** कहलाते हैं। ये उपग्रह मौसम, वर्षा, प्राकृतिक आपदाओं, सञ्चार आदि के पूर्वानुमान में सहायक हैं।

भारत ने अपना पहला कृत्रिम उपग्रह 19 अप्रैल,1975 में **आर्यभट्ट** नाम से प्रक्षेपित किया था। इसके अतिरिक्त इनसैट, आई. आर. एस., एडुसैट इत्यादि हैं।

क्षुद्रग्रह (Asteroids)- यह भी खगोलीय पिण्ड हैं, जो आकार में छोटे होते हैं। यह हमारे अन्तरिक्ष में असंख्य हैं। हमारे सौरमण्डल में मङ्गल एवं बृहस्पति की कक्षाओं के मध्य अधिकांश मात्रा में क्षुद्र ग्रह हैं। इसीलिए इसे **क्षुद्रग्रहों की पट्टी** कहा जाता है। क्षुद्रग्रह, उपग्रहों की भाँति ही सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं। अन्ताराष्ट्रीय खगोल सङ्गठन द्वारा 2006 की बैठक में सौरमण्डल के नौवें ग्रह यम (प्लूटो) एवं 2003 में खोजे गये अन्य खगोलीय पिण्ड यूवी-313, को बौने या क्षुद्रग्रह के रूप में मान्यता दी गई है।

उल्का पिण्ड (Meteorite)- अनन्त आकाश में रात्रि के प्रकाश पुञ्ज तीव्रगति से पृथिवी की ओर आते दिखाई देता है एवं शीघ्र ही लुप्त हो जाता है, इसे ही **उल्का** (Meteor) कहते हैं। वास्तव में ये लघु आकाशीय पिण्ड होते हैं। इनमें कुछ तो घर्षण के कारण अन्तरिक्ष में ही जल कर नष्ट हो जाते हैं तथा कुछ पिण्ड धरती पर गिर जाते हैं, ऐसे पिण्डों को **उल्कापिण्ड** कहा जाता है, जब ये उल्कापिण्ड अन्तरिक्ष से बड़ी मात्रा में पृथिवी की ओर आते हैं, तो इसे **उल्कापात** कहते हैं। ये उल्का पिण्ड प्रयोगशाला में अन्तरिक्ष के अध्ययन में सहायक होते हैं। अध्ययनों के आधार पर उल्का पिण्डों को दो रूपों में रखा गया है-

1. **धात्विक उल्का-** यह उल्का पिण्ड प्रायः लोहे, निकल या मिश्र धातु से बने होते हैं।
2. **आंशिक उल्का पिण्ड-** ये उल्का पिण्ड विभिन्न खनिजों से बने होते हैं।

ग्रहण (Eclipse)- जब एक ग्रह नक्षत्र की किसी दूसरे ग्रह नक्षत्र पर किसी तीसरे ग्रह नक्षत्र के प्रभाव के कारण पड़ने वाली छाया या प्रकाएश अवरोध की स्थिति को ग्रहण कहा जाता है। भारतीय खगोलशास्त्रियों ने ऐसे संयोगों का अध्ययन पहले ही कर लिया था। वैदिक ज्ञान परम्परा में महर्षि अत्रि एवं उनके वंशजों को ग्रहण विज्ञान का प्रथम आचार्य कहा गया है। **यं वै सूर्यं स्वर्भानु स्तमसाविध्यदासुरः। अत्रयस्तमन्वविन्दन् नह्यन्ये अशक्नुवन्॥** (ऋ. 5. 40. 9) अर्थात् हे सूर्य! असुर राहु ने आप पर आक्रमण कर अन्धकार से आपको विद्ध (ढँक) कर दिया। उससे मनुष्य आपके रूप को पूर्ण रूप से देख नहीं पाए और हतप्रभ हो गए। तब महर्षि अत्रि ने अपने अर्जित ज्ञान की सामर्थ्य से छाया का दूरीकरण कर सूर्य का उद्धार किया। पृथिवी से दृश्यमान दो ग्रहण हैं- सूर्य

चित्र-1.5, उल्का

ग्रहण एवं चन्द्र ग्रहण। एक वर्ष में अधिकतम सात ग्रहण होते हैं, जिनमें पाँच सूर्य ग्रहण एवं दो चन्द्र ग्रहण हो सकते हैं।

सूर्यग्रहण (Solar Eclipse)- ऋग्वेद के मंत्र संख्या 5.40.5 में सूर्यग्रहण के विषय में उल्लेख है- **यत्त्वा सूर्य स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः। अक्षेत्रविद् यथा मुग्धो भुवनान्यदीधयुः॥** अर्थात् हे! सूर्य जब तुम्हारा प्रकाश किसी के द्वारा पृथिवी पर आने से रोक दिया जाता है। तब पृथिवी भयभीत और अंधकारमय हो जाती है और तुम फिर अपने प्रकाश से पृथिवी को आलोकित करते हो। इस मंत्र में सूर्य ग्रहण का संकेत है। परिभ्रमण करते हुए जब सूर्य, चन्द्रमा और पृथिवी एक सरल रेखा में आ जाते हैं जो **सूर्यग्रहण** होता है। ऐसे में चन्द्रमा के कारण सूर्य का प्रकाश पृथिवी पर पूर्णतः नहीं पहुँच पाता है, जिसके कारण सूर्य का वह छायाँकित भाग पृथिवी से दिखाई नहीं देता है। यह स्थिति जब भी बनती है, तब पृथिवी पर अमावस्या तिथि ही होती है। एक वर्ष में सूर्य ग्रहण अधिकतम पाँच बार एवं न्यूनतम दो बार होते हैं। सूर्य पर चन्द्रमा की छाया पूर्ण या आंशिक रूप से पड़ने के आधार पर सूर्य ग्रहण को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया गया है-

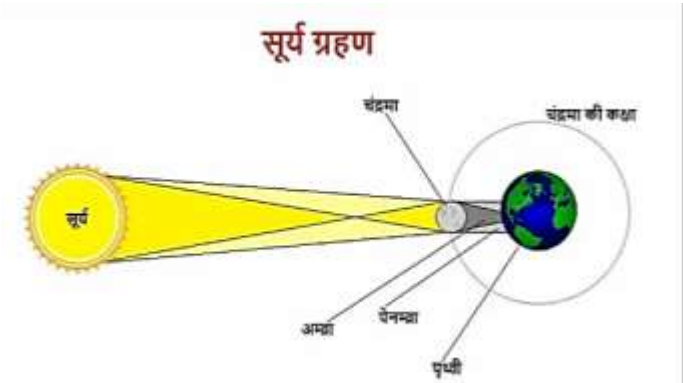

चित्र-1.6 **सूर्यग्रहण**

1.पूर्ण सूर्य ग्रहण 2. आंशिक सूर्य ग्रहण 3. वलयाकार सूर्य ग्रहण

1. **पूर्ण सूर्य ग्रहण-** पूर्ण सूर्य ग्रहण को **खग्रास सूर्य ग्रहण** भी कहते हैं। इस ग्रहण की स्थिति तब बनती है, जब चन्द्रमा पृथिवी के निकट रहकर सूर्य और पृथिवी के मध्य सरल रेखा में आता है। परिणामतः पृथिवी के किसी भाग पर सूर्य का प्रकाश पूर्णतः अवरोधित होता है, ऐसे में पृथिवी के उस भाग पर दिन में अँधेरा छा जाता है। यह एक अद्भुत खगोलीय दृश्य होता है। 22 जुलाई, 2009 का सूर्यग्रहण 21वीं सदी का सबसे लम्बा पूर्ण सूर्य ग्रहण था, जो कुछ स्थानों पर 6 मिनट 39 सेकेण्ड तक व्याप्त रहा। इस श्रृङ्खला का अगला सूर्यग्रहण 2 अगस्त, 2027 को होगा। पूर्ण सूर्य ग्रहण वास्तव में हमारी पृथिवी पर मात्र 1000 किलोमीटर लम्बी एवं 250 किलोमीटर चौड़ी पट्टी वाले क्षेत्रों में ही दिखाई देता है। शेष क्षेत्रों में यह खण्डग्रास सूर्य ग्रहण के रूप में दिखाई देता है। पूर्ण सूर्य ग्रहण की अवधि अधिकतम 11 मिनट एवं न्यूनतम कुछ सेकेण्ड तक की हो सकती है। सूर्य ग्रहण के समय चन्द्रमा को सूर्य के सामने से पूर्णतः गुजरने में दो घण्टे का समय लगता है। इस काल को **ग्रहण मोक्ष काल** कहा जाता है।

2. **आंशिक सूर्य ग्रहण-** आंशिक सूर्य ग्रहण को खण्डग्रास सूर्य ग्रहण भी कहते हैं, क्योंकि इस ग्रहण में चन्द्रमा की छाया सूर्य पर आंशिक रूप में पड़ती दिखाई देती है, शेष भाग का प्रकाश पृथिवी पर आता है। अतः इसे आंशिक सूर्य ग्रहण कहा जाता है।

3. **वलयाकार सूर्य ग्रहण-** जब चन्द्रमा पृथिवी से बहुत दूर होकर सूर्य और पृथिवी के मध्य सरल रेखा में आता है, तब वलयाकार सूर्य ग्रहण होता है। ऐसी स्थिति में चन्द्रमा की छाया सूर्य की परिधि के अन्दर दिखाई देती है और सूर्य का वाह्य क्षेत्र प्रकाशमान रह कर स्वर्ण वलय की भाँति दिखाई देता है।

चन्द्रग्रहण (Lunar Eclipse)- जब परिभ्रमण काल में सूर्य और चन्द्रमा के मध्य में पृथिवी एक सरल रेखा बनाती है, तो सूर्य का प्रकाश पृथिवी के कारण चन्द्रमा पर पूर्णतः नहीं पड़ता है अर्थात् चन्द्रमा पर पृथिवी की छाया पूर्ण या आंशिक रूप से पड़ती है, तो **चन्द्र ग्रहण** होता है। यह पूर्णिमा तिथि को ही होता है। चन्द्रमा पर पड़ने वाली पृथिवी की छाया के आकार के आधार पर चन्द्र ग्रहण भी तीन प्रकार का होता है- **उपच्छाया चन्द्रग्रहण**- उपच्छाया चन्द्र ग्रहण में चन्द्रमा की आकृति अप्रभावित रहती है, परन्तु उसकी चमक में अस्पष्टता आ जाती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि सूर्य के प्रकाश का कुछ भाग पृथिवी रोक लेती है। परिणामतः सूर्य का सम्पूर्ण प्रकाश चन्द्रमा पर नहीं पहुँच पाता इसलिए इसे **उपच्छाया चन्द्रग्रहण** कहते हैं।

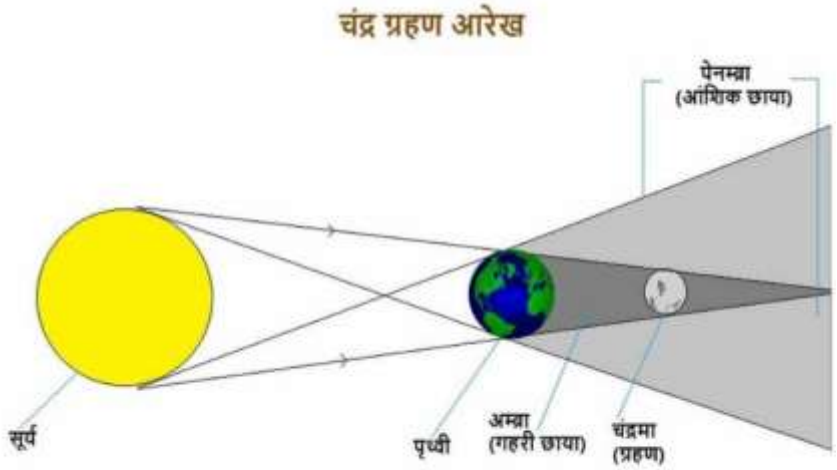

चित्र- 1.7, चन्द्रग्रहण

1. **आंशिक चन्द्रग्रहण-** जब सूर्य और चन्द्रमा के बीच में पृथिवी इस प्रकार आती है कि पृथिवी की छाया आंशिक किन्तु गहरे रूप से चन्द्रमा पर पड़ती है, तब **आंशिक चन्द्रग्रहण** होता है।इस चन्द्रग्रहण की अवधि कुछ सेकेण्ड अथवा मिनटों की ही होती है। 16 जुलाई, 2019 में ऐसा ही चन्द्रग्रहण पड़ा था।

2. **पूर्ण चन्द्र ग्रहण-** जब चन्द्रमा और सूर्य के बीच में पृथिवी इस प्रकार आ जाती है कि, चन्द्रमा को पृथिवी पूर्ण रूप से ढक लेती है, तब **पूर्ण चन्द्र ग्रहण** होता है। उस समय चन्द्रमा का रङ्ग सूर्य की भाँति लाल दिखता है। ऐसा चन्द्र ग्रहण वर्ष 2019 में 21 जनवरी को घटित हुआ था।

ग्रहण काल का आध्यात्मिक महत्त्व- ग्रहण एक अद्भुत खगोलीय घटना है। हमारे वाङ्मय में इसे विशिष्ट स्थान प्राप्त है। आज यह प्रमाणित हो चुका है कि, ग्रहण काल में सूर्य एवं चन्द्र से प्रस्फुटित होने वाली जीवनदायी प्राकृतिक शक्तियाँ प्रभावित होती हैं। उनका व्यापक प्रभाव पृथिवी और उस पर रहने वाले समस्त जीव एवं वनस्पतियों पर पड़ता है। ग्रहण के अद्भुत दृश्य को देखने के लिए कुछ सावधानियाँ आवश्यक हैं। क्योंकि इस समय इन पिण्डों से निकलने वाली किरणें हमारे शरीर या अङ्गों जैसे- त्वचा, नेत्र आदि को प्रभावित करती हैं। अतः इन्हें देखने के लिए हमें काले चश्मे, एक्स-रे फिल्मों अथवा जल से भरे कुण्डों में देखना चाहिए। हमारे शास्त्रों में ग्रहण काल के बुरे प्रभावों से बचने के लिए स्नान-ध्यान-दान एवं ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए ईश्वरस्मरण, मन्त्रजाप, हवन जैसे उपाय बताये गये हैं। हमें इन उपायों को सद्भाव एवं विवेकपूर्ण ढंग से पालन करना चाहिए।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1. हमारे सौर मण्डल का जन्मदाता .....को कहा जाता है।
   - अ. सूर्य
   - ब. चन्द्रमा
   - स. बृहस्पति
   - द. पृथिवी
2. नीला ग्रह .....को कहा जाता है।
   - अ. शुक्र
   - ब. पृथिवी
   - स. मङ्गल
   - द. चन्द्रमा
3. पृथिवी सूर्य की एक परिक्रमा .....पूरी करती है।
   - अ. 363 दिन 5 घण्टे में
   - ब. 364 दिन 4 घण्टे में
   - स. 365 दिन 6 घण्टे में
   - द. 365 दिन 5 घण्टे में
4. भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा पहला कृत्रिम उपग्रह अन्तरिक्ष में .....को भेजा गया था।
   - अ. 19 अप्रैल, 1989
   - ब. 19 मई, 1998
   - स. 19 मार्च, 2008
   - द. 19 अप्रैल, 1975

रिक्त स्थानों की पूर्ति किजीए-

1. मङ्गल को.....ग्रह भी कहा गया है। (नीला/लाल)
2. पृथिवी का उपग्रह.....हैं। (टिटान/चन्द्रमा)
3. .....को सौरमण्डल का सबसे बड़ा ग्रह कहा जाता है। (शनि/बृहस्पति)
4. जब सूर्य, पृथिवी और चन्द्रमा एक सीधी रेखा में आते हैं, तो.....पड़ता है। (सूर्य ग्रहण/चन्द्र ग्रहण)

सत्य/असत्य चुनिए-

1. पृथिवी के 98% भाग में जल है। (सत्य/असत्य)
2. चन्द्रमा,पृथिवी की परिक्रमा 28½ दिनों में पूरी करता है। (सत्य/असत्य)
3. सूर्य ग्रहण को दो प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है। (सत्य/असत्य)
4. ग्रहण काल को नग्न आँखों से नहीं देखना चाहिए। (सत्य/असत्य)

सही जोड़ी मिलान कीजिए-

1. लाल ग्रह	क. यह खनिजों से बने होते हैं
2. पृथिवी की जुडवा बहन	ख. कृत्रिम उपग्रह
3. आर्यभट्ट	ग. शुक्र
4. आंशिक उल्कापिण्ड	घ. मङ्गल

अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. सौरमण्डल का सबसे छोटा ग्रह कौन सा है?
2. भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा प्रथम उपग्रह कब प्रक्षेपित किया गया?
3. सूर्य ग्रहण किस तिथि को घटित होता है?
4. ग्रहण मोक्ष किसे कहते हैं ?

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. ग्रह एवं तारे में क्या अन्तर है?
2. एक आकाशीय पिण्ड के रूप में पृथिवी का उल्लेख संक्षेप में कीजिए।
3. पूर्ण सूर्य ग्रहण किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइये।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1. ग्रहण की स्थिति को चित्र सहित समझाइए।
2. मङ्गल ग्रह पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

परियोजना कार्य-

1. छात्र, सौरमण्डल, सूर्य ग्रहण एवं चन्द्र ग्रहण का चित्र बनाने का अभ्यास करें।

अध्याय- 2

प्रतिदर्श (ग्लोब) एवं मानचित्र

आइये जानें- प्रतिदर्श, अक्ष, काल्पनिक रेखाएँ, अक्षांश, देशान्तर, समय का मापन, अन्तराष्ट्रीय मानक समय, भारतीय मानक समय और मानचित्र अध्ययन का तरीका।

हमारी पृथिवी अण्डाकार है। जिसके कारण, उत्तर एवं दक्षिण ध्रुवों में पृथिवी थोड़ी चपटी है तथा मध्य में थोड़ी उभरी हुई है। गोलाकार पृथिवी को समझने के लिए **'करतलामलकवत्'** अर्थात् सम्पूर्ण भू–मण्डल को एकत्र रूप में देखना होगा।

चित्र-2.1, ग्लोब

प्रतिदर्श (Globe)- पृथिवी के भौतिक स्वरूप का अध्ययन करने के लिए उसके सूक्ष्म रूप का प्रयोग किया जाता है, जिसे प्रतिदर्श कहते हैं। इसे अंग्रेजी में ग्लोब कहते हैं, जो मूलत: लैटिन भाषा का शब्द है, जिसका हिन्दी अर्थ गोलाकार होता है। ग्लोब का आविष्कार 1492 ईस्वी में जर्मन भूगोलवेत्ता '**मार्टिन बेहैम**' ने किया था। आवश्यकता के अनुसार ग्लोब विभिन्न आकार एवं प्रकार के होते हैं। ग्लोब मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं- टेरिस्ट्रियल और सेलेस्ट्रियल ग्लोब।

1- **टेरिस्ट्रियल ग्लोब** (Terrestrial Globe)- इस ग्लोब से हम द्वीपों, महाद्वीपों, सागरों महासागरों आदि की जानकारी प्राप्त होती है।

2- **सेलेस्टियल ग्लोब** (Celestial Globe)- इस ग्लोब से हम खगोलीय पिण्डों की जानकारी प्राप्त करते हैं।

अक्ष (Axis)- पृथिवी का प्रतिदर्श एक स्टैण्ड पर पीछे की ओर झुका हुआ एक कील के सहारे टिका होता है, जिसे अक्ष कहते हैं। इसी के सहारे ग्लोब को घुमाया जाता है। हमारी पृथिवी भी इसी प्रकार अपने अक्ष पर परिक्रमण तल से 66 $\frac{1}{2}^0$ का कोण बनाते हुए झुकी हुई है और यह पश्चिम से पूर्व की ओर

घूम रही है। ग्लोब में स्थित वे दो बिन्दु जहाँ से होकर सूई गुजरती है, इन दोनों को क्रमश: ऊपर की ओर स्थित बिन्दु तथा उसके क्षेत्र को उत्तरी ध्रुव और नीचे की ओर स्थित बिन्दु तथ उसके क्षेत्र को दक्षिणी ध्रुव कहते हैं।

काल्पनिक रेखाएँ- ग्लोब को क्षैतिज एवं लम्बवत रेखाओं के माध्यम से दो बराबर भागों में विभाजित किया जा सकता है। यदि पृथिवी को भी पश्चिम से पूर्व की ओर क्षैतिज रेखा द्वारा दो बराबर भागों में विभाजित कर दिया जाए तो ऊपरी भाग उत्तरी गोलार्द्ध एवं निचला भाग दक्षिणी गोलार्द्ध कहा जाता है। ग्लोब में दर्शाई गई इसी रेखा को विषुवत रेखा (भूमध्य रेखा) कहा जाता है। यही रेखा जब पूरी पृथिवी को समान रूप से घेरे रहती है, तो उसे विषुवत (भूमध्य) वृत कहते हैं। '**विषुवत्**' संस्कृत भाषा का पद है। सूर्य की गति में समानता के कारण से दिन और रात्रि का समयमान, इस रेखा के ऊपर के प्रदेशों में समान होने का कारण इसे विषुवत् कहा गया है। अमरकोष में उल्लेख है **समरात्रिन्दिवे काले विषुवत् विषुवं च तत्** (पंक्ति संख्या 242.)।

पृथिवी पर समय वातावरण आदि का ज्ञान करने के लिए ग्लोब पर दो प्रकार की काल्पनिक रेखाएँ प्रदर्शित की गई हैं- अक्षांश और देशान्तर रेखा ।

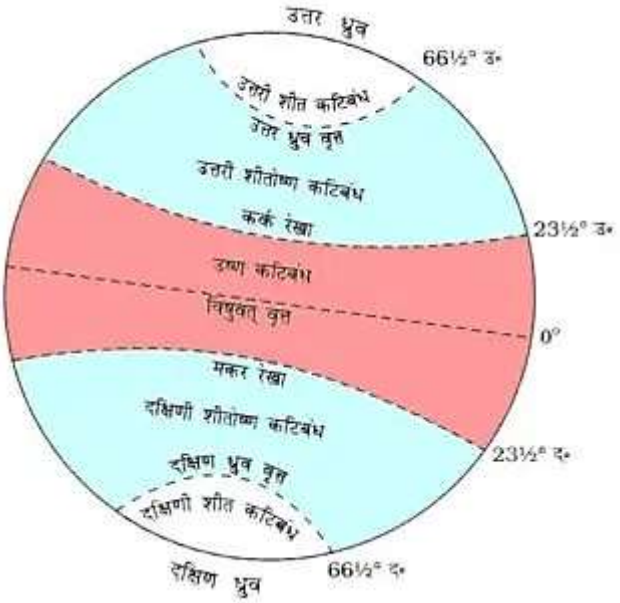

चित्र-2.2, प्रमुख अक्षांश रेखाएँ

अक्षांश (Latitude)- पश्चिम से पूर्व की ओर जाती हुई काल्पनिक रेखा जो ग्लोब पर दर्शाई गई है, उसे **अक्षांश रेखा** कहते है। इसे 0^0 से 90^0 अंश उत्तरी भाग अक्षांश, 0^0 से 90^0 अंश दक्षिणी अक्षांश दर्शाया जाता है। दो अक्षांशो के बीच की दूरी 111 किलो मीटर की होती है। प्रत्येक अक्षांशों के अंश 60 मिनटों में विभाजित है। प्रत्येक मिनट 60 सेकेण्ड में विभाजित है। अक्षांश का एक मिनट 1.8 किमी की दूरी को दर्शाता है, अक्षांश का एक सेकेण्ड 32 मीटर की दूरी को दर्शाता है।

प्रमुख अक्षांश रेखाएँ- विषुवत् वृत्त के (0^0) उत्तर ध्रुव (90^0 उ.) तथा दक्षिण ध्रुव (90^0 द.) के अतिरिक्त चार महत्त्वपूर्ण अक्षांश (समानान्तर) रेखाएँ और भी है। उत्तरी गोलार्द्ध में कर्क रेखा ($23\ ½^0$उ.), दक्षिणी गोलार्द्ध में मकर रेखा ($23\ ½^0$द.), विषुवत् वृत्त के $66\ ½^0$ उत्तर में उत्तर ध्रुव वृत्त, विषुवत् रेखा के $66\ ½^0$ दक्षिण में दक्षिण ध्रुव वृत्त है।

विषुवत रेखा (भूमध्य रेखा)- ग्लोब में प्रदर्शित यह रेखा 0^0 अक्षांश पर स्थित है। विषुवत् रेखा वृत्ताकार होने के कारण इसका माप 360^0 का होता है। अतः उत्तरी अथवा दक्षिणी ध्रुवों के बीच की दूरी पृथिवी के चारों ओर के वृत्त के एक चौथाई है। अतः पृथिवी का चौथाई या 360^0 अंश का चौथाई (¼ अंश) 90^0 अंश है। 0^0 से 90^0 अंश उत्तरी भाग अक्षांश उत्तर ध्रुव को दर्शाता है, तथा 0^0 से 90^0 अंश दक्षिणी अक्षांश दक्षिण ध्रुव को दर्शाता है। जब कभी अक्षांश का उल्लेख होता है, तब उस अक्षांशमान के साथ उत्तर (उ.–North) या दक्षिण (द.–South)का उल्लेख होता है। उदाहरण के लिए मध्यप्रदेश में उज्जैन 23.17°(उ.–N) एवं अर्जेंटीना 23.15^0(दक्षिण अमेरीका, द.–S) दोनों 23^0 अक्षांश पर स्थित हैं, लेकिन उज्जैन विषुवत् वृत्त के 23.17° उत्तर में एवं अर्जेंटीना विषुवत् वृत्त के 23.15^0 दक्षिण में स्थित है इसलिए उत्तरी अक्षांश अथवा दक्षिणी अक्षांश को जानना गोलार्द्ध को समझने के लिए आवश्यक है। विषुवत रेखा विश्व के कुल तेरह देशों से होकर गुजरती है। इनमें प्रमुख देश इक्वाडोर, कोलम्बिया, ब्राजील, युगान्डा, केन्या, मालदीव, इण्डोनेशिया आदि हैं।

क्या आप जानते हैं-

- अपने स्थान से ध्रुव तारे का कोण मापकर आप अपने अक्षांश का कोण माप सकते हैं।

उत्तरी गोलार्द्ध में कर्क रेखा ($23\ ½^0$ उ.)- कर्क रेखा उत्तरी गोलार्द्ध में भूमध्य रेखा के समानान्तर 23^0 26′ 22″ ग्लोब पर पश्चिम से पूर्व की ओर खींची गई एक काल्पनिक रेखा है। यह रेखा पृथिवी पर स्थित उन पाँच प्रमुख अक्षांश रेखाओं में से एक है, जो मानचित्र पर प्रदर्शित की जाती है। जब 21 जून को सूर्य इस रेखा के ठीक ऊपर होता है, तब उत्तरी गोलार्ध में वह दिन सबसे लम्बा व रात सबसे छोटी होती है इसलिए यहाँ पर इस दिन सबसे ज्यादा गर्मी पड़ती है। दक्षिण अफ्रीका के सहारा मरुस्थल का अधिकांश भाग कर्क रेखा पर होने के कारण यहाँ का तापमान सबसे अधिक होता है। कर्करेखा संयुक्त राज्य अमेरिका में हवाई केवल सागर (कोई भी द्वीप इस रेखा पर नहीं है), मैक्सिको में मजातलान (प्रशान्त महासागर के उत्तर में), बहामास, पश्चिमी सहारा (मोरोक्को द्वारा दावा किया गया),

मौरीटानिया, माली, अल्जीरिया, नाइजीरिया, लीबिया, चाड, मिस्त्र, सऊदीअरब, ओमान, भारत, बांग्लादेश, म्यांमार, चीन (मात्र गुआङ्गजोऊ के उत्तर से) और ताइवान से भी होकर आगे बढ़ती है। कर्क रेखा को चिह्नित करने वाले स्मारक- मेक्सिको के मातेहुआला, सैन लुइस पोटोसी, तथा भारत में है।

भारत में कर्क रेखा- भारत में कर्क रेखा मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिम बङ्गाल, त्रिपुरा और मिजोरम राज्यों से गुजरती है। 23^0-32^0 उत्तरी अक्षांश पर कर्करेखा मध्यप्रदेश के उज्जैन, रायसेन, विदिशा, सागर, दमोह, कटनी, उमरिया, शहडोल, और जबलपुर जिलों से आगे बढ़ती है इसलिए इन स्थानों पर ग्रीष्म ऋतु की अवधि शीत ऋतु से अधिक होती है। कर्क रेखा मध्य प्रदेश में भोपाल से 27 किलोमीटर दूर उत्तर से निकलती है। जिस मार्ग से यह जाती है, वह स्थान स्टेट हाइवे-18 पर रायसेन जिले के दीवानगञ्ज और सलामतपुर के मध्य स्थित है। कर्क रेखा को चिह्नाङ्कित करने के लिये उस स्थल पर राजस्थानी पत्थरों से चबूतरानुमा स्मारक बनाया गया है, जो रायसेन जिले का सबसे आर्कषक सेल्फी प्वॉइन्ट है।

दक्षिणी गोलार्द्ध में मकर रेखा ($23½^0$ **द.**)- कर्क रेखा के समानान्तर दक्षिणी गोलार्द्ध में भी एक अन्य रेखा है, जिसको मकर रेखा कहते है। यह रेखा विश्व के चिली, अर्जेन्टीना, ब्राजील, नामीबिया, बोत्सवाना, दक्षिणी अफ्रीका, फ्रान्स, आस्ट्रेलिया आदि देशों से गुजरती है।

पृथिवी के अक्षांशों पर ताप सम्बन्ध- कर्क रेखा एवं मकर रेखा के बीच के सभी उत्तरी तथा दक्षिणी अक्षांशों पर वर्ष में एक बार सूर्य मध्याह्न में सिर के ठीक ऊपर होता है इसलिए इस क्षेत्र में सबसे अधिक ऊष्मा प्राप्त होती है। अत: इसे **उष्ण प्रदेश या उष्ण कटिबन्ध** भी कहते हैं। कर्क तथा मकर रेखा के अतिरिक्त किसी भी अक्षांश पर स्थित प्रदेश में दोपहर में सूर्य की किरणें कभी भी सीधी नहीं होती हैं और निरन्तर ध्रुवों की ओर सूर्य की किरणें तिरछी होती जाती हैं इसलिए सूर्य की किरणें प्रखर या बहुत तेज नहीं होती हैं। अत: उत्तरी गोलार्द्ध में कर्क रेखा एवं उत्तर ध्रुव, दक्षिणी गोलार्द्ध में मकर रेखा एवं दक्षिण ध्रुव के बीच वाले क्षेत्र का तापमान मध्यम रहता है इसलिए इन्हें **शीतोष्ण प्रदेश** कहते हैं। उत्तरी गोलार्द्ध में उत्तरी ध्रुव वृत्त एवं उसके आस–पास तथा दक्षिणी गोलार्द्ध में दक्षिणी ध्रुव वृत्त एवं उसके आसपास के क्षेत्र में अत्यन्त ठण्ड होती है। क्योंकि यहाँ सूर्य की किरणें क्षितिज से ज्यादा ऊपर नहीं आ पाती हैं इसलिए ये प्रदेश **शीतप्रदेश या शीतकटिबन्ध** कहलाता है।

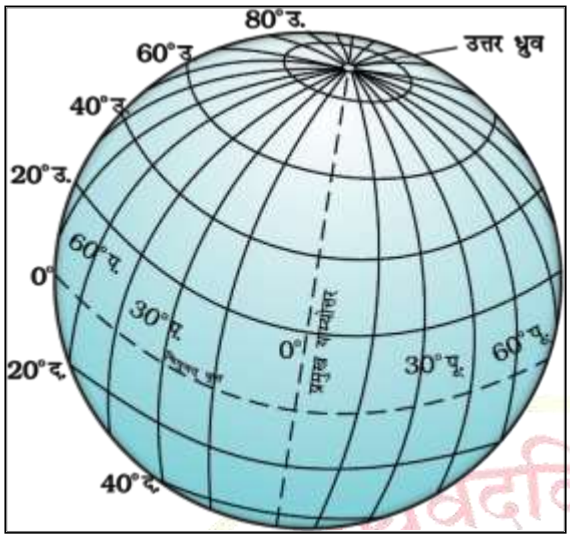

चित्र-2.3, देशान्तर ग्रिड

देशान्तर (Longitude)- ग्लोब में प्रदर्शित पृथिवी के उत्तरीध्रुव को दक्षिणीध्रुव से जोड़ने वाली रेखा को देशान्तर या याम्योत्तर रेखा या रेखांश कहते हैं। किसी स्थान की दूरी एवं समय को मापने के लिए यह बहुत महत्त्वपूर्ण रेखा है। ग्लोब को ऊपर से नीचे तक दो भागों में बांट दिया जाए, तो पूर्वी गोलार्द्ध भाग एवं पश्चिमी गोलार्द्ध भाग काल्पनिक दृष्टि से स्पष्ट हो सकता है।

समय का मापन- पृथिवी और चन्द्रमा एवं ग्रहों की गति से, समय का मापन एवं मौसम का पता लगाया जा सकता है। सूर्योदय से प्रातः काल एवं सूर्यास्त से सायं काल का ज्ञान प्रतिदिन सम्भव है। प्राचीन काल से ही स्थानीय लोगों की समझ के अनुसार स्थानीय समय (लोकल टाइम) का ज्ञान सूर्य के बनने वाले प्रतिबिम्ब से ज्ञात करने की परम्परा रही है। सूर्य की परछाई दोपहर में सबसे छोटी एवं सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय सबसे लम्बी होती है।

अन्ताराष्ट्रीय मानक समय- अमरीका के वाशिंगटन में आयोजित 25 देशों की इन्टरनेशनल मेरिडियन कॉन्फ्रेंस में निर्णय हुआ कि लन्दन के ग्रीनविच (उस समय में एक गाँव) जहाँ ब्रिटिश राजकीय वेधशाला (रॉयल ऑब्जर्वेटरी) है, वहाँ से आगे वाली देशान्तर को ही पूर्व और पश्चिम की ओर देशान्तर गणना हेतु आधार मानकर यूनिवर्सल टाइम मेरिडियन के स्थल के रूप में अपनाया जाए। अतः 22 अक्टूबर, 1884 से वैश्विक समय गणना **ग्रीनविच** के समय से अन्तर को ध्यान में रखकर ही की जाती है। इसे Greenwich Mean Time (GMT) के नाम से जाना जाता है इसलिए लन्दन के ग्रीनविच का मान 0^0 देशान्तर है तथा यहाँ से हम 180^0 पूर्व या 180^0 पश्चिम तक गणना करने पर पूरी पृथिवी का देशान्तर समझ सकेंगे। इस प्रकार दोनों ओर 180^0 याम्योत्तर मिलकर पृथिवी को दो समान भागों पूर्वी गोलार्द्ध एवं पश्चिमी गोलार्द्ध में विभक्त करती हैं। दो रेखाओं के बीच की दूरी को देशान्तर के अंशों में मापा जाता है। प्रत्येक अंश को मिनट में तथा मिनट को सेकण्ड में विभाजित किया जाता है। ये पूर्व या पश्चिमी विभाग अर्धवृत्त हैं, तथा उनके बीच की दूरी ध्रुवों की ओर बढ़ने पर घटती है, जिसे ग्लोब में देखा जा सकता है। ध्रुवबिंदु पर सभी देशान्तरीय याम्योत्तर आपस में मिल जाती हैं। किसी भी स्थान

के देशान्तर के आगे- पूर्व के लिए (East) पू. तथा पश्चिम के लिए (West) प. का निर्देश अवश्य किया जाता है।

पृथिवी लगभग 24 घण्टे में अपने अक्ष पर 360^0 अंश घूमती है। पृथिवी 1 घण्टे में 15^0 अंश घूमती है तथा 4 मिनट में 1^0 अंश घूमती है। इस प्रकार जब ग्रीनविच में दोपहर के 12 बजते हैं, तब ग्रीनविच से 15^0 पूर्व में समय होगा, $15 \times 4 = 60$ मिनट अर्थात् ग्रीनविच के समय से 1 घण्टा आगे। अतः वहाँ मध्याह्न के 1:00 बजते हैं लेकिन ग्रीनविच से 15^0 पश्चिम का समय ग्रीनविच समय से 1 घण्टा पीछे होगा अर्थात् वहाँ सुबह का 11:00 बजते हैं। इसी प्रकार जब ग्रीनविच पर दोपहर के 12:00 बजे होगें तो उस समय 180^0 पर मध्य रात्रि होगी।

भारतीय मानक समय- जब सूर्य की किरणें भूमि पर पर पडतीं हैं, तब अलग-अलग जगहों में भिन्न-भिन्न याम्योत्तर पर स्थित स्थानों के स्थानीय समय में अन्तर होना स्वाभाविक है। हजारों किलो मीटर विस्तृत देशों में स्थानीय समय असमान होने से किसी भी कार्य की समय-सारणी तैयार करना असम्भव होता है। अतः किसी निश्चित बिन्दु को सुनिश्चित कर स्थानीय समय को पूरे देश का मानक समय माना जाता है। भारत में $82\ ½^0$ पू. ($82^0 30'$ पू.) याम्योत्तर के स्थानीय समय को भारत का मानक समय माना जाता है। इसे भारतीय मानक समय- Indian Standard Time (IST) के नाम से जाना जाता है।

सारणी 2.1

क्र.	भारत के प्रमुख नगर	अक्षांश	देशान्तर (रेखांश)
1.	गुजरात में गाँधीनगर का अक्षांश	23.2156^0 उ.	72.6369^0 पू.
2.	गुजरात में पाटण का अक्षांश	23.8500^0 उ.	72.1210^0 पू.
3.	काश्मीर में अनन्तनाग का अक्षांश	33.7050^0 उ.	75.2479^0पू.
4.	मध्यप्रदेश में उज्जैन का अक्षांश	23.1765^0 उ.	75.7885^0 पू.
5.	केरल का कालिकट् का अक्षांश	11.2588^0 उ.	75.7804^0 पू.
6.	पश्चिम बङ्गालमें सुरी का अक्षांश	23.9129^0 उ.,	87.5268^0 पू.
7.	झारखण्ड में राञ्ची का अक्षांश	23.3441^0 उ.,	85.3096^0 पू.
8.	त्रिपुरा में अगरतला का अक्षांश	23.8315^0 उ.,	91.2868^0 पू.

एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में समय के अन्तर को जानने के लिए सूक्ष्मता से गणना कर समझना होगा।आप जानते हैं कि भारत ग्रीनविच से पूर्व में है, अत: भारत का समय ग्रीनविच समय से आगे रहता है। ग्रीनविच का पश्चिमी देशान्तर 0.0005^0 है। भारत का समय मान $82½^0$ पूर्वी देशान्तर, जो उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर के देशान्तर के आधार पर चलता है, **इसे इंडियन स्टैंडर्ड टाइम** (IST) को समय का आधार माना गया है। अतः $82½^0 \times 4$ मिनट = 330 मिनट होंगे। घण्टे में परिवर्तित होने पर 5.5 घण्टे का अन्तर है। अत: भारत का समय ग्रीनविच समय 5.5 घण्टे आगे रहता है।

आप देख सकते हैं, कि उज्जैन एवं त्रिपुरा तक सभी लगभग एक ही अक्षांश (23^0उ) पर स्थित है, परन्तु इनके स्थानीय रेखांश में बहुत अन्तर है। अनन्तनाग, उज्जैन एवं कालिकट के याम्योत्तर रेखांश 10.75^0 पूर्व लगभग समान है, किन्तु अक्षांश अलग–अलग हैं। अतः स्थान की सही स्थिति जानने के लिए अक्षांश एवं याम्योत्तर रेखांश की सही जानकारी होना आवश्यक है। रेखांश के आगे जो संख्या दर्शाई गई है, वह लन्दन के ग्रीनविच से वस्तुतः उस जगह का डिग्री में अन्तर दिखाता है। इससे यह ज्ञात होता है कि उत्तर ध्रुव को दक्षिण ध्रुव से जोड़ने वाली सन्दर्भ रेखा से पूर्व या पश्चिम की ओर इन स्थानों की दूरी कितनी है? पूर्व और पश्चिम याम्योत्तर पर एक ही रेखा पर स्थित स्थान एक ही डिग्री पर होंगे पू. एवं प. दिशा निर्देश के साथ, किन्तु विषुवत् वृत्त से दूरी समझने से, भेद उनका अक्षांश पर होगा। अक्षांश के आगे जो संख्या दर्शाई गई है, वह विषुवत् वृत्त से वस्तुतः उस जगह का डिग्री में अन्तर दर्शाता है। ग्लोब पर अक्षांश रेखाओं एवं याम्योत्तरों रेखाओं के अंशों की सही जानकारी प्राप्त कर, पुन:-पुन: अभ्यास कर किसी भी स्थान के अक्षांश आदि का ज्ञान हम कर सकते हैं।

सरणी 2.2

भारतीय सीमा के प्रमुख बिन्दु के अक्षांश और देशान्तर

शीर्षक	स्थान	प्रशासनिक इकाई	निर्देशांक
उत्तर	इंदिरा कोल	जम्मू और कश्मीर	35.674520°उ. 76.845245°पू.
दक्षिण	इंदिरा पॉइंट	अंडमान व निकोबार द्वीप समूह	6.74678°उ 93.84260°पू
पूर्व	किबिथू	अरुणाचल प्रदेश	28.01168°उ 97.39564°पू
पश्चिम	कच्छ में सर क्रीक	गुजरात	23.71307°उ 68.03215°पू

मानचित्र अध्ययन का तरीका- यदि हमें पृथिवी के किसी विशेष भाग के बारे में अध्ययन अथवा विशेष जानकारी एकत्रित करनी हो, तो ऐसी स्थिति में मानचित्र का उपयोग किया जाता है। पृथिवी अथवा

उसके किसी भू–भाग, समुद्र, नदियाँ, पर्वत, देश, नगर आदि की स्थिति को मापक की सहायता से किसी समतल सतह पर अथवा कागज पर चित्रण करना मानचित्र कहलाता है।

मानचित्र में पृथिवी पर स्थित किसी भी विशाल भाग को सूक्ष्म रूप में दर्शाया जाता है, जिसके द्वारा हम पृथिवी अथवा ब्रह्माण्ड की भौगोलिक स्थिति एवं उनके अन्तर्सम्बन्धों को ज्ञात कर सकते हैं। इस प्रकार मानचित्र के अन्तर्गत चित्रण के माध्यम से हम पृथिवी पर किसी भी स्थान विशेष की सटीक स्थिति एवं अन्य जानकारियों से परिचित हो सकते हैं।

क्या आप जानते हैं-

- विश्व का प्रथम मानचित्र एनेक्सिमैंडर (यूनान) ने बनाया था। भारत के प्रथम मानचित्र का निर्माण ऐनविले ने 1752 ई.में किया था। वर्तमान में भारत में मानचित्र निर्माण का कार्य भारतीय सर्वेक्षण विभाग करता है। इसका मुख्यालय देहरादून में है।

मानचित्र और उसके अध्ययन का उद्देश्य पृथिवी के विशाल स्वरूप को मापक के आधार पर संक्षिप्त बनाकर चित्रण के माध्यम से बोधगम्य बनाना है तथा पृथिवी के विभिन्न स्थलों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आदि पक्षों की जानकारी प्रदान करना। अध्ययन की दृष्टि से मानचित्र को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है-

1. **भौतिक मानचित्र-** पृथिवी के विभिन्न स्थलाकृतियों, नदियों, महासागरों, पर्वतों आदि को दर्शाने वाले मानचित्र को भौतिक मानचित्र अथवा उच्चावच मानचित्र कहते हैं।
2. **राजनीतिक मानचित्र-** पृथिवी के सांस्कृतिक और राजनीतिक आधार पर विभाजित किये गये देश, नगरों अथवा गांवों एवं उनकी सीमाओं को दर्शाने वाले मानचित्र को राजनीतिक मानचित्र के रूप में जाना जाता है।
3. **थिमेटिक मानचित्र-** किसी विषय विशेष जैसे सड़क, फसल, वन, उद्योग, वर्षा आदि की स्थिति को दर्शाने वाले मानचित्र को थिमेटिक मानचित्र कहा जाता है।

मानचित्र अध्ययन का तरीका- मानचित्र के अध्ययन हेतु मुख्य रूप से निम्नलिखित बिन्दुओं को समझना आवश्यक है-

1. **शीर्षक-** यह मानचित्र के विषय के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जो यह दर्शाता है कि कोई मानचित्र विश्व अथवा विश्व के किसी विशेष भू–भाग से सम्बन्धित है। जैसे– प्रस्तुत मानचित्र संसार के महाद्वीपो का है। अतः आप शीर्षक के स्थान पर 'संसार महाद्वीप' लिखा हुआ देख सकते हैं।

2. **दिशा-** किसी भी मानचित्र के अध्ययन हेतु दिशा अति महत्त्वपूर्ण होती है। अतः दिशा को दर्शाने के लिए सामान्यतः मानचित्रों में ऊपर की ओर '↑TOP' चिन्ह की मदद से उत्तर दिशा को दर्शाया जाता है, जिससे पाठक को उचित **दिशा** ज्ञान प्राप्त हो सके। इसी क्रम में उत्तर दिशा के ठीक विपरित दक्षिण दिशा तथा बायीं ओर पश्चिम तथा दायीं ओर पूर्व दिशा चिह्नित की जाती है।
3. **प्रतीक एवं रूढ़ चिन्ह-** मानचित्र के किसी विशेष विषय, स्थिति एवं बिन्दुओं जैसे– परिवहन, रेल, नदी, मन्दिर आदि को दर्शाने के लिए पारम्परिक रूढ़ चिह्नों एवं प्रतीकों का उपयोग किया जाता है, जिसके द्वारा मानचित्र में उन क्षेत्रों को दर्शाया जाता है।

मानचित्र- 2.1, संसार

4. **मापक-** मानचित्र में धरातल की दूरी को अनुपात के माध्यम से लघु बनाकर मापक की सहायता से दर्शाया जाता है। उदाहरण- यदि किन्हीं 2 स्थानों की दूरी 50 किलोमीटर है तो ऐसी स्थिति में उनकी दूरी को 5 सेन्टीमीटर से दर्शाया जा सकता है।
5. **विभिन्न रङ्ग-** मानचित्रों में रङ्गों को का भी महत्त्व होता है। रङ्गों के माध्यम से अनेक स्थलाकृतियों को दर्शाया जाता है, जैसे- जल के लिए नीला, मैदानों के लिए हरा, पहाड़ों अथवा रेगिस्तानी भागों के लिए भूरे रङ्ग आदि का प्रयोग किया जाता है।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1. पृथिवी का आकार.....है।

   अ. त्रिभुजाकार ब. वर्गाकार स. गोलाकार द. आयताकार

2. वर्षा आदि की स्थिति को दर्शाने के लिए उपयोगी मानचित्र.....है।

   अ. भौतिक मानचित्र ब. थिमेटिक मानचित्र

   स. राजनीतिक मानचित्र द. उपर्युक्त सभी

3. कर्क रेखा..... स्थित है।

   अ. उत्तरीय गोलार्ध में ब. दक्षिणी गोलार्ध में

   स. पूर्वी गोलार्ध में द. पश्चिमी गोलार्ध में

4. विषुवत रेखा विश्व के ..... देशों से होकर गुजरती है।

   अ. 12 ब. 13 स. 10 द. 11

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. पृथिवी अपने अक्ष पर..... घूमती है। ($360^0/15^0$)
2. भारत का मानक समय .....है। ($82½^0$पू.दे./$82½^0$प.दे.)
3. सूर्य की परछायी दोपहर में ..... होती है। (सबसे छोटी/सबसे लम्बी)
4. पृथिवी के भौगोलिक स्वरूप का संक्षिप्त चित्रण माध्यम..... है। (मानचित्र/अक्षांश)

सत्य/असत्य चुनिए-

1. पृथिवी एक घण्टे में 30^0 अंश घूमती है। (सत्य/असत्य)
2. अगरतला का रेखांश 91.2868° पू. है। (सत्य/असत्य)
3. शीर्षक के द्वारा हमें मानचित्र के विषय की जानकारी नहीं प्राप्त होती है। (सत्य/असत्य)
4. लन्दन के ग्रीनविच का मान 0^0 देशान्तर है। (सत्य/असत्य)

सही जोड़ी मिलान कीजिए-

1. पृथिवी का स्वरूप	(क) आई.एस.टी
2. मानचित्र के प्रकार	(ख) 5½ घण्टे आगे
3. भारत का समय ग्रीनविच समय से	(ग) गोलाकार
4. भारतीय मानक समय को कहते है	(घ) तीन प्रकार

अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. अक्षांश किसे कहते हैं?
2. कर्करेखा कहाँ स्थित है?
3. उज्जैन का अक्षांश और रेखांश (देशान्तर) लिखिए?
4. मानचित्र की परिभाषा लिखिए?

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. मध्यप्रदेश में कर्करेखा किन जिलों से होकर गुजरती है नामोल्लेख कीजिए?
2. उष्णप्रदेश (कटिबन्ध) किसे कहते हैं?
3. देशान्तर रेखाओं को समझाइए?
4. मानचित्र के प्रकारों का उल्लेख कीजिए?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1. अक्षांश और देशान्तर रेखाओं का विस्तार से वर्णन कीजिए?
2. मानचित्र क्या है एवं उसके अध्ययन के तरीकों का उल्लेख कीजिए?

परियोजना कार्य-

1. छात्र भारत के मानचित्र में कर्करेखा जिन प्रदेशों से गुजरती है उनको दर्शायें?

अध्याय- 3

पृथिवी की गतियाँ एवं परिमण्डल

आइये जानें- पृथिवी की गतियाँ, अयन, लीप वर्ष, पृथिवी के प्रमुख परिमण्डल, वायुमण्डल, जलमण्डल, स्थलमण्डल और जैव मण्डल।

पृथिवी की गतियाँ- हम जानते हैं कि, सौरमण्डल के सभी ग्रह एवं उपग्रह अपने अक्ष पर परिभ्रमण (घूर्णन) करते हुए अपनी–अपनी कक्षा में सूर्य की परिक्रमा करते हैं। इसी सौरमण्डल में हमारी पृथिवी भी है, जो अपने अक्ष पर घूर्णन करते हुए, सूर्य की परिक्रमा कर रही है। **आयं गौः पृश्निरक्रमीत्** (यजु. 3.6)। यह नाना वर्णों वाली पृथिवी परिक्रमा (सूर्य की) करती है। प्रसिद्ध भारतीय खगोलशास्त्री आर्यभट्ट ने हजारों वर्ष पूर्व कहा था कि, पृथिवी गोल है और अपने अक्ष के परितः घूम रही है। पृथिवी की दो गतियाँ- परिभ्रमण एवं परिक्रमण हैं।

क्या आप जानते हैं-

- प्राचीन भारतीय खगोलशास्त्री आर्यभट्ट ने कहा था कि पृथिवी गोल है और अपने अक्ष पर घूमती है।

परिभ्रमण गति (दैनिक गति)- पृथिवी अपने अक्ष पर $23\frac{1}{2}^0$ डिग्री झुकी हुई है एवं एक घूर्णन लगभग 24 घण्टे में पूरा करती है। इसी गति के कारण पृथिवी पर दिन-रात होते हैं। पृथिवी के अक्ष एवं कक्षीय सतह के बीच $66\frac{1}{2}^0$ डिग्री का कोण बनता है। वह समतल क्षेत्र जो कक्ष द्वारा निर्मित होता है, उसे कक्षीय समतल कहते हैं। पृथिवी की आकृति गोले के सदृश्य है। अतः एक समय में इसके आधे भाग पर ही सूर्य का प्रकाश पड़ता है। सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित इस भाग में दिन जबकि दूसरे भाग में रात होती है। दिन और रात के इस विभाजन करने वाले वृत्त को प्रदीप्ति वृत्त कहते हैं।

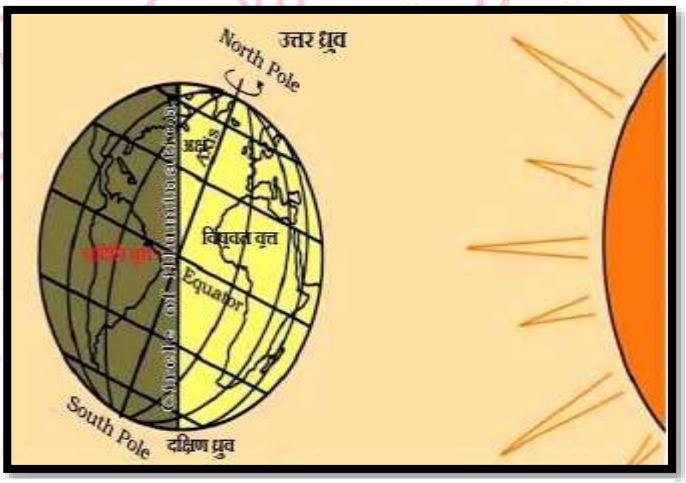

चित्र- 3.1, पृथिवी की परिभ्रमण गति

परिक्रमण गति (वार्षिक गति)- पृथिवी सूर्य की एक परिक्रमा 365 दिन 6 घण्टे ($365\frac{1}{4}^0$) दिवसों में पूर्ण करती है। पृथिवी की इसी गति के कारण पृथिवी पर ऋतु परिवर्तन होते हैं।

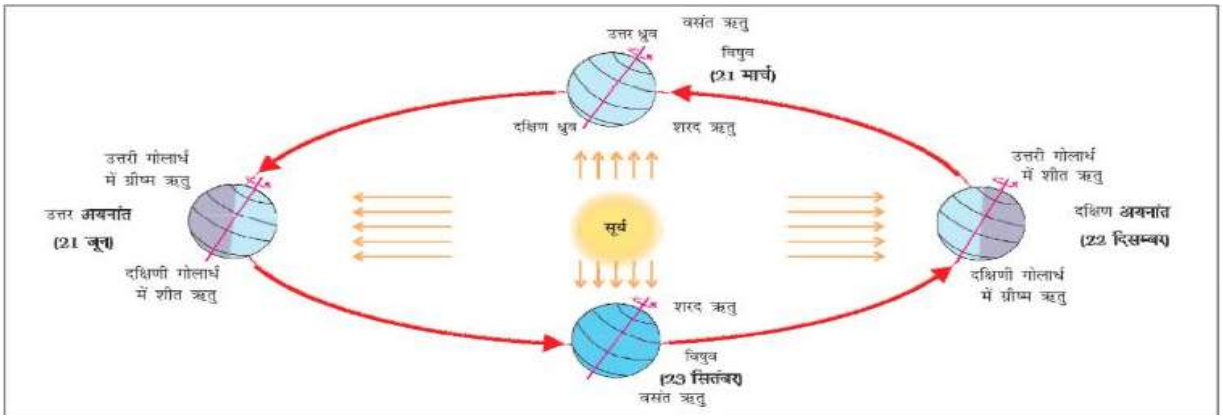

चित्र- 3.2, पृथिवी की परिक्रमण गति

अयन- पृथिवी सूर्य की परिक्रमा करती है। इसका झुकाव छ: महीने उत्तर की ओर और छ: माह दक्षिण की ओर होता है, इसे **अयन** कहा जाता है। अयन दो प्रकार के होते हैं- उत्तरायण और दक्षिणायन।

1. **उत्तरायण-** पृथिवी जब सूर्य के उत्तर दिशा में होती है तो उसे उत्तरायण कहा जाता है। 14 जनवरी से 21 जून तक उत्तरायण काल कहा जाता है।
2. **दक्षिणायन-** पृथिवी जब सूर्य के दक्षिण दिशा में होती है तो उसे दक्षिणायन कहा जाता है। सायन पद्धति में 21 जून से 22\23 दिसम्बर तक का काल दक्षिणायन कहलाता है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जब सूर्य मकरराशि से मिथुनराशि में भ्रमण करता है तो, उसे उत्तरायण कहा जाता है। जब सूर्य कर्कराशि से धनुराशि तक भ्रमण करता है तो, उसे दक्षिणायन कहते हैं। जब पृथिवी उत्तरायन में प्रवेश करती है, हमारे तीर्थ स्थलों जैसे- हरिद्वार, पुष्कर, प्रयाग तथा गङ्गासागर आदि में जप, तप, स्नान और व्रत आदि का महत्त्व बढ़ जाता है।

लीप वर्ष (अधि वर्ष)- प्रत्येक चौथे वर्ष (वह वर्ष जो चार से विभाजित हो) में 366 दिन होते हैं। इसे लीप वर्ष कहते हैं। आप जानते हैं कि पृथिवी सूर्य का चक्कर लगाने में 365 दिन और 6 घण्टे लगाती है। ऐसा होने से प्रत्येक चार वर्ष में एक दिन अधिक हो जाता है और फरवरी माह में एक दिन अधिक जोड़ने से 29 दिन हो जाते हैं।

पृथिवी के प्रमुख परिमण्डल- पृथिवी हमारे सौरमण्डल का एक मात्र ग्रह है, जहाँ जीवधारियों के जीवन धारण के लिए उपयुक्त वातावरण है। अतः सनातन संस्कृति में पृथिवी को माता का स्थान प्राप्त है- **माता**

भूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्याः (अथर्व. 12.1.12)। हम देखते हैं कि, इस पृथिवी पर समय-समय पर दिन-रात, ऋतु परिवर्तन आदि घटनाएँ होती हैं। जीवन के लिये आवश्यक तत्त्व- भूमि, जल तथा वायु हमारी पृथिवी पर जीवन के अनुकूल विविध रूपों में उपलब्ध हैं।

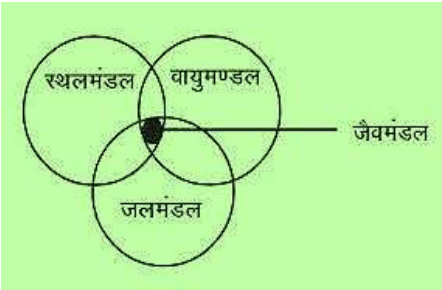

चित्र- 3.3, विविध परिमण्डल

पृथिवी की उत्पत्ति लगभग चार अरब वर्ष पूर्व माना जाता है। उत्पत्ति काल से आज तक पृथिवी पर अनेक परिवर्तन होते रहे हैं। पृथिवी का लगभग 29% भाग स्थल, 71% भाग जल से घिरा है। इनके (परि) चारों ओर वायु का (मण्डल) का आवरण है। अत: पृथिवी पर तीन प्रमुख परिमण्डल हैं-

1. **वायुमण्डल** (Atmosphere)
2. **जलमण्डल** (Hydrosphere)
3. **स्थलमण्डल** (Earthosphere)

आपस में मिलकर एक-दुसरे को प्रभावित करते हैं। इनके अतिरिक्त पृथिवी पर जल, वायु एवं स्थल भागों में विविध जीवों और उनकी प्रजातियों का निवास स्थल है, जिसे चौथा परिमण्डल अर्थात **जैवमण्डल** (Biosphere) कहते है, इसका क्षेत्र सीमित है।

1. **वायुमण्डल** (Atmosphere)- पृथिवी के चारों ओर व्याप्त गैसीय आवरण को **वायुमण्डल** (Atmosphere) कहते है। वायुमण्डल की संरचना मुख्य रूप से विभिन्न गैसों, जलवाष्प एवं धूल के कणों से निर्मित मानी गई है। यह सम्पूर्ण वायुमण्डल रूपी आवरण पृथिवी एवं उसके पर्यावरण के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वायुमण्डल का विस्तार 1600 किलोमीटर की ऊँचाई तक अनुमानित किया गया है।

ऋग्वेद में उल्लेख है कि- **बिभ्रद् द्रापि हिरण्ययं वरुणो वस्त निर्णिजम्।** (1.25.13), आशय है कि वायुमण्डल हमारी पृथिवी और हमारे लिए सुरक्षाकवच के रूप में कार्य करता है। एक अन्य मन्त्र में पृथिवी के चारों ओर एक मोटी परत होने का वर्णन प्राप्त होता है। सम्भवत: यह उल्लेख ओजोन परत के विषय में है। **महत्तदुल्बं स्थविरं तदासीद्येनाविष्टितः प्रविवेशिथः।** (ऋ.10.51.1), इस मन्त्र में **उल्ब** शब्द का तात्पर्य गर्भस्थ शिशु को चारों ओर से ढँकने वाली झिल्ली (Membrane) से है। पृथिवी के

समस्त जीवों को उसके गर्भस्थ शिशु की संज्ञा देते हुए, उसके रक्षार्थ एक महान् एवं स्थूल उल्ब (कवच) के बारे में चर्चा की गई है, जिसे हम आमतौर पर **ओजोन परत** के नाम से जानते हैं।

वायुमण्डल में सूर्य से आने वाली हानिकारक किरणों एवं अत्यधिक ऊष्मा को अवशोषित करने का कार्य ओजन परत करती है। रात्रि के समय, वायुमण्डल में ओजोन परत के कारण ही पृथिवी का तापमान तेजी से नहीं गिरता, क्योंकि वायुमण्डल ऊष्मा को संचित करके पृथिवी के तापमान को समुचित बनाए रखता है। वायुमण्डल के इस गुण को वेदों में **'हिरण्यदाः'** एवं **'शुक्रः'**(ऋ. 2/41/2) अर्थात् ऊष्मा का अवशोषक कहा गया है।

वायुमण्डल को पाँच भागों में विभाजित किया गया है- क्षोभ मण्डल, समताप मण्डल, ओजोन मण्डल, आयन मण्डल तथा बहिर्मण्डल। वायुमण्डल में नाइट्रोजन की मात्रा 78.03%, ऑक्सीजन की मात्रा 20.99% एवं शेष भाग में कार्बन डाईआक्साइड, हाइड्रोजन, हीलीयम नियोन, क्रिप्टॉन, ओजोन, जेनोन आदि गैसें पाई जाती है, वहीं जल वाष्प 0 से 5 प्रतिशत होता है।

वायुमण्डलीय दाब (Atmospheric Pressure)- वायुमण्डलीय दाब हमारे शरीर में रक्त परिसञ्चरण को नियन्त्रित करता है। यदि वायुमण्डलीय दाब न हो तो शरीर की धमनियाँ एवं शिराएँ फट जाएगी एवं मानव शरीर नष्ट हो जाएगा इसलिए हम देखते हैं कि पर्वत एवं ऊँचाई वाले स्थानों (High Altitudes) पर जाने से नासिका से रक्तस्राव (Nose Bleeding) की समस्या उत्पन्न हो जाती है। क्योंकि पर्वतों पर वायुमण्डलीय दाब, समतल मैदानों की अपेक्षा कम होता है। वायुमण्डल के द्वारा ही जलचक्र (Water Cycle) का निर्माण होता है एवं पृथिवी पर वर्षा होती है। इस सन्दर्भ में वेदों में कहा गया है कि- **त्वेषो अर्को नभ उत् पातयाथ।** (अथर्व. 4.15.5) अर्थात हे वायु! तुम सूर्य की ऊष्मा के द्वारा जलवाष्प को ऊपर आकाश में ले जाओ। **मरुद्भिः प्रच्युता मेघा वर्षन्तु पृथिवीमनु।** (अथर्व.4.15.5) अर्थात मरुद्गण से प्रेरित

चित्र- 3.4 वायुमण्डल

मेघ पृथिवी पर वर्षा करें। वायु में आयुष्यकारक एवं भेषज (औषधि) गुणों के होने का वर्णन किया गया है।

जलमण्डल (Hydrosphere)- पृथिवी के विस्तृत भू-भाग में जल पाया जाता है, जिसे जलमण्डल (Hydrosphere) कहते है। जलमण्डल अपनी विशिष्ट शक्तियों के कारण अति महत्त्वपूर्ण है। यह पृथिवी पर वाष्प, ठोस एवं तरल रूप में प्राप्त होता है। ग्लेशियर (पहाड़ों की बर्फ), सागर एवं नदियों में बहता जल तथा वायुमण्डल में व्याप्त आर्द्रता (नमी), जल के तीनों प्रकार (ठोस, तरल, वाष्प) के उदाहरण है। हमारे पृथिवी का दो तिहाई भाग महासागरों, नदियों, भू–गर्भ जल के रूप में घिरा हुआ है। इस पूर्ण जल राशि का लगभग 97% भाग समुद्रों के रूप में स्थित है, जो पीने योग्य नहीं है। अतः केवल 3% जल ही नदियों, तालाबों, कुँओं, भू–गर्भीय जल एवं वायुमण्डल में वाष्प के रूप में उपयोगी होता है। अतः जल संरक्षण के लिये यजुर्वेद में निर्देश किया गया है कि, **मा आपो हिंसीः।** (यजुर्वेद 6.22) अर्थात् जल की हिंसा अर्थात प्रदूषित मत करो। जल निर्माण की प्रक्रिया का उल्लेख ऋग्वेद में है- **मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्। धियं घृताची साधन्ता॥** (**ऋ.**1.2.7) **अर्थात**, मित्र (Oxygen) एवं वरुण (Hydrogen) के मिलने और उनके मध्य विद्युतीय तरङ्ग प्रवाहित होने से जल का निर्माण होता है।

पृथिवी पर जलमण्डल के तीन स्रोत-

1. **सतही जल-** पृथिवी की सतह पर प्राप्त होने वाला जल जैसे– नदियों, तालाबों, झीलों आदि जल राशियों को **सतही जल** कहा जाता है।
2. **समुद्री जल-** महासागरों में स्थित जल।
3. **भू-गर्भीय जल-** धरातल की सतह के नीचे पाए जाने वाले खाली स्थानों में संचित जल को भूगर्भीय जल कहा जाता है। भूगर्भीय जल के प्रमुख स्रोत कुएँ और नलकूप हैं।

वेदों में जल स्रोत के प्रकार एवं गुणों का अनेक स्थानों पर उल्लेख प्राप्त होता है। अथर्ववेद के उन्नीसवें काण्ड में 'आप:' (जल) सूक्त भी वर्णित है। **शं त आपो हैमवतीः शमु ते सन्तूत्स्याः। शं ते सनिष्यदा आपः शमु ते सन्तु वर्ष्याः॥ शं त आपो धन्वन्याः शं ते सन्त्वनूप्याः। शं ते खनित्रिमा आपः शं याः कुम्भेभिराभृताः॥** (अथर्व.19.2.1, 2) इस मन्त्र में आठ प्रकार के जलीय स्रोतों का वर्णन है- 1. हिम से प्राप्त जल 2. प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त जल 3. वर्षा का जल 4. आर्द्रप्रदेशीय जल 5. नदियों से

प्राप्त जल 6. मरुस्थलीय जल 7. कुएँ का जल 8. घड़े का जल। यह सभी जल सर्वथा शुद्ध, औषधितुल्य एवं सुखदायक कहे गए हैं। ऋग्वेद में समुद्र को सभी जलों का आश्रयदाता बताया गया है- **या आपो दिव्या उत्वा स्रवन्ति खनित्रिमा उत वा याः स्वयंजाः। समुद्रार्था याः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु॥** (ऋ.7.49.2) अर्थात् जो जल शुद्ध झरते हैं, खोदने पर या स्वयं ही उत्पन्न होते हैं, समुद्रार्थ हैं। पवित्र करने वाले वे देदीप्यमान जल तुम संसार के रक्षक हो। यजुर्वेद एवं अथर्ववेद में उल्लेख है- **समुद्राय शिशुमारानालभते पर्जन्याय मण्डूकानभ्द्यो मत्स्यान्मित्राय कुलीपयान्वरुणाय नाक्रान्॥** (यजु.24.21) एवं **यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः। यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत्सा नो भूमिः पूर्वपेये दधातु॥** (अथर्व.12.1.3) अर्थात् जिस पृथिवी में समुद्र, नदियाँ, जल एवं जिसमें कृषि तथा अन्न उत्पन्न होता है, जिसमें चेष्टायुक्त प्राण वाला जगत् तृप्त होता है तथा जहाँ (जिस स्थल पर) सबसे पहले फलदायी रस का पान हो सकता है, हे भूमि! उस स्थल में आप हमें स्थापित करें। ऋग्वेद में जल में निहित औषधीय गुणों की महिमा बताई गई है। **अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्निं च विश्वशम्भुवम्॥** (ऋ.10.1.6) अर्थात् कि जल में औषधीगुण एवं संसार के लिए सुखकर अग्नि भी है।

स्थलमण्डल (Earthosphere)- स्थलमण्डल पृथिवी का वह भाग है, जो सभी प्राणियों एवं वनस्पतियों को आधार एवं आश्रय प्रदान कर पोषण करता है। पृथिवी का यह भाग सबसे ठोस एवं स्थिर होता है। इस भाग में समतल मैदान, वन, स्थलाकृतियाँ, पहाड़, घाटियाँ, मरुस्थल, विभिन्न खनिज पदार्थ एवं धातुएँ पाई जाती है, जो पृथिवी के कुल क्षेत्रफल का 29% है। पृथिवी के स्थल-मण्डल की संरचना को मुख्यतः

चित्र- 3.5 स्थल मण्डल

तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है- भूपर्पटी (Crust), आवरण (Mantle) एवं केन्द्रीय भाग (Core)। अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त में उल्लेख है- **शिला भूमिरश्मा पांसु: सा भूमिः सन्धृता धृता। तस्यै हिरण्यवक्षसे पृथिव्या अकरं नमः॥** (अथर्व.12.1.26) अर्थात्, अन्नादि जीवन साधनों को उत्पन्न करने वाले भू-भागों को **सन्धृता** एवं जीवनोपयोगी वस्तुओं को प्रदान करने वाली **धृता** (भूमि)- पहाड़ी, दोमट, कङ्करीली, बलुई भेद से चार प्रकार की है। इस नाना रूप सुवर्णों की खान वाली पृथिवी को मैं नमन करता हूँ। **यस्यां वृक्षा वानस्पत्या ध्रुवास्तिष्ठन्ति विश्वहा। पृथिवीं विश्वधायसं धृतामच्छा वदामसि॥** (अथर्व.12.1.27) अर्थात् जिस पर पुष्प के बाद फल देने वाले वृक्ष निश्चित रूप से सभी दिन रहते हैं, उस आहार (अन्न) को उपजानेवाली पृथिवी को हम धृता नाम से जानते हैं। **शन्तिवा सुरभिः स्योना कीलालोध्नी पयस्वती। भूमिरधिब्रवीतु मेपृथिवी पयसा सह॥** (अथर्व.12.1.59) अर्थात् शान्तिदायिनी, गन्धवती, सुखप्रदा, बीजगर्भा, सजला, उपजाऊ एवं अन्तस्तत्त्व (रत्न, खनिज, धातु और खान आदि) से युक्त पृथिवी को मैं प्राप्त करूं। **निधिं बिभ्रती बहुधा गुहा वसु मणिं हिरण्यं पृथिवी ददातु मे। वसूनि नो वसुदा रासमाना देवी दधातु सुमनस्य माना॥** (अथर्व.12.1.44) अर्थात् अपने भीतरी हिस्से में नाना प्रकार के खानों को धारण करने वाली **पृथिवी** मुझे सर्वविध रत्नों से एवं सोने–चाँदी रूपी अकूप्य धन को प्रदान करें। प्रसन्नचित्त, धनदायिनी, दानोन्मुख, पृथिवी देवी रत्न एवं सोने–चाँदी के अतिरिक्त सब प्रकार के कूप्य धनों को भी मुझे प्रदान करें।

उपर्युक्त मन्त्रों में पृथिवी को ही सभी प्राणियों, वनस्पतियों एवं जीव-जन्तुओं का पोषणकर्त्री एवं आधार कहा गया है। साथ ही हम यह भी जानते है कि, पृथिवी की सबसे ऊपरी परत ह्यूमस (Humus) द्वारा ही स्थलमण्डल के सभी वनस्पतियों को पोषण प्राप्त होता है। इस परत के ऊपर सभी प्राणी एवं वन्यजीव निवास करते हैं तथा इसके नीचे बिल बनाकर एवं रेंगने वाले जीवों का निवास स्थान है। वेदों में उल्लेख है- **अनो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे। पृथिवीव्या: सप्त धामभिः॥ (ऋ.1.22.16)** इस मन्त्र में '**धामभिः**' का आशय परतों से है। पृथिवी की सात परतें हैं, जिनमें विष्णु विचक्रमण करते है। विचक्रमण का तात्पर्य पृथिवी के अन्दर गति एवं परिवर्तन से है। पृथिवी के धरातल पर ये परिवर्तन दो रूपों में देखे जाते हैं- '**आकस्मिक परिवर्तन**' एवं '**धीमी गति से होने वाले परिवर्तन।**' ये परिवर्तन पृथिवी

की आन्तरिक एवं वाह्य प्राकृतिक शक्तियों के कारण होते हैं। आंतरिक शक्तियों में भूकम्प और ज्वालामुखी प्रमुख हैं। बाह्य शक्तियों में वायु, जल, हिमानी और समुद्री लहरें हैं। इन शक्तिओं का प्रभाव पृथिवी के बाह्य धरातल पर भी पड़ा है, जिसके कारण पृथिवी का धरातल कहीं धँस गया, कहीं समतल रहा तथा कहीं असामान्य से भी अधिक ऊपर उठ गया है। पृथिवी पर धरातल के निरन्तर टूटने एवं बनने का प्रमुख कारण अपरदन एवं निक्षेपण कहलाता है। स्थलमण्डल के अनेक रूप दृष्टिगत होते है। वह प्राकृतिक प्रक्रिया, जिसमें चट्टानों के विखण्डन और उससे निकले पदार्थों का जल, पवन आदि द्वारा स्थानान्तरण की प्रक्रिया **अपरदन** (Erosion) कहलाता है। जब अपरदित कणों के एकत्र होने की प्रक्रिया **निक्षेपण** (Deposition) कहलाती है। यह प्रक्रिया चक्रीय रूप में चलती रहती है। पृथिवी के स्थल भाग को स्वरूप के आधार पर तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं-

क. पर्वत **ख.** पठार **ग.** मैदान।

क. पर्वत- पृथिवी के सतह की वह प्राकृतिक भू-आकृति, जिसका आधार विस्तृत एवं शिखर भाग लघु एवं सामान्य सतह से बहुत अधिक ऊपर उठा हुआ हो पर्वत कहलाता है। सतह से अधिक ऊँचाई होने के कारण, यहाँ शीत का प्राधान्य रहता है। ये पर्वत धरती पर श्रृङ्खला के रूप में दूर–दूर तक फैले होते है, जैसे- हिमालय, आल्पस एवं एण्डीज पर्वत आदि। पर्वतों को उनके निर्माण एवं बनावट के आधार पर तीन भागों में बाँटा गया है- 1. वलित पर्वत 2. भ्रंशोत्थ पर्वत 3. ज्वालामुखी पर्वत।

1. **वलित पर्वत** (fold mountains)- इन पर्वतों का आकार शङ्कु की भाँति एवं सतह ऊबड-खाबड़ होती है। हिमालय एवं आल्पस पर्वत, वलित पर्वत के श्रेष्ठ उदाहरण है। अरावली पर्वत श्रृङ्खला विश्व की सर्वाधिक पुरानी वलित पर्वत श्रृङ्खला है। अपरदन के कारण इस श्रृङ्खला के शिखर घिस गये हैं।

चित्र- 3.6, वलित पर्वत

2. **भ्रंशोत्थ पर्वत** (Block mountains)- इन पर्वतों का निर्माण, पृथिवी के ऊपरी सतहों में भ्रंशन के कारण भू-भाग के ऊपर उठने या बहुत बड़े खण्ड के टूटकर ऊर्ध्वाधर रूप में विस्थापित हो जाने से हुआ है। जो खण्ड ऊपर की ओर उठे होते हैं, उसे **उत्खण्ड** तथा जो नीचे की ओर दब गये उन खण्डों को **द्रोणिका भ्रंश** कहा जाता है। यूरोप की राइन घाटी और वॉसजेस पर्वत श्रृङ्खलाएं भ्रंशोत्थ पर्वत के अच्छे उदाहरण हैं।

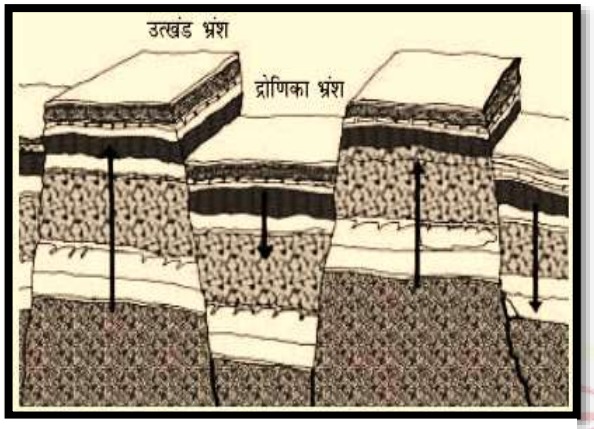

चित्र- 3.7, भ्रंशोत्थ पर्वत

3. **ज्वालामुखी पर्वत** (Volcanic mountains)- धरती की सतह पर मुख सदृश्य ऐसी दरारें, जहाँ से पृथिवी के अन्दर से लावा के रूप में गैस एवं राख आदि निकलकर स्थल पर शंकाकार रूप में जमा होकर स्थल भाग से काफी ऊंचे उठ जाते हैं, ऐसी आकृति को ज्वालामुखी पर्वत कहा जाता है। अफ्रीका का **किलिमञ्जरो** एवं जापान का **फ्यूजिमा** पर्वत ज्वालामुखी पर्वत है।

चित्र- 3.8, ज्वालामुखी पर्वत

पर्वतों का महत्व- पर्वत दो देशों के मध्य प्राकृतिक सीमा बनाने के साथ ही संसाधनों के संरक्षण का भी कार्य करते हैं। पर्वत विभिन्न नदियों के स्रोत भी हैं, अत: पर्वतीय क्षेत्र पनबिजली निर्माण में विशेष रूप से सहायक होते हैं। पर्वतों का शुद्ध जलवायु पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। यहाँ प्राकृतिक सौन्दर्य अधिक होने के कारण ये क्षेत्र यात्रियों के आकर्षण का केन्द्र होते हैं।

क्या आप जानते हैं-

- विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत शिखर माउन्ट एवरेस्ट (8848 मी.) है। एडमण्ड हिलेरी (न्यूजीलैंड) और तेनजिंग नौर्गे शेरपा (भारत) माउन्ट एवरेस्ट शिखर पर चढ़ने (1953 ई.) वाले प्रथम पर्वतारोही थे। माउन्ट एवरेस्ट पर पहुँचने (1984 ई.) वाली प्रथम भारतीय महिला बछेन्द्रीपाल थी।

ख. पठार (Plateau)- धरातल के ऐसे विशिष्ट रूप, जो सामान्य धरातल से पर्याप्त ऊँचाई लिए होते हैं साथ ही ऊपरी भाग चौड़ा और समतल हो **पठार** कहलाता हैं। पृथिवी के आन्तरिक हलचल या ज्वालामुखी क्रियाओं से पठार निर्मित होते हैं। इनकी ऊँचाई 100 मी. से हजारों मीटर तक होती है। ये

धरती के 33% भाग पर स्थित हैं। विश्व का सबसे ऊँचा **पामीर का पठार**, जिसे **दुनिया की छत** कहा जाता है। भारत में, छोटा नागपुर, हजारीबाग, राँची, कोडरमा, बुन्देलखण्ड, मेघालय तथा दक्कन का पठार प्रमुख हैं।

चित्र- 3.9, पठार

पठार के प्रकार- पठार मुख्यत: तीन प्रकार के होते हैं-

(अ) अन्तरपर्वतीय पठार (Inter-mountane plateau) (ब) महाद्वीपीय पठार (Continental plateau) (द) पर्वतीय पठार (Piedmont plateau)

पठार का महत्व- ये पठार विभिन्न खनिजों से समृद्ध, कृषि योग्य भूमि होने के कारण बहुउपयोगी हैं। पनबिजली उत्पादन के लिये पठारी क्षेत्र उपयुक्त होते हैं। इन क्षेत्रों से जानवरों के लिये आवश्यक चारे की प्राप्ति होती है।

ग. मैदान (Plain)- ऐसे भू-क्षेत्र, जो अपेक्षाकृत समतल और निम्न क्षेत्र वाले होते हैं **मैदान** कहलाते हैं। सामान्यतः समुद्रतल से लगभग 500 फीट की ऊँचाई तक स्थित होते हैं। सामान्यतः मैदानी क्षेत्रों का निर्माण नदियों द्वारा बहाकर लाई गई जलोढ़ मिट्टी से होता है। ये मैदानी क्षेत्र मानव निवास, कृषि आदि की दृष्टि से अति उपयुक्त होते हैं। जैसे भारत में गङ्गा एवं ब्रह्मपुत्र तथा चीन की याङ्गत्से नदी का मैदान।

चित्र- 3.10 मैदान

मैदानों के प्रकार- मैदान मुख्यत: तीन प्रकार के हैं- (अ) संरचनात्मक मैदान (Structural plains) (ब) अपरदनात्मक मैदान (Erosional plains) (स) निक्षेपात्मक मैदान (Depositional plains)

मैदानी क्षेत्रों का महत्व- मैदानी क्षेत्रों में समतल भूमि और उपजाऊ मृदा बहुतायत से प्राप्त होती है। इसी कारण मैदानी क्षेत्रों को विश्व का अन्नभण्डार कहा जाता है। इन क्षेत्रों में यातायात मार्गों के विस्तार एवं उद्योगों के विकास की सुविधा के कारण ये सभ्यता और संस्कृति के केन्द्र रहे।

भौगोलिक दृष्टि से पृथिवी की सतह को दो वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है-

i. महाद्वीप (Continent) ii. महासागर (Ocean)

i. **महाद्वीप** (Continent)- स्थल भाग को सात महाद्वीपों में विभाजित किया गया है एशिया, यूरोप, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथा अन्टार्कटिका महाद्वीप। इन महाद्वीपों में एशिया विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप है, जो पृथिवी के एक तिहाई भाग के पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है। कर्करेखा इसी महाद्वीप से गुजरती है। इस महाद्वीप के पश्चिम में यूराल पर्वत है जो यूरोप और एशिया महाद्वीप को विभाजित करता है। इन दोनों के संयुक्त भूभाग को **यूरेशिया** कहा जाता है। **यूरोप महाद्वीप**, एशिया के पश्चिम में स्थित है इसके समीप से आर्कटिक वृत्त होकर गुजरता है। यह महाद्वीप तीन तरफ से जल से घिरा हुआ है। **अफ्रीका महाद्वीप**, विश्व का दूसरा सबसे बड़ा महाद्वीप है। विषुवत् वृत्त इस महाद्वीप से होकर गुजरता है। इसका अधिकांश भाग उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है। कर्क, मकर, तथा विषुवत् तीनों रेखाएँ इस महाद्वीप से गुजरती है। **उत्तरी अमेरिका महाद्वीप**, विश्व का तीसरा सबसे बड़ा महाद्वीप है। यह पनामा स्थल संधि द्वारा दक्षिण अमेरिका से जुड़ा हुआ है। यह पृथिवी के उत्तर एवं पश्चिमी गोलार्द्ध में स्थित है। दक्षिण अमेरिका महाद्वीप का अधिकांश भाग पृथिवी के दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित है। विश्व की सबसे बड़ी एण्डीज पर्वत श्रंखला एवं अमेजन नदी इसी महाद्वीप में है। पृथिवी के दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित **आस्ट्रेलिया महाद्वीप**, विश्व का सबसे छोटा महाद्वीप है। चारों ओर से महासागरों एवं समुद्रों से घिरा होने के कारण इसे **द्वीपीय महाद्वीप** कहा जाता है। **अन्टार्कटिक महाद्वीप,** दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित है। पृथिवी का दक्षिण ध्रुव इसके मध्य में स्थित है। यह वर्ष भर बर्फ से ढका होता है। यहाँ मानव निवास

चित्र- 3.11 महाद्वीप एवं महासागर

नहीं है। यहाँ पर अनेक देशों के शोधकेन्द्र है। मैत्री तथा दक्षिण गंगोत्री के नाम से भारत के भी शोध संस्थान यहाँ है।

ii. **महासागर** (Ocean)- पृथिवी के 97% भाग पर महासागरीय जल है। महासागरों का जल सदैव गतिशील रहता है। इनकी मुख्यत: तीन गतियाँ होती हैं- 1. जल तरङ्गें 2. ज्वार-भाटा 3. महासागरीय धाराएँ। पृथिवी पर कुल पाँच महासागर है- 1. प्रशान्त महासागर 2. अटलांटिक महासागर 3. हिन्द महासागर 4. अण्टार्कटिक महासागर 5. आर्कटिक महासागर। विस्तार की दृष्टि से **प्रशान्त महासागर** पृथिवी के एक तिहाई भाग पर फैला है। यह वृत्ताकार है। मेरियाना गर्त (गहराई 11000 मीटर) इस महासागर का सबसे गहरा क्षेत्र है। प्रशान्त महासागर के चारों ओर एशिया, आस्ट्रेलिया, उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप स्थित हैं। **अटलांटिक** (अन्ध महासागर) विश्व का दूसरा विशाल महासागर है, जो संस्कृत भाषा के छन्दों में मात्रिक गणना के लिए प्रयोग किये जाने चिह्न- गुरु (s) के आकार का है। इसका तटीय क्षेत्र पत्तनों एवं पोताश्रयों के लिये आदर्श स्थिति होने के कारण यह व्यापारिक दृष्टि से व्यस्त महासागर है। **हिन्द महासागर** लगभग त्रिभुज की आकृति वाला है। इसके उत्तर में एशिया, पश्चिम में अफ्रीका तथा पूर्व में आस्ट्रेलिया महाद्वीप स्थित है। **अण्टार्कटिक महासागर** को ही दक्षिणी महासागर कहते हैं। यह अण्टार्कटिक महाद्वीप के उत्तर की ओर फैला है। **आर्कटिक महासागर** पृथिवी के उत्तरी ध्रुववृत्त में स्थित है तथा बेरिंग जलसन्धि द्वारा प्रशान्त महासागर से जुड़ा है।

जैव मण्डल- स्थल, जल और वायु आपस में मिलकर जीवन के उपयुक्त वातावरण का निर्माण करते हैं जैव मण्डल कहलाता है। इस मण्डल का क्षेत्र सीमित है। मानव सहित समस्त जीव आपस में तथा जैव मण्डल जुड़े हैं। इसके प्रमुख घटक हैं- जैविक, अजैविक और ऊर्जा हैं। पर्यावरण में कार्बन डाईआक्साइड गैस की वृद्धि के कारण धरती का तापमान निरन्तर बढ़ रहा है जिसे **भूमण्डलीय तापन** कहते हैं। अत: पर्यावरण में सन्तुलन के लिए प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता है।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न –

1. पृथिवी की सूर्य के चारों ओर की गति को.....कहा जाता है।

   अ. परिभ्रमण ब. परिक्रमण स. झुकाव द. उपर्युक्त सभी

2. ऋतुओं में परिवर्तन पृथिवी की ..... गति के कारण होता है।

   अ. परिभ्रमण ब. परिक्रमण

   स. गुरुत्वाकर्षण द. झुकाव

3. स्थलमण्डल पृथिवी के .....भाग पर विस्तृत है।

अ. 27%　　ब. 28%

स. 29%　　द. 30%

4. पृथिवी का .....वाला भाग ठोस चट्टानों से बना है?

अ. वायुमण्डल　　ब. जलमण्डल

स. स्थलमण्डल　　द. उपर्युक्त सभी

5. विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप.....है।

अ. दक्षिण अमेरिका　　ब. एशिया

स. यूरोप　　द. आस्ट्रेलिया

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. एक लीप वर्ष में दिनों की संख्या..... होती है। (365/366 दिन)
2. भूगर्भीय जल का प्रमुख स्रोत.....हैं। (कुएँ /महासागर)
3. वॉसजेस पर्वत श्रृङ्खला .....हैं। (भ्रंशोत्थ पर्वत/वलित पर्वत)
4. पृथिवी पर पेय जल की मात्रा..... है। (3%/7%)

सत्य/असत्य चुनियें –

1. पृथिवी के ऊपरी भाग में व्याप्त गैसीय आवरण को स्थलमण्डल कहते हैं। (सत्य/असत्य)
2. ज्वालामुखी पर्वत का निर्माण ज्वालामुखी से उत्सर्जित लावा से होता है। (सत्य/असत्य)
3. जापान का **फ्यूजिमा पर्वत** ज्वालामुखी पर्वत है। (सत्य/असत्य)
4. पामीर के पठार को **दुनिया की छत** कहा जाता है। (सत्य/असत्य)

सही जोड़ि मिलान कीजिए –

1.	ऑक्सीजन	क. अथर्ववेद
2.	पर्वत एवं पठार	ख. स्थलमण्डल
3.	ओजोन परत	ग. 21%
4.	माता भूमिः पुत्रो अहम् पृथिव्याः	घ. पराबैंगनी किरणें

अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. परिभ्रमण गति से क्या आशय है?
2. लीप वर्ष किसे कहते हैं?

3. वायुमण्डल की विभिन्न परतों के नाम लीखिए?
4. पृथिवी गोल है एवं वह अपने अक्ष पर घूमती है, किस खगोलशास्त्री का कथन है?
5. पृथिवी प्रमुख स्थल रूप कौन-कौन से हैं?

लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. वलित पर्वत किसे कहते हैं?
2. पृथिवी के प्रमुख स्थल रूपों के नाम लिखिए।
3. वेदों में उल्लेखित जल के विषय में प्रयुक्त दो मंत्रों को लिखिए।
4. पृथिवी की सतह के महत्त्वपूर्ण घटकों को समझाइए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

1. पृथिवी के मैदानी भाग का वर्णन कीजिए।
2. पर्वत किसे कहते है? उनके प्रकार को उदाहरण सहित समझाइए।

परियोजना कार्य –

1. छात्र,विश्व के मानचित्र से महाद्वीपों को अलग-अलग काट कर उन्हें बड़े से छोटे के आकार क्रम में अपनी उत्तर पुस्तिका पर चस्पा करें।

अध्याय- 4

भारत का भौगोलिक स्वरूप, वन एवं वन्यजीव

आइये जानें- भारत का भौगोलिक स्वरूप, भारत का राजनैतिक एवं प्रशासनिक विभाजन, जलवायु, ऋतुएँ, वनस्पतियाँ, वनों का महत्त्व, वन्यप्राणी।

भारत, पृथिवी के उत्तरी गोलार्ध में स्थित एशिया महाद्वीप का एक वैविध्यपूर्ण, विशाल देश है। यह भूभाग उत्तर में हिमालय, पश्चिम में अरब सागर, दक्षिण में हिन्द महासागर तथा पूर्व में बङ्गाल की खाड़ी से घिरा हुआ है। वैदिक वाङ्मय में भारत की भौगोलिक सीमा के उल्लेख करते हुए कहा गया है कि- **उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्। वर्षं तद् भारतं नाम, भारती यत्र सन्तति॥** (विष्णुपुराण 3.2.1) अर्थात् समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में जो भू-भाग स्थित है, उसका नाम भारत और उसकी संतति को भारतीय कहते हैं। प्राचीन काल से ही भारत को जम्बूद्वीप, भारत खण्ड, भारतवर्ष आदि नामों से जाना जाता रहा है। प्राचीन विवरणों के अनुसार महान सम्राट दुश्यन्त और उनकी पत्नी शकुन्तला के पुत्र भरत के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा। लगभग 3000 वर्ष पूर्व जब ईरानी (पर्शियन) सिन्धु नदी घाटी क्षेत्र में रहने वाले लोगों से जुड़े तो उन्होंने सिन्धुवासियों को हिन्दु कहा। जब यूनानी (ग्रीकवासी) भारत से जुड़े तो सिन्धु को इन्दु (Indu) कहा। मुस्लिम जब भारत आये तो भारतीय समाज में हिन्दू शब्द प्रचलित था। उन्होंने इस देश को हिन्दुस्थान (हिन्दुओं की भूमि) कहा। यूरोपियन जब आये तो हमारे देश को इंडिया और सनातन धर्म को हिन्दू धर्म कहा।

भारत का भौगोलिक स्वरूप- भौगोलिक दृष्टि से वे भूखण्ड, जो तीन ओर से जल के द्वारा घिरे होते हैं वे **प्रायद्वीप** कहलाते हैं। अतः भारत एक प्रायद्वीप और प्राकृतिक रूप से चतुर्दिशाओं से सुरक्षित भूभाग है। इसका क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह विश्व का सातवां तथा जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा बड़ा देश है। भारत, भूमध्य रेखा के उत्तर में $8^0 4'$ उत्तरी अक्षांश से 37^0 6′ उत्तरी अक्षांश तक तथा 68^0 7′ पूर्वी देशान्तर से 97^0 25′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। 23^0 30′ उत्तरी अक्षांश अर्थात् कर्क रेखा हमारे देश के लगभग मध्य से गुजरती है तथा इसे दो भागों में विभाजित करती है। भारत के स्थलीय भूभाग को भौगोलिक दृष्टि से- पर्वत, पठार, मैदान, तट एवं द्वीप

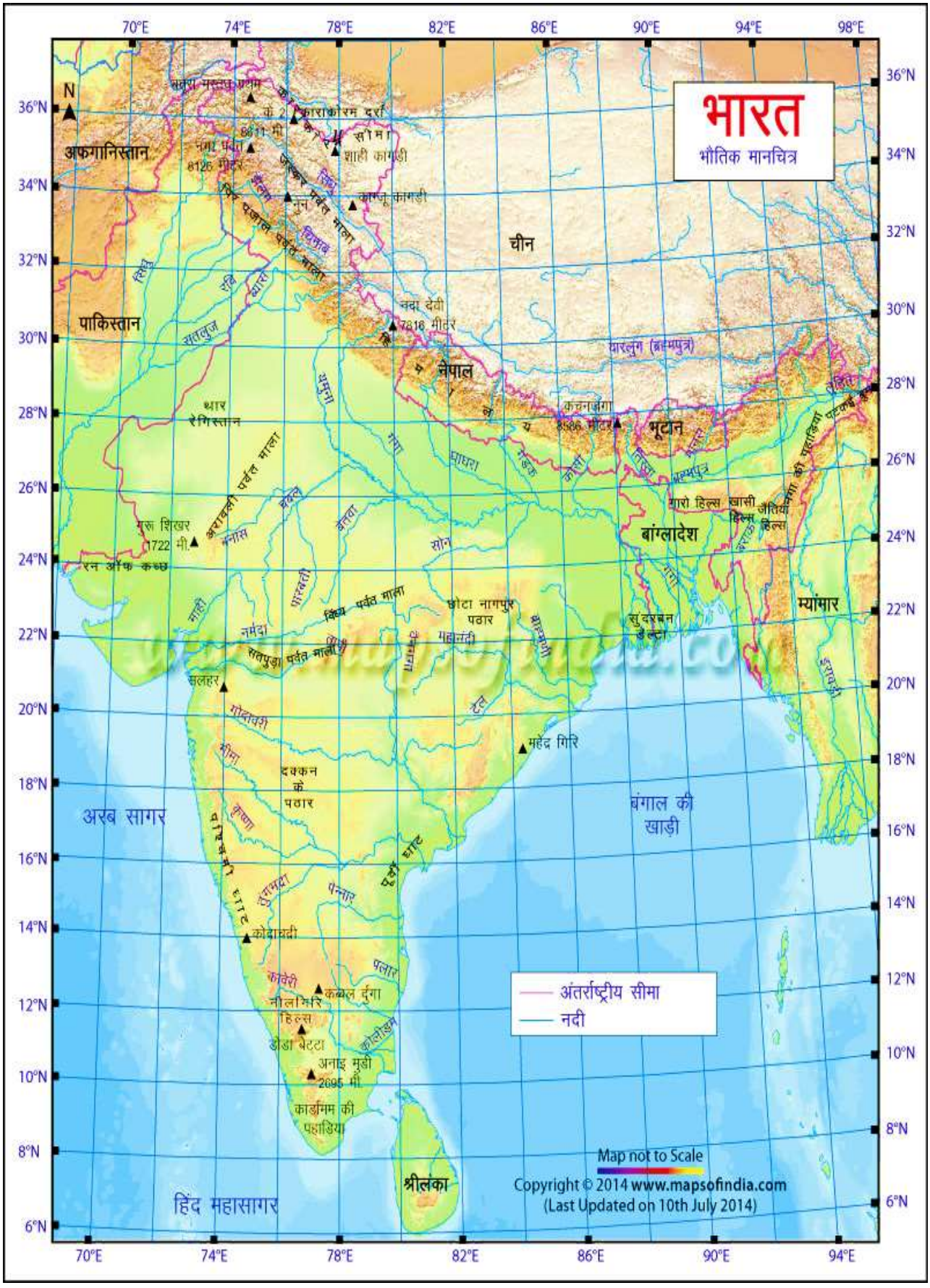

मानचित्र- 4.1 भारत का भौतिक मानचित्र

हिमाद्रि, हिमाचल एवं शिवालिक क्रमशः उत्तर से दक्षिण की ओर स्थित है। इन श्रृङ्खलाओं के दक्षिण में उत्तर भारत का मैदान, जो सिन्धु, गङ्गा, ब्रह्मपुत्र एवं इनकी सहायक नदियों द्वारा लाई गई जलोढ़ मिट्टी से बना है। पश्चिम में विविधताओं से युक्त मरुभूमि है। मैदानी क्षेत्रों के दक्षिण में विन्ध्य, सतपुड़ा इसी से जुड़ी उत्तर पश्चिम की ओर अरावली पर्वत श्रृङ्खला एवं विन्ध्य पर्वत श्रेणी के पूर्वी भाग में कैमूर की पहाड़ियाँ हैं। इनके दक्षिण में स्थित त्रिभुजाकार वाले प्रायद्वीपीय पठार हैं। इस पठार के पश्चिम में पश्चिमी घाट (सहयाद्रि) एवं पूर्व में पूर्वीघाट (ओडिसा से लेकर तमिलनाडु तक विस्तृत पर्वतीय क्षेत्र) स्थित है। ये क्षेत्र खनिजों की प्रचुरता से युक्त हैं। पूर्वी घाट के पूर्व में तथा पश्चिमी घाट के पश्चिम में तटीय मैदान स्थित हैं। पश्चिम के तटीय मैदान कुछ सङ्करे हैं। जबकि पूर्वी तटीय मैदान अपेक्षाकृत चौड़े हैं। यहाँ पश्चिम से पूर्व की ओर बहने वाली नदियाँ- महानदी, गोदावरी, कृष्णा तथा कावेरी है, जो बङ्गाल की खाड़ी सागर में समाहित हो जाती है। इन नदियों के मुँहाने पर उपजाऊ डेल्टा प्रदेश स्थित है। गङ्गा और ब्रह्मपुत्र नदियों के मुहाने (जहाँ से नदियाँ समुद्र में प्रवेश करती) हैं। ऐसा जल समूह जो तीन ओर से भू-खण्डों से घिरा हो **खाड़ी** कहलाता है, जैसे- बङ्गाल की खाड़ी, मैक्सिको की खाड़ी आदि। विंध्य एवं सतपुड़ा श्रृङ्खलाओं से नर्मदा एवं ताप्ती नदियाँ प्रवाहित होती हुई, जो अरब सागर में गिरती हैं। भारत के पूर्वोत्तर में छोटा नागपुर का पठार एवं पूर्वी पहाड़ियाँ भी भारत के भौगोलिक स्वरूप का अङ्ग हैं।

क्या आप जानते हैं-

- भारत की दूरी पूर्व में किबिथु (अरुणाचल प्रदेश) से पश्चिम में सरक्रीक (गुजरात) तक लगभग 2933 किलोमीटर तथा उत्तर में इंदिरा कोल (लद्दाख) से दक्षिण में इंदिरा पाइन्ट (तमिलनाडु) तक लगभग 3214 किलोमीटर है।

क्या आप जानते हैं-

- भारत की नई संसद निर्माण की आधारशिला 1 अक्टुबर 2020 को रखी गई थी। इसका निर्माण केन्द्रीय विस्टा पुनर्विकास परियोजना के अन्तर्गत किया जा रहा है। इसके वास्तुकार विमल पटेल हैं।

भारत के पड़ोसी देश- भारत के पड़ोसी देशों में पश्चिमोत्तर में पाकिस्तान, उत्तर-पश्चिम में अफगानिस्तान, उत्तर-पूर्व में चीन, नेपाल पूर्व में बांग्लादेश, म्यांमार, समुद्री सीमा के दक्षिण में श्रीलङ्का तथा दक्षिण-पश्चिम में मालदीव स्थित है।

भारत का राजनैतिक एवं प्रशासनिक विभाजन- भारत प्रशासनिक दृष्टि से 28 राज्यों एवं 8 केन्द्र शासित प्रदेशों में विभक्त है-

सारणी 4.1

राज्य एवं राजधानी

क्र	राज्य	राजधानी	क्र	राज्य	राजधानी	क्र	राज्य	राजधानी
1	असम	दिसपुर	10	त्रिपुरा	अगरतला	19	गोवा	पणजी
2	अरुणाचल प्रदेश	इटानगर	11	नागालैंड	कोहिमा	20	छत्तीसगढ़	रायपुर
3	उत्तर प्रदेश	लखनऊ	12	पश्चिम बङ्गाल	कोलकाता	21	झारखण्ड	रांची
4	ओडिशा	भुवनेश्वर	13	पञ्जाब	चंडीगढ़	22	तमिलनाडु	चेन्नई
5	उत्तराखण्ड	देहरादून	14	बिहार	पटना	23	तेलंगाना	हैदराबाद
6	आन्ध्रप्रदेश	अमरावती	15	मणिपुर	इम्फाल	24	मेघालय	शिलांग
7	कर्नाटक	बंगलोर	16	मध्य प्रदेश	भोपाल	25	राजस्थान	जयपुर
8	केरल	तिरुवनंतपुरम	17	महाराष्ट्र	मुंबई	26	सिक्किम	गंगटोक
9	गुजरात	गांधीनगर	18	मिजोरम	आइजोल	27	हरियाणा	चंडीगढ़
						28	हिमाचल प्रदेश	शिमला

सारणी 4.2

केन्द्र शासित क्षेत्र

क्र	केन्द्र शासित क्षेत्र	राजधानी	क्र	केन्द्र शासित क्षेत्र	राजधानी
1	चंडीगढ़	चंडीगढ़	5	दिल्ली	दिल्ली
2	दादरा और नागर हवेली एवं दमन और दीव	दमन	6	अण्डमान व निकोबार द्वीपसमूह	पोर्ट ब्लेयर
3	पॉन्डिचेरी	पुडुचेरी	7	जम्मू कश्मीर	श्रीनगर एवं जम्मू
4	लक्षद्वीप	कवरत्ती	8	लद्दाख	लेह

जलवायु- वायुमण्डल में दिन प्रतिदिन होने वाले परिवर्तन को **मौसम** कहते हैं। तापमान, वर्षा तथा सूर्य का विकिरण आदि इसके प्रमुख तत्त्व हैं। मौसम की दीर्घकालिक औसत दशाओं को **जलवायु** कहते हैं। विशिष्ट भू-मण्डलीय परिवेश के कारण भारत की जलवायु विविधता से युक्त है। यहाँ साइबेरिया की भाँति बर्फीले एवं शीतक्षेत्र हैं, तो अफ्रीकी जङ्गलों के समान गर्मी वाले स्थान भी हैं। सर्वाधिक वर्षा वाले क्षेत्र है, तो कम वर्षा वाले मरुस्थलीय, रेतीले एवं पर्वतीय क्षेत्र भी हैं। इस जलवायुवीय विविधता के कारण जैविक, वानस्पतिक एवं समृद्ध वन सम्पदा, यहाँ के लोगों को प्राकृतिक विरासत के रूप में प्राप्त

है। भारत उष्णकटिबन्धीय मानसूनी जलवायु वाला देश है। भारत की जलवायु को **मौसमी** या **मानसूनी जलवायु** कहा जाता है।

ऋतुएँ- भारतीय मौसम विज्ञान विभाग द्वारा भारत की ऋतुओं को चार वर्गों में वर्गीकृत किया गया है-

1. **शरद ऋतु-** उत्तर भारत में अक्टूबर एवं नवम्बर माह में मौसम साफ और शान्त रहता है तथा वातावरण में शीत का प्रवेश होता है।
2. **शीत ऋतु-** इस ऋतु का समय दिसम्बर से मार्च है। इस काल में तापमान गिर जाता है।
3. **ग्रीष्म ऋतु-** इस ऋतु का समय अप्रैल से जून तक का होता है। इस काल में औसत तापमान 32-40 डिग्री सेल्सियस तक होता है।
4. **वर्षा ऋतु-** जुलाई से सितम्बर तक का समय वर्षा ऋतु का होता है। सर्वाधिक वर्षा अगस्त माह में होती है। कृषि प्रधान देश भारत में कृषि का आधार मानसून अर्थात् वर्षा है। वर्षा पर्याप्त होगी तो फसलों का उत्पादन भी अच्छा होगा।

ऋग्वेद के अनेक मंत्रों में **ऋतुपा** और **ऋतापा** का शब्द का प्रयोग हुआ है, जिसका अर्थ ऋतुओं से है। **पूर्वामनु प्रदिशं पार्थिवानाम्तुन्प्रशासत।** (ऋग्वेद 1.95.3) तथा **उत्संहायास्थाद्यतूर ररमतिः सविता देव आवाग्।** (ऋग्वेद, 2.38.4) मंत्रों में संकेत है कि ऋतुओं का अधिष्ठाता सूर्य है। भारतीय परम्परानुसार छः ऋतुएँ मानी गई हैं- बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर।

चित्र- 4.2 प्राकृतिक वनस्पति मानचित्र

वनस्पतियाँ- हम अपने चारों ओर विभिन्न प्रकार की घास, लताएं, पौधों एवं वृक्षों को देखते हैं। इन्हें ही वनस्पति कहा जाता है। कुछ वनस्पतियाँ ऐसी हैं, जिन्हें मनुष्य उगाता है, जो कृषि वनस्पतियाँ कहलाती हैं। जो वनस्पतियाँ स्वतः ही मिट्टी, जल और वायु से

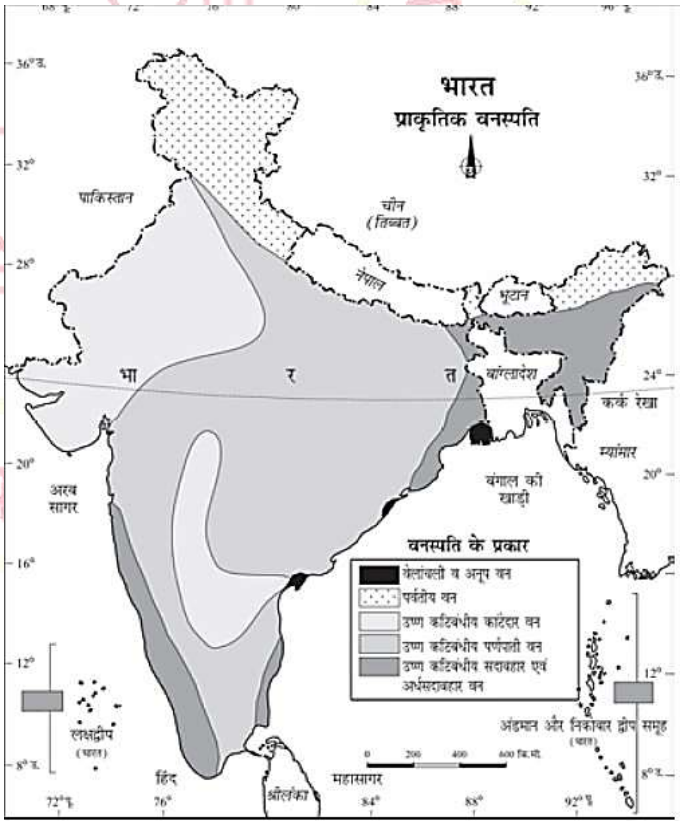

पोषित होकर उपजती हैं वे प्राकृतिक या जङ्गली वनस्पतियाँ कहलाती हैं। वनस्पतियों को वैदिक वाङ्मय में औषधीय गुणों से युक्त बताया गया है- **याः फलिनीर्या अफला, अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।** (ऋ.10.97.15) अर्थात् औषधियाँ फलयुक्त एवं फलरहित, पुष्पयुक्त एवं पुष्परहित होती है। इन औषधियों के अनेक भेद बताते हुए कहा गया है की **शतं वो अम्ब धामानि, सहस्त्रमुत वो रुहः।** (ऋ.10.97.2) अर्थात- हे ओषधियों! तुम्हारे सहस्त्रों जन्मस्थान एवं भेद हैं। **अन्तरिक्ष आसां स्थाम।** (अथर्व.1.32.2) अर्थात् औषधियों का स्थान अन्तरिक्ष भी है। जलवायु की विविधता के आधार पर प्राकृतिक वनस्पतियों को मुख्यतः पाँच भागों में विभाजित जाता है-

1. **उष्णकटिबन्धीय वर्षा वन-** ये वन भूमध्य रेखा के उत्तर एवं दक्षिण में उष्ण कटिबन्धों में पाये जाते हैं। ये वन गर्म एवं भारी वर्षा वाले क्षेत्र में होने के कारण उन्हें सदाबहार वन भी कहलाते हैं। भारत में ऐसे वन पूर्वोत्तर क्षेत्रों, पश्चिमी घाट, अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह में पाये जाते हैं। इन वनों में शीशम, आबनूस, मोहगनी बहुतायत से पाए जाते हैं।
2. **उष्णदेशीय पतझड़ वन-** ये वर्षाकालिक वन हैं, जो भारत के अधिकांश भागों में सुलभता से पाए जाते हैं। बसन्त ऋतु में इनकी पत्तियाँ गिर जाती हैं। साल, सागौन, नीम, शीशम जैसी इमारती लकड़ियों वाले वृक्ष इन वनों में पाये जाते हैं। भारत में ये वन मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार झारखण्ड, छत्तीसगढ़ आदि भागों में पाए जाते हैं।
3. **रेगिस्तानी अर्धशुष्क वनस्पतियाँ-** इस प्रकार की वनस्पतियाँ 50 से.मी से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में पाई जाती हैं। कैक्टस, खैर, बबूल एवं अन्य कटीली झाडियाँ बहुतायत से ऐसे क्षेत्रों में पाई जाती हैं। भारत का पश्चिमी राजस्थान, उत्तरी गुजरात ऐसे वनों के मुख्य क्षेत्र हैं।
4. **पर्वतीय वनस्पतियाँ-** ये वनस्पतियाँ प्रायः पर्वतीय क्षेत्रों में ऊँचाई पर पायी जाती हैं। ऊँचे क्षेत्रों में प्राय: तापमान कम होता है। 1500 से 2500 मीटर की ऊँचाई पर पाये जाने वाले वृक्ष शंकुधारी होते हैं। चीड़, ताड़, देवदारु, पाईन आदि वनस्पतियाँ इन जङ्गलों में पाई जाती हैं। भारत में ये वन प्राय: उच्च हिमालयी क्षेत्रों में पाये जाते हैं।
5. **मैंग्रोव वन-** ऐसी वनस्पतियाँ खारे पानी में भी जीवित रहती हैं। भारत में पश्चिम बङ्गाल का सुन्दर वन तथा अण्डमान और निकोबार के द्वीप समूहों में मैंग्रोव वन पाये जाते हैं। सुन्दरी ऐसे वनों की मुख्य प्रजाति है।

वनों का महत्त्व- प्राचीनकाल में हमारे ऋषियों ने वनों एवं वृक्षों की उपादेयता को समझा था। इसीलिए वृक्षों की तुलना संतानों से की है। वर्तमान वैज्ञानिक अनुसन्धानों व खोजों में सिद्ध हुआ है कि वृक्षों में

भी जीवन होता है। **महाभारत** के शान्ति पर्व में भृगु और भारद्वाज संवाद में वर्णन है कि- **सुख दु:खयोश्च ग्रहणाच्छिन्नस्य च विरोहणात्। जीवं पश्यामि वृक्षाणामचैतन्यं न विद्यते॥** अर्थात, वृक्षों को सुख-दुख का एहसास होता है, उनमें भी वृद्धि और विकास होता है। अत: यह स्पष्ट है कि वृक्षों में जीव होता है, वे अचेतन नहीं हैं। आधुनिक युग में इस सिद्दान्त का प्रतिपादन महान वनस्पति शास्त्री **जगदीश चन्द्र बसु** ने किया। उन्होंने वृक्षों की वृद्धि नापने के लिए **कैस्कोग्राफी** नामक यन्त्र का आविष्कार किया था।

वन हमारे पर्यावरण को शुद्ध, स्वस्थ और मृदा-अपरदन को रोकने में भी सहायक हैं। ये वन्यजीवों के प्राकृतिक आवास हैं। वनों से हमें इमारती लकड़ियाँ, ईंधन, चारा, औषधीय जड़ी-बूटियाँ आदि प्राप्त होती हैं। अतः वन एवं वनस्पतियाँ हमारे मित्र हैं। इनकी सुरक्षा एवं संरक्षा करना अति आवश्यक है।

वन्यप्राणी- वनों में रहने वाले जीवों को **वन्यप्राणी** कहते हैं। आदिकाल से ही वन विविध जीवों के प्राकृतिक आवास रहे हैं। भारत की ऋषि परम्परा का अधिकतम् उत्थान, ज्ञान, विज्ञान, आध्यात्म, दर्शन आदि का शोध एवं अन्वेषण वनों में ही हुआ। हमारे आरण्यक ग्रन्थ इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं। आज भी जनजातीय लोग जङ्गलों में ही निवास करते हैं। भारतीय वनों में विविध प्रकार के जीवों एवं उनकी अनेकानेक प्रजातियाँ बड़ी संख्या में रहती हैं। ये सभी वन्यजीव हमारे पारितन्त्र का अंग हैं। **पारितन्त्र, एक प्राकृतिक इकाई है, जिसमें एक क्षेत्र विशेष के सभी जीवधारी, पौधे, पशु-पक्षी और सूक्ष्म जीव भी शामिल हैं।** वन्यजीवों की श्रृङ्खला अति विस्तृत है। शेर, बाघ, हाथी, लोमड़ी, सियार, लकड़बग्घा, खरगोश, हिरण, चीतल, बारह सिंघा, जङ्गली सूअर, भालू, बन्दर, आदि प्रमुख वन्य जीव हैं।

क्या आप जानते हैं-

- भारतीय चीता की विलुप्त (1952 ई.) प्रजाति को कुनो नेशनल पार्क, श्योपुर (मध्यप्रदेश) में पुनर्वासित (17 सितम्बर 2022) किया गया है। इन चीतों को नामीबिया से भारत में जैव विविधता को संरक्षित करने के लाया गया है।

हमारा राष्ट्रीय पशु **बाघ** है, जो पश्चिमबङ्गाल, मध्यप्रदेश, राजस्थान आदि राज्यों में पाया जाता है। एशियाई शेर गुजरात के **गिरवन** में रहते हैं। असम के जङ्गलों में एक सीङ्ग वाले गैंडे एवं हाथी बहुतायत में पाये जाते हैं। भारत के मरुस्थलीय क्षेत्रों में ऊँट, कच्छ के रण में जङ्गली गधे, हिमालय क्षेत्र में जङ्गली बकरी, हिम तेन्दुआ, सफेद भालू, सफेद बन्दर आदि पाये जाते हैं। इसी भाँति नभचर जीवों का भी भारत में आधिक्य है। **मोर** हमारा राष्ट्रीय पक्षी है। विभिन्न प्रकार के पक्षी एवं उनकी विभिन्न प्रजातियाँ भारत में पाई जाती हैं। पक्षियों के संरक्षण एवं प्राकृतिक निवास के लिए देश भर में अनेक राष्ट्रीय पक्षी उद्यान हैं।

भारत सरकार ने वन्य जीवों के संरक्षण हेतु **भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम** 1972 पारित किया था। जिसका उद्देश्य अवैध शिकार तथा वन्य जीवों के हाड़-माँस एवं खाल के व्यापार पर रोक लगाना है। 2003 में **भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम-2002** पारित हुआ, जिसमें दण्ड एवं जुर्माने को कठोर बनाया गया। इसके अतिरिक्त भारत सरकार द्वारा बाघों के संरक्षण के लिए 7 अप्रैल 1972 में बाघ परियोजना एवं हाथियों के संरक्षण के लिए सन् 1992 में हस्ति परियोजना प्रारम्भ किया। प्रत्येक वर्ष अक्टूबर माह के प्रथम सप्ताह को **वन्य जीव सप्ताह** के रूप में मनाया जाता हैं। इसका उद्देश्य वन्य जीवों एवं उनके निवास को संरक्षित करने के लिए जनजागरुकता लाना है।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1. **उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्। वर्षं तद् भारतं नाम, भारती यत्र सन्तति॥** यह श्लोक.....उल्लेखित है।
   अ. विष्णुपुराण ब. मत्सपुराण स. महाभारत द. रामायण
2. भारत का क्षेत्रफल.....है।
   अ. 32,87,263 वर्ग किमी. ब. 32,88,263वर्ग किमी.
   स. 33,87,263वर्ग किमी. द. 33,88,263वर्ग किमी.
3. भारत के पश्चिम के पड़ोसी देश..... हैं।
   अ. चीन, नेपाल ब. पाकिस्तान, अफगानिस्तान
   स. म्यांमार, बांगलादेश द. श्रीलंका
4. शरद ऋतु का समय.....रहता है।
   अ. मार्च-अप्रैल ब. जुलाई-अगस्त
   स. अक्टूबर-नवम्बर द. नवम्बर-दिसम्बर

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. वे भूखण्ड जो तीन ओर जल से घिरे होते हैं .....कहालाते है। (द्वीप/प्रायद्वीप)
2. ..... ऋतु का समय अप्रैल से जून तक होता है। (शीत/ग्रीष्म)
3. **"सुख दु:खयोश्च ग्रहणाच्छिन्नस्य च विरोहणात्। जीवं पश्यामि वृक्षाणामचैतन्यं न विद्यते॥"** यह श्लोक ..... है (शान्तिपर्व/आदिपर्व)
4. .....ग्रन्थ वन एवं ऋषि परम्परा का श्रेष्ठ उदाहरण है। (आरण्यक/उपनिषद्)

सत्य/असत्य चुनिए-

1. वनों का हमारी संस्कृतियों में विशेष योगदान है। (सत्य/असत्य)

2. मैंग्रोव वनस्पतियाँ समुद्री तट एवं डेल्टा प्रदेशों में पाई जाती हैं। (सत्य/असत्य)

3. भारत में राज्यों की संख्या 28 हैं। (सत्य/असत्य)

4. भारत में 8 केन्द्र शासित राज्य हैं। (सत्य/असत्य)

सही जोड़ी मिलान कीजिए –

1. असम	क. लेह
2. लद्दाख	ख. लखनऊ
3. जम्मू कश्मीर	ग. दिसपुर
4. उत्तर प्रदेश	घ. श्रीनगर एवं जम्मू

अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. खाड़ी किसे कहते हैं?
2. जलवायु किसे कहते हैं?
3. मौसम विज्ञान विभाग ने भारत में कितनी ऋतुएँ बताई है?
4. वनस्पतियाँ किसे कहते हैं?
5. पारितन्त्र किसे कहते हैं?

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. भारत के पड़ोसी देशों के नाम लिखिए।
2. उष्णकटिबन्धीय वर्षा वन को बताइए।
3. वन्यप्राणी से आप क्या समझते हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1. भारत के भौतिक स्वरुप को समझाइए।
2. वनों के प्रकारों की विस्तृत व्याख्या कीजिए।
3. वनों के महत्त्व को समझाइए।

परियोजना कार्य-

1. छात्र, भारत के मानचित्र में वनों के वितरण को दर्शाइए।

वेदभूषण प्रथम वर्ष

इतिहास

अध्याय- 5

इतिहास: आधार एवं प्रमाण

आइये जानें- इतिहास का अर्थ, इतिहास अध्ययन क्यों आवश्यक हैं ? इतिहास ज्ञान के स्त्रोत, पुरातात्विक स्त्रोत, साहित्यिक स्त्रोत, विदेशी यात्रियों के विवरण, इतिहास और

इतिहास का अर्थ- व्यक्ति, समाज एवं देश की महत्वपूर्ण सार्वजनिक तथा विशिष्ट क्षेत्रों की काल विशेष में घटित घटनाओं का कालक्रम अनुसार तथ्यगत विवेचन इतिहास का मुख्य प्रतिपाद्य विषय है। आँग्ल भाषा में इसे History कहते हैं। इतिहास शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के तीन शब्दों– **इति+ ह+आस** से मिलकर हुई है, जिसका अर्थ- **ऐसा निश्चय ही था,** है। इतिहास विषय के अन्तर्गत मानव के विकास क्रम में व्यक्ति, परिवार, वंश, कबीला, राजवंश, समाज, राज्य, साम्राज्य, राष्ट्र साथ ही विश्व भर में बीते हुए समय में घटित घटनाओं एवं सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं आर्थिक गतिविधियों का क्रमबद्ध एवं वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। अत: सामाजिक विज्ञान का उद्गमस्थल इतिहास है।

इतिहास अध्ययन क्यों आवश्यक हैं ? किसी भी राष्ट्र को सजीव, उन्नतिशील तथा गतिशील बनाये रखने के लिए उस राष्ट्र के इतिहास का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। इतिहास अध्ययन के निम्न कारण हैं-

- इतिहास अध्ययन में मानव प्रकृति के विभिन्न आयामों एवं पक्षों से अवगत कराया जाता है।
- इतिहास के अध्ययन से हमें मानव एवं मानव सभ्यता के क्रमिक विकास का ज्ञान होता है।
- इतिहास के अध्ययन से हमें किसी राष्ट्र के उत्थान के साथ-साथ उसके पतन की परिस्थितियों की जानकारी प्राप्त होती है।
- इतिहास का अध्ययन हमें अपने अतीत को समझने में सहयोग करता है, ताकि हम एक बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकें।
- इतिहास के अध्ययन से हमें मानव जाति के संघर्ष, सफलता तथा उसके व्यवहार के बारे में पता चलता है, जो हमारे बौद्धिक विकास के लिए आवश्यक है।
- इतिहास से हमें यह जानकारी प्राप्त होती है कि जिस दुनिया को आज हम देख रहे हैं, उसका पूर्व स्वरूप कैसा था? और अपने वर्तमान स्वरूप में वह कैसे हमारे सामने आया?

इतिहास ज्ञान के प्रमुख स्त्रोत- इतिहास अध्ययन के स्त्रोतों को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है-

(क) पुरातात्विक स्रोत (ख) साहित्यिक स्रोत (ग) विदेशी यात्रियों के विवरण

(क) पुरातात्विक स्रोत (Archaeo-logical source)- इतिहास अध्ययन में पुरातात्विक स्रोतों के अन्तर्गत मुख्यत: अभिलेख, सिक्के, स्मारक, चित्रकला, मोहरें एवं उत्खनन से प्राप्त अन्य सामग्रियाँ हैं। इनकी सहायता से हमें प्राचीन मानवीय गतिविधियों की सटीक जानकारी प्राप्त होती है। इनमें अधिकांश स्रोतों का वैज्ञानिक सत्यापन किया जा सकता है। पुरातात्विक अन्वेषकों को **पुरातत्त्वविद्** कहा जाता है। पुरातात्विक कार्यों के लिये 1861 ई. में **भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण** (Archaeological Survey of India) की स्थापना दिल्ली में की गई। अलेक्जेण्डर कनिंघम को यहाँ का प्रथम पुरातत्त्व निरीक्षक नियुक्त किया गया।

सारणी 5.1

भारतीय इतिहास अध्ययन के स्रोत

पुरातात्विक	भारतीय साहित्य	विदेशी साहित्य
पाण्डुलिपि	जैन साहित्य	यूनानी
सिक्के	बौद्ध साहित्य	रोमन
स्मारक	लौकिक साहित्य	चीनी और अरबी

चित्र- 5.1 शिलालेख

1. **अभिलेख** (Record)- भारतीय इतिहास के अध्ययन की दृष्टि से अभिलेख महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्रोत हैं। ये कठोर सतहों जैसे पत्थरों, स्तम्भों, धातु एवं मिट्टी की पट्टियों पर उत्कीर्ण किए गए प्राप्त हुए हैं, जैसे- सम्राट अशोक के अभिलेख, हाथी गुम्फा अभिलेख, प्रयाग स्तम्भ अभिलेख आदि।

2. **पाण्डुलिपि** (Manuscript)- अतीत के बारे में जानने का एक प्रमुख स्रोत पाण्डुलिपियाँ हैं। हस्तलिखित पुस्तकों को पाण्डुलिपि कहा जाता है। प्राचीन पाण्डुलिपियाँ प्राय: ताड़पात्रों, भोजपत्रों पर लिखी प्राप्त होती हैं। भारत में पाण्डुलिपि लेखन की परम्परा प्राचीन काल से ही रही है। लम्बे समय एवं उचित रखरखाव न होने के कारण अनेक पाण्डुलिपियाँ नष्ट हो गई हैं। परन्तु कई पाण्डुलिपियाँ आज भी हैं, जो प्राय: संस्कृत, प्राकृत एवं तमिल आदि भाषाओं में मिलती हैं।

3. **सिक्के** (Coins)- ऐतिहासिक अध्ययन की दृष्टि से प्राचीनकाल में प्रचलित मुद्राओं का विशिष्ट महत्व है। ये मुद्रायें सोना, चाँदी, ताँबा इत्यादि मूल्यवान धातुओं से निर्मित होती थीं। इन मुद्राओं में विशेष प्रकार के चिन्ह पाये गये हैं। इन सिक्कों में तिथियाँ, देवता एवं राजा के चित्र अंकित होते हैं।

चित्र- 5.2 गुप्तकालीन सिक्के

4. **स्मारक** (Memorial)- भारतीय इतिहास के अध्ययन में स्मारकों का महत्वपूर्ण स्थान है। स्मारकों की श्रेणी में विशेष रूप से प्राचीन मन्दिरों, मूर्तियों, स्तूपों, चित्रकलाओं और मृद्भाण्डों को रखा गया है। प्रमुख स्मारकों में हड़प्पा, मोहन जोदड़ो, नालन्दा, हस्तिनापुर, कम्बोडिया का अंगकोरवाट मन्दिर, जावा का बोरोबुदुर मन्दिर, भीमबेटका की गुफा चित्र, अजन्ता एवं एलोरा की गुफाएँ आदि हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से अन्य स्मारकों की श्रेणी में दिल्ली के मेहरौली में स्थापित 7.2 मीटर ऊँचा एवं 3 टन वजनी लौहस्तम्भ है, जिसे गुप्तकालीन प्रसिद्ध सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा निर्मित माना जाता है। यह स्तम्भ लगभग 1500 वर्षों से भी अधिक समय से खुले आकाश में स्थापित है। यह जङ्ग रहित लौह स्तम्भ प्राचीन भारत के उन्नत धातु विज्ञान का नमूना है।

क्या आप जानते हैं-

- विश्व का सबसे पुराना अभिलेख मध्य एशिया के बोगजकोई नामक स्थान से 1400 ई. पू. का मिला हैं। इस अभिलेख में 'मित्र, वरूण, इन्द्र और नासत्य' देवताओं के नामों का उल्लेख है।

(ख) साहित्यिक स्रोत- भारतीय इतिहास को जानने के दूसरा प्रमुख स्रोत साहित्य है। प्राचीन भारत के इतिहास की जानकारी हमें सनातन हिन्दू, जैन एवं बौद्ध धर्म ग्रन्थों एवं लौकिक साहित्य जैसे हर्षचरितम, अभिज्ञानशाकुन्तलम, बुद्धचरितम, कुमारसम्भवम, अष्टाध्यायी, मृच्छकटिकम् आदि से प्राप्त होती है। इन साहित्यों में तत्कालीन समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था, संस्कृति, जीवन-शैली, धर्म आदि की विस्तृत जानकारी हमें प्राप्त होती है।

वैदिक वाङ्मय- भारतीय इतिहास को जानने व समझने के लिए वैदिक वाङ्मय सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत है। वैदिक वाङ्मय के अन्तर्गत वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, वेदाङ्ग, स्मृति, पुराण एवं षडदर्शन ग्रन्थों को सम्मिलित किया गया है। इन ग्रन्थों में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक,

आध्यात्मिक, ज्ञान एवं विज्ञान आदि से सम्बन्धित विषयवस्तु बहुलता से प्राप्त होती है, जो सार्वभैमिक दृष्टि से बहुउपयोगी सिद्ध हुई है।

वेद- वेद ज्ञान-विज्ञान परम्परा के प्राचीनतम् स्रोत हैं। वेद चार हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद साथ ही इनकी अनेक शाखाएँ भी हैं।

ब्राह्मण- ब्राह्मण ग्रन्थ भी वेदों के ही भाग हैं, जो गद्य शैली में लिखे गये हैं। प्रत्येक वेद के अलग-अलग ब्राह्मण हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों में वेदों का सार सरल शब्दों में समाहित है। ऐतरेय, शतपथ, गोपथ, कठ, कपिष्ठल, जैमनीय आदि प्रमुख ब्राह्मण ग्रन्थ हैं।

आरण्यक- ब्राह्मण ग्रन्थों के वे भाग जिन्हें अरण्य (वन) में ऋषियों द्वारा रचा गया वे आरण्यक कहलाये। इनमें आध्यात्म, दर्शन, आत्मा, जन्म-मृत्यु आदि का वर्णन गूढ़ विषय वस्तु के रूप में किया गया है। ऐतरेय, शाँङ्खायन, तैत्तिरीय, वृहदाराण्यक आदि प्रमुख आरण्यक ग्रन्थ हैं।

उपनिषद्- उपनिषदों को वेदान्त भी कहा जाता है। इनकी विषय वस्तु दार्शनिक है। इनमें प्रश्नोत्तरी माध्यम से आध्यात्म व दर्शन विषय पर चर्चा की गई है। उपनिषदों की संख्या 108 है। केन, कठ, मुण्डक, माडुक्य, छान्दोग्य एवं ईशावास्योपनिषद आदि प्रमुख उपनिषद् हैं।

वेदाङ्ग- वेदाङ्ग से आशय वेद के अङ्गों से है, अर्थात वेदार्थ ज्ञान में सहायक ग्रन्थों को वेदाङ्ग कहा जाता है। इनकी संख्या छ: है- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, एवं छन्द।

षडदर्शन- प्राचीन भारत के षडदर्शन हैं- न्याय, सांख्य, योग, वैषेशिक, पूर्व मीमांसा एवं उत्तर मीमांसा।

सूत्र एवं स्मृति साहित्य- सूत्र साहित्य में मनुष्य के कर्तव्यों, वर्णाश्रम व्यवस्था तथा सामाजिक नियमों का विवेचन है। सूत्र साहित्य के तीन भाग हैं– श्रौतसूत्र, गृहसूत्र एवं धर्मसूत्र। स्मृतियों को धर्मशास्त्र भी कहा जाता है। इनकी रचना सूत्र साहित्य के बाद हुई। मनुस्मृति, बृहस्पतिस्मृति एवं याज्ञवल्क्यस्मृति आदि प्रमुख स्मृति ग्रन्थ हैं।

पुराण- पुराणों में प्राचीन राजवंशों एवं शिक्षाप्रद विविध आख्यानों का वर्णन है। इनमें सृष्टि की रचना, प्राचीन ऋषि-मुनियों के चिन्तन, राजव्यवस्था तथा राजवंशों का विस्तृत वर्णन है। पुराणों की संख्या अठारह है- विष्णु, मत्स्य, वायु, ब्रह्माण्ड, भागवत, गरुड़, स्कन्ध, वामन, लिङ्ग, ब्रह्मवैवर्त, पद्म, कूर्म, शिव, भविष्य, नारद, ब्रह्म, मार्केण्डेय तथा वराह पुराण। इतिहास अध्ययन की दृष्टि से ये अति महत्वपूर्ण हैं।

प्राचीन महाकाव्य- रामायण एवं महाभारत, भारत के प्राचीनतम महाकाव्य हैं। रामायण के रचनाकार महर्षि वाल्मीकि हैं। इस ग्रन्थ में 24 हजार श्लोक होने के कारण इसे चतुर्विंशति सहस्री संहिता भी कहते हैं। महाभारत के रचनाकार महर्षि वेदव्यास हैं। इसका पूर्व नाम **जयसंहिता** है। इसमें कुल 18 पर्व और एक लाख से भी अधिक श्लोक हैं। इसी क्रम में तमिल कवि इलाङ्गो कृत **सिलप्पिदकारम्** एवं सत्तनार कृत **मणिमेखलई** तथा दक्षिण के सङ्गम कवियों का नाम उल्लेखनीय है।

जैन साहित्य- भारतीय उपमहाद्वीप में सनातन धर्म के पश्चात् सर्वाधिक प्राचीन जैन धर्म को माना जाता है। इसके प्रवर्तकों को तीर्थंकर कहा जाता है, जिनकी संख्या चौबीस है। जैन धर्म के अन्तिम प्रवर्तक महावीर स्वामी हैं, जिन्हें महात्मा बुद्ध का समकालीन माना जाता है। महावीर स्वामी ने जैन सिद्धान्तों का पुर्नप्रतिपादन एवं प्रतिष्ठित किया। जैन धर्म के प्रचार-प्रसार के लिये अनेक ग्रन्थों की रचना समय-समय पर की जाती रही है। ये साहित्य प्राय: प्राकृत, अपभ्रन्श एवं संस्कृत भाषा में प्राप्त हुए हैं। जैन धर्म के प्राचीनतम साहित्य को आगम कहा जाता है, जिनकी संख्या 46 है। जैन ग्रन्थों का प्रथम बार सङ्कलन वल्लभीनगर में छठी शताब्दी ईसा पूर्व किया गया था। प्रमुख जैन- ग्रन्थ आचाराङ्ग सूत्र, भगवतीसूत्र, परिशिष्टपर्वन एवं भद्रबाहुचरित आदि इतिहास अध्ययन में सहायक हैं।

बौद्ध साहित्य- बौद्ध धर्म का उदय एक विचारधारा के रूप में लगभग पाँचवी-छठीं शताब्दी ईसापूर्व हुआ, जो आगे चलकर धर्म के रूप में लोकप्रिय होने के साथ-साथ विश्व के अनेक भागों में फैला। बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिये समय-समय पर अनेक साहित्य सृजित किये गये। बौद्धसाहित्य के दो मुख्य अङ्ग हैं- जातक और पिटक। **जातक** कथाओं में महात्मा बुद्ध के पूर्वजन्मों का वर्णन है। पिटक साहित्य में महात्मा बुद्ध के उपदेशों का सङ्ग्रह किया गया है। इनकी संख्या तीन होने के कारण **त्रिपिटक** भी कहा जाता है– सुत्तपिटक, विनयपिटक, अभिधम्मपिटक। इनके अतिरिक्त दीर्घ निकाय, मज्झिम निकाय तथा संयुक्त निकाय, अङ्गुत्तर निकाय और खुद्दक निकाय प्रमुख ग्रन्थ हैं। बौद्ध साहित्य की भाषा पालि है, आगे चलकर संस्कृत भाषा में भी अनेक रचनाएं की गई। इन सभी में भारत की तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक व्यवस्था का विस्तृत उल्लेख प्राप्त होता है।

लौकिक साहित्य- लौकिक साहित्य के अन्तर्गत ऐतिहासिक पुस्तकें, जीवनी एवं वृत्तान्त आदि शामिल हैं। पाणिनि कृत अष्टाध्यायी, कौटिल्य कृत अर्थशास्त्र, विशाखदत्त कृत मुद्राराक्षस, सोमदेव कृत कथासरित्सागर, क्षेमेन्द्र कृत वृहतकथामञ्जरी, पतञ्जली कृत महाभाष्य, शूद्रक कृत मृच्छकटिकम्,

कल्हण कृत राजतरङ्गिणी आदि संस्कृत भाषा में रचित विपुल साहित्य संसार है, जो इतिहास अध्ययन के स्रोत हैं।

(ग) **विदेशी साहित्य-** विदेशी साहित्य से भी प्राचीन भारतीय इतिहास की क्रमबद्ध एवं विशिष्ट जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। इस स्रोत के अन्तर्गत वे विदेशी यात्री- ईरानी, यूनानी, रोमन, चीनी, अरबी आदि लेखक हैं, जो भारत यात्रा पर आये और यात्राओं का विवरणपरक उल्लेख अपनी रचनाओं में किया है। इस श्रेणी की प्रमुख पुस्तकें मेगस्थनीज की इण्डिका, प्लिनी की नेचुरल हिस्टोरिका, फाह्यान की फो-क्यों-की, तारानाथ की कंग्यूर और तंग्यूर, अलबरूनी की तहकीक-ए-हिन्द आदि विदेशी साहित्यिक स्रोत हैं।

इतिहास और तिथियाँ- इतिहास में तिथियों का घटनाक्रम की दृष्टि से विशेष महत्व है। इतिहास अध्ययन में पाश्चात्यीकरण के प्रभाव स्वरूप तिथियों की गणना वर्ष, माह और दिनाङ्क के रूप में ईसा मसीह के जन्म को आरम्भिक बिन्दु मान कर किया जाता है। ईसा के जन्म के पूर्व के काल को ईसा पूर्व (बिफॉर क्राईस्ट) तथा ईसा के जन्मकाल और उसके आगे आज तक घटित घटना क्रमों को ईस्वी सन् (एनो डॉमिनि) कहा जाता है। वर्तमान में ए.डी. (एनो डॉमिनि) के स्थान पर सी.ई. (कॉमन एरा) तथा बी.सी. (बिफॉर क्राईस्ट) के स्थान पर बी.सी.ई. (बिफॉर कॉमन एरा) का प्रयोग किया जाने लगा है।

सारणी 5.2

महत्त्वपूर्ण तिथियाँ	
कृषि का आरम्भ	8000 वर्ष पहले
सरस्वती-सिन्धु संस्कृति के प्रथम नगर	4700 वर्ष पहले
गङ्गा घाटी के नगर एवं मगध साम्राज्य का उदय	2500 वर्ष पहले

भारत में प्राचीन काल से ही ऐतिहासिक घटनाक्रमों के उल्लेख का महत्त्व रहा है। ऐतिहासिक कालखण्डों के मापन के लिए प्राचीन भारत में युग, मन्वन्तर एवं कल्प के साथ ही सृष्टि, कलि एवं युधिष्ठिर सम्वतों का प्रयोग गणना इकाई के रूप में किया जाता था। वर्तमान में मुख्य रूप से विक्रम और शक संवत् का प्रचलन है। ईसा मसीह के जन्म से 57 वर्ष पूर्व विक्रम संवत् का प्रारम्भ उज्जयिनी सम्राट विक्रमादित्य द्वारा किया गया था। भारत के राष्ट्रीय कैलण्डर शक संवत् का आरम्भ 78 ईस्वी सन् में कुषाण शासक कनिष्क के राज्यारोहण से प्रारम्भ हुआ है। भारत में इतिहास लेखन की प्राचीन परम्परा रही है। आज इतिहासकारों द्वारा भारतीय इतिहास की कालिक गणना का आधार ईस्वी सन्

को मानकर उसकी विवेचना करते हैं। आवश्यकता है कि वर्तमान इतिहास का लेखन भारतीय परम्परा एवं वाङ्मय आदि को आधार मानकर किया जाए।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न–

1. इतिहास को आंग्ल भाषा में.....कहते हैं।

   अ. हिस्ट्री ब. ज्योग्राफी स. सोशल साइन्स द. इकॉनामिक्स

2. इतिहास अध्ययन के स्त्रोत.....हैं।

   अ. पुरातत्त्व ब. साहित्य स. विदेशी वृतान्त द. उपर्युक्त सभी

3. उपनिषदों की संख्या.....है।

   अ. 18 ब. 108 स. 52 द. 80

4. रामायण के रचियता ..... हैं।

   अ. तुलसीदास ब. सूरदास स. वाल्मीकि द. कल्हण

5. मेगस्थनीज की पुस्तक का नाम..... है।

   अ. इण्डिका ब. किताब-उल-हिन्द

   स. नेचुरल हिस्ट्री स. इनमें से कोई नहीं

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. मोहरें इतिहास की जानकारी के .....स्त्रोत है। (पुरातात्त्विक/साहित्यिक)
2. हिन्दूओं का पूजा स्थल .....है। (मन्दिर/गुरुद्वारा)
3. उपनिषदों को .....कहा जाता है। (वेदान्त/आरण्यक)
4. महरौली के लौह स्तम्भ का निर्माण.....कराया था। (अशोक/चन्द्रगुप्त द्वितीय)

सत्य/असत्य चुनिए-

1. 1861 ई. में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग की स्थापना की गई। (सत्य/असत्य)
2. हस्तलिखित पुस्तकों को पाण्डुलिपि कहा जाता है। (सत्य/असत्य)
3. सोमदेव की रचना कथासरित्सागर है। (सत्य/असत्य)
4. प्लिनी की रचना नेचुरल हिस्टोरिका है। (सत्य/असत्य)

सही जोड़ी मिलान कीजिए-

1.	हिन्दू धर्म	क.	जातक ग्रन्थ
2.	जैन धर्म	ख.	रामायण
3.	बौद्ध धर्म	ग.	पुरातात्त्विक स्त्रोत
4.	मुद्राएँ	घ.	आगम ग्रन्थ

अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. राजतरङ्गणी किसकी रचना है?
2. महाभारत में श्लोकों की संख्या कितनी है?
3. किन्हीं आठ पुराणों के नाम लिखो।
4. सिलप्पदिकारम् किसकी रचना है?

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. इतिहास से आप क्या समझते हैं?
2. भारतीय इतिहास जानने के विदेशी स्त्रोतों का उल्लेख कीजिए।
3. भारतीय इतिहास जानने में जैन साहित्य के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1. इतिहास अध्ययन के महत्व को स्पष्ट कीजिए ?
2. इतिहास जानने के स्त्रोतों में धार्मिक साहित्य का वर्णन कीजिए।

परियोजना कार्य-

1. छात्र, वैदिक वाङ्मय का चार्ट तैयार करें।

अध्याय- 6

भारत में प्रागैतिहासिक काल

आइये जानें- इतिहास का कालिक विभाजन, भारत में प्रागैतिहासिक काल, आग की खोज, शैल चित्र, खाद्य सामग्री का उत्पादन एवं संग्रह, नव पाषाण कालीन हथियार, नव पाषाण कालीन प्रमुख स्थान, कृषि, जनजाति और भारत में पाषाण कालीन प्रमुख स्थल की सूची।

इतिहास का कालिक विभाजन- इतिहास अध्ययन को सरल व सुबोध बनाने के लिए तीन काल खण्डों में विभाजित किया गया है-

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

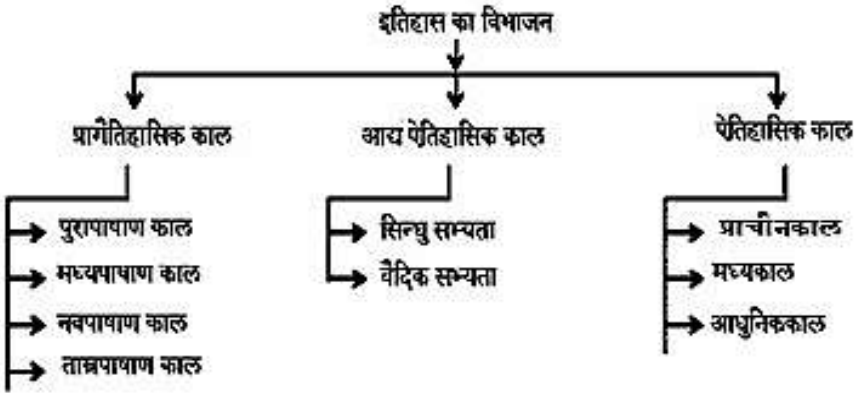

प्रागैतिहासिक काल- मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास का आरम्भ प्रागैतिहासिक काल से माना जाता है। इस काल में मानव पत्थर एवं पत्थरों से बने हथियारों का प्रयोग दैनिक जीवन में विविध कार्यों के लिए करता था इसलिए इस काल को **पाषाण काल** कहा जाता है। इस काल का कोई लिखित विवरण प्राप्त नहीं होने के कारण इसे **प्रागैतिहासिक** काल भी कहा जाता है। प्रागैतिहासिक काल को अध्ययन के सुविधा की दृष्टि से तीन भागों में बांटा गया है-

क्या आप जानते हैं-

- पुरापाषाण काल में भारत में शुतुरमुर्ग होते थे। महाराष्ट्र के पटने पुरास्थल से शुतुरमुर्ग के अन्डों के अवशेष मिले हैं। इन अन्डों से मनकों का निर्माण किया जाता था।

1. **पूर्व पाषाण काल** (Palaeolithic Age) लगभग 5 लाख से 50 हजार वर्ष ईसा पूर्व तक।
2. **मध्य पाषाण काल** (Mesolithic Age) लगभग 50 हजार से 15 हजार वर्ष ईसा पूर्व तक।
3. **नव पाषाण काल** (Neolithic Age) लगभग 15 हजार से 5 हजार वर्ष ईसा पूर्व तक।

आद्य ऐतिहासिक काल (3000-600 वर्ष ईसा पूर्व)- वह काल जिसमें पुरातात्विक साक्ष्यों के साथ लिखित साक्ष्य भी मिले हैं, लेकिन लिखित साक्ष्यों को अभी तक पूरा पढ़ा नहीं जा सका है, **आद्य ऐतिहासिक काल** कहा जाता है। इस काल में मानव विभिन्न धातुओं से परिचित हो गया था। अत: इसे **धातु काल** भी कहा जाता है। इस काल में मानव ने ताँबा और टीन को मिलाकर काँसा धातु बनाने की कला सीख लिया था।

ऐतिहासिक काल- जिस काल में मानव का परिचय लेखन कला के किसी न किसी रूप से था और उसके द्वारा लिखे गये लेखों को अधिकांशत: पढ़ा भी जा चुका है, उसे **ऐतिहासिक काल** कहा जाता है। भारत में लगभग 600 ई.पू. से वर्तमान तक के काल को ऐतिहासिक काल के नाम से जाना जाता है। ऐतिहासिक काल को निम्न तीन काल खण्डों में विभाजित किया गया है-

प्राचीन इतिहास	–	लगभग 600 ई.पू से 1000 ई. तक
मध्यकालीन इतिहास	–	लगभग 1000 ई. से 18 वीं शताब्दी तक
आधुनिक इतिहास	–	लगभग 18 वीं शताब्दी से अब तक

1. **प्राचीन इतिहास-** प्राचीन इतिहास के अन्तर्गत लगभग 600 ई.पू से 1000 ई. तक की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, दार्शनिक तथा सांस्कृतिक आदि घटनाओं का अध्ययन किया जाता है।
2. **मध्यकालीन इतिहास-** इसके अन्तर्गत लगभग 1000 ई. से 18 वीं शताब्दी तक की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, दार्शनिक तथा सांस्कृतिक घटनाओं का अध्ययन किया जाता हैं।
3. **आधुनिक इतिहास-** आधुनिक इतिहास के अन्तर्गत लगभग 18 वीं शताब्दी से अब तक की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, दार्शनिक तथा सांस्कृतिक घटनाओं का अध्ययन किया जाता हैं।

भारत में प्रागैतिहासिक काल- भारतीय प्रायद्वीप में अनेक प्राकृतिक गुफाएँ हैं, जो अनगढ़े चित्रों से चित्रित हैं। इन्हें पुरातत्त्वविदों द्वारा प्रागैतिहासिक कालीन मानव के निवास स्थल के रूप में चिन्हित किया गया है। इस काल में मानव विविध कार्यों के लिए पत्थर, लकड़ी एवं हड्डियों से बने विविध हथियारों का प्रयोग करता था। पुरातत्त्वविदों को इन पुरास्थलों से अनेक आकार-प्रकार वाले प्रस्तर खण्ड मिले हैं। ऐसा अनुमान है कि आदि मानव इन प्रस्तर खण्डों के विविध उपयोग करते होंगे। इन प्रस्तर खण्डों को इस चित्र में श्रेणीवार रखा गया है-

1. **क** श्रेणी के पाषाणखण्ड अनगढ़े और बेडौल हैं। मानव द्वारा प्रारम्भिक अवस्था में इनका प्रयोग हथियार के रूप में किया जाता रहा होगा।
2. **ख** श्रेणी के प्रस्तर खण्ड हजारों वर्ष बाद बनाये गये होंगे। ये नुकीले और गढ़े हुए प्रतीत होते हैं।
3. **ग** वर्ग के पत्थर गढ़े हुए, हाथ से पकड़ने में सुविधाजनक तथा धारदार भी हैं। औजार के रूप में प्रयोग किए जाने वाले पत्थर क और ख श्रेणी के औजारों की अपेक्षा नये हैं।

चित्र- 6.1 औजार

4. **घ** वर्ग के प्रस्तर औजार अपेक्षाकृत छोटे, नुकीले एवं धारदार गढ़े गये हैं। अनुमान है कि ये दस हजार वर्ष पूर्व के होंगे।
5. **ङ** वर्ग के पत्थर प्राकृतिक, सुडौल और चिकने हैं।

पत्थरों से बने विविध औजारों एवं बटखरों का प्रयोग तो आज भी हमारे घरों में वस्तुओं को पीसने, कूटने एवं नाप-तौल के लिए किया जाता है। भारतीय उपमहाद्वीप में पाषाणकालीन अनेक पुरास्थलों की पहचान पुरातत्त्वविदों द्वारा की गई है। कुछ स्थानों के नाम इस प्रकार है-

1. भीमबेटका (मध्य प्रदेश) 2. हुँस्गी (कर्नाटक) 3. करनूल की गुफाएँ (आन्ध्रप्रदेश)।

इन स्थानों पर जल की उपलब्धता तथा पठारी क्षेत्र होने के कारण पत्थर, विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ, गुफाएँ एवं कन्दराएँ बहुलता से व्याप्त थी, जो जीवन निर्वाह के आवश्यक तत्त्व हैं। खोज में कुछ स्थानों को पाषाण कालीन उद्योग स्थलों के रूप में चिन्हित किया गया है। इन स्थानों से अनेक गढ़े एवं अनगढ़े पत्थर प्राप्त होने के साथ ही निवास योग्य स्थल भी प्राप्त हुए हैं। अनुमान है कि ये वे स्थान हैं, जहाँ पाषाण कालीन मानव पत्थर के हथियारों को गढ़ता था एवं वहीं आवास बना कर रहता था। पाषाण उपकरणों का निर्माण दो विधियों से होता था-

क्या आप जानते हैं-

- पुरास्थल उस स्थान को कहते हैं जहाँ औजार, बर्तन और इमारतों जैसी वस्तुओं के अवशेष मिलते हैं।

प्रथम विधि- पत्थर से पत्थर पर चोट कर एवं रगड़ द्वारा बनाया जाता था। ऐसा तब तक किया जाता था, जब तक पत्थर को उपयोगी एवं मनचाहा आकार ना प्राप्त हो जाए।

चित्र- 6.2 पाषाण कालीन कुल्हाड़ी

द्वितीय विधि- इस विधि को **दबाव शक्ति तकनीकी** भी कहा जाता है। इस विधि में आकार दिये जाने वाले पत्थर को किसी कठोर सतह पर रखकर किसी बड़े पत्थर के टुकड़े से पीटकर आकार दिया जाता था।

आग की खोज- आग की खोज ने मानव जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन किये। करनूल की गुफाओं में मिले राख के अवशेष से पता चलता है कि इन गुफाओं में रहने वाले लोग आग का विविध प्रयोग जैसे शीत से बचाव, भोजन पकाने, जङ्गली जानवरों से रक्षा, जङ्गलों की सफाई जैसे कार्यों के लिए करते थे।

चित्र- 6.3 शैल चित्र

शैल चित्र- खोजों के दौरान, पाषाण कालीन मानव के निवास स्थलों-गुफाओं एवं कन्दराओं में अनेक भित्ति एवं शैलचित्र प्राप्त हुए हैं। उदाहरणार्थ पाषाण कालीन गुफा भीमबेटका में गुफा की दीवारों पर प्राचीन चित्र प्राप्त हुए हैं, जिनमें कुछ चित्रों में रङ्ग भी भरे हुए हैं। इतिहासकारों का मानना है कि, ये चित्र उस काल में किसी उत्सव विशेष पर बनाये गए होंगे। कुछ ऐसे चित्र भी हैं, जिनसे पता चलता है कि मानव, समूह एवं परिवार रूप में रहने लगा था। उनका कार्य क्षेत्र भी बँट गया था। पुरुष वर्ग प्राय: भोज्य सामग्री इकट्ठा करने बाहर जाते थे एवं महिलाएं, बच्चों की देखभाल करती थी। स्त्री-पुरुष साथ रहकर अपने समूह का भरण-पोषण करते रहे होंगे। इस काल में मानव विभिन्न रङ्गों से परिचित थे।

चारकोल एवं लौह अयस्क का प्रयोग रङ्ग बनाने के लिए किया जाता था। कैल्शियम पत्थरों (चूना पत्थरों) का प्रयोग हथियार बनाने में होता था। महाराष्ट्र के पटने पुरास्थल में शुतुरमुर्ग के अण्डों के अवशेष तथा अण्डों के छिलकों पर बने चित्र भी प्राप्त हुए हैं।

खाद्य सामग्री का उत्पादन एवं संग्रह- पाषाण युग का अन्तिम चरण जिसे **उत्तर पाषाण या नव पाषाण काल** कहा जाता है। इस काल में मानव ने बस्तियों में रहकर पारिवारिक जीवन, कृषि उत्पादन एवं संग्रह

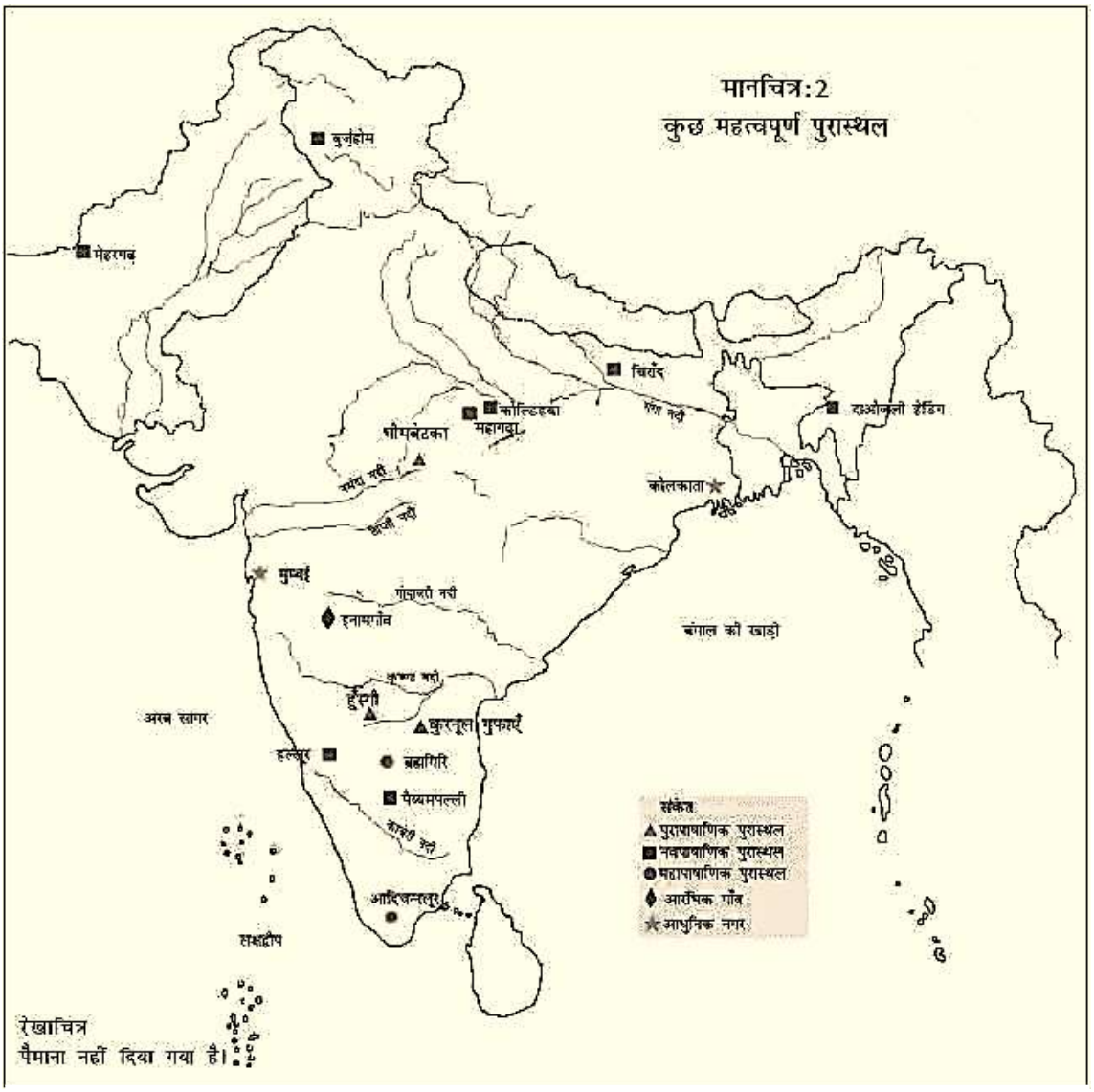

मानचित्र- 6.1 पुरास्थल

करना प्रारम्भ कर दिया था। पहिये का आविष्कार नव पाषाण कालीन मानव की एक विशिष्ट देन है। इसने मानव जीवन को और अधिक गतिशील बनाया। इससे लम्बी दूरी की यात्रा करने एवं भारी सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में सुविधा हुई। मिट्टी के बर्तन बनाने में भी इसी आकृति का

प्रयोग किया गया। आज भी हम अपने जीवन में पहिए का उपयोग देख सकते हैं, परन्तु इसके आविष्कार में हजारों वर्ष का समय लगा।

नव पाषाण कालीन हथियार- इस युग में बने पत्थर के हथियार आकार में छोटे, पैने, नुकीले, सुगठित एवं तराशे हुए होते थे। कुछ औजारों जैसे भाला, कुल्हाड़ी, हाँसिया, तीर-कमान आदि में हाथ से पकड़ने के लिये हत्थे भी लगाये जाते थे।

नव पाषाण कालीन प्रमुख स्थान- भारतीय प्रायद्वीप में इतिहासकारों एवं पुरातत्त्वविदों द्वारा कुछ नवपाषाणकालीन स्थलों को चिन्हित किया गया है। इन स्थलों के नाम इस प्रकार है-

1. बुर्जहोम एवं गुफकाल नामक पुरास्थल वर्तमान में भारत के जम्मू-कश्मीर में स्थित है। इस स्थान से नवपाषाण कालीन गेहूँ, दालें, कुत्ता, मवेशी- भेड़, बकरी एवं भैंसों के अवशेष पाये गये हैं।
2. मेहरगढ़ वर्तमान में पाकिस्तान में स्थित है। यहाँ से गेहूँ, जौ, भेड़, बकरी, कपास के अवशेष पाये गये हैं। यहां पर विशाल अन्नागार के निशान मिलें हैं। यहाँ मिले अवशेषों से पता चलता है कि यहाँ मृतक का अंतिम संस्कार किया जाता था। अनुसंधानों से पता चलता है कि यहाँ के लोग पुनर्जन्म में विश्वास करते थे।
3. चिराँद नामक स्थान भारत के बिहार में स्थित है। यहाँ से नवपाषाणिक अवशेष के रूप में– गेहूँ, हरे चने, जौ, भैंस एवं बैल प्राप्त हुए हैं।
4. हल्लूर नामक स्थान वर्तमान भारत के आन्ध्र प्रदेश में स्थित है। यहाँ से नवपाषाणकालिक अवशेष के रूप में ज्वार, बाजरा, भेड़, बकरी, काला चना आदि प्राप्त हुए हैं।
5. माहागढ़ (उत्तर प्रदेश) से चावल एवं मवेशियों के खुरों के निशान मिले हैं।
6. कोल्डिहवा (उत्तर प्रदेश) से चावल एवं जानवरों की हड्डियों के टुकड़े प्राप्त हुए हैं।
7. दाओजली एवं होंडिंग- यह पुरास्थल पूर्वोत्तर भारत में ब्रह्मपुत्र नदी के घाटी क्षेत्र में स्थित है। यहाँ से खरल और मूसल प्राप्त हुए हैं। हरे रङ्ग का **जेडाइट** नामक पत्थर जो चीन में पाया जाता है इस क्षेत्र में पाया गया है। इतिहासकारों का अनुमान है कि ब्रह्मपुत्र नदी घाटी क्षेत्र के लोगों का व्यापारिक सम्पर्क विदेशों से भी रहा होगा।

कृषि- कृषि का आरम्भ मानव विकास के इतिहास में एक क्रान्तिकारी घटना है। कृषि ने मानव को विचरणशील जीवन से स्थायी जीवन जीना सिखाया। इतिहासकारों की मान्यता है कि कृषि जीवन सर्वप्रथम महिलाओं ने प्रारम्भ किया होगा।

1. कृषि कर्म अपनाने से भोज्य-पदार्थ बेहतर बना, साथ ही शिकार पर निर्भरता समाप्त हुई।
2. पौधों में फल एवं बीज लगने एवं पकने में समय लगता है इसलिए फसलों की देखभाल हेतु एक स्थान पर रुकने की आवश्यकता प्रतीत हुई थी। अतः यहीं से मानव के स्थायी जीवन का प्रारम्भ होने के साथ ही भोज्य-पदार्थों का प्रर्याप्त संग्रह किया जाने लगा।
3. कृषि कर्म अपनाने से मानव बौद्धिक रूप से भी उन्नत हुआ। अतः नई-नई खोजें, कला एवं भाषा का विकास हुआ।

जनजाति- आज भी जङ्गलों में ऐसे अनेक छोटे-बड़े मानव समूह निवास करते हैं, जो भोज्य पदार्थों का संग्रह एवं कृषि कर्म पुराने तरीके से करते हुए अपनी आजीविका चलाते है, जिन्हें हम जनजातियों के रूप में जानते हैं। जनजातियों के कुछ लक्षण इस प्रकार है-

1. ये छोटे-छोटे समूहों में जङ्गलों के आस-पास निवास करते हैं।
2. ये जीवन की अधिकांश आवश्यक्ताओं के लिए जङ्गली उत्पादों पर निर्भर रहते हैं।
3. जनजातीय लोग सांस्कृतिक परम्पराओं की दृष्टि से अति समृद्ध होते हैं।
4. प्राय: जनजातीय लोग विविध कलाओं जैसे चित्रकला एवं संगीतकला में निपुण होते हैं।

भारत में पाषाण कालीन प्रमुख स्थल की सूची-

पूर्व पाषाण काल- कुरनूल (आन्ध्रप्रदेश), हुँस्गी (कर्नाटक), कुलियाना (ओडिशा), डीडवाना (राजस्थान), भीमबेटका (मध्यप्रदेश), सिंघनपुर (छत्तीसगढ) आदि क्षेत्रों से पूर्व पाषाण कालीन अवशेष प्राप्त हुए हैं।

मध्य पाषाण काल- बागौर (राजस्थान), लंघनाज (गुजरात), सराय नहर राय, महदहा (उत्तरप्रदेश), बीरभानपुर (पश्चिमी बङ्गाल), आदमगढ़, पंचमढ़ी (मध्यप्रदेश),जलाहल्ली (कर्नाटक), टेरी (तमिलनाडु) आदि स्थानों से मध्यपाषाण कालीन अवशेष प्राप्त हुए हैं।

नवपाषाण काल- बुर्जहोम (कश्मीर), सिन्धु प्रदेश, मिर्जापुर बाँदा, प्रयागराज (उत्तरप्रदेश), चिराण्ड, छपरा (बिहार), रामगढ़, होशंगाबाद (मध्यप्रदेश), ब्रह्मगिरि, बेलारी, अर्काट (कर्नाटक) पश्चिमी बङ्गाल, असम आदि स्थानों से नवपाषाण कालीन अवशेष प्राप्त हुए हैं।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1. आरंभिक मानव ..... में निवास करता था।

   अ. घरों ब. महलों स. जङ्गलों एवं गुफाओं द. उपर्युक्त सभी में

2. पाषाण कालीन हथियार ..... बने होते थे।

   अ. पत्थर के ब. पीतल के स. लोहे के द. तांबे के

3. भीमबेटका नामक पुरास्थल ..... स्थित है।

   अ. उत्तर प्रदेश में ब. बिहार में स. मध्य प्रदेश में द. राजस्थान में

4. चावल एवं मवेशियों के खुरों के निशान किस पुरास्थल से प्राप्त हुए हैं-

   अ. माहागढ़ (उत्तरप्रदेश) ब. कोल्डिहवा (उत्तरप्रदेश)

   स. हल्लूर (आन्ध्रप्रदेश) द. डीडवाना (राजस्थान)

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. नव पाषाण युग में मानव ..... जीवन निर्वाह करने लगा था। (जंगली/पारिवारिक)
2. करनूल की गुफाएँ वर्तमान ..... में स्थित है। (मध्यप्रदेश/आन्ध्रप्रदेश)
3. बुर्जहोम नामक पुरास्थल ..... में स्थित है। (भारत/पाकिस्तान)

सत्य/असत्य चुनिए–

1. पाषाण काल में मानव पत्थरों से बने औजारों का प्रयोग करता था। (सत्य/असत्य)
2. पहिये के आविष्कार ने मानव जीवन को गतिशील बनाया। (सत्य/असत्य)
3. पाषाण कालीन गुफा करनूल से राख के अवशेष प्राप्त हुए हैं। (सत्य/असत्य)

सही जोड़ी मिलान कीजिए –

1. बुर्ज होम	क. जम्मू कश्मीर
2. चिरान्द	ख. उत्तर प्रदेश
3. माहागढ़	ग. ब्रह्मपुत्र नदी घाटी क्षेत्र
4. दाओजली	घ. बिहार

अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. प्रागैतिहासिक काल किसे कहते हैं?
2. पाषाणकाल को कितने भागों में विभाजित किया गया है?
3. नव पाषाणिक हथियारों के नाम बताइए।

लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. शैल चित्र से क्या अभिप्राय है? भारत में शैल चित्र किन पुरा स्थलों से प्राप्त हुए हैं?
2. पहिये के अविष्कार के बारे में बताइये।
3. कृषि से आरंभिक मानव को कौन-कौन से लाभ हुए?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. नव पाषाण कालिक प्रमुख स्थलों के बारे मे बताइए।
2. जनजाति किसे कहते हैं? उनके लक्षण बताइए।

परियोजना कार्य-

1. छात्र, भारत में पाषाण कालीन पुरास्थलों की सूची बनाएं।

अध्याय-7

भारत में धातु कालीन संस्कृतियाँ

आइये जानें- भारत में सभ्यता और संस्कृति का विकास, ताम्र पाषाण काल, सरस्वती-सिन्धु संस्कृति, खुदाई में प्राप्त पुरावशेष, सरस्वती- सिन्धु संस्कृति के नगरों की विशेषताएँ, सरस्वती-सिन्धु संस्कृति का अन्त।

भारत में सभ्यता और संस्कृति का विकास- मानव विकास यात्रा के क्रम में चलते-चलते पाषाणकाल से धातुयुग तक पहुँच गया। अब पाषाण उपकरणों का स्थान धातु उपकरणों ने लेना प्रारम्भ किया। सद्य: खोजों से स्पष्ट है कि, मानव का सर्वप्रथम परिचय ताँबा धातु से हुआ था। इसीलिए विकास क्रम में पाषाण काल के बाद ताम्रपाषाण, काँस्य एवं लौह कालीन सभ्यताओं का विकास हुआ। इसे आद्य ऐतिहासिक काल (लगभग 3300 ई.पू. से 600 ई.पू. तक) कहा गया है। भारत में धातु कालीन सभ्यता की दृष्टि से ताम्रपाषाण कालीन सभ्यता के रूप में मेहरगढ़ संस्कृति, काँस्य कालीन सभ्यता के रूप में सरस्वती-सिंधु संस्कृति एवं लौह कालीन सभ्यता के रूप में वैदिक संस्कृति के विकास क्रम में इतिहास आगे बढ़ा

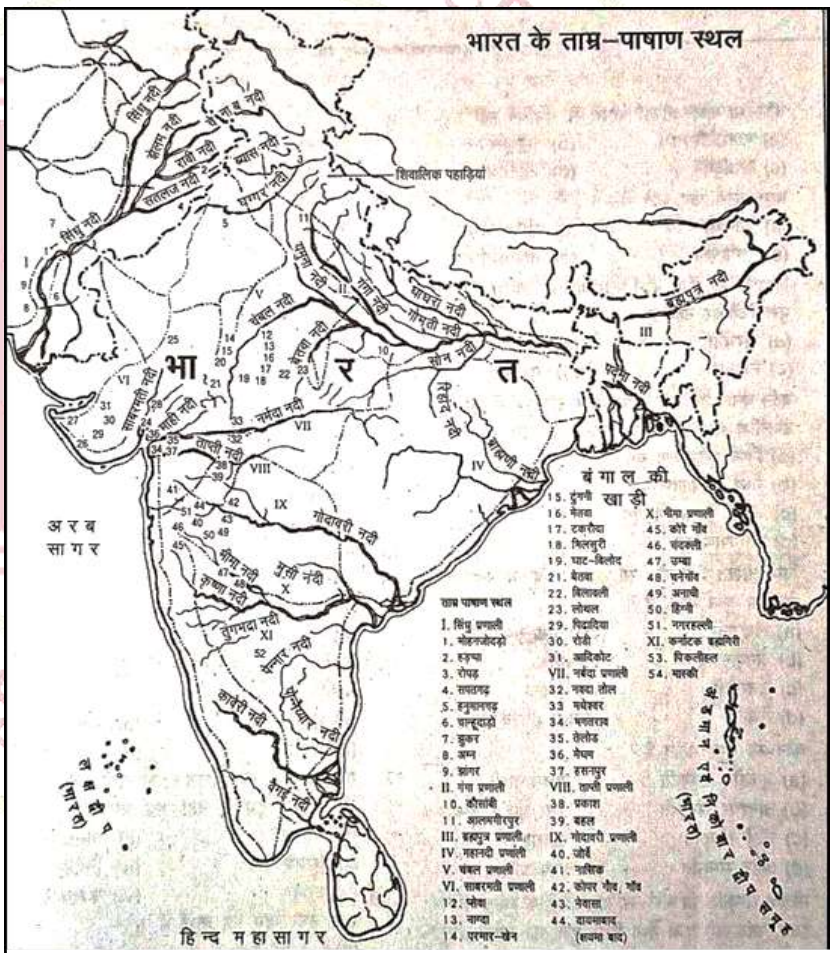

मानचित्र- 7.1 ताम्रपाषाण स्थल

है। इस अध्याय में हम, भारत में विकसित ताम्रपाषाण कालीन सभ्यता के रूप में मेहरगढ़ संस्कृति और काँस्य कालीन सभ्यता के रूप में सरस्वती-सिंधु संस्कृति का अध्ययन करेंगें।

ताम्रपाषाण काल- पुरातात्विक खोज क्रम में एक ऐसा भी समय आया जब मानव ने विविध धातुओं की खोज कर ली थी। यह वह समय था, जब पाषाण काल उन्नत अवस्था में था। इस कालखण्ड में मानव पाषाण के साथ-साथ ताम्र उपकरणों का भी प्रयोग करने लगा था, अत: इसे **ताम्र पाषाण काल** कहा गया। क्योंकि भारतीय प्रायद्वीप में इस संस्कृति के अवशेष सर्वप्रथम वर्तमान पाकिस्तान के मेहरगढ़ से प्राप्त हुए हैं, अत: इसे **मेहरगढ़ संस्कृति** के नाम से भी जाना जाता है। इसका कालखण्ड लगभग 7000 वर्ष ईसा पूर्व 3300 ईसा पूर्व तक माना गया है। इस संस्कृति का विकास मेहरगढ़, दक्षिण-पूर्वी राजस्थान, पश्चिमी मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात तथा दक्षिण-पूर्वी भारत में हुआ था। राजस्थान में बनास नदी के किनारे स्थित अहाड़ एवं गिलुण्ड, मालवा के कायथा एवं सागर जिले में स्थित ऐरण नामक स्थानों की खुदाई में ताम्रपाषाण कालीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए है।

इतिहासकारों का मानना है कि, मेहरगढ़ संस्कृति का विकास नवपाषाण काल से प्रारम्भ होकर हड़प्पा संस्कृति के बाद तक रही है। ताम्र पाषाण कालीन लोग प्राय: झोपड़ियों में निवास करते थे। कुछ ईंटों के बने आवास भी प्राप्त हुए हैं। इस काल में लोग ताँबा, पीतल और चाँदी आदि धातुओं का प्रयोग करते थे। '**वृषभ एवं मातृदेवी**' की उपासना करते थे। लगभग 7000 वर्ष ईसा पूर्व मेहरगढ़ में कपास की खेती के प्रमाण मिले हैं। इस काल में लेखन कला के विकास के प्रमाण अभी तक प्राप्त नहीं हुए हैं। ताम्रपाषण कालीन संस्कृति से थोड़ी भिन्न कई क्षेत्रीय संस्कृतियाँ भी देश के विभिन्न स्थानों- कायथा, अहाड, मालवा, सालवदा, जार्वे, प्रभास, रङ्गपुर में विकसित हुई थीं। राजस्थान एवं मालवा क्षेत्र से वृषभ एवं मेहरगढ़ से मातृदेवी की अनेक मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। अहाड क्षेत्र से

चित्र- 7.1 मातृदेवी की मूर्ति

चित्र- 7.2 नटराज

अनेक चूड़ियाँ, कुल्हाड़ी, ताँबा धातु से बनी चादरें प्राप्त हुई हैं। क्षेत्रीय संस्कृतियों में प्राय: ताम्रपाषाण कालीन विशेषताएं पाई गई हैं।

सरस्वती-सिन्धु संस्कृति- भारतीय प्रायद्वीप में सरस्वती-सिन्धु और उसकी सहायक नदी घाटियों में एक नगरीय सभ्यता एवं संस्कृति विकसित होने के अनेक पुरातात्विक प्रमाण प्राप्त हुए हैं। अत: इसे **सरस्वती-सिन्धु संस्कृति** कहा जाता है। इस सभ्यता के अवशेष सर्वप्रथम हड़प्पा नामक स्थान से मिले जो वर्तमान पाकिस्तान में है इसलिए इसे **हड़प्पा सभ्यता** के नाम से जाना जाता है।

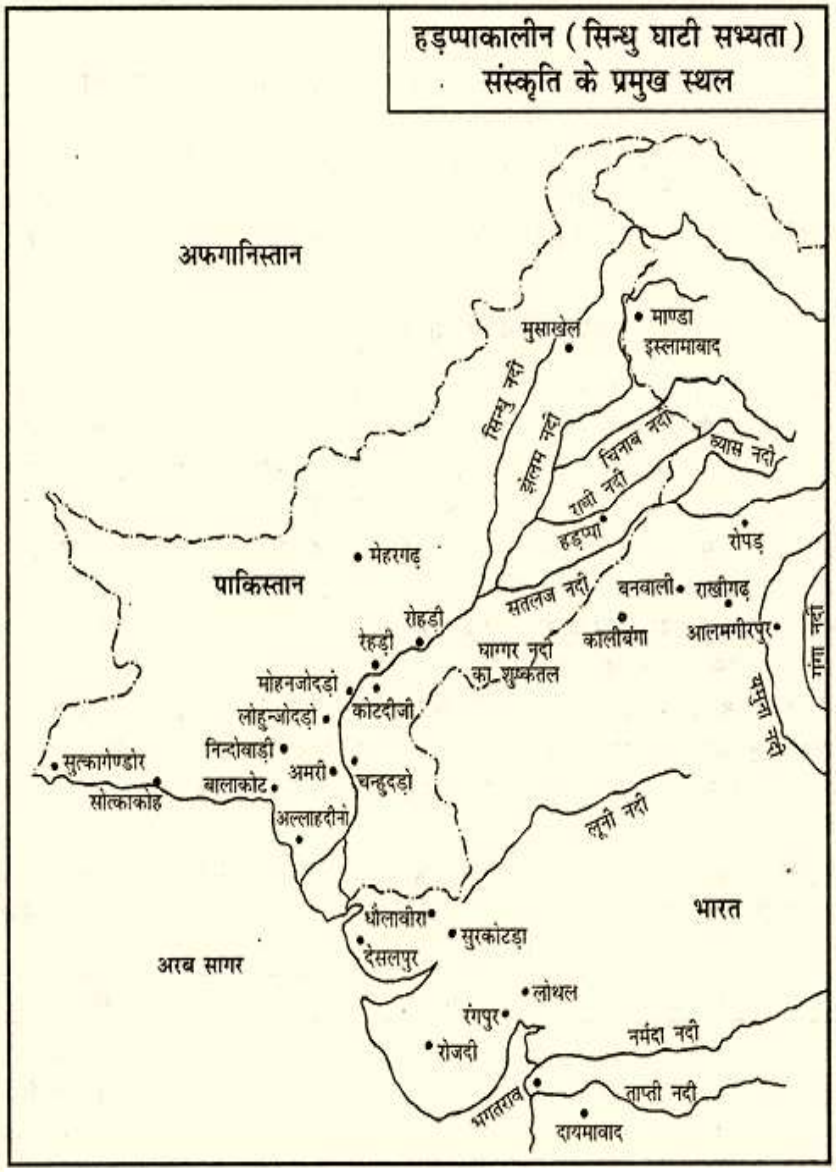

मानचित्र- 7.2

विश्व की समस्त सभ्यताएं और संस्कृतियाँ प्राय: नदी तटों या नदी घाटियों में विशेष रूप से विकसित हुई हैं। क्योंकि ये नदियाँ जीवन यापन, कृषि, पशुपालन और व्यापार आदि के लिये उपयोगी हैं। सरस्वती और सिन्धु भारत की प्राचीनतम् नदियाँ हैं। सरस्वती नदी जिसकी अनेक शाखाएं थी, आज विलुप्त है। भू-आकृतिक अवशेषों एवं सेटेलाइट द्वारा प्राप्त चित्रों से स्पष्ट होता है कि सरस्वती नदी लगभग 5000 वर्ष ईसा पूर्व आदिबद्री से निकलकर वर्तमान हरियाणा, राजस्थान एवं गुजरात प्रान्तों में प्रवाहित होती हुई अरब सागर में मिलती थी। पुरातात्त्विक खोजों में

भारत में प्राचीन सभ्यता के अनेक पुरास्थल सरस्वती नदी के प्रवाह क्षेत्र में पाये गये हैं। सिन्धु नदी तो आज भी प्रवाहित है। इसके तट पर मोहनजोदड़ो, बालाकोट और चन्हुदड़ो जैसे प्रमुख पुरास्थल हैं।

1921 ई. में राखलदास बनर्जी ने हड़प्पा नामक स्थल पर एक खण्डहर की पुरातात्विक खुदाई कराना प्रारम्भ किया तो सरस्वती-सिन्धु संस्कृति के अवशेष बड़ी मात्रा में प्राप्त हुए। 1922 ई. में दयाराम साहनी को सिन्धु नदी के किनारे मोहनजोदड़ो नामक पुरास्थल की खुदाई में भी हड़प्पा की ही भाँति पुरावशेष प्राप्त हुए। इन पुरास्थलों से प्राचीन नगरीय सभ्यता के सङ्केत प्राप्त हुए। इन संकेतों के आधार पर आगे चलकर सरस्वती-सिन्धु और उनकी सहायक नदियों से जुड़े अनेक स्थानों पर पुरातात्विक खुदाई हुई। अब तक इस सभ्यता के लगभग 150 पुरास्थलों की खोजे जा चुके हैं। सरस्वती-सिन्धु संस्कृति के प्रमुख भारतीय पुरास्थल- कालीबङ्गा (राजस्थान), बनावली (हरियाणा), लोथल एवं धौलावीरा (गुजरात), आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश) आदि हैं। अभी तक हुए उत्खननों से स्पष्ट है कि इस संस्कृति का विस्तार पश्चिमी भारत, पाकिस्तान के अधिकांश क्षेत्रों एवं अफगानिस्तान के कुछ हिस्सों तक था। क्षेत्रफल की दृष्टि से देखा जाए तो करीब 22,40,000 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में यह सभ्यता विकसित हुई थी।

खुदाई में प्राप्त पुरावशेष- खुदाई में भवन एवं किले (दुर्ग), स्नानागार, अन्नागार, नालियाँ, सड़कें, आभूषण, खिलौने, मुद्राएँ, बर्तन, मृदभाण्ड, मूर्तियाँ, शिलालेख, चूड़ियाँ, यज्ञकुण्ड और कमण्डल आदि पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। इनके अतिरिक्त वट वृक्ष एवं तुलसी, शक्ति की देवी दुर्गा, शिवलिङ्ग, पाशुपति शिव और नन्दी की पूजा के साथ ही सात स्त्रियों-पुरुषों द्वारा माङ्गलिक अवसर पर परम्परा निर्वाह के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।

चित्र- 7.3 महान स्नानागार

सरस्वती-सिन्धु संस्कृति के नगरों की विशेषता- पुरातत्त्वविदों एवं इतिहासविदों ने सरस्वती-सिन्धु संस्कृति के नगरों के अध्ययन के उपरान्त इस सभ्यता को नगरीय सभ्यता बताया है। इसकी विशेषताएँ निम्न हैं-

योजनाबद्ध नगर स्थापना- सरस्वती-सिन्धु संस्कृति के नगरों की स्थापना योजनाबद्ध रूप से की गई थी। हड़प्पा नगर की बात करें तो, यह नगर दो खण्डों- पश्चिमी एवं पूर्वी खण्ड में विभाजित था। पश्चिमी खण्ड छोटा किन्तु ऊँचाई पर बसा था। सम्भवतः यह एक नगर-दुर्ग था। इस दुर्ग में कुछ इमारतें थीं। नगर का पूर्वी भाग नीचे की ओर विस्तृत था। दुर्गभाग में विशाल स्नानागार मिला, जो पक्की ईंटों से बना था। दीवारों एवं फर्श पर चारकोल की परत चढ़ाई गई थी। नीचे उतरने के लिए दोनों ओर से सीढ़ियाँ थीं। चारों ओर कमरे बने थे। स्नानागार के निकट कुँआ भी मिला। इस स्नानागार का आकार 54×33 मीटर है। नगर की सड़कें पक्की एवं कच्ची दो प्रकार की होती थी। सड़कों के किनारे नालियाँ होती थीं। आवास हवा एवं प्रकाश की सुविधा से युक्त होते थे।

पक्की ईंटों का प्रयोग- भवनादि निर्माण के लिए पक्की ईंटों का प्रयोग किया जाता था। ईंटों को **इण्टरलॉक पैटर्न** में जोड़ा जाता था। ईंटों का आकार 30×20×10 सेन्टीमीटर होता था।

योजनाबद्ध आवासीय भवन- आवासीय भवनों की दीवारें मोटी एवं ठोस होती थीं। दो मंजिला भवन भी होते थे। सामान्यतः एक भवन में रसोई, स्नानागार एवं जल व्यवस्था के लिए कुँआ होता था।

भण्डार गृह- खाद्य सामग्री के लिए भण्डारगृह होते थे। खुदाई में एक विशाल अन्नागार भी प्राप्त हुआ है, जिसका आकार 169×133 फीट थी। पुरातत्त्वविदों ने इसे राजकीय अन्नागार माना है।

जन-जीवन- सरस्वती-सिन्धु संस्कृति के लोगों का जीवन सामान्यतः समृद्ध था। कृषि एवं व्यापार आजीविका के साधन थे। सरस्वती-सिन्धु संस्कृति के लोग मिट्टी, ताँबा एवं काँसे के बर्तन बनाना जानते थे। औजार और मुहरें (सील) धातु से बनाई जाती थीं तथापि मिट्टी की मुहरें भी प्राप्त हुई है। सरस्वती-सिन्धु सभ्यता के लोग आभूषण बनाना जानते थे। इसके लिए वे लोग सोना एवं पत्थरों जैसे कैनेलियन, जैस्पर, क्रिस्टल फ़ेयन्स आदि का प्रयोग करते थे। इन आभूषणों पर बारीक नक्काशी भी होती थी। बच्चों के खेलने अथवा साज-सज्जा के लिए खिलौनों का इस्तेमाल होता था। ये खिलौनें मिट्टी और लकड़ी के बने होते थे। खुदाई में प्राप्त तकलियों से ज्ञात होता है की इस काल में लोग धागा बनाने के साथ ही सूती एवं रेशमी वस्त्र बनाना जानते थे।

क्या आप जानते हैं-

- फ़ेयन्स बालू और स्फ़टिक के चूर्ण को गोन्द में मिलाकर बनाया जाता है। इसका उपयोग मनके, चूड़ियाँ और छोटे बर्तन बनाने में किया जाता था। इन वस्तुओं पर प्राय: नीले या हल्के हरे समुद्री रंग की पतली परत चढ़ाई जाती थी।

व्यापार- सरस्वती-सिन्धु संस्कृति काल के वासियों का मुख्य व्यवसाय व्यापार था। धातुओं को पिघलाना, वस्त्रों की बुनाई एवं रङ्गाई, मिट्टी, लकड़ी एवं धातु की विभिन्न सामग्री बनाना वे जानते थे। नाप-तौल एवं लेन-देन के लिए बांटों एवं मुहरों का इस्तेमाल होता था। मेसोपोटामिया से प्राप्त सरस्वती-सिन्धु सभ्यता की मुहरों से स्पष्ट होता है कि उस काल में विदेशी व्यापार भी होता था। गुजरात के लोथल में एक बन्दरगाह भी मिला है।

कृषि एवं पशुपालन- सरस्वती-सिन्धु संस्कृति के लोग कृषि एवं पशुपालन भी करते थे। खुदाई में मिले हल और अनेक प्रकार के आनाजों से पता चलता है कि इस काल के लोग सम्भवतः गेहूँ, जौ, दलहन, मटर, धान, तिल एवं सरसों की खेती करते थे। राजस्थान के कालीबङ्गा में जुते हुए खेत के साक्ष्य मिले हैं। खेतों की जुताई, भार आदि ढोने के लिए बैल एवं गधों का प्रयोग करते होगें। इस काल में बैल, गाय, भैस, बकरी, ऊँट, हाथी, गधे, सूअर, पशुपालन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण थे।

जीवन के कुछ अन्य रूप- इतिहासकारों का मानना है कि उस काल का समाज चार वर्गों में विभाजित था। **प्रथम वर्ग** में विद्वान, पुरोहित, वैद्य, ज्योतिषी। **द्वितीय वर्ग** में योद्धा, राजा एवं राज पदाधिकारी। **तृतीय वर्ग** में कृषक, व्यापारी एवं उद्योगपति। **चतुर्थ वर्ग,** श्रमिकों एवं सेवकों का था। समाज की आधारभूत इकाई परिवार थी। स्त्रियों का समाज में सम्मानपूर्ण स्थान था। प्रशासनिक कार्यों के लिए समिति भी रही होगी। लेखन कला का प्रचलन था परन्तु इसे अभी पढ़ा नहीं जा सका है। खुदाई में प्राप्त मूर्तियों से इस बात की पुष्टि होती है कि लोग मूर्ति पूजा करते थे। खुदाई में दो मूर्तियाँ विशेष आकर्षक रही है- एक नारी प्रतिमा जो सम्भवत: **मातृदेवी** की है। दूसरी प्रतिमा **नटराज** की है, जिनके चारों ओर पशु अङ्कित हैं। विद्वानों ने इसकी पहचान पशुपतिनाथ के रूप में की है। सम्भव है कि मातृदेवी एवं पशुपतिनाथ की विशिष्ट रूप में इस काल में उपासना की जाती रही होगी। शवों का दाह संस्कार एवं भूमि में दफन किया जाता था। भारत में जब सरस्वती-सिन्धु सभ्यता-संस्कृति अपने विकास के चरम पर थी उसी के समकालीन विश्व के अनेक भागों में अन्य नगरीय सभ्यताओं जैसे मिस्र सभ्यता, यूनानी सभ्यता, चीन की सभ्यता, मेसोपोटामिया की सभ्यता आदि विकसित हुईं। भारत का इन सभ्यताओं से विस्तृत व्यापारिक सम्बन्ध हुआ करता था।

सरस्वती-सिन्धु संस्कृति का अन्त- सरस्वती-सिन्धु संस्कृति का अन्त लगभग 3900 वर्ष पूर्व हुआ माना जाता है। अभी तक इस सभ्यता के विनाश के कारण स्पष्ट नहीं हो पाएँ हैं। अनुमान है कि नदियाँ सूख गई होंगी। भारी पर्यावरणीय परिवर्तन के कारण ये क्षेत्र मरूस्थल में परिवर्तित हो गये होंगे। किसी

महामारी या प्राकृतिक तबाही में एक बड़ी आबादी नष्ट हो गई होगी। खुदाई में प्राप्त जले एवं अधजले अनाज भयानक अग्निकाण्ड की ओर भी संकेत करते हैं। परन्तु इतना अवश्य है कि यह सभ्यता भारतीय प्रायद्वीप में अनेक शताब्दियों तक विकसित रही होगी। इस काल के लोगों का जीवन, शान्तिपूर्ण, समृद्धशाली एवं सदाचारपूर्ण था। अनेक पुरातात्विक अवशेषों से स्पष्ट होता है की सरस्वती-सिन्धु संस्कृति लगभग 8000 वर्ष ईसा पूर्व आरम्भ हुई थी। लगभग 4700 वर्ष ईसा पूर्व नगर स्थापित होने लगे थे। लगभग 3900 वर्ष ईसा पूर्व इस सभ्यता के नगरों का अन्त होना प्रारम्भ हो गया था।

सारणी 7.1

महत्त्वपूर्ण तिथियाँ	
सरस्वती-सिन्धु संस्कृति	8000 वर्ष पहले
मेहरगढ़ में कपास की खेती	7000 वर्ष पहले
नगरों की स्थापना	4700 वर्ष पहले
सरस्वती-सिन्धु संस्कृति के नगरों का अन्त	3900 वर्ष पहले

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1. मानव को सर्वप्रथम .... धातु का ज्ञान हुआ।

   अ. स्वर्ण ब. पीतल स. तांबा द. जस्ता

2. कायथा व ऐरण नामक पुरास्थल .... स्थित है।

   अ. महाराष्ट्र ब. ओड़ीसा स. पञ्जाब द. मध्य प्रदेश

3. सरस्वती-सिन्धु संस्कृति संबधित अब तक प्राप्त पुरास्थलों की संख्या.......................... है।

   अ. 150 ब. 200 स. 250 द. 400

4. सरस्वती-सिन्धु संस्कृति के निवासियों का मुख्य व्यवसाय.......................... था।

   अ. कृषि ब. व्यापार स. आखेट द. पशुपालन

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. धातु की चादर, कुल्हाड़ी आदि ....से प्राप्त हुए है। (रंगपुर/आहड)
2. कालीबंगा नामक पुरातात्विक स्थल ....में है। (पञ्जाब/राजस्थान)
3. सरस्वती-सिन्धु संस्कृति के लोग ....की खेती करते थे। (गेहूँ व जौ/गन्ना)

सत्य/असत्य चुनिए-

1. सरस्वती-सिन्धु संस्कृति एक ग्रामीण सभ्यता थी। (सत्य/असत्य)
2. सरस्वती-सिन्धु संस्कृति को हड़प्पा सभ्यता भी कहते है। (सत्य/असत्य)
3. मोहनजोदड़ो पुरास्थल की खुदाई 1922 ई. में दयाराम साहिनी ने करवाई थी। (सत्य/असत्य)

सही जोड़ी मिलान कीजिए-

1. ताम्रपाषाण कालीन	क. बनास नदी
2. सरस्वती नदी	ख. मेहरगढ़ संस्कृति
3. अहाड़ एवं गिलुण्ड	ग. जुते हुए खेत
4. कालीबङ्गा	घ. आदिबद्री

अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. सरस्वती-सिन्धु संस्कृति कितने किलोमीटर क्षेत्रफल में विकसित हुई थी?
2. हड़प्पा नामक पुरास्थल वर्तमान मे कहाँ है?
3. कालीबंगा नामक पुरास्थल किस राज्य मे स्थित है?
4. सरस्वती-सिन्धु संस्कृति कालीन बन्दरगाह कहाँ प्राप्त हुआ है?

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. सरस्वती नदी पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
2. सरस्वती-सिन्धु संस्कृति वासियों के सामाजिक जीवन का उल्लेख कीजिए।
3. सरस्वती-सिन्धु संस्कृति के आर्थिक जीवन को संक्षेप मे बताईये।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1. सरस्वती-सिंधु संस्कृति की नगरीय विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
2. सरस्वस्ती-सिंधु संस्कृति का अन्त कैसे हुआ? विस्तार से समझाइये।

परियोजना कार्य-

1. छात्र, सरस्वती-सिन्धु संस्कृति के पुरास्थल- कालीबङ्गा (उत्तरी राजस्थान), बनावली (हरियाणा), लोथल एवं धौलावीरा (गुजरात) को मानचित्र पर दर्शाएं।

अध्याय- 8

वैदिक संस्कृति और महाजनपद काल

आइये जानें- वैदिक संस्कृति, वैदिक वाङ्मय, वैदिक संस्कृति के क्षेत्र, सामाजिक जीवन क्षेत्र, राजव्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था, धर्म, महाजनपद, महाजनपदों की शासन प्रणाली।

वैदिक संस्कृति- विश्व के प्राचीनतम साहित्य वैदिक वाङ्मय में जिस संस्कृति का प्रकाशन हुआ है, वह वैदिक संस्कृति कहलाती है। भारतीय संस्कृति का मूलाधार **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।** (ऋग्वेद 9.63.5) अर्थात "विश्व के समस्त मानव को आर्य (श्रेष्ठ, उत्तम, सुसंस्कृत और उत्कृष्ट) बनाने" तथा **वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता:** (यजुर्वेद 9.23) अर्थात् "हम पुरोहित (चिन्तक और साधक) राष्ट्र को जीवंत और जागृत बनाए रखेंगे" जैसी पवित्र लक्ष्य वाली हमारी वैदिक संस्कृति है। वैदिक संस्कृति के मूल उत्सर्जक वैदिक वाङ्मय में अभिव्यक्त प्रत्येक चिन्तन- ग्राम, नगर, समाज, धर्म, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान, ज्योतिष, रसायन, गणित, कृषि आदि सार्वकालिक सत्य रूप में प्रकट हुआ है। वस्तुत: वैदिक चिन्तन के मूल स्रोत वेद ब्रह्मा की वाणी से प्रकट होकर सृष्टि के प्रारम्भ में ऋषि-मनीषियों के अन्त:करण में प्रकाशित हुए। ऋषियों की गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा यह सुज्ञान समाज में नियम और संयम पूर्वक परिचालित होता रहा। अनुकूल परिस्थिति में इस सुज्ञान को सङ्कलित किया गया। किसी व्यक्ति विशेष की रचना न होने के कारण वेदों को **अपौरुषेय** कहा गया है। इसी ज्ञान परम्परा से भारतीय संस्कृति सहस्राब्दियों पूर्व से ही संवर्धित और प्रतिष्ठित है। पुरातात्विक खोजों से ज्ञात होता है कि भारतीय वैदिक संस्कृति का विस्तार भारत के बाहर विश्व के अनेक भागों जैसे- सीरिया, कम्बोडिया, इण्डोनेशिया, थाईलैण्ड, जावा, सुमात्रा, बोर्निया, बारवाडोस, वर्मा आदि देशों में व्याप्त रही है।

पश्चिमी इतिहासकार वैदिक सभ्यता को लौह कालीन मानते हैं। मैक्समूलर ने वैदिक वाङ्मय को 1200 ई.पू. का तथा ए. बेबर ने वेदों का समय 1200 से 1500 ई.पू. बताया है। इस प्रकार अनेक विद्वानों ने वेदों को साहित्यिक रचना मानकर अपने-अपने मत बताए, जो उचित और संगत प्रतीत नहीं होते हैं। क्योंकि ऐतिहासिक और पुरातात्विक स्रोतों से महाभारत काल को लगभग 5000 वर्ष पूर्व का माना गया है। इन्हीं विद्वानों द्वारा वेदों को रामायण और महाभारत काल के पूर्व का कहा गया है। परन्तु इनके द्वारा बताये काल क्रमानुसार वेद तो रामायण और महाभारत काल के बाद के सिद्ध होते हैं।

वैदिक वाङ्मय- वैदिक वाङ्मय से तात्पर्य वेद संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषदों के साथ ही वेदाङ्ग, दर्शन, स्मृति साहित्य और पुराण ग्रन्थों के समवाय से है। जिनका विवरण निम्नलिखित है-

वेद- विद् धातु में **घञ्** प्रत्यय के लगने से वेद शब्द बना है, जिसका अर्थ **ज्ञान** है। व्याकरणविदों ने वेद शब्द की व्याख्या करते हुए कहा है- **विद्यते ज्ञायतेऽनेनेति वेद:** अर्थात् जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाए वही वेद हैं। वेद, सत्य की अनुभूति कराने वाले और इष्ट की प्राप्ति तथा अनिष्ट के त्याग का अलौकिक उपाय बताने वाले अक्षय ज्ञानकोष हैं। वेदों को गुरु शिष्य परम्परा द्वारा श्रवण, कण्ठस्थ और स्मरण किये जाने के कारण **श्रुति** भी कहा जाता है। मनुस्मृति में वेदों को **सर्वज्ञानमयो हि स: अर्थात** समस्त ज्ञान का कोष और **'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'** धर्म का मूल कहा गया है। महर्षि कृष्ण द्वैपायन द्वारा वेद को चार श्रेणियों- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में विभाजित किये जाने के कारण उन्हें वेदव्यास कहा गया।

1. **ऋग्वेद-** सामान्यत: ऋग्वेद को आदि और प्रथम वेद माना जाता है। ऋग्वेद में देवताओं (इन्द्र, वरुण, यम, तार्क्ष्य अरिष्टनेमि, द्यौ, सूर्य, चन्द्र, अग्नि, पृथिवी, पवन, वृद्धश्रवा, बृहस्पति, विश्वेदेव आदि) के स्तुति परक छंदोबद्ध मन्त्र हैं। साथ ही श्रेष्ठ मानवीय अभिलाषाएँ, जगत की मङ्गलकामनाएँ, आध्यात्मिक ज्ञान तथा सृष्टि निर्माण के साथ ही दार्शनिक विषयों (हिरण्यगर्भ सूक्त, नासदीय सूक्त, पुरुष सूक्त आदि) और तत्कालीन समाजिक, धार्मिक, आर्थिक व राजनैतिक स्थितियों का उल्लेख हुआ है। ऋग्वेद के छंदोबद्ध मन्त्रों को **ऋक्** और ऋत्विक् (पुरोहित) को **होता** कहते हैं। ऋग्वेद के दो विभाग किये गये हैं- मण्डल और अष्टक क्रम। मण्डल-क्रम में 10 मण्डल, 85 अनुवाक, 1028 सूक्त तथा लगभग 10580 मंत्र हैं। अष्टक-क्रम में 8 अष्टक, 64 अध्याय तथा 2006 वर्ग हैं। आचार्य चरणव्यूह ने ऋग्वेद की पाँच शाखाएं बताया है- शाकल, बाष्कल, आश्वलायन, शांखायन तथा माण्डूक्यायन। ऋग्वेद के प्रमुख मन्त्रदृष्टा ऋषि और ऋषिकाएं- गृत्समद्, विश्वामित्र, वामदेव, अत्रि, भरद्वाज, वशिष्ठ, लोपामुद्रा, घोषा, अपाला, विश्ववरा, सिकता, शचीपौलोमी और कक्षावृत्ति प्रमुख हैं। लोपामुद्रा का विवाह ऋषि अगस्त्य से हुआ था।
2. **यजुर्वेद-** यजुष् (यज्ञ) शब्द से यजुर्वेद बना है। यजुर्वेद में मानव के लिए अनेक प्रकार के यज्ञ (कर्म) का प्रतिपादन किया गया है। यजुर्वेद के मन्त्र गद्य तथा पद्य दोनों विधाओं में प्राप्त हैं। इसके ऋत्विक् (पुरोहित) को **अध्वर्यु** कहा जाता है। महर्षि पतन्जलि ने यजुर्वेद की 101 शाखाओं का उल्लेख किया है। वर्तमान में इसकी पाँच शाखाएं- वाजसनेय, तैत्तिरीय, कठ, कपिष्ठल और मैत्रायणी हैं। यजुर्वेद

के दो सम्प्रदायों- आदित्य तथा ब्रह्म के आधार पर इसके दो भाग है- शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद। **शुक्ल यजुर्वेद** की दो शाखायें- माध्यन्दिन और काण्व हैं। इसके मन्त्रद्दष्टा ऋषि वाजसनि देवरात के पुत्र याज्ञवल्क्य वाजसनेय के नाम से इसे वाजसनेय संहिता भी कहते हैं। मंत्रों का विशुद्ध एवं अमिश्रित रूप होने के कारण इसे शुक्ल यजुर्वेद कहा गया। शुक्ल यजुर्वेद में कुल चालीस अध्याय एवं इसकी माध्यन्दिनि शाखा में 1975 मन्त्र तथा काण्व शाखा में 2086 मन्त्र हैं। **कृष्ण यजुर्वेद** को ब्रह्म सम्प्रदाय से सम्बन्धित होने के कारण **ब्रह्मवेद** भी कहा जाता है। मंत्र तथा ब्राह्मण का एकत्र मिश्रण होने के कारण ही इसे **कृष्ण यजुर्वेद** कहा गया। कृष्ण यजुर्वेद का प्रवर्तक ऋषि वैशम्पायन को माना जाता है। इसकी चार शाखाएँ- तैत्तिरीय, मैत्रायणी, काठक तथा कपिष्ठल उपलब्ध हैं। तैत्तरीय संहिता को **आपस्तम्ब संहिता** भी कहते हैं। इसमें कुल सात काण्ड एवं 44 अध्याय हैं। यजुर्वेद में आध्यात्मिक ज्ञान, सृष्टि निर्माण और यज्ञ (कर्म) के साथ-साथ वैदिक सभ्यता-संस्कृति से सम्बन्धित ज्ञान-विज्ञान, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक जीवन आदि की जानकारी मिलती हैं।

3. **सामवेद-** सामवेद दो शब्दों- साम+वेद से बना है। साम का अर्थ ऋचाओं का गान है। सामवेद को आर्चिक संहिता भी कहते हैं। आर्चिक के दो भेद है- पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक। इसके मन्त्रों में आरोह-अवरोह व उचित मात्राओं से युक्त सुस्वर उच्चारण का प्रयोग हुआ है। सामवेद में सात स्वरों (सा, रे, ग, म, प, ध तथा नि) को तीन ग्रामों- मन्द, मध्य तथा तीव्र में वर्गीकृत किया गया है। सामगान के चार प्रकार हैं- ग्राम गान अर्थात ग्रामों में गाये जाने वाले, आरण्य गान अर्थात् वनों में गाये जाने वाले गान, ऊह गान तथा उह्य गान (रहस्य), यज्ञादि अवसरों पर गाए जाने वाले गान है। सामवेद में छः सामविका- विश्लेषण, विकर्षण, अभ्यास, विराम, तथा स्तोभ हैं। सामवेद के ऋत्विक् (पुरोहित) को उद्गाता कहते हैं। महर्षि पतंजलि ने महाभाष्य में सामवेद की 1000 शाखाओं का उल्लेख किया है। वर्तमान में चार शाखाएं- कौथुमीय, राणायणीय, जैमिनीय तथा शाङ्खायन प्रचलित हैं। सामवेद की कुल मंत्र संख्या 1875 है। सामवेद में अधिकांश मन्त्र ऋग्वेद के हैं। इसे ज्ञानयोग, भक्तियोग एवं कर्मयोग की त्रिवेणी कहा गया है। सामवेद में सृष्टि निर्माण, भूगोल, समाज, राज्य, राजनीति और धर्म आदि विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है।

4. **अथर्ववेद-** ऋषि अथर्वा के नाम पर इस वेद का नाम अथर्ववेद पड़ा। अथर्ववेद, तीनों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद) का सार रूप है। इस वेद के ऋत्विज को **ब्रह्मा** कहते हैं। अथर्ववेद में बीस

काण्ड 731 सूक्त 36 प्रपाठक और 5977 मन्त्र हैं। चरणव्यूह के अनुसार अथर्ववेद की नौ शाखाएं- शौनक, पैप्पलाद, तौद, मौद, जाजल, जलद, ब्रह्मवेद, देवदर्श तथा चारणवैद्य हैं। वर्तमान में अथर्ववेद की शौनक और पैप्पलाद शाखा ही प्राप्त है। गोपथ ब्राह्मण में सर्पवेद, पिशाचवेद, असुरवेद, इतिहासवेद, पुराणवेद एवं स्थापत्य वेद को अथर्ववेद का उपवेद कहा गया है। इसमें देवताओं की स्तुति के साथ-साथ आयुर्वेद और शल्यचिकित्सा, भूगोल, खगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति, समाज, कृषि, धर्म, आध्यात्म से सम्बन्धित मन्त्रों का उल्लेख हुआ है।

ब्राह्मण ग्रन्थ- वैदिक वाङ्मय में वेदों के द्वितीय भाग को ब्राह्मण कहते हैं। **ब्रह्मन** शब्द से **अण्** प्रत्यय करके ब्राह्मण शब्द बना है, जो ग्रन्थवाची है। ब्राह्मण ग्रन्थों में मन्त्रों और यज्ञों की व्याख्या के साथ ही उनके विधि-विधानों का आध्यात्मिक, आधिदैविक और वैज्ञानिक स्वरूप का उल्लेख हुआ है। ब्राह्मण ग्रन्थों की संख्या चौदह हैं- 1. ऐतरेय 2. शाङ्खायन (कौषीतकि) 3. शतपथ 4. तैत्तिरीय 5. तांड्य (पंचविंश) 6. षडविंश 7. सामविधान 8. आर्षेय 9. देवता, 10. छांदोग्य मन्त्र 11. संहितोपनिषद 12. वंश 13. जैमिनीय (तवलकार) 14. गोपथ ब्राह्मण। प्रत्येक वेद के अपने-अपने ब्राह्मण ग्रन्थ हैं। इन ब्राह्मण ग्रन्थों में सृष्टि निर्माण, भूगोल, खगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति, समाज, कृषि, धर्म, आध्यात्म, दर्शन आदि का विशद विवेचन हुआ है।

आरण्यक ग्रन्थ- अरण्यों (वनों) के शांत तथा निर्मल वातावरण में होने वाले अध्ययन-अध्यापन, मनन, चिन्तन, शास्त्रीय चर्चा और आध्यात्मिक विवेचन के ग्रन्थों को **आरण्यक** कहा जाता है। आरण्यक ग्रन्थों में आत्मतत्त्व और ब्रह्मविद्या के साथ ही शरीर विद्या, उपासना, दर्शन आदि का विवेचन हुआ है। आरण्यक ग्रन्थों की संख्या पाँच है- 1. ऐतरेय 2. शाङ्खायन (कौषीतकि) 3. मैत्रायणी 4. वृहदारण्यक 5. तवलकार आरण्यक। प्रत्येक वेद के अपने-अपने आरण्यक ग्रन्थ हैं।

उपनिषद्- 'उप' और 'नि' उपसर्ग तथा 'सद्' धातु से 'क्विप्' प्रत्यय करने से उपनिषद् शब्द बना है। उपनिषद् का मुख्य अर्थ है, ज्ञान प्राप्ति के उद्देश्य से गुरु के पास जाना या समीप बैठना है। उपनिषदों का वैदिक वाङ्मय में महत्वपूर्ण स्थान है। वेदों का अंतिम भाग होने के कारण उपनिषदों को वेदान्त भी कहा जाता है। आदि शङ्कराचार्य ने उपनिषद् को ब्रह्म-विद्या कहा है। मुक्तिकोपनिषद में उपनिषदों की संख्या 108 बताई गई है। आदि शंकराचार्य द्वारा दस उपनिषदों पर भाष्य लिखे गये हैं, जिन्हें महत्वपूर्ण माना गया है। इनके नाम हैं- 1. ईश 2. केन 3. कठ 4. प्रश्न 5. मुण्ड 6. माण्डूक्य 7. तित्तिरि 8. ऐतरेय 9. छान्दोग्य 10. बृहदारण्यक। उपनिषदों में ब्रह्म-विद्या के साथ ही सृष्टि निर्माण, जीव, माया, विद्या,

अविद्या, पुनर्जन्म, मोक्ष, कर्म, नैतिकता, ऋषिवंशपरम्परा, सुयोग्य संतान प्राप्ति के उपाय, शास्त्रार्थ, इतिहास, भूगोल, समाज, राष्ट्र आदि विषयों का विशद विवेचन प्राप्त है। प्रत्येक वेद के अपने-अपने उपनिषद् हैं।

सारणी- 8.1

वेद और उनके उपवेद	ब्राह्मण	आरण्यक	उपनिषद्	शिक्षा	कल्पसूत्र	
					गृह्य	श्रौत
ऋग्वेद- आयुर्वेद	ऐतरेय, कौषीतकि	ऐतरेय, शाङ्खायन (कौषीतकि)	ऐतरेय, शाङ्खायन (कौषीतकि)	पणिनीय	आश्वलायन शाङ्खायन	आश्वलायन शाङ्खायन, शाम्बव्य
यजुर्वेद- धनुर्वेद						
शुक्लयजुर्वेद	शतपथ	बृहदारण्यक	बृहदारण्यक, ईशावास्य	याज्ञवल्क्य	पारस्कर	कात्यायन
कृष्णयजुर्वेद	तैत्तिरीय	तैत्तिरीय	तैत्तिरीय	व्यास	बौधायन, आपस्तम्ब, हिरण्यकेशी, कठ, सत्याषाढ़, वैखानस, बाधूल, मानव,	बौधायन, आपस्तम्ब, हिरण्यकेशी, कठ, सत्याषाढ़, वैखानस, बाधूल, मानव
सामवेद- गन्धर्व वेद	तांड्य (पंचविंश), षडविंश (अद्भुत), सामविधान, आर्षेय, देवता, छांदोग्य मन्त्र, संहितोपनिषद, वंश, जैमिनीय (तवलकार)	छान्दोग्य	छान्दोग्य	नारदीय, गौतमी, लोमसी	गोभिल, खदिर	द्राह्यायण, लाट्यायन
अथर्ववेद- स्थापत्य वेद	गोपथ	नहीं है।	प्रश्नोपनिषद, मुण्डक, माण्डुक्य	माण्डूकी	कौशिक	वैतान

वेदाङ्ग- वेदार्थ ज्ञान और व्याख्या में सहायक तथा यज्ञ में उनका विनियोग कराने वाले शास्त्रों को वेदाङ्ग कहा जाता है। वेदाङ्गों की संख्या छः है- 1. शिक्षा 2. व्याकरण 3. छन्द 4. निरुक्त 5. ज्योतिष 6. कल्प। वेदों के शुद्ध सस्वर उच्चारण प्रक्रिया का प्रतिपादन शिक्षा ग्रन्थों में किया गया है। पाणिनीय, याज्ञवल्क्य,

नारदीय, भारद्वाज और वाशिष्ठी आदि प्रमुख शिक्षा ग्रन्थ हैं। शब्दों की मीमांसा करने वाले शास्त्र व्याकरण हैं। प्रमुख व्याकरण- प्रातिशाख्य (ऋग्वेद- ऋक्, शुक्लयजुर्वेद- वाजसनेयी, कृष्णयजुर्वेद- तैत्तीरीय, सामवेद- ऋक् तन्त्र, सामतन्त्र, अक्षरतन्त्र, पुष्पसूत्र, अथर्ववेद- शौनकीय एवं अथर्ववेद), पाणिनी की अष्टाध्यायी, कात्त्यायन के वार्तिक, पतंजलि का महाभाष्य हैं। अधिकांश वेद मन्त्र छन्द प्रधान हैं। पिङ्गलाचार्य ने स्वतन्त्र छन्दशास्त्र के रूप में छन्दसूत्र ग्रन्थ की रचना की। वेद के कठिन शब्दों का संकलन निघन्टु में तथा उनकी व्याख्या के लिए यास्काचार्य द्वारा निरुक्त शास्त्र रचा गया। यज्ञों के प्रतिपादन और अभीष्ट फल प्राप्ति के लिये शुभ मुहूर्त जानने तथा ग्रहों-नक्षत्रों की स्थिति और समय का ज्ञान करने की दृष्टि से लगध मुनि द्वारा वेदाङ्ग ज्योतिष की रचना की गई। इनके क्रमश: दो भाग- आचार्य (ऋग्वेद) ज्योतिष और याजुष (यजुर्वेद) ज्योतिष कहा जाता हैं। वैदिक यज्ञों और संस्कार कर्मों के प्रतिपादन के निमित्त सूत्र रूप में मनीषियों द्वारा कल्प वेदाङ्ग की रचना की गई। इस कारण इन्हें सूत्र ग्रन्थ भी कहा जाता है। प्रमुख सूत्र ग्रन्थ- श्रौत, गृह्य, धर्म और शुल्व हैं।

स्मृति ग्रन्थ- वैदिक वाङ्मय परम्परा में श्रुतियों के बाद **स्मृति** ग्रन्थों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्मृति शब्द का अर्थ स्मरण से है। स्मृति ग्रन्थों की रचना का आधार वेद हैं। इन ग्रन्थों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक नियमों के साथ ही नैतिक उपदेशों का उल्लेख हुआ है। मनुस्मृति, अत्रि स्मृति, विष्णु स्मृति, हारीत स्मृति, औशनस स्मृति, अंगिरा स्मृति, यम स्मृति, कात्यायन स्मृति, बृहस्पति स्मृति, पराशर स्मृति, व्यास स्मृति, दक्ष स्मृति, गौतम स्मृति, वशिष्ठ स्मृति, आपस्तम्ब स्मृति, संवर्त स्मृति, शंख स्मृति, लिखित स्मृति, देवल स्मृति, शातातप स्मृति आदि प्रमुख स्मृति ग्रन्थ हैं।

पुराण- 'पुरा' अव्यय में 'ट्यु:' प्रत्यय के प्रयोग से पुराण शब्द की निष्पत्ति हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ- प्राचीन आख्यान' की नये रूप में प्रस्तुति है। प्राचीन आख्यानों को नये रूप में प्रस्तुत करना ही पुराणों का प्रतिपाद्य है।अथर्ववेद के अनुसार "**ऋच: सामानि च्छन्दांसि पुराणं यजुषा सह। उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रित:॥** (11.7.24) अर्थात् ऋक्, साम, यजुस् औद छन्द के साथ ही पुराण भी परमपिता परमेश्वर के नि:श्वास ही हैं। मत्स्य पुराण में पुराणों के पाँच लक्षण बताये गये हैं- **सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च। वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥**(4364) अर्थात, सर्ग (सृष्टि), प्रतिसर्ग (प्रलय, पुनर्जन्म), वंश (देवता व ऋषि सूचियां), मन्वन्तर (चौदह मनु के काल), और वंशानुचरित (सूर्य चन्द्रादि वंशीय चरित)। पुराणों का प्रतिपाद्य विषय ब्रह्माण्डविद्या,देवी-देवताओं, राजाओं, ऋषि-मुनियों की

वंशावली, लोककथाएँ, तीर्थयात्रा, मन्दिर, चिकित्सा, खगोल शास्त्र, व्याकरण, खनिज विज्ञान, हास्य, धर्मशास्त्र और दर्शन आदि हैं। पुराणों की संख्या अठारह है-

1. ब्रह्मपुराण 2. पद्मपुराण 3. विष्णुपुराण 4. वायुपुराण 5. भागवतपुराण 6. भविष्यपुराण 7. नारदपुराण 8. मार्कण्डेयपुराण 9. अग्निपुराण 10. ब्रह्मवैवर्तपुराण 11. लिंगपुराण 12. वाराहपुराण 13. स्कन्दपुराण 14. वामनपुराण 15. कूर्मपुराण 16. मत्स्यपुराण 17. गरुडपुराण 18. ब्रह्माण्डपुराण। इनके अतिरिक्त अठारह उपपुराण भी हैं।

वैदिक दर्शन- पाणिनी के अनुसार 'दर्शन' शब्द की व्युत्पत्ति 'दृशिर् प्रेक्षणे' धातु से ल्युट् प्रत्यय करने से हुई है। अत: दर्शन शब्द का अर्थ दृष्टि या देखना है। परन्तु दर्शन शब्द का अर्थ केवल सामान्य देखना ही नहीं है। इसीलिए पाणिनि ने धात्वर्थ में प्रेक्षण शब्द का प्रयोग किया है। जिसमें आत्मचक्षुओं द्वारा देखना या मनन करके निष्कर्ष निकालना ही दर्शन है इसलिए दर्शन से तात्पर्य तत्त्व ज्ञान से है। मानव के दुखों की निवृत्ति और तत्त्व ज्ञान कराने के लिए भारत में दर्शन का जन्म हुआ है। उपनिषद काल में दर्शन एक पृथक शास्त्र के रूप में विकसित होने लगा था। भारतीय ऋषिओं द्वारा जगत के रहस्यों को अनेक दृष्टिकोणों से जानने के लिये षड आस्तिक दर्शन ग्रन्थों का उद्भव हुआ। महर्षि पतञ्जलि ने पाणिनीय व्याकरण को भी दर्शनशास्त्र के रूप में निरूपित किया है। इनके साथ ही नास्तिक दर्शन के रूप में जैन, बौद्ध एवं चार्वाक दर्शन प्रसिद्ध हैं।

सारणी 8.2

दर्शन का नाम	प्रवर्तक
न्याय दर्शन	महर्षि गौतम
सांख्य दर्शन	महर्षि कपिल
योग दर्शन	महर्षि पतञ्जलि
वैशेषिक दर्शन	महर्षि कणाद
पूर्व मीमांसा दर्शन	महर्षि जैमिनि
वेदान्त दर्शन (उत्तर मीमांसा)	महर्षि बादरायण (व्यास)

वैदिक संस्कृति के क्षेत्र- भारत में वैदिक संस्कृति का विकास 'सप्तसिन्धु' क्षेत्र में हुआ। इस प्रदेश में बहने वाली सात नदियों का वर्णन ऋग्वेद में मिलता है– (1) सिन्धु (2) सरस्वती (3) शतद्रुम (सतलज) (4) विपाशा (व्यास) (5) परुष्णी (रावी) (6) वितस्ता (झेलम) (7) अस्किनी (चिनाब)। क्रमश: यह संस्कृति पूर्व की ओर आगे बढ़ते हुए ब्रह्मावर्त (सरस्वती व दृषद्वती नदियों का मध्य भाग) प्रदेश, ब्रह्मर्षि (कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पञ्चाल, शूरसेन) क्षेत्र तक, मध्य देश (हिमालय से लेकर विन्ध्याचल तक) और आर्यवर्त (पूर्व

और पश्चिमी समुद्र का मध्य भाग) प्रदेशों में यह संस्कृति विस्तारित हुई। इस प्रकार यह संस्कृति सिन्धु से लेकर सुदूर पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी की घाटी तक तथा उत्तर में हिमालय पर्वत से लेकर दक्षिण समुद्र (हिन्द महासागर) तक पल्लवित हुई। यह संस्कृति भारत भुमि के बाहर पूर्वी देशों- थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया, मलेशिया, बर्मा, जावा, सुमात्रा, बाली के साथ-साथ अनेक देशों में प्रचारित-प्रसारित हुई, जिसके अवशेष वर्तमान में भी खुदाई में प्राप्त होते हैं।

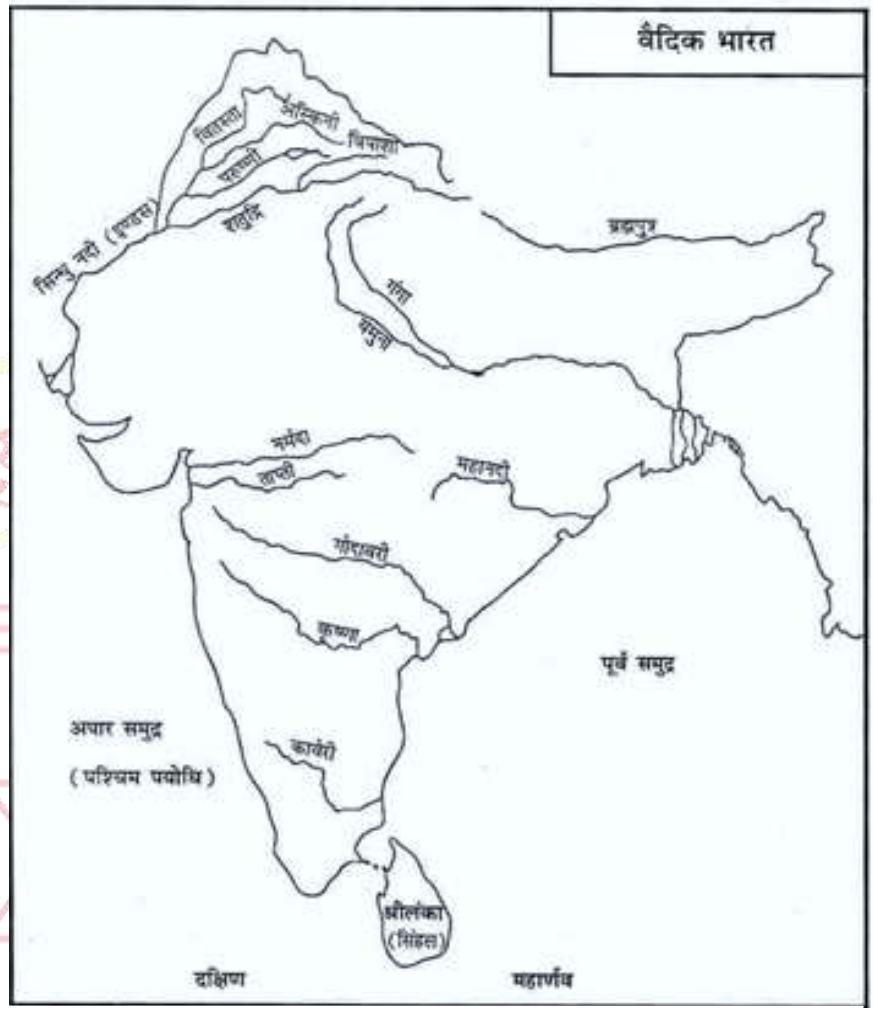

मानचित्र- 8.1 वैदिक भारत

सामाजिक जीवन व्यवस्था-

वर्ण व्यवस्था- ऋग्वेद के दसवें मण्डल में चार वर्णों का उल्लेख है- **ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहु राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥** (ऋ. 10.90.12) श्रीमद्भागवत गीता में श्री कृष्ण ने कहा है कि **चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्म विभागशः। तस्य कर्तारमपि मां विद्यकर्तारमव्ययम्॥** (4.13) इससे स्पष्ट है कि प्राचीन भारतीय वैदिक समाज में वर्ण व्यवस्था गुण एवं कर्म पर आधारित होकर चतुःवर्ण के रूप में प्रचलित रही है। इसका उल्लेख ऋग्वेद के साथ ही यजुर्वेद एवं अथर्ववेद में भी हुआ है। इस प्रकार वैदिक संस्कृति भारतीय समाज ईश्वरीय एवं प्राकृतिक व्यवस्था के अनुसार चार वर्णों में विभाजित था। ये चार वर्ण थे- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

1. **ब्राह्मण वर्ण**- इस वर्ण में समाज का वह वर्ग आता था, जो शिक्षा ग्रहण करने एवं शिक्षा प्रदान करने, यज्ञ-पूजादि कार्य करने तथा करवाने, समाज के हित के लिये दान देने व ग्रहण करने के कार्य करते

थे। समाज में नैतिक सुव्यवस्था बनाने, नीति निर्धारण करने, समय–समय पर मार्ग दर्शन देने एवं समाज के लोगों को संस्कारित करने का दायित्व इसी वर्ग को था।

2. **क्षत्रिय वर्ण**- इस वर्ण में समाज का वह वर्ग आता था, जो समाजिक सुरक्षा व्यवस्था एवं अपराधों पर नियन्त्रण करने का काम करता था। इसमें राजा के मन्त्री, अंगरक्षक, सेनानायक, सैनिक, सहायक राजागण, जमींदार, ग्राम प्रमुख और इनकी सन्तानें शामिल थीं।
3. **वैश्य वर्ण**- इस वर्ण में, समाज का वह वर्ग आता था, जो कृषि, पशुपालन, व्यापार, व्यवसाय, उद्योग-धन्धे, कलात्मक निर्माण आदि कार्य करते थे।
4. **शूद्र वर्ण**- वैदिक वाङ्मय में शूद्र की प्रमुखता को बताते हुए भगवान परमेश्वर के चरण से उत्पन्न बताया गया है। जिस प्रकार मनुष्य पैरों के बिना कोई भी कार्य नहीं कर सकता है, ठीक उसी प्रकार मानव समाज में प्रचलित समस्त प्रकार के यज्ञादि मांगलिक कार्य शूद्र वर्ण के बिना अधूरे हैं। इस वर्ण में सेवाएं देने वाला जनसमुदाय आता था। जिसका कर्तव्य तपस, शिल्प एवं समस्त श्रम साध्य कार्यों को बताया गया है।

वैदिक संस्कृति में कर्मशः विभाजित वर्ण व्यवस्था कालान्तर में जन्मशः होने के कारण जाति व्यवस्था में परिवर्तित हो गई।

आश्रम व्यवस्था- यह एक वैयक्तिक वैदिक अवधारणा है। इसके अन्तर्गत मानव जीवन को शतायु मानकर पच्चीस–पच्चीस वर्षों के चार आश्रमों में विभाजित किया गया है- ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम, सन्यासाश्रम।

1. **ब्रह्मचर्य आश्रम-** यह आश्रम जीवन के आरम्भ से 25 वर्ष तक बताया गया है। इस आश्रम में रहकर मनुष्य ब्रह्मचर्य, अनुशासन, पवित्रता, नैतिकता, सेवा-परायणता का शुद्धता से पालन करते हुए शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करता है।
2. **गृहस्थाश्रम-** यह जीवन का दूसरा सोपान है, जो 26 से 50 वर्ष की अवस्था तक बताया गया है। इस आश्रम में व्यक्ति धर्म, अर्थ एवं काम का भोग करते हुए अपने पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करता है।
3. **वानप्रस्थ आश्रम-** जीवन का यह तीसरा सोपान 51 से 75 वर्ष तक होता है। इसका उद्देश्य सत्य, ज्ञान एवं जनसेवा ही है। इस आश्रम के द्वारा वैयक्तिक शुद्धीकरण और समाज कल्याण जैसे विविध उद्देश्यों की प्राप्ति होती है।

4. **सन्यास आश्रम-** जीवन के इस अन्तिम सोपान में जो 76 से मृत्युपर्यन्त तक होता है। वानप्रस्थी समस्त सांसारिक बन्धनों एवं मोह को छोड़कर इन्द्रियजयी होकर सन्यासी बन जाता है।

आश्रम व्यवस्था मानव के शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक विकास के चार सोपान हैं। सामाजिक परिप्रेक्ष्य में आश्रम व्यवस्था मानव जीवन के उस क्रमबद्ध व्यवस्था की ओर संकेत करती है, जिसकी सहायता से मनुष्य जीवन के **पुरुषार्थ चतुष्टय- धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष** को प्राप्त कर लेता है। अर्थात इसका उद्देश्य आज के विभिन्न स्तरों पर अलग-अलग दायित्वों का निर्वाह करते हुए जीवन के अन्तिम एवं श्रेष्ठतम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति करना है।

आर्थिक दृष्टि से भी आश्रम व्यवस्था का महत्त्व है। क्योंकि बालक के आर्थिक उन्नयन के लिए ब्रह्मचर्य आश्रम में रोजगारपरक और कौशल विकास की शिक्षा प्रदान की जाती थी। स्वकर्म में कुशल होने के कारण बेरोजगारी का सर्वथा अभाव था। गृहस्थ आश्रम का मूल उद्देश्य आर्थिक उपार्जन करते हुए विविध ऋणों से मुक्ति प्राप्त करना था इसलिए व्यक्ति आर्थिक कार्यों में संलग्न रहता था।

सारणी 8.3	
अश्वमेध यज्ञ	**साम्राज्य सीमा वृद्धि के लिए**
राजसूय यज्ञ	राजा के राज्यभिषेक से सम्बन्धित
अग्निष्टोम यज्ञ	पापों के क्षय और स्वर्ग की ओर ले जानी वाली नाव के रूप में उल्लेखित है।
वाजपेय यज्ञ	शक्ति प्रदर्शन के लिए

आवास - वैदिक वाङ्मय में आवास सम्बन्धी अनेक प्रसंग हैं। वेदों में कहा गया है कि घर 'यूप' अर्थात खम्भे पर टिके होते थे। इन्हें सकड़ी वाले पेड़ से बनाया जाता था। यूप ही घर को जमीन से लेकर छत तक सहारा देते थे। इसीलिए कई स्थानों पर यूप की पूजा और स्तुति के प्रसंग भी वेदों में मिलते हैं। अथर्ववेद के एक प्रसंग में बाँस से कहा गया है कि, वह घर को मजबूत आधार दे और उसे सीधा रखे। इसका आशय है कि कई घरों में यूप के स्थान पर बाँसों का भी प्रयोग किया जाता था। आज भी भारत सहित कई देशों के गाँवों में घर इसी तरह लकड़ी के यूप या बाँस पर टिके होते हैं। छतें प्रायः घास-फूस की बनी होती थीं और कभी-कभी घास की चटाइयाँ बनाकर उनसे छतें डाली जाती थीं। घरों का आकार सामान्य तौर पर बड़ा होता था। अथर्ववेद में बड़ी ऊत वाले घरों का उल्लेख है- **आयने ते परायणे दूर्वा रोहन्तु पुष्पिणीः। उत्सो वा तत्र जायतां ह्रदो वा पुण्डरीकवान्॥ अपामिदं न्ययनं समुद्रस्य निवेशनम्। मध्ये ह्रदस्य नो गृहाः पराचीना मुखा कुधि॥** (अथर्व.6.106.1, 2) । अर्थात् घर के आगे और पीछे दूर्वा

(हरीघास) का उद्यान हो और किनारे रङ्ग-बिरंगे खूब सारे फूल खिले हों। घर के सामने एक छोटा-सा जल का कुण्ड बना हो और जिसमें कमल के फूल खिले हों। घर के पास नदी बह रही हो और आस पास शीतल जल की झीलें हों। ऐसा लगे, जैसे कि जल स्रोतों के बीच में घर बसा हो। घर हमेशा मधुर आवाज़ों से गुंजायमान रहे। ऐसे आवासों का निर्माण आज भी रीवर-व्यु, सी-व्यु, हिल-व्यु आदि के रूप में किया जाता है।

भोजन- वैदिक संस्कृति में अन्न, सब्जी, कन्दमूल, फल, दूध और दूध के बने पदार्थ मुख्य भोजन थे। यदा- कदा शिकार का भी प्रचलन था। किन्तु कृषि एवं पशुपालन अपनाने के बाद उस पर निर्भरता कम होती गई। शाकाहार की प्रतिष्ठा भारतीय समाज में अति प्राचीनकाल से रही है। विभिन्न अनाज, दलहन, फल, तरकारी आदि को अग्नि द्वारा संस्कारित (पका) कर सेवन किया जाता था। विविध प्रकार के अन्न- जौ, बाजरा, गेहूँ, ज्वार, दालें, धान (चावल), तिल एवं उड़द आदि धान्यों का प्रचलन था। खानपान में शुद्धता का विशेष ध्यान रखा जाता था। ईश्वर को नैवेद्य लगाकर भोजन ग्रहण करने का आम प्रचलन प्राचीनकाल से ही भारतीय समाज में है। व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक और सामाजिक क्षमताओं के सन्तुलन के लिए आहार अत्यन्त आवश्यक है। यजुर्वेद में उल्लेख मिलता है कि- **अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्रप्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥** (11.83) अर्थात हे अन्न के पालक-दाता अग्निदेव! मेरे भाग्य का अंश रोग रहित और बल बढ़ाने वाले अन्न को मुझे प्रदान करो। जो अन्न को देने वाला है, उसको विपत्तियों से पार लगाओ। हम मनुष्य- पशु आदि में तुम अन्नादि के खाने-पीने से सर्वथा बलवीर्य- बुद्धि का आधान करो ।

वस्त्र एवं परिधान- प्राचीन काल में भारत में पहनावे में विविधता और मर्यादा का भाव था। स्त्री एवं पुरुषों के पहनावे अलग-अलग प्रकार के उनकी शरीर रचना, कार्य, आवश्यकता, मौसम एवं मर्यादा के अनुरूप भिन्न-भिन्न थे। राजा एवं दरबारियों की वेशभूषा आकर्षक एवं मूल्यवान होती थी। साधु– सन्यासी, ऋषि, मुनिगण श्वेत या भगवा वस्त्र धारण करते थे, जो सात्विकता, ज्ञान, तप आदि का प्रतीक हैं। ऋग्वेद के अनुसार- **यत्तेवासः परिधानं यौंनी विंकृणुषे त्वम्। शिवं ते तन्वे तत्कृण्म संस्पर्शेऽद्रूक्ष्ण-मस्तुते॥** (8.2.16) अर्थात् हे पुरुष! तुम्हारे जो शरीर को ढकने के लिए कपड़ा (परिधान) है एवं जिस वस्त्र को तुम कटि के नीचे (धोती) धारण करते हो, हम उस वस्त्र को तुम्हारे शरीर के लिए सुखकारी बनाते हैं, जिससे वह वस्त्र स्पर्श में रूखा, कठोर और खुर्दरा न होकर कोमल और मुलायम हो।

राज्यव्यवस्था- राजनीतिक दृष्टि से **पुरु** व **भरत** कबीले मिलकर **कुरु** तथा **तुर्वशु** और **क्रिवि** कबीले मिलकर **पाञ्चाल** कहलाये। आरम्भ में कुरुओं की राजधानी **असनदिवन्त** में थी, बाद में इसे **हस्तिनापुर** में स्थापित किया गया। शान्तनु, भीष्म, पाण्डु, धृतराष्ट्र, पाण्डव, कौरव, परीक्षित, जनमेजय आदि इसी राजवंश के राजा थे। पाञ्चाल क्षेत्र में आधुनिक बरेली आदि क्षेत्र आते हैं। इनकी राजधानी **काम्पिल्य** थी। पाञ्चालों में एक महत्त्वपूर्ण शासक **प्रवाहण जैवलि**, जो विद्वानों के संरक्षक और धर्मवीर शासक थे। काशी राज्य की स्थापना इसी काल में हुई। शतपथ ब्राह्मण में उल्लेख मिलता है कि विदेह माधव ने अपने गुरु राहूगण की सहायता से अग्नि के द्वारा इस क्षेत्र को स्वच्छ बनाया था। वाराणसी (काशी) राज्य की राजवंश परम्परा में अजातशत्रु नामक एक दार्शनिक राजा हुए थे। छान्दोग्य उपनिषद् के अनुसार इस न्यायकारी धर्मात्मा राजा ने दावा किया था कि, मेरे राज्य में कोई चोर, मद्य सेवी, क्रियाहीन, आलसी, व्यभिचारी और विद्याहीन नहीं है। वैदिक संस्कृति में राजतन्त्र ही शासन तन्त्र का आधारभूत ढाँचा था। परन्तु कहीं-कहीं गणराज्यों में लोकतन्त्र के भी उदाहरण मिलते हैं। उत्तरोत्तर राजा के अधिकारों एवं शक्तियों में वृद्धि होती गई। अब राजा को सम्माननीय उपाधियों से विभूषित किया जाने लगा था, जैसे- अधिराज, राजाधिराज, महाराजाधिराज, सम्राट, एकराट आदि। ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार पूर्वदेश के शासक **सम्राट**, पश्चिमके **स्वराट**, उत्तरके **विराट** तथा दक्षिण के **भोज** और मध्यदेश के शासक **राजा** की उपाधि धारण करते थे। पूर्वकाल में राजा का चुनाव जनता (विश) द्वारा, कालान्तर में जनता के प्रतिनिधियों द्वारा और अन्ततः राजा का पद वंशानुगत हो गया था। परन्तु अन्यायी राजा

सारणी 8.4

क्र.	रत्नियों के नाम	कार्य
1.	पुरोहित	मन्त्री (सलाहकार)
2.	राजन्य	माण्डलिक (सहायक राजागण)
3.	बवाता	पटरानी
4.	परिवृती	राजा की प्रथम पत्नी
5.	सेनानी	सेनापति
6.	सूत (सारथी)	सारथी
7.	ग्रामणी	ग्राम प्रधान
8.	क्षतृ(प्रतिहारी)	द्वारपाल
9.	संग्रहीत्य	कोषाध्यक्ष
10.	भागदुह	कर संग्रहकर्ता
11.	अक्षवाप	सन्धि विग्राहक
12.	गोविकर्तन	वनमण्डल अधिकारी
13.	पालागण	गुप्तचर

को प्रजा एवं ऋषि मिलकर पद से हटा भी सकते थे। न्यायकारी योग्य व्यक्ति को राजसिंहासन पर बिठा सकते थे। इसका साक्ष्य अनेक पुराणों में प्राप्त होते हैं। विष्णु पुराण के अनुसार राजा वेण को पदच्युत कर पृथु को सिंहासनारूढ करा दिया गया था। राजा पृथु के नाम पर ही धरती को पृथिवी के नाम से जाना गया।

राजनैतिक प्रदेश को संकेत करने वाला शब्द **राष्ट्र** का सर्वप्रथम प्रयोग वैदिक संस्कृति में किया गया था। अथर्ववेद के एक मन्त्र में कहा गया है कि राजा, राष्ट्र का स्वामी होता है। वरुण, बृहस्पति, इन्द्र तथा अग्निदेवता राजा को शक्ति एवं दृढता प्रदान करते हैं। राजा के राज्याभिषेक (पदधारण) के समय राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान किया जाता था। जिसमें राजा अपने राज्य की प्रतिभाओं (रत्नियों) को हवि प्रदान करते थे। उनको पद, धन, अधिकार प्रदान करते थे और अपने राज्य संचालन के लिए सहयोग एवं सम्मान प्राप्त करते थे। शतपथ ब्राह्मण में राज्य के 13 रत्नियों (सभारत्नों) का वर्णन आया है। इन रत्नियों की सहायता से राजा राज्य का सञ्चालन एवं प्रजा का रक्षण और रंजन करते थे। जो निम्न प्रकार से बताये गये हैं-

अर्थव्यवस्था- वैदिक संस्कृति एक ग्राम्य संस्कृति थी। इस काल की अर्थव्यवस्था का आधार कृषि, पशुपालन एवं विविध व्यवसाय थे। ऋग्वेद तथा अन्य वैदिक ग्रन्थों से हमें इसके प्रमाण मिलते हैं। इस काल में लोग खेतों की जुताई, बुआई, सिंचाई, कटाई आदि कार्य करते थे। ऋग्वेद में उल्लेख आया है कि– **मधुमतीरोषधीर्द्याव आपो मधुमन्नो भवत्वन्तरिक्षम्। क्षेत्रस्य पति–र्मधुमान्नो अस्त्वरिष्यन्तो अन्वेनं चरेम॥३॥ शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लाङ्गलम्। शुनं वरत्रा बध्यन्तां शुनमष्ट्रामुदिङ्गय॥४॥ शुनासीराविमां वाचं जुषेथां यद्दिवि चक्रथुः पयः। तेनेमामुप सिञ्चतम्॥५॥ अर्वाची सुभगे भव सीते वन्दामहे त्वा। यथा नः सुभगाससि यथा नः सुफलाससि॥६॥ इन्द्रः सीतां नि गृह्णातु तां पूषानु यच्छतु। स नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम्॥७॥ शुनं नः फाला वि कृषन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अभि यन्तु वाहैः। शुनं पर्जन्यो मधुना पयोभिः शुनासीरा शुनमस्मासु धत्तम्॥८॥** (4.57.3–8) भावार्थ यह है कि, सब मनुष्यों को चाहिये कि वे जैसे अपने लिये उत्तम पदार्थ चाहते हैं, वैसे ही अन्य जनों के लिये भी इच्छा करें। खेती करने वाले जन ,उत्तम हल आदि सामग्री, वृषभ और बीजों को इकट्ठे करके खेतों को उत्तम प्रकार से जोतकर उनमें उत्तम अन्नों को उत्पादन करें। खेती करने वाले जन प्रथमतः खेती करने की विद्या को ग्रहण करके तत्पश्चात् यथा योग्य खेती कर धन और धान्य से सदा युक्त हों। हे

मनुष्यों! जैसे उत्तम प्रकार से सम्पादित खेत की धरती उत्तम अन्नों को उत्पन्न करती है, वैसे ही ब्रह्मचर्य से विद्या को प्राप्त हुआ जन ,उत्तम सन्तानों को उत्पन्न करता है और जैसे भूमि राज्य का ऐश्वर्य कारक है, वैसे परस्पर प्रसन्न स्त्री और पुरुष बड़े ऐश्वर्य वाले होते हैं। सब कृषि कर्म करने वाले जन ,क्षेत्र जोतने वालों विद्वानों का अनुकरण करके कृषि की वृद्धि को उत्पन्न करें। कृषि कर्म करने वाले मनुष्यों को चाहिये कि उत्तम फलादि वस्तुओं को बना के हल आदि से भूमि को उत्तम करके अर्थात जोत कर के उत्तम सुख को प्राप्त हों, वैसे ही अन्य राजा आदि अपनी प्रजा को सुख देवें।

धर्म- वैदिक धर्म का आधार श्रेष्ठ मानव कर्म है। ऋग्वैदिक लोगों ने प्राकृतिक शक्तियों का **मानवीकरण** किया है। इस काल में देवताओं की तीन श्रेणियाँ थीं- **आकाश के देवता-** सूर्य, द्यौस, वरुण, मित्र, पूषन, विष्णु, उषा, अपान्नपात, सविता, त्रिप, विवस्वत, आदित्यगण, अश्विनद्वय आदि। **अन्तरिक्ष के देवता-** इन्द्र, मरुत, रुद्र, वायु, पर्जन्य, मातरिश्वन, आप्त्य, अज एकपाद, आप, अहिर्बुध्न्य। **पृथ्वी के देवता-** अग्नि, सोम, पृथ्वी, बृहस्पति, तथा नदियां। वैदिक कालीन देवताओं की आराधना मानव एवं कुछ देवताओं की आराधना पशुओं के रूप में भी की जाती थी। मरुतों की माता को **चितकबरी गाय** के रूप में, इन्द्र को **वृषभ** के रूप में एवं सूर्य को **अश्व** के रूप में परिकल्पित किया गया था।

इस अध्ययन से स्पष्ट है कि वैदिक भारत में सभ्यता और संस्कृति उच्चस्तर पर रही। इस काल में समाज, राजव्यवस्था, अर्थ, धर्म, कला, साहित्य आदि का अनन्यतम उन्नति हुई। जिसके प्रमाण तत्कालीन वाङ्मय में प्राप्त होते हैं।

महाजनपद- भारत में वैदिक सभ्यता और संस्कृति के विकास क्रम में छठीं-सातवीं शताब्दी ई.पू. का समय महापरिवर्तनकारी रहा। क्योंकि इस काल में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं दार्शनिक दृष्टि से नये विचारों एवं मान्यताओं का उदय हुआ। धार्मिक एवं दर्शनिक दृष्टि से इस काल में जैन, बौद्ध सहित अनेक विचारधाराओं का अभ्युदय हुआ। राजनीतिक दृष्टि से वैदिक राज्य अब जनपद कहे जाने लगे थे। इनमें से कुछ जनपद सशक्त होकर महाजनपदों में परिवर्तित हो गये। जनपद शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख **ऐतरेय** और **शतपथ** ब्राह्मण ग्रन्थों में मिलता है। वैदिक संस्कृति में परिवार से कुल का निर्माण हुआ, कुलों से ग्राम बने, ग्रामों से मिलकर जनपद बने तथा जनपदों से महाजनपद बने। सभी महाजनपद वर्तमान अफगानिस्तान से बिहार एवं हिन्दूकुश पर्वत क्षेत्र से गोदावरी नदी तक में विस्तृत थे।

महागोविन्द सुत्त में भारत का आकार उत्तर में आयताकार एवं दक्षिण में त्रिभुजाकार बताया गया है। बौद्धग्रन्थ अंगुत्तर निकाय में 6-7वी शताब्दी ईसा पूर्व में 16 महाजनपदों का उल्लेख किया गया है-

1. **अंग-** अंग महाजनपद वर्तमान बिहार के भागलपुर तथा मुंगेर जिले तक विस्तृत था। इसकी राजधानी चम्पा थी। बुद्ध के समय चम्पा नगर की गणना 6 प्रमुख महानगरों में की जाती थी। अंग का प्रसिद्ध शासक वृहदत्त था।
2. **अश्मक-** अश्मक महाजनपद वर्तमान आन्ध्रप्रदेश में गोदावरी नदी के तट पर स्थित था। इसकी राजधानी पोतन थी। कहा जाता है कि यहाँ राजतंत्र की स्थापना इक्ष्वाकु वंशीय शासकों ने की थी। इसका प्रसिद्ध राजा अरूण था।

मानचित्र- 8.2- 16 महाजनपद

3. **अवन्ती-** अवन्ती महाजनपद पश्चिमी तथा मध्य मालवा के क्षेत्र में स्थित था। इसके दो भाग थे- उत्तरी अवन्ती जिसकी राजधानी उज्जयिनी तथा दक्षिणी अवन्ती जिसकी राजधानी महिषमति थी। इन दोनों के मध्य वेत्रवती नदी का प्रवाह था।
4. **चेदी-** चेदी महाजनपद आधुनिक बुन्देलखण्ड के पूर्वी तथा उसके समीपवर्ती भागों में स्थित था। इसकी राजधानी सोत्थवती थी। जिसकी पहचान महाभारत कालीन शुक्तमति से की जाती है। महाभारत कालीन राजा शिशुपाल तथा चेतिय जातक के अनुसार राजा उपचर प्रसिद्ध शासक थे।
5. **गान्धार-** गान्धर महाजनपद वर्तमान पाकिस्तान के पेशावर तथा रावलपिण्डी जिलों में विस्तृत था। इसकी राजधानी तक्षशिला थी। जो प्रमुख व्यापारिक एवं शिक्षा का केन्द्र था। इस महाजनपद का दुसरा प्रमुख नगर पुष्कलावती था। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में यहां का राजा पुष्करसारिन था।

6. **काशी-** वर्तमान वाराणसी तथा उसके आस-पास के क्षेत्र प्राचीन काल में काशी महाजनपद कहलाता था। इसके उत्तर में वरुणा तथा दक्षिण में अस्सी नदी प्रवाहित होती थी। इसकी राजधानी वाराणसी थी। यहां का सबसे शक्तिशाली राजा ब्रह्मदत्त था।

सारणी 8.5

मगध के प्रमुख राजवंश	
हर्यक वंश	544 ई.पू. से 412 ई. पू. तक
शिशुनाग वंश	412 ई. पू. से 344 ई.पू. तक
नन्द वंश	344 ई.पू. से 322 ई.पू. तक

7. **कम्बोज-** कम्बोज महाजनपद दक्षिणी पश्चिमी कश्मीर तथा काफिरिस्तान क्षेत्र में फैला था। इसकी राजधानी राजपुर या हाटक थी। पांचवी छठी शताब्दी ईसा पूर्व यहां पर संघ राज्य स्थापित हुआ । कौटिल्य ने कम्बोजों को **वार्ताशस्त्रोपजीवी संघ** अर्थात कृषि, पशुपालन ,वाणिज्य तथा शस्त्र द्वारा जीविका चलाने वाला कहा है। प्राचीनकाल में कम्बोज श्रेष्ठ घोड़ों के लिए विख्यात था।

8. **कोशल-** वर्तमान अवध क्षेत्र प्राचीनकाल में कोशल महाजनपद कहलाता था। इसकी सीमा उत्तर में नेपाल से लेकर दक्षिण में सई नदी तथा पश्चिम में पांचाल से लेकर पूर्व में गण्डक नदी तक फैला हुआ था। रामायण काल में इसकी राजधानी अयोध्या थी। बुद्धकाल में कोशल दो भागों में विभाजित हो गया- उत्तरी कोशल जिसकी राजधानी अयोध्या तथा दक्षिणी कोशल जिसकी राजधानी श्रावस्ती थी।

9. **कुरु-** वर्तमान मेरठ, दिल्ली तथा थानेश्वर के भू-क्षेत्रों में कुरु महाजनपद स्थित था। इसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी। महाभारतकालीन हस्तिनापुर भी इसी राज्य में था। बुद्ध के समय यहाँ का राजा कोरग्य था।

10. **मगध-** मगध एक प्राचीन राज्य है। 5वीं-6वीं शताब्दी ईसापूर्व के सोलह महाजनपदों में से एक है। इसका उल्लेख अर्थववेद में भी हुआ है। इतिहास में मगध राज्य का वास्तविक संस्थापक बिम्बसार को माना जाता है। बिम्बसार ने 544 वर्ष ईसापूर्व मगध में हर्यक राजवंश की स्थापना की। शीघ्र ही मगध का उदय एक विशाल साम्राज्य एवं राजनीति शक्ति के रूप में हुआ। हर्यक राजवंश के काल में मगध की राजधानी गिरिव्रज (राजगृह) थी, जिसे आज राजगीर के नाम से भी जाना जाता है। इस काल में मगध का विस्तार कोशल, वैशाली एवं वर्तमान पञ्जाब तक था। बिम्बसार की ही भांति उसका पुत्र अजातशत्रु भी प्रतिभासम्पन्न एवं शक्तिशाली राजा हुआ। मगध का उत्तरोत्तर विकास होता गया। चौथी शताब्दी ईसा पूर्व मगध में शक्तिशाली नन्दवंश की सत्ता कायम हुई। उस समय मगध उत्तर

भारत में राजनैतिक शक्ति का केन्द्रबिन्दु था। नन्दवंश का अन्तिम और शक्तिशाली शासक घनानन्द था। 321 ईसा पूर्व चन्द्रगुप्त मौर्य अपनी योग्यता और अपने गुरु विष्णु गुप्त (चाणक्य) के संरक्षण एवं निर्देशन में घनानन्द की सत्ता को समाप्त कर मगध में मौर्य राजवंश की प्रतिष्ठा कर राजा बने। चन्द्रगुप्त मौर्य ने सामरिक महत्त्व के क्षेत्र पाटलिपुत्र (पटना) को अपनी राजधानी बनाया, जो गङ्गा तट पर स्थित है। चन्द्रगुप्त के शासनकाल में मगध साम्राज्य की सीमा सम्पूर्ण उत्तर भारत के अतिरिक्त दक्षिण-भारत तक फैली थी। इस राजवंश में अनेक प्रतापी शासक हुए। सम्राट अशोक इस राजवंश में सबसे प्रतापी राजा हुआ। इसकी प्रतिष्ठा इतिहास में महान शासक, बौद्ध धर्म के प्रचारक तथा शान्ति और अहिंसा के अग्रदूत के रूप में हुई।

11. **मल्ल-** मल्ल महाजनपद वर्तमान पूर्वी उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले में स्थित था। यह एक संघ राज्य था। यहाँ मल्लों की पाँच शाखायें थीं। कुस जातक में ओक्काक को मल्ल का राजा बताया गया है।

12. **मत्स्य-** वर्तमान राजस्थान प्रान्त के जयपुर क्षेत्र में मत्स्य महाजनपद स्थित था। इसका विस्तार वर्तमान अलवर एवं भरतपुर तक था। इसकी राजधानी विराट नगर थी।

13. **पाञ्चाल-** वर्तमान बरेली, बदायूं तथा फर्रुखाबाद में पाञ्चाल महाजनपद विस्तृत था। इसके दो भाग थे- उत्तरी पाञ्चाल जिसकी राजधानी अहिछत्र तथा दक्षिणी पाञ्चाल जिसकी राजधानी काम्पिल्य थी।

14. **शूरसेन-** आधुनिक ब्रजमंडल क्षेत्र में यह महाजनपद स्थित था। इसकी राजधानी मथुरा थी। महाभारत काल में यहाँ यदुवंशियों का शासन था। बुद्ध काल में यहां का शासक राजा अवन्तिपुत्र था। जिसने बौद्ध धर्म का प्रचार इस क्षेत्र में किया।

15. **वज्जिसंघ-** सोलहमहाजनपदों में वज्जिसंघ (वृज्जि) का भी नाम आता है। आधुनिक दरभंगा एवं मुजफ्फरपुर वज्जिसंघ क्षेत्र में थे। यह भी एक शक्तिशाली राज्य था। इसकी राजधानी मिथिला एवं वैशाली थी। वज्जिसंघ में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली का प्रचलन था। इस संघ में सभी निर्णय जो सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक महत्त्व के होते थे, समूह में विचार–विमर्श से लिए जाते थे। महात्मा बुद्ध एवं महावीर स्वामी का जन्म भी ऐसे ही गणराज्य वंश में हुआ था। वज्जिसंघ की सामूहिक एकता एवं शक्ति के कारण, इसका प्रभुत्व लगभग आज के 1500 वर्ष पूर्व तक बना रहा।

16. **वत्स-** आधुनिक बाँदा तथा प्रयागराज जिलों में प्राचीन वत्स महाजनपद स्थित था। इसकी राजधानी कौशाम्बी थी। विष्णु पुराण के अनुसार हस्तिनापुर के गङ्गा प्रवाह में प्रवाहित हो जाने के उपरान्त राजा निचक्षु ने कौशाम्बी को अपनी राजधानी बनाया था। यहाँ का प्रसिद्ध शासक उदयन था।

महाजनपदों की शासन प्रणाली- छठीं-सातवीं शताब्दी ईसा पूर्व के ये महाजनपद शासन प्रणाली के आधार पर गण और संघ के नाम से जाने जाते थे। इस काल में गणतन्त्र एवं राजतन्त्र शासन का प्रचलन था, परन्तु अधिकांश राजतन्त्रीय व्यवस्था ही प्रचलित थी।

दुर्ग- शासन व्यवस्था की दृष्टि से महाजनपदों की सीमाएं बढ़ी तो सुरक्षा एवं शासन की सुचारूता के लिए राजाओं द्वारा राजधानियों एवं दुर्गों का निर्माण कराया गया। राजधानी क्षेत्र अभेद्य दुर्गों से रक्षित होते थे। ये दुर्ग राजा की शक्ति और संपन्नता को भी दर्शाते थे।

सेना- राज्य की सुरक्षा के लिए सज्जित चतुरंगिणी सेनाएं होती थी। सैनिकों की नियुक्ति एवं प्रबन्ध के लिए सेना प्रमुख होते थे। ये सभी प्रायः वेतनभोगी होते थे।

मुद्रा- लेन-देन में धातु मुद्राओं का प्रचलन था, जो राजकीय कोष से निर्गत होते थे। क्योंकि इन मुद्राओं को **आहत** करके निर्मित किया जाता था। अतः इन्हें **आहत मुद्रा** भी कहा जाता था।

कर- राज्य की व्यवस्था एवं सार्वजनिक विकास कार्यों के लिए अधिक धन की जरूरत के चलते, कर प्रणाली का विकास हुआ। **कर** राजाज्ञा के द्वारा राज्य की जनता से वसूला जाता था। कृषि उत्पादों, पशु एवं पशु उत्पादों, जङ्गली उत्पादों पर व्यापारियों से **कर** लिया जाता था, जिसे **भाग** कहा जाता था।

कृषि- बदलती व्यवस्था का प्रभाव कृषि कार्यों पर भी पड़ा। कृषि क्षेत्र में लकड़ी और पत्थर के बने औजारों का स्थान लोहे ने ले लिया था। फसलों के उपजाने के तरीकों में बदलाव एवं भूमि पर जोत का आकार बढ़ने के कारण उत्पादन भी बढ़ने लगा। धान एवं सब्जियों के लिए **रोपण विधि** का प्रयोग किया जाने लगा। दास, दासी एवं भूमिहीन जन कृषि कार्य में मजदूरी करने लगे, जो **कर्मकार** कहलाते थे।

इस प्रकार महाजनपद कालीन भारत में राजतन्त्र एवं गणतन्त्र शासन प्रणाली प्रचलित थी। दोनों ही शासन प्रणालियों में ही महाजनपदों का प्रभाव विस्तार एवं विकास हुआ था। पुरातत्त्वविदों द्वारा जनपदकालीन बस्तियों का उत्खनन कराया गया। दिल्ली में पुराना किला, उत्तर प्रदेश में मेरठ के पास हस्तिनापुर, एटा के पास अतिरंजीखेड़ा आदि स्थानों पर उत्खनन से ज्ञात हुआ कि इस काल में लोग झोपड़ियों में रहते थे। कृषि एवं पशुपालन करते थे। खेतों में मुख्यतः गेहूं, धान, जौ, गन्ना, दलहन एवं तिलहन की फसल पैदा करते थे। मिट्टी एवं धातु के बर्तनों का प्रयोग करते थे। मिट्टी के बर्तन कुछ भूरे एवं कुछ लाल रङ्ग के होते थे। इन बर्तनों पर सरल ज्यामिति आकृतियाँ बनी है, जिन्हें **चित्रित धूसर पात्र** कहा जाता है।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1. निम्न में से.....वेद हैं।

अ. 4 ब. 8 स. 1 द. 5

2. निम्न में से आश्रम ..... है।

अ. 4 ब. 3 स. 1 द. 5

3. वर्ण व्यवस्था का ऋग्वेद के ..... सूक्त में हैं।

अ. रुद्र ब. शिव स. पुरुष द. ब्रह्म

4. महाजनपदों की संख्या ..... थी।

अ. 16 ब. 18 स. 12 द. 19

5. अथर्ववेद में .....महाजनपद का उल्लेख है।

अ. कुरु ब. मगध स. गांधार द. काशी

6. महाजनपद काल में..... शासन प्रणाली प्रचलित थी।

अ. राजतंत्र ब. गणतंत्र स. कुलीन तन्त्र द. विकल्प क और ख

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. ग्राम प्रधान को .....कहा जाता था। (ग्रामणी/अक्षवाप)
2. पुरुषार्थ .....माने गए है। (4/5)
3. 26–50 वर्ष की आयु .....के लिए निर्धारित थी। (वानप्रस्थाश्रम/गृहस्थाश्रम)
4. अंग महाजनपद की राजधानी .....थी। (चम्पा/इन्द्रप्रस्थ)

सत्य/असत्य चुनिए–

1. भारत को आर्यावर्त नाम से जाना जाता था। (सत्य/असत्य)
2. यूप शब्द खम्भें के लिए प्रयोग किया जाता था। (सत्य/असत्य)
3. नन्दवंश का अन्तिम शासक महापद्मनन्द था। (सत्य/असत्य)

सही जोड़ी मिलान कीजिए –

1. प्रथम आश्रम	क. वानप्रस्थाश्रम
2. द्वितीय आश्रम	ख. बृह्मचर्याश्रम
3. तृतीय आश्रम	ग. सन्यासाश्रम
4. चतुर्थ आश्रम	घ. गृहस्थाश्रम

अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. वैदिककाल में रत्नि किसे कहा जाता था ?

2. जनपद से क्या अभिप्राय है ?
3. उत्तरी अवन्तिका राजधानी का क्या नाम था ?
4. मगध महाजनपद का वास्तविक संस्थापक कौन था ?
5. आहत सिक्के किन्हें कहा जाता था ?

लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. सप्तसैन्धव नदियों के नाम लिखिए।
2. शतपथ ब्राह्मण के अनुसार 13 सभा रत्नियों का उल्लेख करो ?
3. वैदिक संस्कृति की आवास व्यवस्था का वर्णन करो ?
4. चित्रित धूसर पात्र से क्या अभिप्राय है?
5. महाजनपद कालीन सामाजिक व्यवस्था के बारे में बताइए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

1. वैदिक संस्कृति में भोजन व्यवस्था को विस्तार से समझाइए ?
2. मगध महाजनपद के बारे में विस्तार से लिखिए।

परियोजना कार्य –

1. छात्र ऋग्वेद में उल्लिखित नदियों के नामों को मानचित्र पर दर्शाए?

अध्याय–9

प्राचीन भारतीय राजवंश एवं साम्राज्य

आइये जानें- मौर्य साम्राज्य एवं राजवंश, मौर्य साम्राज्य एवं राजवंश,रेशम मार्ग, मौर्योत्तर कालीन भारत, गुप्त साम्राज्य, गुप्त साम्राज्य का प्रशासन, सम्राट हर्षवर्धन, दक्षिण तटीय राज्य, दक्षिण के पल्लव और चालुक्य राजवंश, दक्षिण में सभाएँ, तीर्थयात्री, व्यापारी और भक्ति परम्परा।

मौर्य साम्राज्य एवं राजवंश- मौर्य साम्राज्य की स्थापना लगभग 321 ई.पूर्व चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने शिक्षक एवं गुरु कौटिल्य के निर्देशन में की थी। कौटिल्य को इतिहास में विष्णुगुप्त एवं चाणक्य के नाम से भी जाना जाता है। ये तक्षशिला में शिक्षक थे। इनकी पुस्तक **अर्थशास्त्र** जो सामाजिक, राजनीतिक, एवं आर्थिक के साथ ही प्रशासन विधि की दृष्टि से विश्व प्रसिद्ध साहित्य है।

1. सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य – 321-298 ईसा पूर्व (24 वर्ष)
2. सम्राट बिन्दुसार मौर्य – 298-271 ईसा पूर्व (28 वर्ष)
3. सम्राट अशोक महान – 269-232 ईसा पूर्व (37 वर्ष)
4. कुणाल मौर्य – 232-228 ईसा पूर्व (4 वर्ष)
5. दशरथ मौर्य –228-224 ईसा पूर्व (4 वर्ष)
6. सम्प्रति मौर्य – 224-215 ईसा पूर्व (9 वर्ष)
7. शालिसुक मौर्य –215-202 ईसा पूर्व (13 वर्ष)
8. देववर्मन मौर्य– 202-195 ईसा पूर्व (7 वर्ष)
9. शतधन्वन् मौर्य – 195-187 ईसा पूर्व (8 वर्ष)
10. बृहद्रथ मौर्य- 187-185 ईसा पूर्व (2 वर्ष)

मौर्य साम्राज्य, मगध से प्रारम्भ होकर भारत के विस्तृत भू-भाग में फैल गया। यह तत्कालीन भारत का सबसे बड़ा और शक्तिशाली साम्राज्य था। मौर्य वंश का शासन 185 वर्ष ईसा पूर्व तक रहा। मौर्यकाल के पूर्व भारत छोटी-छोटी राजनीतिक इकाईयों में बँटा हुआ था। इन राजनीतिक इकाईयों को जनपद अथवा राज्य कहा जाता था। राजनीतिक दृष्टि से राज्य का कार्यक्षेत्र छोटा होता है, जबकी साम्राज्य विस्तृत होता है। राज्य में राजा या प्रशासक का सीधा नियन्त्रण होता है, जब की साम्राज्य विस्तृत होने के कारण राजा द्वारा प्रशासन के लिए राज्यपालों की नियुक्ति की जाती है जो राजा के प्रति उत्तरदायी होते थे। साम्राज्य की सुरक्षा एवं संचालन के लिए बड़ी सेना एवं अनेकों अधिकारियों एवं कर्मचारियों की आवश्यकता होती है।

मौर्य साम्राज्य एवं राजवंश- मौर्यवंश में राजपरम्परा पैतृक थी। अतः चन्द्रगुप्त के बाद उसका पुत्र बिन्दुसार एवं उसके बाद, उसका पुत्र अशोक सम्राट बना। आगे भी यह परम्परा चलती रही। ये तीनों सम्राट, महान प्रशासक, प्रजावत्सल एवं धर्मभीरु थे।

राजधानी एवं अन्य क्षेत्र- मौर्यों की राजधानी पाटलिपुत्र (पटना) थी। मौर्य साम्राज्य के अधीन अनेक नगर- तक्षशिला, मथुरा, उज्जयिनी आदि थे, जो उस समय व्यापार के महत्वपूर्ण केन्द्र थे। किसान एवं पशुपालक प्राय: ग्रामीण क्षेत्रों, व्यापारी एवं व्यवसायी राजधानी क्षेत्र एवं अन्य लोग नगरों में निवास करते थे। मौर्य साम्राज्य के बड़े भू–भाग पर घने जङ्गल हुआ करते थे। इन क्षेत्रों में आदिवासी जन निवास करते थे। इससे स्पष्ट है कि मौर्य साम्राज्य में भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा भाषाई विविधता विद्यमान थी। विशाल मौर्य साम्राज्य के सुचारू सञ्चालन के लिए दो प्रकार की शासन व्यवस्था थी- केन्द्रीय (राजधानी) शासन एवं प्रान्तीय शासन।

केन्द्रीय (राजधानी क्षेत्र) शासन- केन्द्रीय शासन के अन्तर्गत राजधानी और उसके आस-पास के क्षेत्र आते थे। ये क्षेत्र सीधे सम्राट द्वारा प्रशासित होते थे।राजा की राजकार्यों एवं नीति निर्धारण में मदद के लिए मन्त्रिपरिषद होती थी। इन नीतियों को लागू करने के लिए विभागों का गठन किया गया था। जिन्हें तीर्थ कहा जाता था। तीर्थ के प्रधानाधिकारी को अमात्य कहा जाता था। समाहर्ता, आटविक, सन्निधाता, व्यावहारिक आदि प्रमुख अमात्य थे। कर संग्रह के लिए राजकर्मचारी होते थे। कृषक, पशुपालक, व्यापारी एवं शिल्पकारों को भाग (कर) देना पड़ता था। नियम उल्लंघन करने वाले के लिए दण्ड का प्रावधान था। प्रायः राज्य के अधिकारी एवं कर्मचारी वेतन भोगी होते थे। संदेशों के आदान–प्रदान के लिए दूत होते थे। राजकार्यों के लिए सलाहकार एवं मन्त्रिमण्डल होते थे। अधिकारियों की निगरानी के लिए जासूस होते थे। इन सब पर राजा की दृष्टि होती थी। मौर्य साम्राज्य में राजा ही प्रधान न्यायाधीश होता था। परन्तु उस समय दो प्रकार के न्यायालय धर्मस्थलीय (दीवानी) और कण्टकशोधन (फौजदारी) भी होते थे।

सारणी 9.1

प्रान्त	राजधानी
प्राच्य (प्राची)	पाटिलपुत्र
उत्तरापथ	तक्षशिला
दक्षिणापथ	सुवर्णगिरि
अवन्ति	उज्जयिनी
कलिंग	तोशली

प्रान्तीय शासन- मौर्य साम्राज्य पाँच प्रान्तों में विभक्त था। इन प्रान्तों में सम्राट द्वारा प्रशासक के रूप में राज्यपाल नियुक्त होते थे, जो प्राय: राजवंश के राजकुमार ही होते थे। जिन्हें 12000 पण (चाँदी के

सिक्के) वार्षिक वेतन दिया जाता था। हर क्षेत्र की सांस्कृतिक परम्पराओं एवं लोक रीतियों को महत्त्व दिया जाता था।

यातायात मार्ग- यातायात के रूप में सड़कों एवं नदी जलमार्गों का प्रयोग होता था। इन मार्गों पर सीधा मौर्य सम्राट का नियन्त्रण था। राजमार्गों पर कर लगता था।

जङ्गल के निवासी- जङ्गल सदैव ही बहुउपयोगी रहे हैं। विभिन्न औषधियों, मधु एवं लकड़ियों के स्रोत जङ्गल ही हैं। मौर्य साम्राज्य में जङ्गल के निवासी काफी हद तक स्वतन्त्र थे। वनवासी लोग राज्य को हाथी, घोड़े, शहद, मोम, वन्य औषधियाँ और लकड़ियाँ आदि आवश्यकतानुसार प्रदान करते थे।

मेगस्थनीज- यूनानी राजा सेल्यूकस का राजदूत मेगस्थनीज भारत आया था। काफी समय तक सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में रहकर सम्पूर्ण भारत का भ्रमण भी किया। उसकी एक महत्त्वपूर्ण रचना 'इण्डिका' है। यह पुस्तक मौर्य साम्राज्य एवं तत्कालीन भारत का प्रतिदर्श है। मेगस्थनीज ने इस पुस्तक में राजधानी पाटलीपुत्र, राजदरबार की भव्यता एवं सम्राट की गरिमा, सुरक्षा व्यवस्था एवं सम्राट के प्रधानमन्त्री कौटिल्य पर भी व्यापक एवं सूक्ष्म अङ्कन किया है। मेगस्थनीज ने पाटलीपुत्र के विषय में बताया है कि यह विशाल सुन्दर नगर विशाल प्राचीर से घिरा हुआ है, जिसमें 570 बुर्ज और 64 द्वार हैं। सम्राट का राजमहल काष्ठ निर्मित होने के साथ ही उत्कीर्णित पत्थरों से अलंकृत किया गया था।

मानचित्र- 9.1 मौर्यकालीन भरत

सम्राट अशोक- अशोक, मौर्य साम्राज्य के तीसरे महान शक्तिशाली एवं प्रतिभा सम्पन्न सम्राट थे। इनका शासनकाल लगभग 272 से 232 ईसा पूर्व तक रहा। वह बिन्दुसार का पुत्र एवं महान मौर्य साम्राज्य के संस्थापक सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य का पौत्र था। सम्राट अशोक ने अपने शासन काल में अनेक ऐसे कार्य किये, जिसके कारण इतिहास में उन्हें महान सम्राट का स्थान प्राप्त है। सम्राट अशोक ने प्रजा से सीधा संवाद प्रारम्भ किया। कलिंग के युद्ध में हुए, भयानक नरसंहार ने शक्तिशाली सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तन कर दिया और वे 'धम्म' की शरण में संकल्पबद्ध हो गये।

धम्म और अशोक- सम्राट अशोक के पूर्व ही महात्मा बुद्ध के विचारों ने समाज में एक धार्मिक क्रान्ति उत्पन्न कर दी थी। उनके सीधे और सरल उपदेशों ने समाज के अधिकाधिक लोगों को आकर्षित किया। आगे चलकर यही उपदेश बौद्ध धर्म के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। कलिंग युद्ध की हत्याओं से दुःखी मन, अशोक पर बुद्ध के उपदेशों का गहरा प्रभाव पड़ा। अशोक ने बौद्ध धम्म (धर्म) को अपना लिया। उसने एक अभिलेख में उत्कीर्ण कराया कि "राजा बनने के आठ साल बाद मैंने कलिंग पर विजय प्राप्त की। लगभग डेढ़ लाख लोग बन्दी बना लिए गये। एक लाख से ज्यादा लोग मारे गए। इससे मुझे अपार दुःख हुआ, क्यों? जब किसी स्वतन्त्र देश को जीता जाता है तो लाखों लोग मारे जाते हैं और बहुत सारे लोग बन्दी बनाये जाते हैं। जो लोग अपने सगे–सम्बन्धियों और मित्रों को प्रेम करते हैं तथा दासों और मृतकों के प्रति दयावान होते है, वे भी युद्ध में या तो मारे जाते हैं या अपने प्रियजनों को खो देते है इसलिए मुझे पश्चाताप हो रहा है। अब मैनें धम्म का पालन करने एवं दूसरों को इसकी शिक्षा देने का निश्चय किया है। मैं, मानता हूँ कि मेरे बाद मेरे बेटे और पोते भी युद्ध न करें। इसके बदले उन्हें यह सोचना चाहिए कि धम्म को कैसे आगे बढ़ाया जाए।"

सम्राट अशोक का मानना था कि राजा को प्रजा पर बल प्रयोग नहीं करना चाहिए। लोगों की सेवा करना राजा का कर्तव्य है। अशोक ने राजदरबार में धम्म की शिक्षा देने के लिए **'धम्म महामात्य'** की नियुक्ति की थी। सम्राट अशोक ने धम्म संदेशों के प्रचार–प्रसार के लिए बौद्ध संघों एवं स्तूपों का निर्माण कराया। शिलाओं एवं स्तम्भों पर धम्म उपदेशों को उत्कीर्ण कराया। धम्म के संदेशों को विश्व में फैलाने के लिए श्रमणों को चीन, ग्रीस, मिश्र आदि देशों में भेजा एवं अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को धम्म प्रचार के लिए श्रीलङ्का भेजा।

मौर्य साम्राज्य के जनकार्य एवं विरासत- मौर्यवंशीय सम्राटों ने अनेक जन कार्य किये थे। उन्होंने सडकों का निर्माण कराया, वृक्षारोपण कार्य कराये, कुएँ, झील आदि खुदवाएँ, यात्रियों की सुविधा के लिए धर्मशालाएँ बनवाये गये। पशुओं के लिए भी चिकित्सालय बने। उनके अभिलेख प्राकृत एवं स्थानीय भाषाओं में उत्कीर्ण हैं। सम्राट अशोक के शासन के दौरान सर्वाधिक जनकार्य हुए थे। उन्होंने सत्य एवं अहिंसा का विश्व स्तर पर प्रचार–प्रसार कराया। गुजरात की विश्व प्रसिद्ध सुदर्शन झील का निर्माण सम्राट चन्द्रगुप्त ने करवाया था। **सम्राट अशोक के धम्म के सन्दर्भ में पंडित जवाहरलाल नेहरु ने लिखा कि-** उनके धर्मोपदेश आज भी हमसे एक ऐसी भाषा में बात करते हैं जिन्हें हम समझ सकते हैं और जिनसे हम कुछ सीख सकते हैं। इस प्रकार सम्राट अशोक महान ने अपने पीछे एक सम्पन्न प्रशासकीय, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत छोड़ी है।

चित्र- 9.1 सारनाथ के अशोक स्तम्भ

वर्तमान में हमारे राष्ट्रीय चिन्ह को सारनाथ के अशोक स्तम्भ से लिया गया है, जो हमारी मुद्राओं पर अंकित होता है।

क्या आप जानते हैं-

- सम्राट अशोक ने 250 ईसा पूर्व सिहं चतुर्भुज को सारनाथ में स्थित स्तम्भ के शीर्ष पर रखवाया था।
- अशोक स्तम्भ की खोज 1904-05 ईस्वी में अभियन्ता फ्रेडरिक ओरटेल ने की थी।
- भारत के राष्टीय प्रतीक के रूप में इसे

मौर्योत्तर कालीन भारत- सम्राज्य की विशालता, प्रान्तीय शासकों के अत्याचार, अशोक द्वारा युद्ध त्याग कर अहिंसा की नीति को अपनाना, राजधानी का केन्द्र में न होना, राजसी परिवार में फूट और षड्यंत्र, धर्म निरपेक्षता का अभाव, राष्ट्रीय भावना की कमी, अशोक के अयोग्य उत्तराधिकारी जैसे प्रमुख कारण मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण बने।

शुंग वंश- 185 ईसा पूर्व में सम्राट बृहद्रथ मौर्य की हत्या कर उनके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने शासनसत्ता अपने हाथ में ले ली। इस प्रकार मौर्य वंश के पश्चात् शुंग वंश के शासन की नींव पड़ी। पुष्यमित्र का

शासन काल लगभग 149 ई.पू. तक रहा। इन्हें वैदिक धर्म का संरक्षक भी कहा जाता है। कालीदास के मालविकाग्निमित्रम् में पुष्यमित्र शुंग को **कश्यप गोत्रिय** ब्राह्मण कहा गया है। उन्होंने अपने पुरोहित पतञ्जलि की सहायता से 2 बार **अश्वमेध यज्ञ** किया। इस वंश के अन्तिम उत्तराधिकारी वज्रमित्र थे, जिनका शासन लगभग 94 ई. पू. तक रहा। इनकी हत्या उनके ही मन्त्रि वसुदेव ने की थी। शुंगों के शासन क्षेत्र में मध्य गंगा की घाटी एवं चम्बल नदी तक का प्रदेश सम्मिलित थे। पाटलिपुत्र, अयोध्या, विदिशा आदि इसके महत्त्वपूर्ण नगर थे। दिव्यावदान एवं तारानाथ के अनुसार जलंधर और साकल नगर भी इसमें सम्मिलित थे।

- पुष्यमित्र शुंग (185–149 ई.पू.)
- अग्निमित्र (149–141 ई. पू.)
- वसुज्येष्ठ (141–131 ई. पू.)
- वसुमित्र (131–124 ई. पू.)
- अन्ध्रक (124–122 ई. पू.)
- पुलिन्दक (122–119 ई. पू.)
- घोष शुंग (119–108 ई. पू.)
- वज्रमित्र (108–94 ई. पू.)

कण्व वंश- कण्व वंश की स्थापना वासुवेद ने लगभग 73 ई.पू. में की। इस वंश का शासन मात्र 45 वर्ष तक ही रहा। कण्व वंश ने वैदिक धर्म की पुनर्स्थापना में भारी योगदान दिया। इस वंश का तीसरा शासक नारायण कण्व एक अयोग्य एवं निर्बल शासक था। इसके कार्यकाल में मगध साम्राज्य का क्षेत्र मात्र बिहार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ इलाकों तक सीमित रह गया था। इस वंश के अंतिम शासक सुशर्मा की हत्या लगभग 27 ई.पू. में उसके सेनापति सिमुक ने कर इस वंश के शासन का अंत कर दिया था।

सातवाहन वंश- सिमुक ने लगभग 27 ई.पू. में दक्षिण भारत के आंध्रा एवं महाराष्ट्र प्रदेशों के अधिकांश भागों को मिलाकर सातवाहन वंश के शासन की स्थापना की। इनका शासन काल लगभग 240 ई. तक रहा। सातवाहनों को आन्ध्र भी कहा जाता है। इनकी राजधानी प्रतिष्ठानपुर (आधुनिक महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में) थी। गौतमीपुत्र शातकर्णि, वशिष्ठ पुत्र पुलवामी एवं यज्ञश्री शातकर्णि आदि इस वंश के प्रमुख प्रसिद्ध शासक हुए। गौतमीपुत्र शातकर्णि को **पश्चिम का स्वामी** कहा गया है। गौतमीपुत्र शातकर्णि ने दो अश्वमेध एवं एक राजसूय यज्ञ किये। इसने अपने शासनकाल के 18 वें वर्ष में नासिक की एक गुफा तपस्वियों को प्रदान की। सातवाहन वंशी राजाओं का शासन पश्चिम में काठियावाड़ से दक्षिण–पूर्व के तमिलनाडु क्षेत्र तक विस्तृत था। अतः इन्हें दक्षिण–पथ अर्थात् **'दक्षिण मार्ग'** का स्वामी भी कहा जाता था। कुछ समय के लिए मौर्यों का मगध साम्राज्य भी इनके अधीन रहा। गौतमीपुत्र शतकर्णि ने अपने शासन के 24 वें वर्ष में ब्राह्मणों को भूमि-अनुदान देने की प्रथा आरम्भ की। सातवाहन

समाज मातृसत्तात्मक, भाषा प्राकृत एवं लिपि ब्राह्मी थी। प्रसिद्ध साहित्यकार **हाल** एवं **गुणाढ्य** इसी काल में थे। हाल ने **गाथा सप्तशतक** एवं गुणाढ्य ने **बृहत्कथा** जैसे ग्रन्थों की रचना की। सातवाहन शासकों ने सीसा, चाँदी, ताँबे के सिक्के चलाये। कार्ले का चैत्य, अजंता–एलोरा गुफाओं का निर्माण एवं अमरावती कला के विकास के क्षेत्र में सातवाहनों ने उल्लेखनीय योगदान दिया।

शक- ई. पूर्व प्रथम शताब्दी में विदेशी आक्रान्ता शकों का आक्रमण भारत पर हुआ और भारत के अधिकांश भू-भाग पर सत्ता स्थापित की। प्रथम शक शासक **माउस** ने पहली शताब्दी के अन्तिम चरण में काबुल, पूर्वी पञ्जाब, सिन्ध तथा गान्धार प्रदेशों पर शासन किया। इसके बाद उनके राज्य का विस्तार पञ्जाब, मथुरा, महाराष्ट्र तथा उज्जैन तक हुआ। महाराष्ट्र के भूमक और नहपान (119 से 124 ई.) तथा उज्जैन के चेष्टन तथा रूद्रदामन (130 से 150 ई.) प्रमुख शक्तिशाली शक क्षत्रप थे।

पह्लव- पर्थियन नामों वाले कुछ शासक ईसा पूर्व पहली शती के अन्त में उत्तर–पश्चिम भारत पर शासन कर रहे थे। जिन्हें भारतीय स्रोतों में पह्लव कहा गया है।

पह्लवों का उल्लेख महाभारत में हुआ है। पह्लव राजवंश का वास्तविक संस्थापक **मिथ्रेडेट्स प्रथम** को माना गया है। सबसे शक्तिशाली पह्लव शासक गोंडोफ़र्निस (20-41 ई.) था। पह्लव साम्राज्य का अन्त **कुषाणों** ने किया।

कुषाण वंश- कुषाण वंश (लगभग 30 से 225 ई. तक) शकों की ही एक शाखा थी। इनकी मूल जाति युइशि थी, जो मध्य एशिया के निवासी थे। ये लोग भारत के कम्बोज–बाह्लीक में आकर बस गये और वहाँ की सभ्यता से प्रभावित हुए। हिन्दुकुश को पार कर वे चितराल देश के पश्चिम से उत्तरी स्वात और हजारा के रास्ते आगे बढ़ते रहे। ई .पूर्व प्रथम शती में कुषाणों ने यहाँ की सभ्यता को अपनाया। भारत में कुषाण वंश का सबसे शक्तिशाली और प्रतापी शासक कनिष्क (लगभग 78 से 106 ई. तक) था। कनिष्क के शासन काल में भारतीय कला, साहित्य एवं संस्कृति आदि का व्यापक विकास हुआ। 145 ई. के लगभग इस राजवंश का अन्त हुआ।

इस काल में व्यापार और बौद्ध धर्म के प्रसार में व्यापक वृद्धि हुई। कनिष्क ने बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए अनेक प्रयास किये। इसी के शासन में चतुर्थ बौद्ध संगीति (महासम्मेलन) का आयोजन कश्मीर के कुण्डलवन में हुआ। इसकी अध्यक्षता बौद्ध श्रमण वसुमित्र एवं उपाध्यक्षता अश्वघोष ने की थी। इस महासम्मेलन में बौद्ध धर्म- हीनयान और महायान में बँट गया। महायान का प्रसार पूर्वोत्तर देशों जापान

आदि में हुआ। अश्वघोष, सम्राट कनिष्क के राजदरबारी कवि था, जो संस्कृत और प्राकृत भाषा का विशेषज्ञ था। उसने बुद्धचरित, सौदरानन्द, शारिपुत्रकरण एवं सूत्रालङ्कार नामक ग्रन्थों की रचना की। इस काल में बौद्ध धर्म का व्यापक प्रचार–प्रसार पश्चिम एवं दक्षिण भारत में भी हुआ। दक्षिण भारत में पश्चिमी एवं पूर्वी घाटों की पहाड़ियों में बौद्ध भिक्षुओं के लिए अनेक गुफाएँ बनाई गई। अनेक बौद्ध बिहारों का निर्माण तत्कालीन राजाओं, व्यापारियों एवं किसानों द्वारा दिये गये दान से हुआ। इसी काल में बौद्ध धर्म के थेरवाद (हीनयान) का प्रसार दक्षिण भारत एवं दक्षिण पूर्व एशिया, श्रीलङ्का, वर्मा, थाईलैंड, वियतनाम, कम्बोडिया आदि देशों में हुआ।

रेशम मार्ग- रेशम से आशय एक विशेष प्रकार के महीन रेशों से बने चमकदार एवं कोमल धागों से है। इनसे बने वस्त्र उच्च गुणवत्ता वाले एवं बहुमूल्य होते हैं। रेशम के वस्त्र बनाने की तकनीकी का आविष्कार लगभग 7000 वर्ष पूर्व चीन में हुआ था। चीनी व्यापारी इन रेशमी वस्त्रों का विभिन्न संसाधनों से दूर देश में जाकर व्यापार करते थे। वे जिस देश में जाते, वहाँ के राजाओं और अमीर को ये वस्त्र उपहार में देते थे। ये व्यापारी जिस मार्ग से रेशमी वस्त्रों का व्यापार करने जाते थे, धीरे–धीरे उन मार्गों को रेशम मार्ग के नाम से जाना जाने लगा। प्रमुख स्थलीय रेशम मार्ग हिमालय एवं हिन्दूकुश पर्वत श्रृङ्खलाओं से तथा जलमार्ग में बङ्गाल की खाड़ी एवं अरब सागर से होकर गुजरता था। सीमा प्रान्तों के राजा इन मार्गों पर अपने–अपने नियन्त्रण के प्रयास में लगे रहते थे। इससे व्यापारियों के लिए ये मार्ग सुरक्षित हुए और रेशम व्यापार तेजी से फलने–फूलने लगा। कुषाण काल में एक रेशम मार्ग मध्य एशिया के लिए सिन्धु नदी के समीप से जाता था। यहाँ के पत्तनों से रेशम का पश्चिमी देशों तक व्यापार होता था। भारतीय सीमा से गुजरने वाले रेशम मार्ग पर कुषाणों का नियन्त्रण था।

चित्र- 9.2 रेशम मार्ग

गुप्त साम्राज्य- गुप्त राजवंश का अभ्युदय वर्तमान प्रयाग के निकट कौशाम्बी नगर में हुआ माना जाता है। इस राजवंश का संस्थापक एवं प्रथम शासक श्रीगुप्त (240–280 ईस्वी) को माना जाता है। गुप्तों

का साम्राज्य सम्पूर्ण उत्तर भारत में विस्तृत था। अपने चरमोत्कर्ष काल में गुप्त साम्राज्य की सीमा उत्तर में हिमालय से दक्षिण में विन्ध्य पर्वत तक एवं पूर्व में बङ्गाल से पश्चिम में अरब सागर तक विस्तृत थी। इस साम्राज्य की राजनैतिक इकाइयाँ अवन्तिका (उज्जैन), प्रतिष्ठानपुर, विदिशा, प्रयाग, पाटलिपुत्र, वैशाली, ताम्रलिप्ती, मथुरा, अहिछत्र एवं कौशाम्बी थी। इन सब में अवन्तिका (उज्जैन) सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण राजनैतिक एवं व्यापारिक केन्द्र रहा। गुप्त साम्राज्य को भारतीय इतिहास का **स्वर्ण युग** कहा जाता है। गुप्त शासन काल में सम्पूर्ण साम्राज्य धन-धान्य एवं वैभव से सम्पन्न था। इस काल में विज्ञान, कला, तकनीकी, साहित्य, धर्म एवं संस्कृति की अभूतपूर्व उन्नति हुई। इस राजवंश ने 280 ई. से 550 ई. तक भारत में शासन किया। गुप्त साम्राज्य के महान राजाओं में चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) एवं स्कन्दगुप्त का नाम आता है।

प्रमुख गुप्त शासकों का कालक्रम

श्रीगुप्त	–	(240 – 280) ईस्वी
घटोत्कच	–	(280 – 320) ईस्वी
चन्द्रगुप्त प्रथम	–	(320 – 335) ईस्वी
समुद्रगुप्त	–	(335 – 380) ईस्वी
चन्द्रगुप्त द्वितीय	–	(380 – 415) ईस्वी
कुमारगुप्त प्रथम	–	(415 – 454) ईस्वी
स्कन्दगुप्त	–	(455 – 467) ईस्वी
पुरुगुप्त	–	(467 – 473) ईस्वी
कुमारगुप्त द्वितीय	–	(473 – 477) ईस्वी
बुधगुप्त	–	(477 – 495) ईस्वी
नरसिंह गुप्त बालादित्य	–	(495– 530) ईस्वी
कुमारगुप्त तृतीय	–	(530 – 543) ईस्वी
विष्णुगुप्त	-	(543 – 550) ईस्वी

महान सम्राट समुद्रगुप्त (335–380 ईस्वी)- समुद्रगुप्त महान सेनानायक थे, जिन्हें किसी भी युद्ध में पराजय का सामना नहीं करना पड़ा। समुद्रगुप्त के सीधे नियन्त्रण में सम्पूर्ण आर्यावर्त (उत्तरापथ) था। समुद्रगुप्त ने इस भू-भाग के छोटे–बड़े राजाओं को युद्ध में परास्त कर गुप्त साम्राज्य का विस्तार किया था। उसके दक्षिण भारत के विजय अभियान में दक्षिण के बारह राजाओं ने समुद्रगुप्त के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। समुद्रगुप्त ने पुनः इन दक्षिण के राजाओं को उनके अपने राज्य पर प्रशासन की अनुमति प्रदान की थी। पूर्वोत्तर के नेपाल, असम, तटीय बङ्गाल एवं अन्य गणसंघों ने भी समुद्रगुप्त का आधिपत्य स्वीकार कर लिया था। ये राजा, समुद्रगुप्त के राजदरबार में उपस्थित होकर विभिन्न प्रकार के बहुमूल्य उपहार भेंट करते थे। वाह्य एवं सीमान्त राजाओं ने भी समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार कर

उनसे वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये। ऐसे राजाओं में शक, हूण, कुषाण एवं श्रीलङ्का के राजाओं का नाम आता है।

वी. ए. स्मिथ ने समुद्रगुप्त को **भारत का नेपोलियन** कहा है। समुद्रगुप्त की ख्याति प्रजावत्सल उदार शासक, कला का प्रेमी एवं संरक्षक तथा अपराजित वीर योद्धा के रूप में है। भारत के स्वर्णिम युग का प्रारम्भ समुद्रगुप्त के शासनकाल से ही माना जाता है। समुद्रगुप्त के शासनकाल की जानकारी हमें गुप्त साम्राज्य में प्रचलित सिक्के, प्राचीन अभिलेखों और प्रशस्तियों से प्राप्त होती है। **प्रयाग प्रशस्ति** को समुद्रगुप्त ने अपने दरबारी कवि हरिषेण द्वारा अंकित कराया था। इस प्रशस्ति के अनुसार समुद्रगुप्त अपने साम्राज्य विस्तार के लिए अनेक युद्ध लड़े और अपराजित रहे। ये एक कुशल प्रशासक, प्रियदर्शी राजा, कुशल संगीतकार, चित्रकार और लेखक भी थे। समुद्रगुप्त को विद्वानों, कलाकारों तथा कवियों का आश्रयदाता एवं संरक्षक कहा गया है।

मानचित्र- 9.2 गुप्त साम्राज्य

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य- समुद्रगुप्त की मृत्यु के पश्चात् रामगुप्त गुप्त साम्राज्य का शासक बना। परन्तु इसके अल्पकालिक शासन के बाद चन्द्रगुप्त द्वितीय सम्राट बना। उसने अपनी प्रशासनिक योग्यता, वैवाहिक सम्बन्धों एवं युद्ध विजयों के द्वारा शीघ्र ही एक महान शासक के रूप में ख्याति प्राप्त कर ली थी। अपने शासनकाल में उसने इक्कीस शक राजाओं को परास्त करने के बाद विक्रमादित्य और शकारि की उपाधि

धारण की और ईसा के जन्म के 57 वर्ष पूर्व विक्रम संवत् चलाया था। इसके अतिरिक्त उसने कुषाणों, बङ्ग के सरदारों, वाहलिकों आदि का दमन भी किया था। विश्व प्रसिद्ध महाकवि कालिदास, शंकु, अमरसिंह, वेतालभट्ट, क्षपणक, धनवन्तरि, वररूचि, वराहमिहिर और खटकरपारा सम्राट चन्द्रगुप्त के दरबार के नवरत्न थे। प्रसिद्ध चीनी यात्री फाह्यान ने अपने ग्रन्थ फो-कुओ-की में तत्कालीन भारत की आर्थिक समृद्धि का उल्लेख किया है। चन्द्रगुप्त के बाद कुमारगुप्त, स्कन्दगुप्त आदि अनेक प्रसिद्ध राजा हुए।

सारणी- 9.2			
गुप्त साम्राज्य का प्रशासन			
प्रशासनिक इकाई	**अधिकारी**	**विभाग**	**मुखिया**
साम्राज्य	सम्राट	सेना	महाबालाधिकृत
भुक्ति (प्रान्त)	उपारिक	हाथी सेना	महापीलपति
विषय (जिला)	विषयपति	घुडसेना	महाअश्वपति
नगर (शहर)	पुरपाल	पुलिस	दण्डपाशिक
गांव (ग्राम)	ग्रामपति,महतर	न्यायपालिका	राजा

गुप्त साम्राज्य में सनातन धर्म का विशेष उत्कर्ष हुआ। समाज वर्णव्यवस्था पर आधारित था। व्यापार एवं अर्थव्यवस्था चरमोन्नति पर थी। गुप्त राजाओं ने सोने के सिक्कों का प्रचलन किया था। इसी राजवंश के श्रीगुप्त ने नालन्दा विश्वविद्यालय एवं बिहार की स्थापना की। गुप्तकाल धार्मिक सहिष्णुता, श्रेष्ठ शासन व्यवस्था, भारत के राजनीतिक एकीकरण, सांस्कृतिक प्रचार-प्रसार, संस्कृत वाङ्मय, ज्ञान-विज्ञान, कला, खगोल, गणित, ज्योतिष आदि का उत्कर्ष काल था। प्रसिद्ध खगोलशास्त्री आर्यभट्ट, चिकित्सक वाग्भट्ट और गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त जैसे महान आचार्य गुप्तकाल में हुए थे।

सम्राट हर्षवर्धन- गुप्त राजवंश के शासनकाल में लगभग 270 वर्षों तक उत्तर भारत में राजनैतिक एकता स्थापित रही। इसके बाद एक बार पुनः भारत में अराजकता फैली। विदेशी शक एवं हूणों ने आक्रमण किये। इस अशान्ति काल में भारत का पुनः एकीकरण और शान्ति स्थापित करने का कार्य थानेश्वर के राजा हर्षवर्धन (606–647 ई.) ने किया था। हर्षवर्धन थानेश्वर (वर्तमान हरियाणा) के शासक प्रभाकरवर्धन का अनुज पुत्र था। उन्होंनें अपने पिता प्रभाकर वर्धन की मृत्यु एवं भाई राजवर्धन की गौड़ नरेश शशांक द्वारा हत्या कर दिये जाने के पश्चात् 16 वर्ष की छोटी उम्र में राजसत्ता सम्भाली। हर्ष की

बहन राजश्री का विवाह कन्नौज के मौखरि राजा गृहवर्मन से हुआ था। गृहवर्मन की हत्या भी बङ्गाल के गौड़ राजा शशांक ने कर दी थी। अतः कन्नौज को अपने अधीन कर हर्ष ने बङ्गाल पर आक्रमण किया। शीघ्र ही मगध को भी युद्ध परास्त किया। हर्षवर्धन का साम्राज्य मालवा और सुदूर असम तक विस्तृत था। उन्होंने प्रयाग में अश्वमेध यज्ञ कर अपना सर्वस्व दान कर दिया। दक्षिण अभियान के प्रारम्भ में ही वह चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय से परास्त होकर वापस लौट आये। गुप्त वंश के पश्चात् हर्षवर्धन ऐसे सम्राट थे, जिन्होंने अधिकांशत: उत्तर भारत को एकता के सूत्र में पिरोया था।

हर्षवर्धन एक कुशल प्रशासक, प्रजावत्सल राजा तथा विद्वानों का आदर करने वाले एवं स्वयं कुशल साहित्यकार थे। प्रसिद्ध चीनी यात्री **ह्वेनसांग** अनेक वर्षों तक हर्षवर्धन के दरबार में रहा। हर्ष के राजदरबार में प्रसिद्ध विद्वान् महाकवि बाणभट्ट भी थे जिन्होंने ने **कादम्बरी और हर्षचरितम्** की रचना की थी। सम्राट हर्ष के शासन काल के अनेक महत्त्वपूर्ण विवरण हमें हर्षचरित एवं ह्वेनसाङ्ग के विवरणों से प्राप्त होते हैं। इनका शासनकाल मात्र 41 वर्षों तक रहा। 647 ई. में सम्राट हर्षवर्धन की मृत्यु हो गई।

मानचित्र- 9.3 संगम काल

दक्षिण तटीय राज्य- प्राचीनकाल से ही भारतीय उपमहाद्वीप के दक्षिण तटीय क्षेत्र व्यापारिक केंद्र के रूप में समृद्धशाली रहे हैं। लगभग 2300 वर्ष पूर्व दक्षिण भारत के तीन शक्तिशाली राजाओं का इन क्षेत्रों पर प्रभुत्व था। वे आर्थिक रूप से संपन्न और शक्तिशाली रहे। ये दक्षिण के चोल, चेर और पाड्य राजा थे। प्रशासनिक रूप से इन प्रत्येक राजाओं के राज्यों की दो-दो राजधानियाँ थी।

संगम साहित्य में अनेक बार **मुवेन्दार** का उल्लेख आया है, जिसका अर्थ **तीन मुखिया** है। दक्षिण भारत के यही तीन शक्तिशाली मुखिया के लिए **मुवेन्दार** शब्द का प्रयोग संगम साहित्य में हुआ है। यद्यपि इसके अन्य अर्थ जैसे– गृहपति, ग्राम प्रधान एवं सरदार भी हैं। ये तीनों राजा अपने–अपने क्षेत्र

के व्यापारिक केंद्र और व्यापारियों को सुरक्षा प्रदान करते थे। बदले में उन्हें व्यापारियों से प्रचुरमात्रा में बहुमूल्य वस्तुएँ उपहार स्वरूप प्राप्त होती थीं। राजा लोग इन वस्तुओं को राजपरिवारों, सुरक्षाकर्मियों, दरबारियों एवं कवियों में वितरित कर कुछ हिस्सा अपने पास रखते थे। कवियों ने इन राजाओं की प्रशंसा (प्रशस्ति) में कविताएं लिखी हैं।

सारणी 9.3		
राजा/राजवंश	**प्रशासनिक राजधानी**	**आर्थिक राजधानी**
चोल	उरैयुर	पुहार या काबेरी पट्टनम्
पांड्य	मदुरै	कोकोई
चेर	वंजी	तोंडी और मुसीरी

दक्षिण के पल्लव और चालुक्य राजवंश- उत्तर भारत में हर्ष के शासन काल के समय दक्षिण भारत में शक्तिशाली पल्लव एवं चालुक्य राजवंश का शासन था। चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय ने सम्राट हर्ष को दक्षिण में बढ़ने से रोका था। इस काल में पल्लवों की राज्य सीमा काञ्चिपुरम् के आस–पास के क्षेत्रों से लेकर कावेरी के डेल्टा प्रदेशों तक व्याप्त थी। इनकी राजधानी **काञ्चिपुरम्** थी। चालुक्यों के राज्य सीमा में कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के दोआब प्रदेश आते थे। चालुक्यों की राजधानी **एहोल** थी, जो एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र भी था। आगे चलकर ये दोनों नगर दक्षिण में सामरिक एवं धार्मिक केंद्र भी बने। चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय के राजकवि रविकीर्ति द्वारा अनेक प्रशस्तियाँ रची गई हैं। उनसे ज्ञात होता है कि पुलकेशिन द्वितीय को यह राज्य अपने चाचा से प्राप्त हुआ। उसने अपनी योग्यता से अपने राज्य क्षेत्र को शक्तिशाली और समृद्धशाली बनाया। छठी से बारहवीं शताब्दी तक दक्षिण भारत के विस्तृत भू–भाग पर चालुक्यों का शासन रहा। पल्लवों का शासन काल दूसरी शताब्दी से नौवीं शताब्दी तक दक्षिण भारत के अधिकांश क्षेत्रों पर था। चालुक्यों और पल्लवों के आपसी विवाद ने इन्हें कमजोर बना दिया। जिसका लाभ राष्ट्रकूट और चोल राजवंशों ने उठाया और दक्षिण भारत में पुनः शक्ति स्थापना की थी।

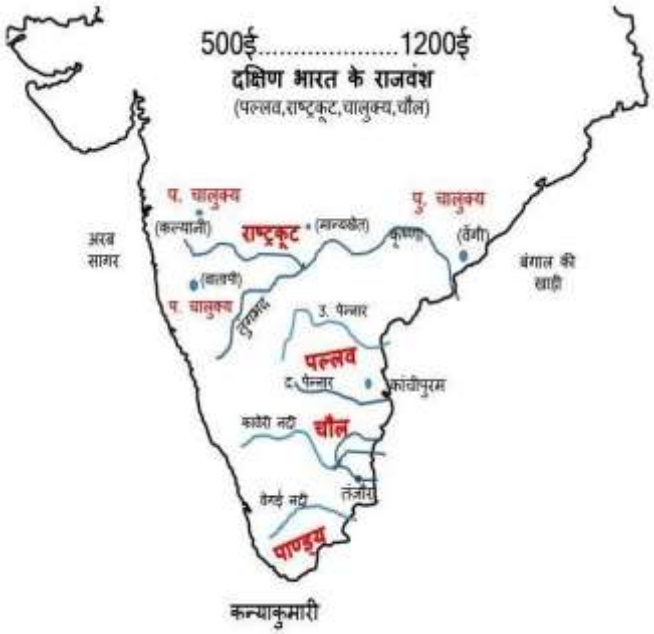

मानचित्र- 9.4 दक्षिण के पल्लव और चालुक्य राजवंश

प्रशासन व्यवस्था- इस काल की शासन व्यवस्था में भूमिकर ही आय के बड़े स्रोत थे। प्रशासन की प्राथमिक इकाई ग्राम थी। प्रशासनिक पद भी राजवंश की भाँति अनुवांशिक थे। स्थानीय प्रशासन में नगर-श्रेष्ठी, सार्थवाह एवं कायस्थों के प्रधानों का नियन्त्रण होता था। इन नीतियों से राज्य पर राजा का नियंत्रण तो रहता था, परन्तु स्थानीय शासक अपनी शक्ति को बढ़ा कर स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर लेते थे। इस काल में एक नई परम्परा चली थी कि सेनानायक भी अपनी सेना रखते थे। जो आवश्यकता पड़ने पर राजा की सहायता के लिए तत्पर रहती थी। ये सेनानायक ही सामन्त कहलाये।

दक्षिण में सभाएँ- ब्राह्मण और भू–स्वामियों के स्थानीय स्तर पर संगठन होते थे, जिन्हें **सभा** कहा जाता था। ये सभाएँ, उपसमितियों के माध्यम से सिंचाई, कृषि, मन्दिर एवं सड़क निर्माण सम्बन्धी कार्यों का देख–रेख करती थीं। जिन क्षेत्रों के भू–स्वामी ब्राह्मण नहीं थे, ऐसे क्षेत्रों को **उर** कहा जाता था। **नगरम्** नामक एक संगठन व्यापारियों एवं नगर–श्रेष्ठियों का भी था। इन स्थानीय सभाओं का अस्तित्व विशेषतः दक्षिण भारत में अनेक शताब्दियों तक रहा। इस काल में संस्कृत राजभाषा एवं प्राकृत आमजन की भाषा थी। आम जन-जीवन की झलक हमें तत्कालीन साहित्यों एवं विदेशी यात्रियों के विवरणों में प्राप्त होता है।

व्यापारी- भारत में व्यापार का प्रचलन बहुत पुराना है। व्यापारियों को वस्तुओं के क्रय–विक्रय के लिए दूर–दूर की यात्राएँ करनी होती थी। व्यापारी एवं व्यापार सांस्कृतिक और वैचारिक आदान–प्रदान तथा प्रचार–प्रसार में भी सहायक रहे हैं। हम जानते हैं कि सभ्यता काल से ही भारत के व्यापारिक सम्बन्ध, मिश्र, चीन, यूनान एवं मेसोपोटामिया से रहे हैं। प्राचीन काल में दक्षिण भारत के कीमती पत्थर एवं मसाले विश्वभर में प्रसिद्ध थे। विशेषकर काली मिर्च की पश्चिम के देशों में बड़ी मांग थी। व्यापारियों द्वारा ये सभी सामग्री जलमार्ग और स्थलमार्ग से रोम एवं पश्चिमी देशों में पहुँचायी जाती थीं। इसका प्रमाण दक्षिण भारत में प्राप्त बहुतायत से रोमन सोने के सिक्के हैं। व्यापारियों ने भारत से होकर विदेशों को जाने वाले अनेक महत्त्वपूर्ण समुद्री एवं स्थलीय मार्गों की खोज कर ली थी। इनमें से कुछ मार्ग अरब सागर एवं बङ्गाल की खाड़ी से होकर निकलते थे।

तीर्थयात्री- प्राचीनकाल से ही व्यापारियों के साथ अनेक तीर्थयात्री भी लम्बी यात्राएँ करते थे। कुछ चीनी बौद्धयात्री भारत आये। उनका उद्देश्य भारत और यहाँ स्थित बौद्ध स्थलों का दर्शन करना था। इस दृष्टि से पाँचवी सदी में फाह्यान (फाँ–शिएन), सातवीं शताब्दी सदी में ह्वेनसाङ्ग (श्वैन–त्सांग) एवं लगभग

सातवीं सदी के उत्तरार्ध में इत्सिंग नामक चीनी यात्री भारत आये। इनके भारत संबंधी विवरण इतिहास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। ये यात्री अपने साथ प्राकृत एवं संस्कृत भाषा में लिखी अनेक पुस्तकें एवं पांडुलिपियाँ ले गये। ह्वेनसाङ्ग ने अपने विवरण में उस समय के प्रसिद्ध बौद्ध शिक्षा केंद्र नालन्दा का सटीक विवरण दिया है। वह नालन्दा का विद्यार्थी भी रहा था। उसने लिखा कि यहाँ के शिक्षक योग्य और बुद्ध के उपदेशों का पालन करने वाले हैं। मठ के नियम कठोर अनुशासन वाले हैं। आगन्तुकों से वहाँ के द्वारपाल के कठिन प्रश्नों का उत्तर देने पर ही अन्दर जाने की अनुमति मिलती है।

भक्ति परम्परा- सनातन (हिन्दू) देवी–देवताओं के प्रति नए दृष्टिकोण के विकास से भक्ति परम्परा का उदय हुआ। श्रीमद्भगवद्गीता में उल्लिखित भक्ति मार्ग ही भक्ति परम्परा का प्रचलित स्वरूप है। इसका आशय कोई भी मानव मात्र यथा योग्य विधि से ईश्वर का स्मरण एवं उपासना सच्चे मन से कर सकता है। भक्ति मार्ग को दृष्टिगत रखते हुए अनेक अनाम कलाकारों ने उपास्य अनेक देवी–देवताओं के चित्र एवं मूर्तियाँ बनाई। अनेक महान भक्तकवि जैसे– कबीर, सूर, तुलसी, मीरा आदि इसी भक्ति परम्परा की देन हैं। इसका प्रभाव हिन्दू समाज में आज आधिकाधिक रूप में स्थित है। आज घर–घर में लोग अपने उपास्य के लिए मन्दिर बनाकर उपासना कर रहे हैं। भक्ति परम्परा में सगुण–निर्गुण दोनों ही रूप में ईश्वर की उपासना की जाती है। भक्ति के लिए जाति, धर्म आदि का बन्धन नहीं है ।भक्ति मार्ग पर चलने वाले लोग ईश्वर के प्रति एवं विश्वास के साथ व्यक्तिगत पूजा पर बल देते हैं। अपने आराध्य की पूजा किसी भी रूप में की जा सकती है।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1. मौर्यों की राजधानी..... थी।

   अ. पाटलीपुत्र ब. तौसाली स. तक्षशिला द. लुम्बिनि

2. गुप्त साम्राज्य का अभ्युदय सन्.....में हुआ।

   अ. 321 ईस्वी ब. 208 ईस्वी स. 280 ईस्वी द. 300 ईस्वी

3. भारत का नेपोलियन.....को कहा जाता है।

   अ. समुद्रगुप्त ब. चन्द्रगुप्त स. विक्रमादित्य द. स्कन्ध गुप्त

4. हर्षचरितम् की रचना ..... की थी।

   अ. आर्यभट्ट ब. बाणभट्ट स. वाग्भट्ट द. हर्ष

5. "मुवेन्दार"का ..... से आशय है।

अ. तीन मुखिया　　ब. तीन परिवार

स. तीन लोग　　द. तीन गाँव

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. मेगस्थनीज .....का राजदूत था। (सिकन्दर/सेल्यूकस)
2. गुप्त वंश का संस्थापक .....था। (समुद्रगुप्त/श्रीगुप्त)
3. प्रयाग प्रशस्ति के रचयिता .....थे। (हरिषेण/विष्णुगुप्त)
4. सातवाहन वंश का सबसे प्रतापी शासक.....था। (श्रीमुख/गौतमीपुत्र)

सत्य/असत्य चुनिए-

1. मौर्य वंश का स्थापना 321 ई.पू. में हुई। (सत्य/असत्य)
2. मौर्यकाल में उज्जैन, मथुरा महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र थे। (सत्य/असत्य)
3. गुप्तवंश को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है। (सत्य/असत्य)
4. विक्रमादित्य, चन्द्रगुप्त मौर्य की उपाधि थी। (सत्य/असत्य)

सही जोड़ी बनाईए -

1. मेगस्थनीज	क. उरैयुर
2. हर्षवर्धन	ख. चालुक्य वंश
3. पुलकेशिन द्वितीय	ग. वर्धन वंश
4. चोल	घ. इण्डिका

अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. कौटिल्य का मूल नाम क्या था?
2. दक्षिण भारत में राजकीय भाषा कौनसी थी ?
3. प्रमुख भक्त कवियों के नाम लिखिए।
4. सातवाहन वंश का सबसे प्रतापी राजा कौन था ?

लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. अशोक द्वारा बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार हेतु कौन–कौन से कार्य किये गए?
2. समुद्र गुप्त के साम्राज्य का वर्णन करो ?
3. हर्षवर्धन के साम्राज्य विस्तार के बारे में बताइए ?
4. चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय के बारे आप क्या जानते हो ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

1. गुप्तकाल की प्रशासनिक व्यवस्था के बारे में बताइए।

2. दक्षिण की सभाओं का विस्ताए से वर्णन कीजिए।
3. 'रेशम मार्ग' को विस्तार से समझाइए।

परियोजना कार्य-

1. छात्र भारतीय मानचित्र में मौर्य एवं गुप्त कालीन भारतीय साम्राज्य एवं प्रमुख व्यापारिक केन्द्रों को दर्शाइए।

अध्याय–10

भारत- एक पारम्परिक समझ

आइये जानें- षोड़श संस्कार, यज्ञ, सप्तऋषि, तीर्थ परम्परा, पर्व एवं त्यौहार ,काल गणना, भारतीय काल गणना, पञ्चाग, पञ्चाग का महत्त्व।

भारतीय संस्कृति बहु-आयामी है। यहाँ का इतिहास तथा भूगोल विलक्षण और विविधता युक्त है। लगभग पाँच सहस्त्र शताब्दियों से भी अधिक समय से भारतीय भाषाएँ, रीति–रिवाज, धर्म एवं परम्पराएँ एक दूसरे से सम्बद्ध होकर विविधताओं का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। इन सांस्कृतिक विविधताओं और परम्पराओं न केवल भारत अपितु विश्व के विभिन्न भागों को भी बहुतायत से प्रभावित किया है। प्राचीनता, अमरता, आध्यात्मिकता एवं कर्म प्रधानता भारतीय संस्कृति की महान विशेषता है। **यूजीन एम. मकर** ने भारतीय पारम्परिक संस्कृति को अपेक्षाकृत कठोर सामाजिक पदानुक्रम द्वारा परिभाषित किया है। वे कहते हैं कि- **बच्चों को छोटी उम्र में ही उनकी भूमिकाओं और समाज में उनके स्थान के बारे में बताया जाता है**। भारत की पारम्परिक सामाजिक समझ को हम अधोलिखित बिन्दुओं के माध्यम से जान सकते हैं-

षोडश संस्कार- सनातन धर्म की संस्कृति, संस्कारों पर आधारित है। संस्कार विहीन मानव को पशुतुल्य माना गया है। हमारे ऋषियों–मनीषियों ने मानव जीवन को पवित्र और मर्यादित बनाने के लिए संस्कारों का विधान किया है। व्यक्ति के जीवन में इन संस्कारों का न केवल धार्मिक अपितु वैज्ञानिक महत्त्व भी है। संस्कार मनुष्य के जन्म लेने से पूर्व आरम्भ होकर मृत्यु पर्यन्त तक चलने वाली प्रक्रिया है। प्राचीन काल में संस्कारों की संख्या चालीस हुआ करती थी। परन्तु समय के साथ–साथ मानव की व्यस्तता अन्य कार्यों में बढ़ने के परिणामस्वरूप कुछ संस्कार स्वतः ही विलुप्त हो गये। गौतम स्मृति में चालीस संस्कारों का उल्लेख है, वहीं महर्षि अङ्गीरा ने इनकी संख्या 25 बताई है। व्यासस्मृति में लोक प्रचलित सोलह संस्कारों का वर्णन है- 1.गर्भाधान संस्कार, 2.पुंसवन संस्कार, 3.सीमन्तोन्नयन संस्कार, 4.जातकर्म संस्कार, 5. नामकरण संस्कार, 6.निष्क्रमण संस्कार, 7. अन्नप्राशन संस्कार, 8. चूडाकर्म (मुण्डन) संस्कार, 9. विद्यारम्भ संस्कार, 10.कर्णवेध संस्कार, 11. यज्ञोपवीत संस्कार, 12. वेदारम्भ संस्कार, 13. केशान्त संस्कार, 14. समावर्तन संस्कार, 15. विवाह संस्कार, 16. अन्त्येष्टि संस्कार ।

यज्ञ- यज्ञ से तात्पर्य त्याग, बलिदान एवं शुभ कर्मों से है। भगवद्गीता के अनुसार परमात्मा के निमित्त किया गया कोई भी कर्म यज्ञ कहलाता है यथा- **"दैवमेवापरे यज्ञम्"** (गीता.4/25)। ऋग्वेद में कहा

गया है **"अग्निमीळे पुरहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्"** अर्थात् अग्नि (यज्ञाग्नि) को पुरोहित कहा गया है। यज्ञ में अग्नि को समर्पित की गई समस्त सामग्री वायु के माध्यम से संसार का कल्याण, वायुशोधन एवं आरोग्य वर्धन करता है। वैदिकवाङ्मय के अनुसार यज्ञ पाँच प्रकार के होते हैं-

ब्रह्मयज्ञ- ब्रह्म यज्ञ, नित्य सन्ध्यावन्दन, स्वाध्याय तथा वेद पाठ करने से सम्पन्न होता है। इससे ब्रह्मचर्य जीवन पुष्ट होता है तथा ऋषि ऋण से मुक्ति मिलती है।

देवयज्ञ- जो यज्ञ सत्सङ्ग तथा अग्निहोत्र कर्म से पूर्ण होता है, उसे देव यज्ञ कहते हैं ।इससे गृहस्थ जीवन पुष्ट होता है।

पितृयज्ञ- यह यज्ञ सन्तानोत्पत्ति से सम्पन्न होता है। इस यज्ञ द्वारा पितृऋण से मुक्ति मिलती है। पुराणों में इसे श्राद्ध कर्म भी कहा गया है, अर्थात सत्य, श्रद्धा एवं निष्ठापूर्वक किया गया कर्म जिससे माता–पिता और आचार्य तृप्त हों ।

वैश्वदेवयज्ञ- पञ्च महा तत्त्वों (आकाश, जल, वायु, अग्नि और पृथिवी) से मानव समेत सभी जीव उत्पन्न हुए हैं। सभी जीवों के प्रति करुणा और निज कर्तव्य को समझना तथा उन्हें अन्न–जल देना वैश्वदेव यज्ञ या भूत यज्ञ कहलाता है।

अतिथियज्ञ- अतिथियों की सेवा कर उन्हें अन्न–जल देना, अपङ्ग, महिला, विद्यार्थी, सन्यासी और धर्मरक्षकों की सेवा तथा सहायता करना ही अतिथि यज्ञ है।

अश्वमेधयज्ञ- इस काल में राजाओं के द्वारा विभिन्न यज्ञों का आयोजन होता था। साम्राज्य विस्तार की दृष्टि से अश्वमेध यज्ञ का विशेष महत्त्व था। इस यज्ञ में एक घोड़ा छोड़ा जाता था। यदि घोड़ा किसी दूसरे राज्य में प्रवेश कर निर्विघ्न भ्रमण करता था, तो ऐसा माना जाता था कि उस राजा ने अश्वमेध यज्ञ करने वाले राजा की अधीनता को स्वीकार कर ली है। यदि किसी ने घोड़े को पकड़ लिया तो अश्वमेध यज्ञ करने वाले राजा को उससे युद्ध कर घोड़े को छुड़ाना होता था। भगवान श्रीराम और लव–कुश के बीच अनभिज्ञतावश हुए युद्ध को तो आप सभी जानते ही होंगे। घोड़ा वापस आ जाने पर अश्वमेध यज्ञ करने वाला राजा, अधीनता स्वीकार कर चुके राजाओं के पास यज्ञ का आमन्त्रण भेजता था। इस यज्ञ में उपस्थित राजाओं के साथ अश्वमेध यज्ञ करने वाला राजा सर्वोच्च सिंहासन पर बैठता था। इनके अतिरिक्त अग्निहोत्र, वाजपेय, राजसूय, सोमयज्ञ तथा अग्नि चयन का वर्णन यजुर्वेद में आया है। यज्ञ कर्म को मानव जीवन में कर्तव्य व नियम के अधीन माना गया है।

सप्तऋषि- सप्तऋषियों का उल्लेख वेद एवं अन्य धर्म ग्रन्थों में अनेक बार हुआ है। विष्णुपुराणानुसार– **'वशिष्ठकाश्यपो यात्रिर्जमदग्निस्सगौत्। विश्वामित्रभारद्वाजौ सप्त सप्तर्षयोभवन्॥** इस श्लोकानुसार वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि, जमदग्नि, गौतम, विश्वामित्र और भारद्वाज सप्त ऋषि हैं।

तीर्थ परम्परा- देश के विभिन्न भागों में स्थित ऐसे पवित्र और रमणीक स्थान जो तप एवं साधना के कारण आज भी सकारात्मक ऊर्जा से युक्त हैं, उन्हें तीर्थस्थल कहते हैं। इन तीर्थों की यात्रा में देश-देशान्तर का भ्रमण, स्वास्थ्य लाभ, जलवायु, आनन्ददायक एवं ज्ञान वर्धक सत्सङ्ग की प्राप्ति होती है। यह तीर्थ परम्परा हमें विरासत में प्राप्त हुई है। ऐसे कुछ तीर्थ क्षेत्रों के नाम इस प्रकार हैं-

सारणी 10.1

मठ	वेद	ध्येय वाक्य	राज्य
गोवर्धनमठ	ऋग्वेद	प्रज्ञानं ब्रह्मा	जगन्नाथपुरी (ओडिसा)
श्रृङ्गेरीमठ	यजुर्वेद	अहं ब्रह्मास्मि	श्रृंगेरी (कर्नाटक)
शारदामठ	सामवेद	तत्त्वमसि	द्वारिका (गुजरात)
ज्योतिर्मठ	अथर्ववेद	अयमात्मा ब्रह्म	जोशीमठ (उत्तराखण्ड)

1. **सप्तमोक्षपुरियाँ-** सप्तमोक्ष पुरियों से तात्पर्य भारत के वे सात नगर हैं जिन्हें मोक्षदायक कहा गया है। एक लोक प्रचलित श्लोकानुसार– **अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, काञ्ची, अवन्तिका। पुरी द्वारावती चैव सप्तैते मोक्षदायिका:॥** अर्थात अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार (माया), काशी, काँचीपुरम्, अवन्तिका (उज्जैन) और द्वारिका ये सप्तमोक्ष पुरियाँ है।
2. **चारधाम-** भारतीय धर्म ग्रन्थों में चार धाम- बद्रीनाथ, द्वारिका, जगन्ननाथपुरी और रामेश्वरम् का उल्लेख हुआ है। आदि शङ्कराचार्य ने धार्मिक एवं सास्कृतिक एकीकरण के लिए चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना की। ये धाम और मठ सनातन धर्म की एकजुटता और व्यवस्था के प्रतीक हैं। इनके अतिरिक्त आदिशङ्कर की कर्मभूमि कही जाने वाली काञ्चीपुरम के काञ्चीमठ को भी शङ्कराचार्यमूलाम्नाय पीठ कहा जाता है। यह मठ चेन्नई (तमिलनाडु) में स्थित है।
3. **द्वादश ज्योर्तिलिङ्ग–** पुराणों के अनुसार द्वादश ज्योर्तिलिङ्गों का हिन्दू धर्म में विशिष्ट स्थान है। शिव महापुराण के 42 वें अध्याय में द्वादश ज्योर्तिलिङ्गों का उल्लेख इस प्रकार आया है- **सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्, उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारं ममलेश्वरम्। परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम्, सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने॥ वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमी तटे, हिमालये तु केदारङ्ग ध्रुष्णेशं च शिवालये॥ एतानि ज्योर्तिलिङ्गानि सायं प्रात: पठेन्नर:, सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥**

अर्थात् सौराष्ट्र में सोमनाथ, श्रीशैल में मल्लिकार्जुन, उज्जैन में महाकाल, ओङ्कारेश्वर में ममलेश्वर, परली (बीड जिला) महाराष्ट्र में वैद्यनाथ ज्योर्तिलिङ्ग स्थित है। कुछ विद्वान् वैद्यनाथ ज्योर्तिलिङ्ग को झारखण्ड प्रान्त के संथाल परगना स्थित मानते है। डाकिनी क्षेत्र (पुणे के निकट) में भीमशङ्कर, सेतुबन्ध

में रामेश्वरम्, दारूकवन (द्वारिकापुरी) में नागेश्वर, वाराणसी में विश्वेश्वर, नासिक में गोदावरी तट पर त्र्यम्बकेश्वर, हिमालय में केदारनाथ और शिवालय (औरंगाबाद) नामक स्थान में घृश्णेश्वर ज्योर्तिलिङ्ग स्थापित हैं। इनके नित्य स्मरण मात्र से सात जन्मों के पापों से मुक्ति प्राप्त होती है। इनके अतिरिक्त 52 शक्तिपीठ है पुष्कर तीर्थ, चित्रकूट धाम, काशी आदि प्रमुख तीर्थ क्षेत्र है।

पर्व एवं त्यौहार- हमारी सनातन वैदिक संस्कृति में पर्व, उत्सवों व त्यौहारों का विशेष महत्व है। त्यौहार एवं पर्व हमें हमारे पूर्वजों से धरोहर स्वरूप प्राप्त हुये हैं, जो भारतीय संस्कृति की पहचान हैं। ये जीवन में आनन्द व उल्लास के परिचायक हैं। पर्व व त्यौहारों से परस्पर सौहार्दता में भी वृद्धि होती है। हमारे यहाँ होली, दीपावली, मकर संक्रान्ति, बसन्तपञ्चमी, महाशिवरात्रि, गुड़ी पड़वा, रामनवमीं, महावीर जयन्ती, रथयात्रा, गुरु–पूर्णिमा, ओणम, रक्षाबन्धन, नवरात्रि, पोंगल, लोहड़ी, गणगौर, विजयादशमी आदि जैसे पर्व व त्यौहार मनाये जाते हैं। भारतीय संस्कृति में पर्वों एवं त्यौहारों की अधिकता का संकेत करते हुए प्रसिद्ध लोकोक्ति है- **सात वार नौ त्यौहार**।

मानचित्र-10.1- राम वन गमन मार्ग अयोध्या-श्रीलंका तक

कालगणना- समय की गणना को कालगणना कहा जाता है। वर्तमान में काल गणना की मुख्यतः दो विधियाँ प्रचलित है। प्रथमविधि– **पाश्चात्य कालगणना विधि**, जो ईस्वी सन् पर आधारित है। दूसरीविधि **भारतीय कालगणना विधि** है, जो सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र एवं अन्य खगोलीय माध्यमों पर आधारित है।

पाश्चात्य कालगणना का स्वरूप इस प्रकार है–

एक सहस्त्राब्दी	–	दश शताब्दी
एक शताब्दी	–	सौ वर्ष
एक वर्ष	–	365 ¼ दिन रात
एक दिन रात	–	24 घण्टे

एक घण्टा	–	60 मिनट
एक मिनट	–	60 सेकण्ड

इस प्रकार एक दिन–रात में 24×60×60= 86400 सेकेण्ड होते हैं। अर्थात् एक दिन–रात को 86400 खण्डों में विभाजित किया गया है। पाश्चात्य काल गणना में 24 घण्टे के दिन–रात से वृहत्तरता की ओर बढ़ने पर माह का क्रम आता है। एक माह में 30–31 दिन होते हैं। इस गणना के अनुसार एक वर्ष में 12 माह– जनवरी से दिसम्बर तक होते हैं। फरवरी माह सामान्यत: 28 दिन का होता है। परन्तु प्रत्येक चार वर्ष बाद फरवरी माह में दिनों की संख्या 29 होती है, जिसे अधिवर्ष या लीप वर्ष कहते है। जिस वर्ष (ईस्वी सन्) में 4 का भागपूर्ण रूप से चला जाय, उसे **लीपवर्ष** माना जाता है। सामान्यतः एक अंग्रेजी वर्ष में 12 माह या 52 सप्ताह होत है। अर्थात् एक वर्ष में 365 दिन व 6 घण्टे होते है। कैलेण्डर एक प्रकार का अंग्रेजी कालदर्शक व्यवस्था है, जिसके माध्यम से वर्ष, माह, सप्ताह, दिन एवं वार की जानकारी प्राप्त होती है। इस पद्धति से बनने वाला कैलेण्डर ग्रेग्रेरियन कैलेण्डर कहलाता है। इसे 1482 ई. में पोप ग्रेगरी ने बनाया था।

भारतीय कालगणना- शुकदेव मुनि ने श्रीमद्भागवत पुराण में काल (समय) की गणना इस प्रकार बताई है-

काल की गणना (सूक्ष्मता की ओर)-

1 दिन–रात	–	30 मुहूर्त
1 मुहूर्त	–	2 नाड़िका
1 नाड़िका	–	15 लघु
1 लघु	–	15 काष्टा
1 काष्टा	–	5 क्षण
1 क्षण	–	3 निमेष
1 निमेष	–	3 लव
1 लव	–	3 बेध
1 बेध	–	100 त्रुटि
1 त्रुटि	–	3 त्रसरेणु
1 त्रसरेणु	–	3 अणु
1 अणु	–	2 परमाणु

इस प्रकार भारतीय कालगणनानुसार एक दिन–रात = 3 अरब 28 करोड 5 लाख परमाणु होते हैं।

काल की गणना (वृहत्तता की ओर) से देखने पर हम पाते हैं कि, दोनों ही गणनाओं में आधार दिन–रात अर्थात् 24 घण्टे को मानकर सूक्ष्म और वृहत्तर गणना की जाती है। परन्तु भारतीय कालगणना अधिक सूक्ष्म एवं विस्तृत है। पाश्चात्य कालगणना में सूक्ष्म इकाई सेकेण्ड है जबकी भारतीय कालगणना में परमाणु जो सेकेण्ड का 37, 968 वाँ खण्ड है। बृहत्तर कालगणना की दृष्टि से पाश्चात्य कालगणना सहस्राब्दी पर समाप्त होती है। जबकि भारतीय कालगणना अनन्त है। शिव को भी अनन्त मानकर **महाकाल** नाम से सम्बोधित किया गया है।

सारणी 10.2

चार युगों के नाम	
कलि युग	432000 वर्ष
द्वापर युग	864000 वर्ष
त्रेता युग	1296000 वर्ष
सत युग	1728000 वर्ष
चतुर्युगी (चौकड़ी)	4320000 वर्ष

अत: प्राचीन भारतीय कालगणना का स्वरूप अद्भुत व्यापक एवं समृद्ध है।

भारतीय संवत्सर– पृथिवी अपनी कक्षा में सूर्य की एक परिक्रमा $365\frac{1}{4}$ दिनों (एकवर्ष) में पूरी कर लेती है, जिसे **संवत्सर** कहा जाता है। एक संवत्सर में एक ऋतु चक्र पूर्ण होता है। सामान्यत: भारतीय संवत्सर चैत्र शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से प्रारम्भ होकर चैत्र कृष्णपक्ष अमावस्या तक पूर्ण होता है। भारतीय संवत्सर के प्रमुख अंग– दिन, सप्ताह, पक्ष, मास, ऋतुएं, अयन एवं वर्ष हैं।

क्या आप जानते हैं-

- जयपुर के राजा सवाई जयसिंह ने खगोल, ज्योतिष और समय की सटीक गणना के लिए दिल्ली, जयपुर, मथुरा, उज्जैन और वाराणसी में वेधशालाओं (जन्तर-मन्तर) का निर्माण करवाया था।

दिन– एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय की अवधि जो प्रायः 24 घण्टे की होती है, दिन कहलाता है। इस समयावधि में पृथिवी अपने अक्ष पर एक चक्कर पूरा करती है।

सप्ताह– सात दिनों की अवधि (सोमवार से रविवार तक) को सप्ताह कहते है।

पक्ष– पक्ष सामान्यतः 15 दिनों की अवधि होती है। तिथियाँ घट-बढ़ जाने से पक्ष में दिनों की संख्या 14 से 16 हो सकती है। एक माह में दो पक्ष (शुक्लपक्ष एवं कृष्णपक्ष) होते हैं। शुक्लपक्ष प्रतिपदा से प्रारम्भ होकर पूर्णिमा तिथि पर समाप्त होता है। जबकि कृष्णपक्ष, प्रतिपदा से प्रारम्भ होकर अमावस्या तिथि को समाप्त होता है। भारत के उत्तरी भाग में माह का प्रारम्भ कृष्ण पक्ष से एवं दक्षिण भाग में शुक्ल पक्ष से प्रारम्भ होने की मान्यता है।

मास– सामान्यतः एक मास में दिनों की संख्या 30 मानी जाती है। चन्द्रमास 29.5 दिन के लगभग होता है जबकि सूर्यमास 365÷12 = 30.416 दिन का होता है। गणना की दृष्टि से तीन प्रकार के मास का प्रचलन है–

1. **सौर्यमास–** सौरमास पृथिवी और सूर्य की स्थिति एवं गति से निर्धारित होता है। पृथिवी 365¼ दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करती है जिसे सौरवर्ष कहा जाता है। इस काल में पृथिवी को 12 राशियों (सूर्य की) से होकर गुजरना पड़ता है। प्रत्येक राशि को पार करने में लगा समय एक सौरमास कहलाता है।
2. **चन्द्रमास–** पृथिवी की परिक्रमा पूरी करने में चन्द्रमा को 29½ दिनों का समय लगता है, जिसे चन्द्रमास कहा जाता है।
3. **नक्षत्रमास–** सम्पूर्ण आकाश में नक्षत्रों की संख्या 88 है। परन्तु चन्द्रपथ में 27 नक्षत्र है। इन नक्षत्रों को पार करके ही चन्द्रमा पृथिवी की परिक्रमा पूरी करता है। पूर्णिमा के दिन चन्द्र जिस नक्षत्र में विचरण करता है। उस नक्षत्र के नाम का मास, नक्षत्रमास कहलाता है।

सारणी 10.3

मासों का तुलनात्मक विवरण

क्र	सूर्य मास	चन्द्र मास	नक्षत्र मास	वैदिक मास	अंग्रेजी मास
1	मेष	चैत्र	चैत्र	मधु	मार्च/अप्रैल
2	वृषभ	वैशाख	वैशाख	माधव	अप्रैल/मई
3	मिथुन	ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	शुक्र	मई/जून
4	कर्क	आषाढ	आषाढ	शुचि	जून/जुलाई
5	सिंह	श्रावण	श्रावण	नभस	जुलाई/अगस्त
6	कन्या	भाद्रपद	भाद्रपद	नभस्य	अगस्त/सितम्बर
7	तुला	अश्विन	अश्विन	इष	सितम्बर/अक्टूबर
8	वृश्चिक	कार्तिक	कार्तिक	उर्ज	अक्टूबर/नवम्बर
9	धनु	मृगसर (अगहन)	मर्गशीर्ष	सहस	नवम्बर/दिसम्बर
10	कुम्भ	पौष	पौष	सहस्य	दिसम्बर/जनवरी
11	मकर	माघ	माघ	तपस	जनवरी/फरवरी
12	मीन	फाल्गुन	फाल्गुन	तपस्य	फरवरी/मार्च

ऋतुएँ – सूक्ष्म रूप से मौसम की प्रकृति के अनुसार एक वर्ष में 6 ऋतुएँ होती है। 2 मास की एक ऋतु मानी जाती है। वृहत्त रूप में एक वर्ष में तीन ऋतुएँ मानी गई है–

अयन– 6 माह का एक अयन होता है। इस प्रकार वर्ष में दो अयन होते है– उत्तरायण एवं दक्षिणायण।

1. **उत्तरायण-** जब सूर्य 6 माह उत्तर की ओर गमन करता हुआ प्रतीत होता है, तो इसे उत्तरायण कहते हैं।
2. **दक्षिणायण-** जब सूर्य 6 माह दक्षिण की ओर गमन करता हुआ प्रतीत होता है, तो इसे दक्षिणायण कहते हैं।

वर्ष- भारतीय कालगणना में वर्ष के विषय में अनेक धारणाएँ व मान्यताएँ प्रचलित है। गणना की दृष्टि से मुख्य रूप से छ: प्रकार के वर्ष हैं–

1. **सौर वर्ष-** पृथिवी द्वारा सूर्य की एक परिक्रमा में लगने वाला समय (365¼ दिन) सौरवर्ष कहलाता है।
2. **चन्द्र वर्ष-** एक अमावस्या से दूसरी अमावस्या की अवधि को चन्द्र मास कहते है। ऐसे 12 चन्द्रमासों से मिलकर एक चन्द्रवर्ष (354 दिन) बनता है।

सारणी 10.4

सूक्ष्म ऋतु	वृहत्त ऋतु	सम्बन्धित चन्द्रमास
बसंत	ग्रीष्म	फाल्गुन/चैत्र
ग्रीष्म		वैशाख/ज्येष्ठ
वर्षा	वर्षा	आषाढ़/श्रावण
शरद		भाद्रपद/अश्विन
शिशिर	शीत	कार्तिक/अगहन
हेमंत		पौष/माघ

3. **सवन वर्ष-** सवन वर्षमें दिनों की गणना एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक की जाती है जो प्राय: 24 घण्टे की होती है। एक सावन माह में 30 दिन होते है। ऐसे ही 12 सवन मासों (360 दिन) से मिलकर एक सवन वर्ष बनता है।
4. **नक्षत्र वर्ष-** चन्द्रमा द्वारा 27 नक्षत्रों की भ्रमण अवधि (354 दिन) को नक्षत्र वर्ष कहा जाता है।
5. **बार्हस्पत्य वर्ष-** बृहस्पति द्वारा सूर्य की परिक्रमा (बारह राशियों की) में 11.86 वर्ष लगते है। एक राशि को पार करने मे लगभग 361 दिन का समय लगता है, इसी अवधि को **बार्हस्पत्य वर्ष** कहा जाता है।

पञ्चाङ्ग- वैदिक हिन्दू कालगणना की रीति से निर्मित पाञ्च अङ्गों वाले पारम्परिक कालदर्शक (कैलेण्डर) को पञ्चाङ्ग कहा जाता है। पञ्चाङ्ग के मुख्य रूप से 5 अङ्ग है– तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण।

1. **तिथि-** तिथि चन्द्रमास की कालावाधि में चन्द्रमा की गति एवं स्थिति के आधार पर किया गया दैनिक विभाजन है। एक चन्द्रमास में 30 तिथियाँ होती हैं जो दो पक्षों में विभाजित होती है। सामान्यत: प्रतिप्रदा से पूर्णिमा तक 15 दिन शुक्लपक्ष एवं प्रतिपदा से अमावस्या तक 15 दिन कृष्णपक्ष होता है। ये तिथियाँ दिन अथवा रात के किसी भी काल में परिवर्तित हो सकती है। तिथियों के समय में घटने या बढने से पक्षों में दिनों की संख्या घट–बढ भी सकती है। इन तिथियों में पृथिवी तल से चन्द्रमा की भिन्न–भिन्न कोणीय स्थिति स्पष्ट होती है। चन्द्रमा द्वारा पृथिवी के परिक्रमा की अवधि चन्द्रमास ($27\frac{1}{3}$ दिन) और पृथिवी द्वारा सूर्य की परिक्रमा 365 दिन में पुरी करने के कारण दिन, तिथि, मास एवं वर्ष के बीच समायोजन बैठाने के लिए तिथियों की संख्या घट–बढ के साथ महिनों में भी अधिकमास एवं न्यूनमास की व्यवस्था बनाई गई है।
2. **वार-** पञ्चाङ्ग का दूसरा अङ्गवार है। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय के मध्य की 24 घण्टे की अवधि को वार कहते है, जिनका निर्धारण प्राचीन भारतीय खगोल शास्त्रियों द्वारा किया गया है। विश्व के अन्य पञ्चाङ्गों विशेषकर पाश्चात्य देशों में भी सात वार ही माने गये है जो इस प्रकार है–

सारणी 10.5

हिन्दी	अंग्रेजी
सोमवार(चन्द्रवार)	Monday
मङ्गलवार (भौमवार)	Tuesday
बुधवार	Wednesday
गुरुवार (बृहस्पतिवार)	Thursday
शुक्रवार	Friday
शनिवार	Saturday
रविवार (सूर्यवार)	Sunday

3. **नक्षत्र-** अन्तरिक्ष में चन्द्रमा अपनी कक्षा में पृथिवी के चारों और एक परिक्रमा 29.3 दिन में पूरी करता है। 360 अंश के इस परिक्रमा पथ पर चन्द्रमा 27 विभिन्न तारा समूहों के सम्पर्क में आता है। इन तारा समूहों को ही तारामण्डल या नक्षत्र कहा जाता है। भारत में नक्षत्रों की गणना और उन पर फलादेश अभिव्यक्ति आदि काल से ही किया जाता रहा है। कृष्णयजुर्वेद के तैत्तरीय संहिता के अनुसार आकाश मण्डल में 27 नक्षत्र और अभिजित को मिलाकर कुल 28 नक्षत्र है।

सारणी 10.6

प्रमुख नक्षत्र एवं उनकी विशिष्टताएँ

क्र.	नक्षत्र	तारा संख्या	देवता	आकृति या पहचान
1	चित्रा	1	चित्रगुप्त	मुक्तावत उज्जवल
2	स्वाति	1	राहू	कुम्कुम्वर्ण
3	विशाखा	5/6	बृहस्पति	तोरण या माला
4	अनुराधा	7	शनि	सूप या जलधार
5	ज्येष्ठा	3	बुध	सर्प या कुण्डल
6	मूल	9/11	केतू	शंख या सिंह की पूंछ
7	पूर्वाषाढा+अभिजित	4	शुक्र	सूप या हाथी दांत
8	उत्तराषाढा	4	रवि	सूप
9	श्रवण	3	चन्द्र	बाण/त्रिशूल
10	धनिष्ठा	5	मंगल	मर्दल बाजा
11	शतभिषा	100	राहू	मण्डलकार
12	पूर्व भाद्र	2	बृहस्पति	भरवत या घण्टाकार
13	उत्तर भाद्र	2	शनि	दो मस्तक
14	रेवती	32	बुध	मछली या मृदंग
15	अश्विन	3	केतु	घोडा
16	भरणी	3	शुक्र	त्रिकोण
17	कृतिका	6	रवि	अग्निशिखा
18	रोहणी	5	चन्द्र	गाडी
19	मृगशिरा	3	मंगल	हरिण मस्तक
20	आर्द्रा	1	राहू	उज्जवल
21	पुनर्वसु	5/6	बृहस्पति	धनुष
22	पुष्य	1/3	शनि	माणिक्य वर्ण
23	अश्लेषा	5	बुध	कुत्ते की पूंछ/कुलाव चक्र
24	मघा	5	केतु	हल

25	पूर्व फाल्गुन	2	शुक्र	खगडाकार
26	उत्तर फाल्गुन	2	रवि	शय्याकार
27	हस्त	5	चन्द्र	हाथ का पंजा

योग- अन्तरिक्ष में सूर्य, चन्द्र एवं पृथिवी के बीच विशिष्ट दूरियों, दिशाओं एवं स्थितियों के विशिष्ट संयोगों को **योग** कहते है। भारतीय ज्योतिष के अनुसार इनकी संख्या भी 27 मानी गई है। इन योगों में 9 अशुभ एवं शेष 18 शुभ योग माने गये हैं, जो इस प्रकार है–

सारणी 10.7

1.	विष्कुम्भ (अशुभ)	10.	गण्ड (अशुभ)	19.	परिध (अशुभ)
2.	प्रीति (शुभ)	11.	वृद्धि (शुभ)	20.	शिव (शुभ)
3.	आयुष्मान (शुभ)	12.	ध्रुव (शुभ)	21.	सिद्ध (शुभ)
4.	सौभाग्य (शुभ)	13.	व्याघात (अशुभ)	22.	साध्य (शुभ)
5.	शोभन (शुभ)	14.	हर्षण (शुभ)	23.	शुभ (शुभ)
6.	अतिगण्ड (अशुभ)	15.	वज्र (अशुभ)	24.	शुक्ल (शुभ)
7.	सुकर्मा (शुभ)	16.	सिद्धि (शुभ)	25.	ब्रह्म (शुभ)
8.	धृति (शुभ)	17.	व्यतिपात (अशुभ)	26.	इन्द्र (शुभ)
9.	शूल (अशुभ)	18.	वरीयान (शुभ)	27.	वैधृति (अशुभ)

करण- प्रत्येक तिथि के दो भाग होते है– पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध। तिथि के इन भागों को ही **करण** कहा जाता है। भारतीय ज्योतिष में करणों की संख्या ग्याराह बताई गई है, जो इस प्रकार है– बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि (भद्रा), शकुनि, चतुष्पाद, नाग, किस्तुघ्न। विष्टि नामक करण भद्रा भी कहते है।

पञ्चाङ्ग की उपयोगिता एवं कार्य-

- शुभ मुहूर्त ज्ञात करने व अशुभ का निवारण करने में।
- जीवन में धार्मिक उत्सवों, कृत्यों, पर्वो, व्रतों आदि का काल निर्धारण करने में।
- आकाशीय घटनाओं, संयोगो, ग्रहणों, ऋतुचक्रों आदि की अग्रिम जानकारी देकर मार्गदर्शन देने में।
- प्रतिदिन के व्यावहारिक उपयोग के लिये तिथियों, वारों, पक्षों, मासों, अयनों, ऋतुओं एवं वर्ष की सम्यक् जानकारी देने में।

खगोलीय एवं ज्योतिषीय गणना, विज्ञान के सहयोग से योगों करणों, नक्षत्रों, का फलादेश बताने आदि में पञ्चाङ्ग की उपयोगिता है।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1. निम्न में से.....षोडस संस्कार हैं।

अ. गर्भाधान ब. जातकर्म स. यज्ञोपवीत द. ये सभी

2. निम्न में से करण की संख्या .....हैं।

अ. 11 ब. 18 स. 17 द. 27

3. गोवर्धन पीठ..... स्थित है।

अ. द्वारिका ब. बद्रीनाथ स. रामेश्वरम द. जगन्नाथपुरी

4. निम्न में अशुभ योग.....है।

अ. प्रीति ब. आयुष्मान स. अतिगण्ड द. सौभाग्य

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. सनातन परम्परा में .....चौथा संस्कार होता है। (जातकर्म/नामकरण)
2. चन्द्रपथ में .....नक्षत्र होते है। (88/27)
3. शुक्लपक्ष .....को समाप्त होता है । (पूर्णिमा/अमावस्या)
4. मर्दल बाजा आकृति से .....नक्षत्र पहचाना जाता है। (धनिष्ठा/भरणी)

सत्य/असत्य चुनिए-

1. संस्कार विहीन मानव को पशुतुल्य माना जाता है। (सत्य/असत्य)
2. पञ्चाङ्ग का चौथा अंग योग है। (सत्य/असत्य)
3. एक अयन में 6 माह होते है। (सत्य/असत्य)
4. एक मुहुर्त में 2 नाडिका होती है। (सत्य/असत्य)

सही जोड़ी मिलान कीजिए -

1. बसन्त ऋतु	क. चैत्र
2. ग्रीष्म ऋतु	ख. फाल्गुन:चैत्र
3. शिशिर	ग. वैशाख/ज्येष्ठ
4. मेष	घ. कार्तिक/अगहन

अति लघु उत्तरीयप्रश्न -

1. पञ्चाङ्ग किसे कहते हैं।
2. पुरुषार्थ कितने होते हैं ?
3. नक्षत्र कितने होते हैं ?
4. एक वर्ष में कितने अयन होते ?

लघु उत्तरीयप्रश्न -

1. पाश्चात्य काल गणना को समझाइये।
2. सप्तमोक्ष पुरियों का उल्लेख करो।
3. संस्कार कितने होते हैं, उल्लेख करो?
4. यज्ञ के बारे में समझाइये ।

दीर्घ उत्तरीयप्रश्न-

1. **पञ्चाङ्ग** के बारे में विस्तार से समझाइये ।
2. चारधाम एवं 12 ज्योर्तिलिंगों का वर्णन करो।

परियोजना-

1. छात्र षोडश संस्कार, सप्त मोक्षपुरियाँ, द्वादश ज्योतिर्लिंग एवं विभिन्न मासों की सूची बनावें।

वेदभूषण प्रथम वर्ष

नागारिक जीवन

अध्याय –11

सरकार एवं लोकतन्त्र

आइये जानें- सरकार, सरकार के प्रकार, सरकार के स्तर, वैदिक वाङ्मय में गणतन्त्र, वर्तमान भारत में लोकतान्त्रिक सरकार, लोकतान्त्रिक सरकार जनसहभागिता, विवादों के निपटारे में सरकार की भुमिका और समानता और न्याय।

सरकार- किसी भी राष्ट्र को सुनियोजित रूप से चलाने में सरकार एवं प्रशासनिक व्यवस्था का अत्यन्त महत्त्व होता है। देश के प्रत्येक नागरिक को राष्ट्र अथवा स्वयं की प्रगति में समान अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित कराने का कार्य सरकार करती है। सरकार नागरिकों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन, रोजगार, बिजली, जल, परिवहन व्यवस्था आदि का उचित प्रबन्ध करती है। योजनाओं एवं कार्यक्रमों के क्रियान्वयन, कानून एवं संवैधानिक मूल्यों की रक्षा, देश की सीमाओं को सुरक्षित रखकर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के निर्वहन, देश के अन्दर एवं बाहर शान्ति को स्थापित कर राष्ट्र की एकता और अखण्डता को बनाये रखने का उत्तरदायित्व सरकार का होता है। जब देश में कोई प्राकृतिक आपदा आती है तो वह सरकार ही है, जो पीड़ितों को सहायता प्रदान करती है। किसी विवाद या अपराध की दशा में पीड़ित लोग न्यायालय जाते हैं। यह न्यायालय भी सरकार का एक अंग है। अत: जब लोग एक साथ रहते हुए कार्य करते है तो एक मजबुत व्यवस्था बनाने के लिए ऐसे नियमों की आवश्यकता होती है, जो सब पर लागू हो। ऐसे नियम बनाने का कार्य भी सरकार का होता है।

सरकार के प्रकार– संवैधानिक मूल्यों एवं कानूनों के संरक्षण तथा प्रशासनिक व्यवस्था को चलाने के लिए दो प्रकार की सरकारें होती हैं– राजतान्त्रिक सरकार एवं लोकतान्त्रिक सरकार ।

राजतान्त्रिक सरकार– इस सरकार में समस्त निर्णायक शक्ति राजा या रानी के पास केन्द्रित होती है। राजतान्त्रिक सरकार में राजा के पास सलहाकारों का एक समूह होता है जिसे **मन्त्रिपरिषद** कहते हैं। राजा विभिन्न मुद्दों पर चर्चा अपनी मन्त्रिपरिषद् से कर सकता है परन्तु अन्तिम निर्णय शक्ति राजा पर ही निहित होती है। इस शासन व्यवस्था में वंशानुगत रूप में देश के राजा अथवा रानी के द्वारा शासन किया जाता है।

लोकतान्त्रिक सरकार– लोकतान्त्रिक सरकार से आशय जनता द्वारा चुनी हुई, जनता के प्रति उत्तरदायी, जनता की सरकार से है। लोकतान्त्रिक व्यवस्था में राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को यह संवैधानिक अधिकार प्राप्त होता है कि वह वोट के माध्यम से सरकार चलाने के लिए अपने नेता का चुनाव करें। चुनाव के

पश्चात् बहुमत प्राप्त राजनीतिक पार्टी के लोग सरकार बनाते हैं। लोकतान्त्रिक व्यवस्था में सरकार अपने कार्यों तथा नीतियों के प्रति पारदर्शी रहती है तथा सरकार की नीतियों पर उठाए प्रश्नों के उत्तर देने के लिए भी उत्तरदायी होती है।

सरकार के स्तर– सरकार के कार्य एवं दायित्वों का क्षेत्र अति वृहद है। अतः देश की शासन व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए सरकार तीन स्तरों पर कार्य करती है।

स्थानीय स्तर– गाँव या कस्बे, शहर अथवा मोहल्लों के स्तर से सम्बन्धित शासन व्यवस्था।

राज्य स्तर– देश के किसी राज्य से सम्बन्धित शासन व्यवस्था।

राष्ट्रीय स्तर– सम्पूर्ण देश की शासन व्यवस्था।

क्या आप जानते हैं-

- विश्व में सर्वप्रथम 1893 ई. में न्यूजीलैंड ने महिलाओं को मतदान का अधिकार दिया था। संयुक्त राज्य अमरीका में महिलाओं को मतदान का अधिकार 1920 ई. तथा 1928 ई.में मिला था।

शासन व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए सरकार (शासन) के तीन मुख्य अंग हैं– व्यवस्थापिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका। शासन के इन अंगों द्वारा सरकार के नियम एवं कानूनों का सभी स्तरों पर क्रियान्वयन निर्बाध रूप से होता है।

वैदिक वाङ्मय में गणतन्त्र– वैदिक वाङ्मय में गणराज्य, लोकतन्त्रात्मक शासन, राष्ट्र, राष्ट्राध्यक्ष या राजाके निर्वाचन और निर्वाचित संस्थाओं के प्रति राजा के उत्तरदायित्व के अनेक सन्दर्भ मिलते हैं। रामायण, महाभारत, पुराणों, नीतिशास्त्रों, सूत्रग्रन्थों आदि ग्रन्थों में गणराज्य, सार्वभौम शासन व्यवस्था (global governance) एवं निर्वाचित प्रतिनिधि को वापस बुलाने जैसी अवधारणाएं भी विद्यमान हैं। ऋग्वेद में 40 स्थानों पर, अथर्ववेद में 9 स्थानों पर, ब्राह्मण ग्रन्थों में कई स्थानों पर गणतन्त्र व राष्ट्र के कई सन्दर्भ हैं। बौद्ध काल में (450 ईसा पूर्व से 450 ई. तक) अनेक गणतन्त्र रहे हैं। सभा, समिति, विष, पञ्चजना जैसी लोकतन्त्रिक संस्थाओं के चुनावों की परम्परा भी अति प्राचीन है। ऋग्वेद के मन्त्र **आ त्वाहार्षमन्तरेधि ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः। विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधि भ्रशत्॥** (10.173.1) अर्थात् हे राष्ट्र के अधिपति! मैं तुझे चुनकर लाया हूँ। तू सभा के अन्दर आ, स्थिरता रख, चंचल मत बन, घबरा मत, तुझे सब प्रजा चाहे। तेरे द्वारा राज्य पतित नहीं हो। इस मन्त्र से स्पष्ट है कि वैदिक युग में राजा या राष्ट्र के अधिपति के चुनाव होते रहे हैं और राष्ट्राधिपति से शासन में स्थायित्व एवं स्वयं जनप्रिय बने रहने की अपेक्षा की गई है। राष्ट्राधिपति को संसद जैसी किसी सभा में आना पड़ता था। स्थानीय स्वशासन हेतु नगरों, ग्राम व प्रान्तों की पञ्चायतें होती थीं। इनसे भी उस चुने हुए राष्ट्राधिपति का अनुमोदन आवश्यक होता था। ये पञ्चायतें राष्ट्राधिपति को हटाने में भी सक्षम थीं। अथर्ववेद के मन्त्र **त्वां विशो वृणतां राज्याय त्वामिमाः प्रदिशः पञ्च देवीः। वर्ष्मन्राष्ट्रस्य ककुदि श्रयस्व ततो न उग्रो वि भजा**

वसूनि॥ (3.4.2) अर्थात् देश में बसने वाली प्रजाएँ तुझे चुनें। ग्राम या नगर या प्रादेशिक परिषदें विद्वानों की बनी हुई उत्तम मार्गदर्शक, दिव्य पञ्चदेवी (पञ्चायतें) तेरा वरण करें अर्थात् अनुमोदन करें। तत्पश्चात तू उग्र तेजस्वी व प्रभावशाली दण्ड को न्याय बल के साथ संभाल और हमको जीवनोपयोगी वनों एवं अधिकारों का न्याय पूर्वक समान रूप से विभाजन कर।

वर्तमान भारत में लोकतान्त्रिक सरकार– भारत एक लोकतन्त्रिक देश है। स्वतन्त्रता के पश्चात् यहाँ के प्रत्येक नागरिक जो 18 वर्ष (61 वें संविधान संशोधन) या उससे अधिक आयु वाले हैं, को संवैधानिक रूप से मताधिकार प्राप्त हैं। आज़ादी के पूर्व मतदान का अधिकार केवल उन्हीं पुरुषों को प्राप्त था, जो शिक्षित होते थे एवं जिनके पास सम्पत्ति होती थी। ऐसी स्थिति में महिलाएँ, निर्धन एवं अशिक्षित लोग मतदान के अधिकार से वंचित रह जाते थे। अतः जनता द्वारा संगठित होकर मतदान के लिए समान अधिकार दिये जाने की मांग की गयी, जिसमें महात्मा गांधी एवं कई नेताओं ने इस बात का समर्थन किया। परिणामस्वरूप स्वतन्त्र भारत के प्रत्येक वयस्क नागरिक को मताधिकार प्राप्त हुआ एवं राष्ट्र में अधिक स्पष्ट तथा सार्वभौमिक लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था का निर्माण हुआ।

लोकतान्त्रिक सरकार में जन सहभागिता- भारत में जनता प्रत्यक्ष रूप से अपने प्रतिनिधि का चुनाव कर, सरकार निर्माण में भागीदार बनती है। इन सरकारों का चुनाव पाँच वर्ष के लिए होता है। पुनः जनता को नई सरकार चुनने का अवसर मिलता है। अतः सरकार में जनता के भागीदार होने का एक महत्वपूर्ण माध्यम **चुनाव** है। सशक्त लोकतन्त्र निर्माण की दिशा में भारत सरकार ने जन प्रतिनिधियों को जनहित के कार्यों में समर्थ न पाने की दशा में भारतीय नागरिकों द्वारा उन्हें वापस बुलाने का अधिकार (राईट टू रिकॉल) स्थानीय स्तर पर प्रदान किया है। वर्तमान में यह कानून उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, बिहार, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और हिमाचल प्रदेश राज्यों में पञ्चायत स्तर पर लागू किया गया है। निर्वाचन प्रक्रिया में अपनी पसन्द का उम्मीदवार न होने की दशा में निर्वाचन में प्रत्युक्त ई.वी.एम. में **नोटा** का भी विकल्प दिया गया है। जनता, सरकार के कार्यों के प्रति अपनी सहमति एवं असहमति विभिन्न संचार माध्यमों जैसे–समाचारपत्रों, टेलीविजन आदि के द्वारा भागीदारी करती है। अनेक बार जनता, सरकार के कार्यों से असन्तुष्ट होकर सड़कों पर उतर आती है। जुलूस निकालना, हस्ताक्षर अभियान आदि माध्यमों से सरकार के निर्णयों का विरोध करते हुए अपनी माँग रखती है। ऐसा इसलिए होता है कि लोकतन्त्र में सरकार जनता के प्रति उत्तरदायी है।

क्या आप जानते हैं-

- संविधान के 61वें संशोधन (1989 ई.) के द्वारा मतदान की आयु 21 वर्ष से घटाकार 18 वर्ष की गई ।

विवादों के निपटारे में सरकार की भूमिका- किसी भी देश या राज्य में जब विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों, क्षेत्रों, भाषायी समूहों के लोग आपस में तालमेल नहीं बैठा पाते तो ऐसी स्थिति में विवाद पैदा होते है। विवाद का एक अन्य कारण यह भी है कि जब कुछ लोगों को लगने लगता है कि उनके साथ भेदभाव किया जाता है। ऐसे विवादों का कारण अनेक बार धार्मिक जूलूस और उत्सव भी बन जाते है। अनेक बार दो राज्यों के मध्य गुजरने वाली नदियों के जल बटवारें को लेकर भी हिंसात्मक विवाद हुए हैं। ये विवाद भीषण और हिंसात्मक हो जाते है। जिसके कारण अन्य लोगों में भय और असुरक्षा का भाव उपजता है। अत: सरकार का दायित्व ऐसे विवादों का न्याय संगत एवं शान्तिपूर्ण समाधान करना है। ऐसे मौकों पर सरकार और विशेषकर पुलिस महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

चित्र- 11.1 सर्वोच्च न्यायालय

समानता एवं न्याय– यह लोकतान्त्रिक सरकारों का मुख्य तत्त्व है। जिसका आशय सभी के लिए न्याय एवं सभी लिए सभी क्षेत्रों में अवसरों की समानता प्रदान करना है, जैसे– सरकार द्वारा अस्पृश्यता, लैङ्गिक भेद जैसी बुराइयों को दूर करने के लिए, सर्वशिक्षा, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा हेतु संवैधानिक एवं कानूनी व्यवस्थाएं दी गई हैं। जन-जागरुकता अभियानों द्वारा इनका समाज में प्रसारण किया गया। इस प्रकार लोकतन्त्र में सरकारें, जनता के प्रति उत्तरदायी हैं। सरकार निर्माण में जनता की व्यापक भूमिका है। इन सरकारों का उद्देश्य ही समान रूप से जनहित के कार्यों का सम्पादन करना है। जहाँ कहीं ऐसा नहीं हो पाता है तो वहाँ की सरकारों को जनता के प्रबल विरोध का सामना करना होता है।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1. राजतन्त्रीय सरकार में अन्तिम निर्णय शक्ति..... होती है।

अ. राजा ब. प्रजा स. मन्त्रिपरिषद् द. उपर्युक्त सभी

2. लोकतान्त्रिक सरकार..... के प्रति उत्तरदयी होती है।

अ. राष्ट्रपति ब. जनता स. मन्त्रिपरिषद् द. उपर्युक्त सभी

3. भारत में मताधिकार की आयु.....है।

अ. 15 वर्ष ब. 16 वर्ष स. 18 वर्ष द. 19 वर्ष

4. स्थानीय सरकार से आशय..... है।

अ. ग्रामीण एवं शहरी सरकार ब. राज्य की सरकार

स. केन्द्र की सरकार द. उपर्युक्त सभी

5. नोटा का प्रयोग.....किया जाता है।

अ. पसन्द के उम्मीदवार के लिए ब. नापसन्द उम्मीदवार के लिए

स. सरकार के विरोध के लिए द. उपर्युक्त में से कोई नहीं

रिक्त स्थान की पूर्ति पूर्ति कीजिए –

1. राजतंत्र में शासन की शक्ति .....के पास होती है। (लोग/राजा)
2. सरकार .....स्तरों पर कार्य करती है। (तीन/चार)
3. .....सरकार, जनता द्वारा उठाए प्रश्नों के प्रति उत्तरदायी है। (लोकतांत्रिक/राजतांत्रिक)
4. शासन व्यवस्था के .....अंग है। (तीन/चार)
5. सरकार के निमार्ण में मुख्य भूमिका .....होती है। (मन्त्रिपरिषद्/जनता की)

सत्य/असत्य–

1. सरकार कानून एवं संवैधानिक मूल्यों की रक्षा करती है। (सत्य/असत्य)
2. लोकतन्त्रिक व्यवस्था में जनता का विशेष महत्त्व है। (सत्य/असत्य)
3. सरकार मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु बाध्य नहीं है। (सत्य/असत्य)
4. विवदों के निपटारे में सरकार और पुलिस की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। (सत्य/असत्य)

सही जोड़ी मिलान किजिए–

1. सरकार के स्तर	क. विजयी राजनीतिक पार्टी
2. सरकार के प्रकार	ख. मताधिकार की आयु 18 वर्ष
3. सरकार का गठन	ग. तीन
4. 61वाँ सविधान संशोधन	घ. दो

अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. सरकार निर्माण में जनता किसके माध्यम से भागीदार बनती है?
2. सरकार के प्रकारों के नाम लिखिए।
3. सरकार द्वारा दी जाने वाली मूलभूत सुविधाओं के नाम लिखिए।
4. शासन के अंगों का उल्लेख कीजिए।
5. सरकार के तीन स्तरों का नामों का उल्लेख कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. राजतन्त्र से क्या आशय है?
2. स्थानीय स्तर में कौन से क्षेत्रों का समावेश होता है?
3. लोकतांत्रिक शासन प्रणाली को समझाइए।
4. समानता एवं न्याय के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न –

1. लोकतान्त्रिक सरकार में जनसहभागिता पर प्रकाश डालिए।
2. भारत में लोकतान्त्रिक सरकार के विषय में टिप्पणी कीजिए।

परियोजना कार्य –

1. छात्र सरकार के स्तर एवं शासन के अंगों का चार्ट बनावें।

अध्याय- 12

पञ्चायती राज व्यवस्था

आइये जानें- प्राचीन भारत में पञ्चायती राज, जिला पञ्चायत, क्षेत्र पञ्चायत(ब्लाक) और ग्राम पञ्चायत।

प्राचीन भारत में पञ्चायती राज– भारत में पञ्चायती राज की अवधारणा नई नहीं है। वैदिक संस्कृति में भी भारत में पञ्चायती राज था, जिसकी पुष्टि वेद मन्त्रों से होती है। वैदिक संस्कृति में **सभा व समिति** नामक संस्था ग्राम विकास के कार्य करती थीं। उस सभा व समिति के मुखिया को **ग्रामणी** कहा जाता था।इस बात का उल्लेख अथर्ववेद में हुआ है- **ये राजानो राजकृत: सूता ग्रामण्यसूता ग्रामण्यश्च ये।** (3.5.7) शनै: शनै: सभ्यता के विकास के साथ इन्हें ग्रामाधिपति, रेड्डी एवं पञ्चमण्डली आदि नामों से सम्बोधित किया जाने लगा। मनुस्मृति में एक गाँव, दस गाँव, सौ गाँव एवं हजार गाँवों के संगठन का वर्णन मिलता है, जो वर्तमान की ग्राम पञ्चायत, ब्लाक पञ्चायत और जिला पञ्चायत जैसी ही थीं।

विशाल शासनव्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए विभिन्न स्तरों पर विधियों, लोक कल्याणकारी योजनाओं आदि के क्रियान्वयन की आवश्यकता होती है। इसी दिशा में पञ्चायती राज व्यवस्था हमारे देश की शासनव्यवस्था का श्रेष्ठ उदाहरण है। इसके द्वारा किसी क्षेत्र अथवा समुदाय विशेष से सम्बन्ध रखने वाले लोगों का चहुँमुखी विकास सम्भव होता है। पञ्चायती राज व्यवस्था को **स्थानीय स्वशासन व्यवस्था** भी कहा जाता है। इस व्यवस्था में स्थानीय नागरिक एवं समुदाय अपनी आवश्यकताओं एवं समस्याओं के समाधान की पूर्ति वहाँ की परिस्थितियों के अनुसार स्वयं के स्तर से पूर्ण कर सकते हैं। इसके द्वारा जनता अपनी समस्याओं को बेहतर ढंग से समझकर स्वयं के हित में सर्वसम्मति से स्थानीय स्तर पर हल प्राप्त कर सकती है। पञ्चायती राज व्यवस्था का उल्लेख संविधान के **अनुच्छेद-** 40 में किया गया है, जिसमें ग्राम पञ्चायतों के गठन का उल्लेख है। बलवन्त राय मेहता समिति की रिपोर्ट के आधार पर भारत में त्रिस्तरीय पञ्चायती राज व्यवस्था 2 अक्टुबर, 1959 को पं. जवाहरलाल नेहरू द्वारा राजस्थान के नागौर जिले से लागू की गई। सरकार ने इस व्यवस्था के उचित क्रियान्वयन एवं सुधार के लिए समय-समय पर विभिन्न आयोगों और समितियों का गठन किया। थुंगन समिति की रिपोर्ट के आधार पर 24 अप्रैल, 1993 को संविधान के 73 वें और 74 वें संशोधनों द्वारा पञ्चायती राज व्यवस्था में अभूतपूर्व परिवर्तन किए गये। जिससे ग्रामीण व शहरी लोगों की शासन

क्या आप जानते हैं-

- स्थानीय स्वशासन का उल्लेख वैदिक वाङ्मय में मिलता है।

में अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित हुई। पञ्चायती राज अथवा स्थानीय स्वशासन व्यवस्था ग्रामीण एवं नगरीय दोनों स्तरों के लिए उपयुक्त होती है।

पञ्चायती राज व्यवस्था को तीन स्तरों में विभाजित किया गया है-

1. जिला पञ्चायत (परिषद)- जिला स्तर पर।
2. क्षेत्र पञ्चायत- विकास खण्ड (ब्लॉक) स्तर पर।
3. ग्राम पञ्चायत- ग्रामीण स्तर पर।

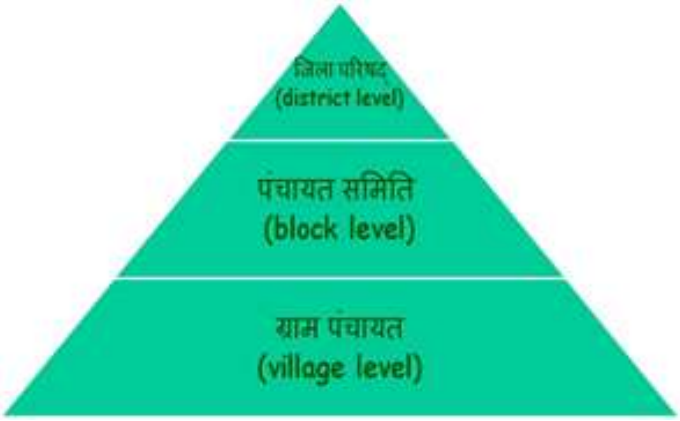

चित्र- 12.1 पञ्चायती राज व्यवस्था

जिला पञ्चायत- जिला पञ्चायत स्थानीय स्व-शासन व्यवस्था की उच्चतम इकाई है। इसके अन्तर्गत जिले के सभी जनपद (क्षेत्र)पञ्चायतें एवं ग्राम पञ्चायतें आती है। जिले भर के सभी ग्राम पञ्चायतें वार्डों में विभाजित होती है। एक वार्ड में 12 से 25 ग्राम पञ्चायतें होती है। इन वार्डों के सदस्यों का चुनाव सीधे उस वार्ड के मतदाताओं द्वारा किया जाता है। जिला पञ्चायत के सदस्यों की संख्या 10 से 35 तक हो सकती है। जिला पञ्चायत के मुखिया को जिला पञ्चायत अध्यक्ष कहा जाता है। जिला पञ्चायत अध्यक्ष का चुनाव जिले के वार्ड सदस्यों द्वारा किया जाता है। किसी भी जिले के राज्यसभा एवं लोकसभा सदस्य और विधायक भी जिला पञ्चायत के पदेन सदस्य होते हैं। इनके अतिरिक्त मुख्य कार्य-पालन अधिकारी की नियुक्ति भी की जाती है, जो जिला पञ्चायत के निर्णयों को लागू करवाने का कार्य करता है।

क्या आप जानते हैं-

- भारत सरकार ने पञ्चायत स्तर पर योजनाओं के उचित प्रबन्धन एवं क्रियान्वन के लिये 2004 में पञ्चायतीराज मन्त्रालय की स्थापना की।

जिला पञ्चायत की प्रमुख समितियाँ- जिला पञ्चायत अपने सम्बद्ध विभिन्न विकास कार्यों को सुचारू सञ्चालन के लिये निम्न समितियाँ गठित करती है-

1. आयोजना तथा सामुदायिक विकास स्थाई समिति।
2. सहकारिता स्थाई समिति।
3. उपभोग स्थाई समिति।
4. शिक्षा और समाज कल्याण स्थाई समिति।
5. वित्त स्थाई समिति।

जिला पञ्चायत के कार्य-

1. ग्राम पञ्चायत तथा क्षेत्र पञ्चायत के कार्यों की समीक्षा करना।

2. राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार से ग्राम पञ्चायतों एवं क्षेत्र पञ्चायतों को वित्त की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
3. राज्य सरकार द्वारा निर्देश प्राप्त कर कुछ शासकीय पदों पर नियुक्ति प्रदान करना।
4. जिले के अंतर्गत ग्राम पञ्चायतों को विकसित व मजबूत करना।
5. जिले में पञ्चायतों के बजट की जाँच कर अनुमोदन करना।
6. विभिन्न क्षेत्र पञ्चायत की योजनाओं में समन्वय स्थापित करना।
7. क्षेत्र पञ्चायतों के कार्यों का सामान्य निरीक्षण।
8. क्षेत्र पञ्चायतों का मार्ग दर्शन।
9. विशेष प्रयोजनों के लिये क्षेत्र पञ्चायतों द्वारा भेजी गई अनुदान सम्बन्धी माँगों का परीक्षण कर राज्य शासन को अग्रेषित करना।
10. अंतर-खण्डीय विकास कार्यों में समन्वय स्थापित करना।
11. ग्राम व क्षेत्र पञ्चायतों को आसान शर्तों पर बोरिंग मशीन, बुलडोजर, ट्रैक्टर आदि प्रदान करने की व्यवस्था करना।
12. विकास कार्यों से संबंधित विविध विषयों में राज्य शासन को सलाह देना।
13. ग्राम व क्षेत्र पञ्चायतों से सांख्यिकी एकत्र करना।
14. किसी भी स्थानीय प्राधिकारी से उसके कार्यकलापों के संबंध में जानकारी देने की अपेक्षा करना।

क्षेत्र पञ्चायत (ब्लॉक)- प्रखण्ड स्तर पर क्षेत्र पञ्चायतों (पञ्चायत समिति) का गठन किया जाता है। एक विकास खण्ड की क्षेत्र पञ्चायत में उस क्षेत्र की सभी ग्राम पञ्चायतों को शामिल किया जाता है। क्षेत्र के सदस्यों का गठन उस क्षेत्र के मतदाताओं के द्वारा ही किया जाता है। तत्पश्चात् चुने हुए सदस्यों में से अध्यक्ष (प्रमुख) एवं उपाध्यक्ष (उपप्रमुख) को चुना जाता है। क्षेत्र पञ्चायत सदस्यों की संख्या 10 से 25 हो सकती है। क्षेत्र पञ्चायत का कार्यकाल भी 5 वर्ष ही होता है। क्षेत्र पञ्चायत में सरकार द्वारा नियुक्त सर्वोच्च पदाधिकारी को प्रखण्ड विकास अधिकारी (BDO) कहा जाता है। क्षेत्र पञ्चायत को राज्यों में अलग-अलग नामों से जानते हैं जैसे- राजस्थान में पञ्चायत समिति, आन्ध्रप्रदेश में मण्डल प्रजापरिषद, गुजरात में तालुका पञ्चायत, कर्नाटक में मण्डल पञ्चायत तथा उत्तर प्रदेश में प्रखण्ड पञ्चायत, मध्यप्रदेश में जनपद पञ्चायत आदि।

क्षेत्र पञ्चायत के कार्य-

1. क्षेत्र पञ्चायत का मुख्य कार्य ग्राम पञ्चायतों को राज्य सरकार से वित्तीय सहायता की उपलब्धता को सुनिश्चित करना है।

2. ग्राम में ग्रामीण रोजगार कार्यक्रमों, युवा, महिला तथा बाल कल्याण से संबंधित कार्यक्रमों, निशक्त एवं परिवार नियोजन, कृषि, खेलकूद आदि से सम्बन्धित कार्यक्रमों को आयोजित करना।
3. संविदा शिक्षक, शिक्षा कर्मी, पञ्चायत कर्मी, स्वास्थ्य रक्षक आदि पदों पर नियुक्ति प्रदान करना।
4. ग्राम पञ्चायतों के कार्यों की निगरानी करना।
5. ग्राम विकास के कार्यक्रमों का क्रियान्वयन, मूल्यांकन व अनुश्रवण।
6. प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का संचालन।
7. बीज केन्द्र का संचालन।
8. सम्पत्तियों के रख-रखाव का दायित्व।
9. विपणन, गोदामों का पर्यवेक्षण।
10. पशु चिकित्सालय का स्वामित्व।
11. एक से अधिक ग्राम पञ्चायतों को अच्छादित करने वाले कार्य।

ग्राम पञ्चायत- ग्राम पञ्चायत का गठन कम से कम 1000 व्यक्ति की आबादी होने पर किया जाता है। यदि किसी गांव में इतनी आबादी नहीं होती है, तो आस-पास के गाँवों को जोड़कर ग्राम पञ्चायत का गठन किया जाता है। ग्राम पञ्चायत के अन्तर्गत आने वाले गाँव विभिन्न वार्डों में विभाजित होते हैं। प्रत्येक वार्ड की जनता अपने प्रतिनिधि का चुनाव करती है, जिन्हें **पञ्च** कहा जाता है। ग्राम पञ्चायत का प्रमुख **सरपञ्च** या **प्रधान** होता है, जो पञ्चायत की होने वाली बैठकों की अध्यक्षता करता है। इसके अतिरिक्त शासन द्वारा पञ्चायत सचिव एवं पञ्चायत कर्मियों की नियुक्ति की जाती है। ग्राम पञ्चायत के सभी कार्यों एवं निर्णयों का लेखा-जोखा, पञ्चायत सचिव रखता है। ग्राम पञ्चायत का कार्यकाल 5 वर्ष का होता है।

ग्राम पञ्चायत, गाँवों के विकास एवं समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए ग्राम सभाओं का आयोजन करती है। ग्रामसभा एक सामान्य सभा मानी जाती है, जो हर तीन माह में आयोजित की जाती है। इस सभा में ग्रामवासी अपनी समस्याओं एवं आवश्यकताओं के विषय में चर्चा एवं ग्राम पञ्चायत द्वारा किये गये कार्यों की समीक्षा

चित्र- 12.2 पञ्चायत

करते हैं। ग्राम पञ्चायतों में महिलाओं के लिए 33% पद आरक्षित हैं ।

ग्राम पञ्चायत के कार्य–

1. ग्राम वासियों की मूलभूत सुविधाओं, जैसे- जल, स्वच्छता, आदि की व्यवस्था करना।
2. चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सम्बंधी कार्य।
3. हाट-बाजार एवं मेलों को आयोजित करना।
4. राजकीय नलकूपों की मरम्मत व रख रखाव।
5. महिला एवं बाल विकास सम्बन्धी कार्य।
6. पशुधन विकास सम्बन्धी कार्य।
7. प्राथमिक विद्यालय, उच्च प्राथमिक विद्यालय व अनौपचारिक शिक्षा के कार्य।
8. वित्तीय गतिविधियों एवं ग्रामवासियों से सम्बन्धित जन्म-मृत्यु की जानकारी सुरक्षित रखना।
9. ग्राम के सामान्य प्रशासन की जानकारी एवं देख-रेख करना।
10. कृषि, ग्राम्य विकास एवं युवा कल्याण संबंधी कार्य।

पञ्चायती राज व्यवस्था भारत कि प्राचीन स्थानीय स्वशासन की अवधारणा को बढ़ाने वाली है। सरकार एवं शासन की दृष्टि से लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण का अहम बिन्दु है। इसका मुख्य उद्देश्य सरकारी योजनाओं को क्रमबद्ध रूप से स्थानीय स्तर पर उतारना है।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1. ग्रामणी.....कहलाता है।

अ. पञ्चायत का मुखिया ब. सभा/समिति का मुखिया
स. परिषद में मुखिया द. उपर्युक्त में से कोई नहीं

2. बलवन्त राय मेहता ने पञ्चायती राज को .....स्तरीय रखने की अनुशंसा की।

अ. दो स्तरीय ब. तीन स्तरीय स. चार स्तरीय द. पांच स्तरीय

3. ग्रामसभा का आयोजन.....होता है।

अ. 1 माह में ब. 2 माह में स. 3 माह में द. 4 माह में

4. स्थानीय शासन में महिलाओं को अरक्षण.....है।

अ. 33 प्रतिशत ब. 43 प्रतिशत स. 45 प्रतिशत द. 40 प्रतिशत

5. पञ्चायतीराज मन्त्रालय की स्थापना..... हुई।

अ. 1962 ई. ब. 1993 ई. स. 1998 ई. द. 2004 ई.

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. पञ्चायती राज व्यवस्था को स्थानीय ..... व्यवस्था भी कहा जाता है। (प्रशासन/ स्वशासन)
2. ग्राम पञ्चायत का प्रमुख ..... होता है। (पञ्च/सरपञ्च)
3. जनपद पञ्चायत का कार्यकाल ..... वर्ष होता है। (पाँच/सात)
4. क्षेत्र पञ्चायत अधिकारी को.....कहा जाता है। (वी.डी.ओ./बी.डी.ओ.)

सत्य/असत्य चुनिए–

1. ग्राम पञ्चायत का गठन 500 व्यक्ति वाले आबादी क्षेत्र में होता है। (सत्य/असत्य)
2. जिला पञ्चायत ही स्थानीय स्वशासन की उच्चतम ईकाई है। (सत्य/असत्य)
3. कौटिल्य ने ग्राम को मुख्य राजनीतिक ईकाई माना है। (सत्य/असत्य)
4. जिला पञ्चायत अध्यक्ष का चुनाव वार्ड सदस्य करते है। (सत्य/असत्य)

सही जोड़ी बनाईए–

1. ग्राम	क. जनपद (क्षेत्र)पञ्चायत
2. विकास खण्ड स्तर	ख. ग्राम पञ्चायत
3. मुख्य कार्यपालन अधिकारी	ग. ग्राम सभा
4. ग्राम विकास अधिकारी	घ. जिला पञ्चायत

अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. ग्राम पञ्चायत के प्रमुख कौन होते है ?
2. पञ्चायत सचिव के क्या कार्य है ?
3. स्थानीय मेलों का आयोजन कौन करवाता है ?
4. भारत में त्रिस्तरीय पञ्चायतीराज व्यवस्था कब लागू की गई थी?

लघु उत्तरीय प्रश्न–

1. पञ्चायतीराज व्यवस्था के तीनों स्तरों का वर्णन कीजिए।
2. ग्राम सभा क्या है?
3. जनपद पञ्चायत के सदस्यों की संख्या पर टिप्पणी लिखिए।
4. ग्राम पञ्चायत के किन्हीं 5 कार्यों का उल्लेख कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

1. पञ्चायतीराज व्यवस्था को समझाइए।
2. जिला पञ्चायत के कार्यों का उल्लेख कीजिए।
3. ग्राम सभा के गठन की प्रक्रिया को समझाइए।

परियोजना कार्य-

1. छात्र, ग्राम पञ्चायत, क्षेत्र पञ्चायत एवं जिला पञ्चायत के कार्यों की सूची तैयार करें।

अध्याय- 13

ग्रामीण एवं नगरीय प्रशासन तथा आजीविका के साधन

आइये जानें- ग्रामीण प्रशासन, विवादों का निस्तारण, भू-अभिलेख सम्बन्धी ज्ञान, जनसुविधाएँ, जीवन के अधिकार के रूप में जल, शिक्षा का अधिकार, सार्वजनिक परिवहन प्रणाली, स्वच्छता सम्बन्धी जन सुविधाएँ, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएँ, विद्युत, ग्रामीण क्षेत्रो में आजीविका, पशुपालन, बाजार और कर्ज की स्थिति, ग्रामीण आवास योजना, नगरीय प्रशासन, स्मार्ट सिटी मिशन,हेरिटेज सिटी डवलपमेंट और शहरी क्षेत्र में आजीविका।

ग्रामीण प्रशासन- हमारे देश भारत में लगभग 65% जनसंख्या गाँवों में निवास करती है और यहाँ लगभग 6 लाख से अधिक गाँव हैं। गावों में बिजली, जल, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि व्यवस्थाओं के साथ-साथ भूमि के दस्तावेजों का रख-रखाव तथा ग्रामवासियों के विविध प्रकार के विवादों को हल करने के लिए एक प्रशासनिक ढाँचा होता है। प्रशासन से आशय शासन के विभिन्न पहलुओं के विकास और उसे क्रियान्वित करने की प्रक्रिया से है। प्रशासन का जो भाग जनकल्याण अथवा जनता की हित के लिए होता है, उसे **लोक प्रशासन** कहते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में जन सुविधाओं की दृष्टि से प्रशासन के अनेक पहलू हैं, जैसे- सड़क, नाली, बांध, पेयजल, आदि की सुविधाएँ प्रदान करना है। ग्राम प्रशासन की दृष्टि से कुछ प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं-

1. जन-सुविधा कार्य- सड़क, नाली, बाँध, पेयजल, स्वास्थ्य एवं शिक्षा की व्यवस्था करना।
2. लोक कल्याण की योजनाओं को ग्राम स्तर तक पहुँचाना एवं लागू करना।
3. विवादों का निस्तारण।
4. भूमि सम्बन्धी अभिलेखों का समुचित रख-रखाव।
5. समय-समय पर कर वसूली।

विवादों का निस्तारण- गाँव में विवाद भी अनेक प्रकार के होते हैं, जैसे- भूमि सम्बन्धी विवाद, लड़ाई, चोरी, डकैती, हत्या सम्बन्धी विवाद जब दो या दो से अधिक लोगों के बीच किसी मुद्दे पर विवाद हो जाता है, तो ऐसी स्थिति में प्रयास किया जाता है कि मिल-बैठकर शान्तिपूर्ण ढंग से विवादों का निस्तारण हो जाए। परन्तु अनेक बार ऐसा न हो पाने पर प्रशासन के मध्यस्थता की आवश्यकता होती है। इस दृष्टि से प्रशासन की पहली इकाई पुलिस है।

पुलिस- शान्ति एवं कानून व्यवस्था की स्थापना के लिए प्राथमिक रूप से एक पुलिस थाना अथवा पुलिस चौकी होती है। थाने के प्रमुख को थानाध्यक्ष कहा जाता है। पुलिस के कार्य क्षेत्र में कानून व्यवस्था का पालन कराना होता है। थाना में किसी भी विवाद से सम्बन्धित प्राथमिकी दर्ज कराई जा सकती है। इसे अंग्रेजी भाषा में **फर्स्ट इन्फॉर्मेशन रिपोर्ट** (F.I.R.) कहते हैं। विवादों को जानने के लिए और आवश्यक कार्यवाही हेतु, पुलिस द्वारा घटना स्थल का निरीक्षण किया जाता है। विवादों के समाधान के लिए जरुरत पड़ने पर थानाध्यक्ष द्वारा ग्रामीणों अथवा ग्राम पंचायत का सहयोग भी लिया जाता है। आवश्यक होने पर थानाध्यक्ष ऐसे विवादों को न्यायालय में भी ले जा सकता है।

पटवारी- राजस्व वसूली का प्राथमिक अधिकारी **पटवारी** कहलाता है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो प्राचीनकाल से ही भू–राजस्व शासन की आय का मुख्य स्रोत रहा है। आज भी सरकार द्वारा भूमि पर किसानों से राजस्व वसूली की जाती है। शासन व्यवस्था में पटवारी पद्धति को लागू करने का श्रेय **शेरशाह सूरी** को जाता है। पटवारी का कार्य भूमि एवं भू-उत्पादों के नये-पुराने समस्त अभिलेखों को सुरक्षित रखना भी है।जिला स्तर पर राजस्व वसूली तन्त्र का मुखिया कलेक्टर (जिलाधीश) होता है।

पहले भूमि के अभिलेखों को कागजों पर लिखकर रखा जाता था। जिससे भूमि पर मालिकाना हक का ज्ञान होता था। परन्तु अभिलेख की यह पद्धति अनेक विसंगतियों से युक्त एवं विवादित होती थी। आज भारत के अधिकांश हिस्सों में भूमि के आभिलेखों को कम्प्यूटरीकृत कर दिया गया है। जिसके कारण अभिलेख निर्विवादित एवं आमजन तक पहुँच गये।

भू-अभिलेख सम्बन्धी ज्ञान- भू-अभिलेखों को **खसरा-खतौनी** भी कहते हैं। इसमें भूमि सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण जानकारी इस प्रकार दी गई होती है-

1. भूमिधर का नाम
2. भूमि का क्षेत्रफल
3. भूमि की उपज एवं फसल
4. भूमि/आबादी या कृषि योग्य भूमि अथवा अनुपजाऊ भूमि एवं अन्य सुविधा।
5. भूमि की चौहद्दी (चारों ओर की स्थिति)

यह भू-अभिलेख अनेक दृष्टि से सरकार एवं जनता दोनों के लिए महत्त्वपूर्ण है। भूमि के क्रय-विक्रय के समय, भूमि पर ऋण लेने के समय, भूमि बँटवारे एवं स्वामित्व विवाद की स्थिति में कोई भी व्यक्ति तहसील कार्यालय से किसी भी भूमि का खसरा-खतौनी एवं नजरी-नक्शा निश्चित शुल्क देकर प्राप्त कर सकता है।

जन सुविधाएँ- जन सुविधा से तात्पर्य जनता की उन मूलभूत आवश्यकताओं से है जो उनके जीवन के लिए आवश्यक है। जन सुविधा की एक विशेषता यह होती है कि उसका एक बार निर्माण हो जाने के बाद अनेक लोग लाभान्वित हो सकते हैं। भारतीय संविधान में जन सुविधा के रूप में शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, आवास, बिजली, सार्वजनिक परिवहन प्रणाली आदि को मानव जीवन के अधिकार का हिस्सा माना गया है। सरकार द्वारा प्रदत्त प्रमुख जन सुविधाएँ इस प्रकार है-

जीवन के अधिकार के रूप में जल- सभी के दैनिक जीवन में जल मूलभूत आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार, **जल अधिकार का मतलब है कि प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत और घरेलू उपयोग के लिए पर्याप्त सुरक्षित, स्वीकार्य, भौतिक रूप से पहुँच के भीतर और सस्ती दर पर जल मिलना चाहिए।**

भारतीय संविधान के **अनुच्छेद** 21 में जल के अधिकार को जीवन के अधिकार का ही भाग माना गया है। अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार है कि उसे दैनिक आवश्यकता को पूरा करने के लिए सस्ते दर पर पर्याप्त मात्रा में जल उपलब्ध हो।

शिक्षा का अधिकार- भारतीय संविधान के नीति निर्देशक तत्त्वों में **अनुच्छेद-45** में, 6 से 14 वर्ष तक की आयु के सभी बालकों को निःशुल्क अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था करने का निर्देश दिया गया है। 2002 में 86 वाँ संविधान संशोधन अधिनियम को संसद द्वारा पारित कर मूल अधिकारों में **अनु. 21 (क)** को जोड़कर अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा को मूल अधिकार का दर्जा दिया गया। इसके द्वारा यह सुनिश्चित किया गया कि राज्य का यह कर्तव्य है कि वह 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करेगा।

क्या आप जानते हैं-
- शिक्षा अधिकार विधेयक (RTE), संसद में 4 अगस्त, 2009 को पारित हुआ था तथा 1 अप्रैल, 2010 से शिक्षा का अधिकार कानून लागू किया गया है।

सार्वजनिक परिवहन प्रणाली- कम दूरी के लिए सार्वजनिक परिवहन का प्रमुख साधन बसें ही है। अत: जनसुविधा के रूप में सार्वजनिक परिवहन बस प्रणाली लगभग सभी राज्यों में विद्यमान है। मुम्बई जैसे उपनगरीय क्षेत्रों में रेलवे एक अच्छी सार्वजनिक परिवहन प्रणाली है। यहाँ रेलवे द्वारा प्रतिदिन लगभग 65 लाख यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक आवागमन की सुविधा प्राप्त है। लगभग 300 किमी. से भी ज्यादा लम्बे नेटवर्क पर चलने वाली इन स्थानीय ट्रेनों के द्वारा दूर-दूर से लोग भी

क्या आप जानते हैं-
- भारत में प्रथम रेल मुम्बई से ठाणे के मध्य 16 अप्रैल 1853 ई. चलाई गई थी।
- भारत में मेट्रो रेल का प्रारम्भ 24 अक्टुबर 1984 को हुआ था।

शहर में कार्य करने आते हैं। इसी तरह महानगर दिल्ली में दिल्ली मेट्रो जन परिवहन की दृष्टि से जीवन रेखा बन चुकी है। अभी तक दिल्ली के अतिरिक्त मुम्बई, बैंग्लौर, चेन्नई, जयपुर, नोएडा, हैदराबाद, अहमदाबाद, लखनऊ, इन्दौर आदि शहरों में भी मेट्रो रेल सेवा शुरू हो चुकी है। अब ओला एवं ऊबर जैसी टैक्सी कैब सेवा कम्पनियाँ समुचित दरों पर मोबाइल एप के माध्यम से लोगों को स्थानीय यातायात की सुविधाएँ प्रदान कर रही हैं।

स्वच्छता सम्बन्धी जन सुविधाएँ- भारत में जनसुविधा के रूप में स्वच्छता सुविधाएँ न्यून है। स्वच्छता सुविधा की दृष्टि से वर्ष 2021-22 में नये घरों के लिए कुल 7.16 लाख व्यक्तिगत घरेलू शौचालय और 19061 सामुदायिक स्वच्छता परिसरों का निर्माण किया गया। वर्तमान में गैर-सरकारी संगठन **सुलभ इन्टरनेशनल** द्वारा बस स्टैण्डों एवं रेलवे स्टेशनों के साथ ही अन्य सार्वजनिक स्थानों पर भी बहुत कम लागत पर शौचालय सुविधाएँ उपलब्ध करायी जा रही है। इससे स्वच्छता सुविधा का उपयोग आमजन द्वारा किया जा रहा है। सुलभ ने सरकारी पैसे से शौचालय इकाइयाँ बनाने के लिए नगर पालिकाओं या अन्य स्थानीय निकायों के साथ अनुबन्ध किया हैं। सुलभ इन्टरनेशनल संस्था की स्थापना 1974 में डा. विन्देश्वर पाठक ने की थी।

स्वच्छ भारत मिशन- भारत सरकार द्वारा देश में स्वच्छता को प्रोत्साहित करने हेतु 2 अक्टूबर, 2014 से **स्वच्छ भारत मिशन** प्रारम्भ किया है। इस मिशन द्वारा अक्टूबर, 2019 तक सम्पूर्ण देश में स्वच्छता सुनिश्चित करने का लक्ष्य है। इस कार्यक्रम में केन्द्र एवं राज्य का 75:25 प्रतिशत का वित्तीय योगदान है। इसके मुख्यतः दो घटक हैं-

1. खुले में शौच मुक्त (ODF- 0pen Defecation Free)
2. ठोस कचरा प्रबंधन (SWM- Solid Waste Management)

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएँ- देश के नागरिकों को उत्तम स्वास्थ्य के लिए समय-समय पर गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध कराना सरकार का दायित्व है। अत: सरकार द्वारा विभिन्न स्थानों पर सरकारी चिकित्सालय स्थापित किये गये हैं। बड़े शहरों में स्पेशलिटी सेवाएँ प्रदान करने की व्यवस्था की गई है। इन चिकित्सालयों में विभिन्न रोगों से बच्चों की सुरक्षा हेतु टीकाकरण कार्यक्रम संचालित किये जा रहे है।गर्भवती महिलाओं, शिशुओं तथा बालकों को विभिन्न पोषण सुविधाएँ निःशुल्क प्रदान की जा रही हैं। लोगों को चिकित्सा सेवा निःशुल्क उपलब्ध कराने के क्रम में सरकारी अस्पतालों में निःशुल्क जाँच एवं दवाएँ उपलब्ध कराई जा रही हैं। प्रशिक्षित डॉक्टरों की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु नये मेडिकल कॉलेज स्थापित किये जा रहे हैं। गरीबों को गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधाएँ नि:शुल्क प्रदान करने के लिए भारत सरकार ने 23 सितम्बर, 2018 को **आयुष्मान भारत योजना प्रधानमन्त्री जन**

आरोग्य योजना (AB-PMJAY) प्रारम्भ की है। इस योजना में प्रतिवर्ष प्रति परिवार को 5 लाख रु. तक का चिकित्सा बीमा किया जाता है। इसी योजना में देश में 2023 तक 1500 **वेलनेस सेन्टर** स्थापित किये जाएँगे। राष्ट्रीय पोषण मिशन के अन्तर्गत देश में कुपोषण को समाप्त करने के लिए 8 मार्च, 2018 को इस पोषण अभियान की शुरुआत की गई। इस अभियान का लक्ष्य कुपोषण मुक्त भारत है।

विद्युत सुविधा- वर्तमान समय में जनसुविधा के रूप में विद्युत एक अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। अत: सरकार का प्रयास है कि देश के सभी नागरिकों को समुचित मात्रा में विद्युत व्यवस्था उपलब्ध कराया जा सके। वर्तमान में सरकार ने लगभग 90% से भी अधिक गाँवों में विद्युतीकरण किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त सौर ऊर्जा, पवन चक्कियों एवं बायो गैस संयंत्रों के माध्यम से भी विद्युत आपूर्ति की व्यवस्था सुनिश्चित की जा रही है।

हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम (2005) के पूर्व हमारे समाज में पैतृक सम्पत्ति का अधिकारी पुत्रों को ही माना जाता रहा, परन्तु हिन्दू उत्तराधिकार अधिनियम- 2005 में बड़ा संशोधन किया गया। इस अधिनियम के तहत पैतृक सम्पदा में पुत्रों के समान पुत्रियों की भी हिस्सेदारी सुनिश्चित की गई है। अतः पैतृक सम्पति के बँटवारें में पुत्री को भी हिस्सा प्राप्त होगा। नारी सशक्तीकरण की दिशा में सरकार का ये बड़ा कदम है।

ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका- ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका से आशय ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध वृत्ति या रोजगार से है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में मुख्यत: आजीविका कृषि क्षेत्र में उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य आजीविका के क्षेत्र, जैसे- मिट्टी के बर्तन बनाने का कार्य, लकड़ी के कार्य, धातुकार्य, मछली पकड़ना भी है। ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका का मुख्य साधन सामान्यतः कृषि ही है। कृषि के लिए भूमि की आवश्यकता होती है, परन्तु भूमि का असमान वितरण एक बड़ी समस्या है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषकों की तीन श्रेणियाँ हैं- बड़े किसान, छोटे किसान एवं भूमिहीन किसान।

1. **बड़े किसान-** इस श्रेणी के किसान देशभर में लगभग 20 प्रतिशत ही हैं। इन किसानों के पास पर्याप्त मात्रा में भूमि होती है जिन पर मजदूर कार्य करते है। इन कृषकों के पास फसलों की इतनी पैदावार हो जाती है कि, उनकी पारिवारिक आवश्यकताएँ पूरी होकर, शेष अनाज बाजारों में बेच दिया जाता है। कुछ बड़े किसान व्यवसायिक खेती एवं कृषि व्यवसाय जैसे खाद-बीज की दुकान, आटा, दाल, चावल आदि के लिए मिल (फैक्ट्री) स्थापित करते हैं। कुछ किसान निजी कृषि उपकरणों जैसे ट्रैक्टर, थ्रेशर आदि को किराये पर भी देते हैं। यह प्रायः आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होते हैं।
2. **छोटे किसान-** भारत के गांवों में छोटे किसानों की बड़ी संख्या है। देश भर में कृषि क्षेत्र में संलग्न ऐसे किसान लगभग 30 से 40 प्रतिशत हैं। इस श्रेणी के अधिकांश किसान अपने खेतों में स्वयं श्रमकर

अन्नोपार्जन करते हैं। इनके पास अधिकांशतः कृषि उपकरणों का अभाव होता है। ये सामान्यतः किराये के कृषि उपकरणों का प्रयोग करते हैं। इस श्रेणी के कुछ ही किसान खेतों के काम में मजदूरों की सहायता ले पाने में समर्थ होते हैं। कुछ ऐसे भी है जो दूसरों की भूमि बटाई पर लेकर कृषि करते हैं। इनका जीवन अतिसामान्य होता है।

3. **भूमिहीन किसान**- भारत के गाँवों में भूमिहीन किसानों की जनसंख्या अधिक हैं। इस वर्ग के कृषक परिवार अन्य कृषकों के खेतों में मजदूरी करते हैं। इनकी आय बहुत कम होती है। इन्हें गाँव में कृषि क्षेत्रों में वर्षभर में कुछ महीने ही रोजगार मिल पाता है। बाकी के समय में शहरी क्षेत्रों में रोजगार की तलाश में चले जाते हैं। वर्तमान रोजगार सृजन की दिशा में सरकार द्वारा किये गए उपायों द्वारा वर्षभर में रोजगार के अवसर में वृद्धि हुई है। अब प्रायः इन्हें आस-पास के गाँवों में मनरेगा जैसी ग्रामीण रोजगार योजनाओं के अन्तर्गत काम मिल रहा है।

पशुपालन- ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि जगत से जुड़ा व्यवसाय पशुपालन भी है। किसानों द्वारा अपनी आमदनी बढ़ाने का यह एक अच्छा माध्यम है। पशुपालक कृषक दुग्ध का उत्पादन कर अधिकांशत: सहकारी समितियों को और कुछ किसान आस-पास के शहरी क्षेत्रों में बेच देते हैं। रोजगार की दृष्टि से इस क्षेत्र में गौपालन, भैंस पालन, मुर्गी पालन, मछली पालन आदि प्रमुख हैं।

आजीविका के अन्य साधन- ग्रामीण क्षेत्रों में अन्य सूक्ष्म पूँजी वाले रोजगार देखने को मिलने लगे हैं, जैसे- किराना स्टोर, जनरल स्टोर, मेडिकल स्टोर, बढ़ईगिरी, लघु स्तर पर गुड़ बनाने के कारखाने आदि भी हैं।

मछली पकड़ना- यह व्यवसाय समुद्री तटों एवं नदियों के तटीय क्षेत्रों में विशेषकर फैला है। परन्तु यहाँ के तटवासी मछुआरों को इससे उतनी अच्छी आय नहीं हो पाती कि वे मछली पकड़ने वाले अत्याधुनिक यन्त्रों को जुटा सकें। मछली पकड़ने का काम भी जोखिम भरा होता है। मानसून के समय में मछुआरे समुद्र में नहीं जा पाते हैं। किनारे पर रहने के कारण अनेक बार समुद्री तूफानों के कारण भारी जान-माल का नुकसान हो जाता है।

बाजार और कर्ज की स्थिति- भारत में बाजार तो हैं, परन्तु इसका लाभ किसानों की जगह मध्यस्थों को प्राप्त होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि का आधार मानसून है। यदि मानसून अच्छा नहीं रहा तो कृषि में भारी नुकसान लगता है। किसान कर्ज के बोझ तले दबता चला जाता है। यदि उपज अच्छी हुई, तो कर्ज चुकाने में व्यय हो जाता है। इस दिशा में सरकार ने कई प्रभावी कार्य किये हैं, जैसे- एफ. सी. आई. और मर्यादित सहकारी समितियों के गोदाम उपलब्ध हैं। किसानों से न्यूनतम समर्थन मूल्य पर अनाज की खरीदारी की जाती है। परन्तु प्रायः किसानों को कृषि कार्य में प्रयुक्त सामग्रियों के क्रय-विक्रय

के लिए बैंक या साहुकारों से ऋण लेना पड़ता है। बड़े किसान तो ऋण की भरपाई कर लेते हैं। अक्सर छोटे किसान कर्ज के दलदल में फंस जाते हैं। कभी प्राकृतिक आपदा से फसलें चौपट हो जाती एवं ऐसे में किसानों पर परिवार के भरण-पोषण एवं बैंक अथवा साहुकार के कर्ज का भारी दबाव होता है।

ग्रामीण आवास योजना– मानव जीवन में आवास को बुनियादी आवश्यकता के रूप में स्वीकार किया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषकर निर्धनों के लिए आवास की कमी दूर करना और आवास की गुणवत्ता में सुधार लाना, सरकार की गरीबी उन्मूलन कार्यनीति का एक महत्वपूर्ण घटक है। गरीबी रेखा से नीचे जीवन निर्वाह कर रहे लोगों (BPL– Below Poverty Line) के लिए प्रधानमन्त्री ग्रामीण आवास योजना के तहत लोगों को आवास प्रदान किए जा रहे हैं। 2022 तक **सबके लिए आवास** सरकार की प्राथमिकता में है। फ्लैगशिप मिशन के रूप में भारत सरकार ने 2015 में प्रधानमन्त्री आवास योजना मिशन आरम्भ किया। इस मिशन के अन्तर्गत ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में निवास कर रहे परिवारों को पक्के आवास उपलब्ध कराने का लक्ष्य है।

नगरीय प्रशासन- वर्तमान भारत में नगरों का विस्तार तेजी से हो रहा है। गाँव की अपेक्षा नगरों की आबादी भी अधिक होती है। अतः नगरवासियों को नागरिक सुविधाओं की जरुरत अधिक होती है। नगरीय स्थानीय स्वशासन को मुख्यत: चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है– नगर निगम, नगर परिषद, नगरपालिका और छावनी क्षेत्र। ग्रामीण स्वशासन की ही भाँति शहरी स्वशासन को वार्डों में विभक्त किया गया है। वार्ड के मतदाता वार्ड मेंम्बर (पार्षद) का चुनाव करतें हैं। ये पार्षद अपने में से अध्यक्ष और उपाध्यक्ष का चुनाव करते हैं। नगर निगम के मुखिया को महापौर (मेयर) कहा जाता है।

नगर निगम/नगरपालिका के विभाग- नगरों में आवश्यक जन सुविधाओं के वितरण के लिए नगर निगम या नगरपालिका में सफाई, स्वास्थ्य, शिक्षा, जल, निर्माण कार्य आदि विभाग होते है, जो नगरों में विभिन्न कार्यों को सम्पादित करते हैं।

पार्षद समिति- नगरवासियों के हित में विभिन्न कार्यक्रमों को चलाने के लिए नगर निगम/नगर-पालिकाओं में पार्षद समितियाँ होती हैं। उनका नामकरण भी उनके कार्यों के आधार पर किया गया है जैसे- सफाई समिति, शिक्षा समिति, स्वास्थ्य समिति, कर समिति, जल समिति आदि।

प्रशासनिक कर्मचारी- नगर निगम/नगरपालिका में प्रशासकीय प्रबन्धन तथा कार्यों के कुशल संचालन के लिए एक कमिश्नर स्तर के अधिकारी और अन्य सहायक कर्मचारियों की नियुक्ति सरकार द्वारा की जाती है।

नगर निगम/नगर पालिका के कार्य- नगरनिगम/नगरपालिका के प्रमुख कार्य- नगर में जल आपूर्ति, स्वास्थ्य सुविधाएं, सड़क एवं गलियों में प्रकाश, जल निकासी, अग्नि शमन, बाजार व्यवस्था, जन्म एवं मृत्यु सम्बन्धी प्रमाणन एवं अभिलेखीय संरक्षण, कचरा निस्तारण आदि का प्रबन्धन करना है।

नगर निगम/नगर पालिका की आय के स्त्रोत- मकान, जल, बाजार, मनोरञ्जन, वाहन एवं वाहन पार्किंग आदि पर कर एवं शुल्क की वसूली। सरकार ने नगरों के सुनियोजित विकास के लिए बड़े शहरों में विकास प्राधिकरण और छोटे शहरों में नगर सुधार न्यासों की स्थापना की गई है। वर्तमान में नगरपालिकाओं में सरकार ने आर्थिक बोझ को कम करने के लिए ठेका रोजगार (कॉन्ट्रैक्ट रोजगार) की प्रणाली शुरु की है। इसके अन्तर्गत काम करने वाले नगरपालिका के कर्मियों को वेतन की जगह पर नियत मजदूरी प्रदान की जाती है। परिणामतः उनकी आर्थिक एवं सामाजिक सुरक्षा की स्थिति प्रभावित हुई है।

स्मार्ट सिटी मिशन- स्मार्ट सिटीज मिशन की शुरुआत 2015 में हुई थी। इस मिशन का लक्ष्य ऐसे शहरों को तैयार करना है, जो अपने नागरिकों को बुनियादी अवसंरचना और बेहतर जीवनशैली उपलब्ध कराते हैं। स्मार्ट सिटी में निहित बुनियादी सुविधाएँ जैसे– प्रचुर मात्रा में जलापूर्ति, सुनिश्चित बिजली आपूर्ति, स्वच्छता, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, सुचारू शहरी आवागमन और सार्वजनिक परिवहन, आवास (खासकर निर्धन वर्ग के लिए), मजबूत आईटी कनेक्टिविटी और डिजिटलीकरण, सुशासन, ई-गवर्नेंस और नागरिकों की सुरक्षा विशेषकर महिलाओं, बच्चों और वृद्धों के लिए उचित वातावरण एवं स्वास्थ्य और शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया जाता है। इसके तहत अखिल भारतीय स्तर पर चार चरणों में 100 शहरों का चयन किया गया। इन सभी 100 शहरों में विशेष उद्देश्य परक वाहन,शहरी स्तर पर सलाहकार फ़ोरम को शामिल किया गया है। इनके अतिरिक्त 5151 परियोजनाओं का प्रस्ताव भी है।

हेरिटेज सिटी डेवलपमेंट–द नेशनल हेरिटेज सिटी डेवलपमेंट एण्ड आग्मेंटेशन योजना भारत सरकार की केन्द्रीयकृत योजना है। जिसका प्रारम्भ 2015 में हुआ। इसका लक्ष्य सम्मिलित तौर पर शहरी योजना के अन्तर्गत, विरासत का संरक्षण करना है, ताकि प्रत्येक हेरिटेज सिटी का मूल चरित्र सुरक्षित रह सके। नवम्बर, 2018 तक 500 करोड़ रुपये की राशि की लागत से इस योजना को अमल में लाने के लिए 12 शहरों का चयन किया गया जिनके नाम हैं– अजमेर, अमरावती, अमृतसर, बादामी, द्वारका, गया, काञ्चीपुरम, मथुरा, पुरी, वाराणसी, वेलङ्कन्नी और वारङ्गल ।

शहरी क्षेत्र में आजीविका- शहरी क्षेत्रों में आजीविका से आशय शहरों में उपलब्ध रोजगार और रोजगार के संसाधनों से है। गांव की अपेक्षा शहर में जनसंख्या अधिक होती है। सामान्य शहरों की जनसंख्या लाखों में तथा बड़े नगरों जैसे मुम्बई, कोलकाता, चेन्नई, बेंगलौर आदि शहरों की आबादी करोड़ों में

है। शहरों में आजीविका के अनेक रूप देखने को मिलते हैं। परन्तु शहर में रहने वाले लोगों को खाद्य सामग्री जैसे- अनाज, हरी सब्जियों, दूध आदि उत्पादों के लिए गाँवों पर निर्भर रहना पड़ता है। शहरों में रोजगार क्षेत्रों का विभाजन निम्न प्रकार किया जा सकता है- 1. सरकारी सेवा क्षेत्र 2. निजी सेवा क्षेत्र 3. सेवा प्रदाता कम्पनियाँ 4. दिहाड़ी मजदूर 5. दुकानदार 6. फेरी/ रेहडीवालें।

1. **सरकारी सेवा क्षेत्र**- इस क्षेत्र में आजीविका सीमित होती है। इसके अंतर्गत केंद्र एवं राज्य सरकारों के लिए कार्य करने प्रशासनिक अधिकारी, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी आते हैं। सरकारी सेवा के बदले इन्हें निर्धारित वेतन, अवकाश एवं स्वास्थ्य सुविधाएं, सेवानिवृत्ति के पश्चात् एकमुश्त रकम एवं पेंशन प्राप्त होती है। यद्यपि 2004 से कुछ सरकारी क्षेत्रों में पेंशन की व्यवस्था बन्द कर दी गई है।
2. **निजी सेवा क्षेत्र**- निजी सेवा के क्षेत्र में आजीविका के अवसर बढ़े हैं। अनेक निजी क्षेत्र की कम्पनियों अपने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अच्छा वेतन एवं सुविधाएँ प्रदान करते हैं। निजी क्षेत्र में दो तरह के कर्मचारी होते हैं- स्थायी कर्मचारी और अस्थायी कर्मचारी। स्थाई कर्मचारियों को तो प्रायः अच्छा वेतन एवं सुविधाएं प्राप्त होती हैं, परंतु अस्थायी कर्मचारियों को उनके काम के अनुसार पारिश्रमिक प्रदान किया जाता है। इन कर्मचारियों को अधिक आय के लिए अतिरिक्त समय कार्य करना पड़ता है, साथ ही सेवा का निश्चित कार्यकाल नहीं होता है।
3. **सेवा प्रदाता**- शहरी क्षेत्रों में आजीविका की दृष्टि से सेवा प्रदाता संस्थाएँ/लोग कार्यरत हैं। यह सिर्फ बाजार से सामग्री उपभोक्ता तक पहुँचाते हैं। जैसे- कोरियर सेवा, ट्यूशन, डॉक्टर आदि।
4. **दिहाडी मजदूर**- हमारे देश में मजदूरों की एक बड़ी संख्या है, जो सुबह आपको अनेक शहरों में लेबर चौक पर बैठे दिखाई देते हैं। लेबर चौक प्रायः हर शहरी क्षेत्रों में पाये जाते हैं। यह एक निश्चित स्थान है, जो प्रतिदिन काम की तलाश में आए मजदूरों के लिए होता है। ये मजदूर गाड़ियों पर माल ढ़ोने-उतारने, भवन निर्माण वाले स्थानों पर ईट, गिट्टी, बालू, सीमेन्ट एवं अन्य निर्माण सामग्रियों को पहुँचाने आदि का कार्य करते हैं, जिसके लिए वे प्रतिदिन के हिसाब से मजदूरी प्राप्त करते हैं।
5. **दुकानदार**- शहरी क्षेत्रों में अनेक प्रकार की छोटी-बड़ी दुकानें होती है। अधिकांश के स्वामी कोई व्यक्ति विशेष होते हैं। इसके अतिरिक्त बड़ी-बड़ी कंपनियों ने उपभोक्ता की आवश्यकता के अनुसार सामग्रियों की एक श्रृङ्खला के रूप में भी दुकानें खोल रखी हैं। छोटी दुकानों का संचालन मालिक स्वयं करता है। परन्तु बड़ी दुकानों के प्रबन्धन एवं रख-रखाव के लिए प्रबंधक एवं कर्मचारी भी होते हैं। अतः आजीविका के क्षेत्र में दुकानों की बड़ी भूमिका है।

6. **फेरियाँ/रेहडी वाले-** ये अस्थायी दुकानें, जो हमें प्रायः सड़कों के किनारे, साइकिल अथवा हाथ-ठेला गाड़ी पर देखने को मिलती है। अनेक बार इनके कारण सड़कों पर भीड़ इकट्ठा हो जाती है। अतः लोग इनका विरोध करते हैं। रोजगार, प्रत्येक मानव का अधिकार है। अतः सरकार इन रेहडी/फेरीवालों/फुटपाथ के दुकानदारों की समस्या पर सहृदयता से विचार कर उनकी समस्याओं के निस्तारण के लिए प्रयासशील है।

सामाजिक सुरक्षा- अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार वह सुरक्षा जो समाज, उचित संगठनों के माध्यम से अपने सदस्यों के साथ घटित होने वाली घटनाओं और जोखिम से बचाव के लिए प्रस्तुत करता है, सामाजिक सुरक्षा है। ये जोखिम- रोग, मातृत्व, अयोग्यता, वृद्धावस्था तथा मृत्यु हैं। इन संदिग्धताओं की यह आवश्यकता होती है कि व्यक्ति को स्वयं तथा अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए नियुक्ताओं द्वारा सुरक्षा प्रदान की जाए।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1.भारत में ..... प्रतिशत जनसंख्या गांवों में निवास करती है।

अ. 45 प्रतिशत ब. 55 प्रतिशत स. 65 प्रतिशत द. 75 प्रतिशत

2.पटवारी का प्रमुख कार्य..... है।

अ. कर वसूलना ब. प्रशासन चलाना स. अतिक्रमण हटाना द. उपर्युक्त कोई नहीं

3.प्रधानमन्त्री आवास योजना सन्.....में प्रारम्भ हुई ।

अ. 2014 ब. 2015 स. 2016 द. 2017

4.द नेशनल हेरिटेज सिटी डेवलपमेंट एण्ड आग्मेंटेशन योजना सन्.....में प्रारम्भ हुई।

अ. 2014 ब. 2015 स. 2016 द. 2017

5.आयुष्मान भारत योजना प्रधानमन्त्री जन आरोग्य योजना सन्.....प्रारम्भ की गई है।

अ. 23 मार्च, 2005 ब. 23 सितम्बर, 2018

स. 23 मई, 2016 द. 23 अक्टूबर, 2019

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये–

1. हमारे देश में लगभग ..... प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। (55/65)
2. ग्रामीण क्षेत्रों में .....ही आजीविका का मुख्य साधन है। (कृषि/सरकारी सेवा)
3. नगरपालिका की प्राथमिक ईकाई ..... है। (वार्ड/सांसदीय क्षेत्र)
4. नगरपालिका का अधिकारी.....होता है। (कमिश्नर/कलेक्टर)

सत्य/असत्य लिखिए-

1. नगरवासी अपने-अपने वार्डों से जन प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं। (सत्य/असत्य)
2. स्वास्थ्य विभाग, नगरपालिका का विभाग नहीं है। (सत्य/असत्य)
3. रोजगार विकास हेतु सरकार द्वारा आवास योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। (सत्य/असत्य)
4. नगरनिगम के जनप्रतिनिधि को महापौर कहा जाता है। (सत्य/असत्य)

सही जोड़ी मिलान कीजिए –

1. मुख्यकार्य	क. नगरपालिका
2. जन्म–मृत्यु प्रमाण–पत्र	ख. भूमिहीन किसान
3. सेवा प्रदाता	ग. कृषि
4. ग्रामीण मजदूर	घ. कोरियर सेवा

अति लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. हमारे देश में बड़े किसानों की संख्या लगभग कितने प्रतिशत है ?
2. पार्षद समिति क्या है ?
3. फेरीवालों से क्या आशय है ?
4. लेबर चौक से क्या आशय है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. सामाजिक सुरक्षा का क्या अर्थ है ?
2. कॉन्ट्रैक्ट रोजगार को स्पष्ट कीजिए ?
3. नगर पालिका के कार्यों को लिखिये।
4. भारत में हेरिटेज सिटी डेवलपमेंट पर टिप्पणी लिखिये।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1. नगरीय प्रशासन का विस्तृत विवरण दीजिए।
2. नगरीय प्रशासन की आजीविका के साधनों को लिखियें।
3. ग्रामीण प्रशासन की आजीविका के साधनों को लिखियें।

परियोजना कार्य-

1. छात्र, स्वच्छ भारत मिशन को चित्रांकित कर उनकी विशेषताओं का उल्लेख करें।

अध्याय- 14

भारत में विविधता

आइये जानें- विविधता की समझ, भारत में विविधता को कैसे समझे ? विविधता में एकता, विविधता में एकता का स्वरूप, विविधता का कारण, विविधता और भेदभाव, समाज में स्त्री-पुरूष भेदभाव, समाज सुधारक जन की अवधारणाएँ और एक भारत श्रेष्ठ भारत।

हम किसी उद्यान में जाते हैं तो अनेक प्रकार के रङ्गों में पुष्पों-पत्तियों से सुसज्जित छटा का दर्शन पाते हैं। यह अनेकता हमारे मन को मनोरञ्जित एवं आनन्दित करने वाली होती है, जो विविध रूपों में सम्पूर्ण पृथिवी पर विद्यमान है। इस विविधता को हम सामाजिक परिप्रेक्ष्य में भी देख सकते है। समाज में रहने वाले लोग विविध समुदायों से सम्बन्धित होते हैं। अत: खान-पान, रहन-सहन, पहनावे, उत्सव, पर्व आदि में भी विविधता के दर्शन होते हैं, जो एक सम्पूर्ण समाजिक जीवन को समृद्ध बनाता है।

विविधता की समझ- किसी माता-पिता की चार सन्तानें हुई। इन सभी की शिक्षा–दीक्षा प्राय: एक ही स्थान पर एवं समान आचार्यों द्वारा करायी जाती है। परन्तु उन चारों के स्वभाव–विचार एवं चरित्र भिन्न-भिन्न होते हैं। इस आशय से हम कह सकते हैं कि विविधता प्रकृति का सहज स्वभाव है। उदाहरण के लिए आप अपने मित्रों की उत्तर पुस्तिका लीजिए एवं उसमें उनके हस्तलिखित लेखों के वर्ण, आकार, विषय का प्रतिपादन, लिखने की भाषा शैली आदि अवलोकन करें तो आपको सब कुछ भिन्न–भिन्न मिलेगा। यही है **विविधता** की समझ।

भारत में विविधता को कैसे समझे – विविधता को भारत के उत्तर और दक्षिण भाग के दो प्रदेशों लद्दाख और केरल के माध्यम से समझ सकते। क्योंकि किसी भी क्षेत्र की विविधता पर उसके ऐतिहासिक और भौगोलिक कारकों का प्रभाव होता है।

लद्दाख- लद्दाख भारत के जम्मू-कश्मीर प्रान्त के पूर्वी पहाड़ियों पर बसा शीत प्रधान रेगिस्तानी क्षेत्र है जो वर्ष के अधिकांश समय में बर्फ से ढका होता है। पेयजल के लिए यहाँ के लोग गर्मी के समय में पिघलने वाले बर्फ के जल पर निर्भर रहते है। यहाँ के लोग भेड़ एवं बकरियों से उत्पादित ऊन से बहुमूल्य पश्मीना शॉल बनाते है। खानपान के रूप में दूग्ध से बने पदार्थ, मांस एवं अनाज का प्रयोग करते है। गाय, भेड़, बकरी, याक प्रमुख पालतू जीव है। लद्दाख क्षेत्र में लद्दाख़ी (भोटी) भाषा का प्रयोग होता है। लद्दाख का पारम्परिक पोशाक को 'गोंचा' कहा जाता है। लद्दाख के रास्ते रेशम एवं मसाले

का व्यापार प्राचीन काल से ही तिब्बत होते हुए मध्य एशिया, अरब एवं यूरोपीय देशों तक होते रहें है। इसी मार्ग से भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार विश्व के कोने-कोने तक हुआ। तिब्बती साहित्य **'केसर सागा'** लद्दाख में प्रचलित कविता संग्रह है।

केरल- केरल भारत के दक्षिण पश्चिमी भाग में स्थित समुद्र तटीय राज्य है। जिसके एक और समुद्र और दूसरी और पहाड़ियाँ हैं। यहाँ कालीमिर्च, लौङ्ग, इलायची आदि विविध मसाले बहुतायत से उत्पादित होते हैं। इस कारण प्राचीन काल से ही यह क्षेत्र व्यापार का केन्द्र रहा है। लगभग 2000 वर्ष पूर्व इसाई धर्म प्रचारक संत थामस एवं अरब देशों से इस्लामिक व्यापारी यहाँ आकर बसे। चीन के व्यापारी भी भारत से व्यापार के लिए केवल पूर्व से ही आते रहे हैं। सन् 1497 में पुर्तगाली व्यापारी वास्कोडिगामा ने पश्चिम से भारत आने का समुद्री मार्ग खोजा। खान पान की दृष्टि से केरल में चावल, मांस, मछली, अण्डे, दूध से बने पदार्थ, गेहूँ आदि प्रसिद्ध हैं। केरल का पारम्परिक परिधान कसाव 'मुंडू' है। यह पोशाक रेशम से बने कपड़े का एक टुकड़ा है, जो रेशम की सीमा से 3 से 4 मीटर लंबा है। पुरुष लुंगी या केली भी पहनते हैं, जो एक अनौपचारिक पोशाक के रूप में काम करता है। यहाँ की पारम्परिक क्षेत्रीय भाषा मलयालम है।

विविधता में एकता- हमारे देश में रङ्ग-रूप, वेष-भूषा, खान-पान, बोली-भाषा, त्यौहारों आदि में भी क्षेत्रीय एवं भौगोलिक विविधताएँ देखी जा सकती हैं। इन विविधताओं के बाद भी सम्पूर्ण भारत प्राचीनकाल से ही एकता के सूत्र में पिरोया हुआ है। सम्पूर्ण क्षेत्रीय संस्कृतियाँ मिलकर एक विशाल भारतीय संस्कृति का निर्माण करती हैं। आप देश के पूर्व से पश्चिम एवं उत्तर से दक्षिण तक चले जाइए, सभी जगह प्राचीन भारतीय संस्कृति में एकत्व दिखता है। यह एकत्व हमें अपने पूर्वजों से विरासत में प्राप्त हुआ है, जो हमारी संस्कृति को समृद्ध बनाता है। इसी एकता के कारण सभी प्राणियों में मानवता एवं परस्पर सौहार्द झलकता है। वैदिक वाङ्मय भी हमें इसी बात की शिक्षा देते हैं कि हम अनेक होते हुए भी एक मन-चित्त-विचार वाले बने, तभी राष्ट्र या विश्व का कल्याण होगा। पं. जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पुस्तक भारत एक खोज में उल्लेख किया है कि- "भारतीय एकता कोई बाहर से थोपी हुई वस्तु

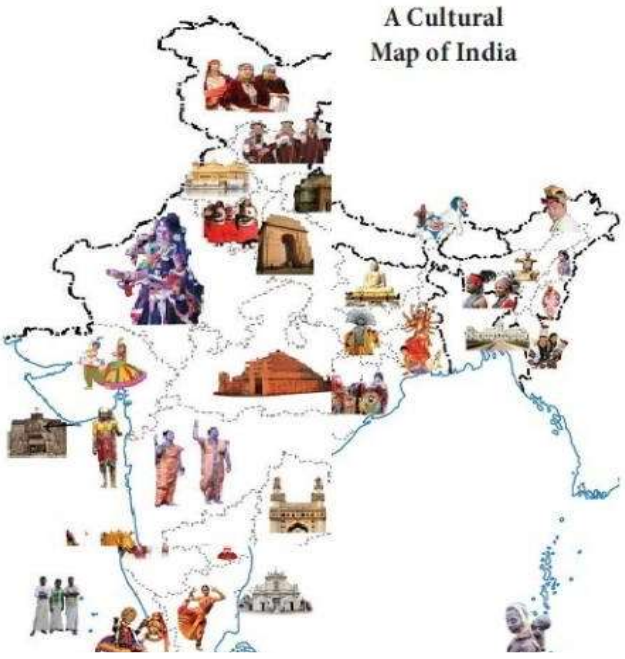

चित्र- 14.1 विविधता में एकता

नहीं है अपितु यह बहुत ही गहरी है। जिसके अन्दर अल-अलग तरह के विश्वास और प्रथाओं को स्वीकार करने की भावना है। इसमें विविधता को पहचाना और प्रोत्साहित किया जाता है"।

विविधता में एकता का स्वरूप- भारत की विविधता में एकता का स्वरूप ही इस राष्ट्र के उन्नति का मूल है। क्योंकि, भारत राष्ट्र तभी विकसित होगा, जब सभी देशवासियों के विचार-भाव एक मिलें। जब हमारा देश अंग्रेजी शासन के अधीन था, तब स्वाधीनता के लिए सभी देशवासियों ने क्षेत्रवाद, भाषावाद, राजनीति, कूटनीति आदि को विस्मृत कर एकमत होकर अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ी। परिणामत: 15 अगस्त,1947 को स्वतन्त्र हुआ। इस स्वतन्त्रता के मूल में भारत की **अनेकता में एकता** की शक्ति ही रही। ऋग्वेद में आया है- **संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्** अर्थात् साथ मिलकर चलो, साथ मिलकर रहो एवं हम सभी के मन एक हों। इस प्रकार विविधता या अनेकता हमें विकसित करने का एक माध्यम एवं प्रकृति द्वारा प्रदत्त बहुमूल्य उपहार है।

क्या आप जानते हैं-

- हमारी राष्ट्रीय एकता को दर्शाने वाले प्रतीक हैं-
- राष्टीय ध्वज तिरंगा है। इसका निर्माण पिंगली वैंकया ने सर्वप्रथम 1921 ई. में किया था। इसे 22 अगस्त, 1947 ई. को राष्ट्र ध्वज के रूप में अंगीकृत किया गया।
- भारत का राष्ट्रगान जन गण मन.... है। इसके रचयिता रवीन्द्रनाथ टैगोर हैं। इसे 24 जनवरी, 1950 ई. को अंगीकृत किया गया। इसके गायन की अवधि 52 सेकेण्ड है। राष्ट्रगान का हमें सही उच्चारण करना चाहिए तथा इसके गाने के समय हमें सावधान मुद्रा में खड़ा हो जाना चाहिए।
- भारत का राष्ट्रगीत वन्दे मातरम् .... है। इसके रचयिता वकिंमचन्द्र चटर्जी हैं।यह उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'आनन्दमठ' से लिया गया है। इसे 24 जनवरी, 1950 ई. को अंगीकृत किया गया।
- भारत का ध्येय वाक्य सत्यमेव जयते है। इसे मुण्डकोपनिषद से लिया गया है।

विविधता का कारण- विविधता के प्रमुख कारक-जलवायु एवं भौगोलिक परिवर्तन हैं। इन्ही कारकों के अनुसार भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों के खान-पान, पहनावा, शारीरिक मापदण्ड, रीति-रिवाज आदि में भी विविधता देखी जा सकती है।

प्राय: भारत का उत्तरी क्षेत्र ठण्डा होता है, जिसके कारण यहाँ लोग प्रायः पूर्ण सीले हुए तथा ऊनी वस्त्र पहनते हैं। ठीक इसके विपरीत भारत के दक्षिण प्रान्त में लोग हल्के वस्त्र धारण करते हैं, क्योंकि उत्तरी क्षेत्रों की तुलना में यहाँ का तापमान अधिक होता है। यह है जलवायु की विविधता का प्रभाव। इसी क्रम में गर्मी एवं शीतलता के भेद के कारण से भोजन में भी विवधता देखने को मिलती है। उदाहरण के लिए भारत के दक्षिणी क्षेत्र में अत्यधिक गर्मी के कारण लोग खट्टे एवं तीखे खाद्य का प्रयोग बहुतायत से करते हैं। जबकि उत्तर एवं पर्वतीय क्षेत्रों में लोग गर्म पदार्थ जैसे- रोटी, गरम मसाला अन्य गरीष्ठ

भोजन करते हैं। इन दोनों के मध्य क्षेत्र समतल भू-भाग मध्य-भाग में रहने वाले उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार आदि राज्यों में रोटी एवं चावल दोनों ही खाते हैं। इनसे अतिरिक्त विविधता के अन्य कारण जातीय, भाषायी, प्रजातीय, जनजातीय, राजनीतिक एवं धार्मिक भी हैं।

विविधता एवं भेदभाव- विविधता हमें समृद्ध एवं विकसित करती है। परन्तु इसी विविधता में कुछ कमियाँ एवं भेदभाव करने वाले, दोष भी दिखते हैं। इन सभी विभिन्नताओं में कुछ विविधताओं के क्रम में हमारी अपनी निजी विचारधारा या स्वयं का ज्ञानापराध हो सकता है, जो विविधताओं में भी भेदभाव जैसे दोषों को जन्म देती हैं। औपनिवेशिक काल में हमारे समाज में परस्पर जातीय भेदभाव, खान-पान, उठने-बैठने तक में भी भेदभाव किया जाता था। उस समय अँग्रेजी शासकों ने भी क्षेत्रवाद तथा भेदभाव को बढ़ावा दिया।इसके घातक परिणाम सभी लोगों को सामूहिक रूप से झेलने पड़े थे इसलिए भारतीय जनमानस भेदभाव को मिटाने हेतु कटिबद्ध हुआ है।

समाज में स्त्री-पुँ भेदभाव- भारतीय संस्कृति में आदिकाल से ही नारी को आदरणीय एवं गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त रहा है। स्त्रियों को शक्ति और ज्ञान का स्रोत मानकर देवी दुर्गा तथा सरस्वती के प्रतीक के रूप में आज भी पूजा जाता है। प्राचीनकाल में शिक्षा के क्षेत्र में गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा, लोधा, इत्यादि कई ऋषिकाएँ वैदिक ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में अपना लोहा मनवा चुकी हैं। हमारा इतना समृद्ध इतिहास होने के बाद भी न जाने कब कैसे किस रूप में संतानों में लैंगिक भेदभाव प्रारम्भ हुआ, यह बताना कठिन है। यह हमारा ज्ञानापराध ही था की समाज में ऐसे भेदभाव उपजे। स्वतन्त्रता के पश्चात् सरकारों द्वारा बालिकाओं के बहुमुखी विकास की ऐसी गङ्गा प्रवाहित हुई कि असङ्ख्य बालिकाएँ शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान, राजनीति, खेल आदि के क्षेत्रों में देश का नाम रोशन कर रही है।सावित्रीबाई फूले, रानी लक्ष्मीबाई, सरोजनी नायडू, सुचेता कृपलानी, श्रीमती इंदिरा गाँधी, कल्पना चावला, बछेन्द्रीपाल, आदि ने विभिन्न क्षेत्रों में भारत का मान बढ़ाया है।

समाज सुधारक जन की अवधारणाएँ- प्राचीन भारत से लेकर आधुनिक भारत तक कई सन्त-विद्वान, महात्मा हुए जिन्होंने समाज की विविधता- वर्ण, जाति, रंगरूप, भेदभाव को समाज से बाहर करने का अथक प्रयास किया है। ये सभी समाज में किसी न किसी घटित घटनाओं से पीड़ित होकर समाज सुधार का कार्य किए। इनमें महात्मा गाँधी, राजाराम मोहन राय, स्वामी दयानन्द सरस्वती, ईश्वरचन्द विद्यासागर, ज्योतिबाफुले, डॉ.भीमराव अम्बेडकर इत्यादि समाज सुधारकों का नाम आता है। इन सभी ने अपने विचारों के साथ समाज में हो रही बुराईयों के विरुद्ध क्रान्तिकारी आन्दोलन चलाया। इनमें कई तो अंग्रेजों के द्वारा जेल में बन्द कर दिए गए अथवा कई क्रान्तिकारी तात्कालिक समाज के कतिपय लोगों के क्रोध का भाजन बने। इन कठिन परिस्थितियों के बाद भी समाज को एकता के सूत्र में बाँधने

का अथक प्रयास किये। यदि समाज के भेदभाव को इनके द्वारा दूर नहीं किया गया होता तो आज हम इतने समृद्ध नहीं दिखते।

एक भारत श्रेष्ठ भारत- एक भारत श्रेष्ठ भारत, भारत सरकार द्वारा प्रारम्भ की गई एक प्रभावशाली सांस्कृतिक विस्तार की योजना है। 31 अक्टुबर, 2015 को सरदार वल्लभ भाई के 140 वें जन्म दिवस को राष्ट्रीय एकता दिवस के नाम पर मनाने की घोषणा के साथ इस योजना की शुरुआत की गई। इसका उद्देश्य वर्तमान में सांस्कृतिक सम्बधों के माध्यम से देश के विभिन्न भागों में एकता, शांति एवं सद्भावना को बढ़ावा देना है। सन्त रामानुजाचार्य की 1000 वीं जयन्ती पर निर्मित **स्टैच्यू ऑफ इक्वेलिटी (हैदराबाद)** मूर्ति का अनावरण कर प्रधानमन्त्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 5 फरवरी, 2022 को राष्ट्र को समर्पित किया। संत रविदास की 645 वीं जयन्ती 16 फरवरी, 2022 को मनाई गई। जिसके माध्यम से उनके द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर कर समानता व भाईचारा बनाए रखने का संदेश जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया गया। इस प्रकार सामाजिक एकता, सौहार्द एवं भाईचारें को बनाये रखने के प्रयास निरन्तर किये जा रहे है।

प्रश्नावली

बहु विकल्पीय प्रश्न-

1. राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में ..... जन्मदिन मनाया जाता है।
   अ. सरदार पटेल　　ब. महात्मा गांधी
   स. चौधरी चरण सिंह　　द. पं. नेहरु
2. निम्न में से.....उत्तरी क्षेत्र है।
   अ. ग्रीष्म　　ब. शीत　　स. दोनों　　द. इनमें से कोई नहीं
3. भारतीय संस्कृति का मूल.....है।
   अ. एकता में अनेकता　　ब. अनेकता में एकता
   स. एकता में एकता　　द. उपर्युक्त सभी
4. लद्दाख क्षेत्र की भाषा.....है।
   अ. तिब्बती　　ब. पख्तूनी　　स. लद्दाख़ी(भोटी)　　द. उपर्युक्त सभी
5. केरल का पारम्परिक पहनावा ..... है।
   अ. कसाव मुंडू　　ब. पैन्ट-शर्ट　　स. कुर्ता-पैजामा　　द. धोती-कुर्ता

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. भारत देश विविधता में ..... वाला देश है।　　(एकता/ अनेकता)
2. जनसमूह में विविध लम्बाई होना, व्यक्तियों के विविध..... का उदाहरण है। (आधार/परिमाप)

3. लद्दाख का पारम्परिक पोशाक को .....कहा जाता है। (गोंचा/लुंगी)

4. वास्कोडिगामा भारत .....आया था। (1497 ई./1526 ई.)

सत्य/असत्य बताइए–

1. जलवायु का प्रभाव विविधता को प्रभावित करना है। (सत्य/असत्य)
2. वैदिक वाङ्मय में सभी में समत्वभाव देखने का चिन्तन किया गया है। (सत्य/असत्य)
3. लैङ्गिक भेदभाव हमारे समाज के समक्ष एक व्यापक समस्या नहीं है। (सत्य/असत्य)
4. भारत के केरल में सर्वाधिक गरम मसालों का उत्पादन होता है। (सत्य/असत्य)

सही जोड़ी मिलान कीजिए–

1. 15 अगस्त 1947	क. स्टैच्यू ऑफ इक्वेलिटी
2. गार्गी	ख. वल्लभ भाई पटेल
3. शीत प्रदेश	ग. वैदिक ऋषिका
4. सन्त रामानुजाचार्य	घ. पर्वतीय क्षेत्र
5. राष्ट्रीय एकता दिवस	ङ.स्वतन्त्रता दिवस

अति लघु उत्तरीय–

1. विविधता शब्द का अर्थ क्या होता है?
2. विविधता के किन्ही 2 कारणों को बताए?
3. विविधता में एकता द्वारा देश को समृद्ध कैसे किया जा सकता है?
4. पश्मीना शॉल कहाँ बनती है?

लघु उत्तरीय प्रश्न –

1. हमारी प्रमुख ऋषिकाओं के गुणों की चर्चा कीजिए।
2. समाज के भेदभाव को कैसे समाप्त किया जा सकता है ?
3. किन्ही 2 समाज सुधारकों के नाम बताईए।
4. एक भारत श्रेष्ठ भारत विषय पर टिप्पणी लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

1. विविधता के विषय में जलवायु के प्रभाव की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
2. वेदों में हमें विविधता में एकता के विषय में क्या उल्लेख मिलते है।
3. विविधता से सम्बन्धित समाज सुधारकों की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

परियोजना कार्य–

1. छात्र, भारत के विभिन्न प्रान्तों में लोक प्रचलित व्यंजनों एवं बोली/भाषा की सूची तैयार कीजिए।

वेद भूषण परीक्षा /Vedabhushan Exam

वेद भूषण प्रथम वर्ष /प्रथमा- I प्रथम वर्ष कक्षा/छठीं

आदर्श प्रश्न पत्र / Model Question Paper

विषय -सामाजिक विज्ञान

सेट –A

- सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।
- सभी प्रश्न के उत्तर पेपर में यथास्थान पर ही लिखें ।
- इस प्रश्न पत्र में कुल 42 प्रश्न हैं प्रत्येक ,प्रश्न के सामने निर्धारित अंक दिये गये हैं।
- उत्तीर्णता हेतु न्यूनतम 40% अंक निर्धारित हैं।

- It is mandatory to attempt all questions compulsorily.
- Write down the answers at the appropriate places provided
- This question paper contains 42 questions Marks for each question is shown on the side.
- The minimum passing marks is 40 %.

सूचना- एन.सी.ई.आर.टी. एवं वैदिक ज्ञान परम्परा के आधार पर तैयार किया गया आदर्श प्रश्नपत्र

बहु विकल्पीय प्रश्न- 1×10 =10

1. पृथिवी सूर्य की एक परिक्रमा.....में पूरी करती है।

(क) 363 दिन 5 घण्टे (ख) 364 दिन 4 घण्टे

(ग) 365 दिन 6 घण्टे में (घ) 365 दिन 5 घण्टे

2. कर्क रेखा.....में स्थित है।

(क) उत्तरी गोलार्ध (ख) दक्षिणी गोलार्ध

(ग) पूर्वी गोलार्ध (घ) पश्चिमी गोलार्ध

3. विश्व का सबसे बड़ा महाद्वीप.....है।

(क) दक्षिण अमेरिका (ख) एशिया (ग) यूरोप (घ) आस्ट्रेलिया

4. भारत का क्षेत्रफल.....वर्ग किलोमीटर है।

(क) 32,87,263 (ख) 32,88,263 (ग) 33,87,263 (घ) 33,88,263

5. इतिहास को आंग्ल भाषा में.....कहते हैं।

(क) हिस्ट्री (ख) ज्योग्राफी (ग) सोशल साइन्स (घ) इकॉनामिक्स

6. चावल एवं मवेशियों के खुरों के निशान.....पुरास्थल से प्राप्त हुए हैं।

(क) महागढ़ (उत्तर प्रदेश) (ख) कोल्डिहवा (उत्तर प्रदेश)

(ग) हल्लूर (आन्ध्र प्रदेश) (घ) डीडवाना (राजस्थान)

7. कायथा व ऐरण नामक पुरास्थल.....स्थित हैं।

(क) महाराष्ट्र (ख) ओडिसा

(ग) पञ्जाब (घ) मध्य प्रदेश

8. वेद.....हैं।

(क) 4 (ख) 8 (ग) 1 (घ) 5

9. भारत का नेपोलियन..... कहा जाता है।

(क) समुद्रगुप्त (ख) चन्द्रगुप्त (ग) विक्रमादित्य (घ) स्कन्ध गुप्त

10. निम्न में से षोडस संस्कार..... में आते हैं।

(क) गर्भाधान (ख) जातकर्म (ग)यज्ञोपवीत (घ)उपरोक्त सभी

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए- $2 \times 5 = 10$

11. मङ्गल को.....ग्रह भी कहा गया है। (नीला/लाल)

12. भारत का मानक समय .....है। ($82\frac{1}{2}^0$ पू.दे./$82\frac{1}{2}^0$ प.दे.)

13. पृथिवी पर पेय जल की मात्रा..... है। (3%/7%)

14. .....ग्रन्थ, वन एवं ऋषि परम्परा का श्रेष्ठ उदाहरण है। (आरण्यक/उपनिषद्)

15. हड़प्पा संस्कृति का अन्त लगभग.....वर्ष ईसा पूर्व हुआ माना जाता है। (3900/1500)

सत्य/असत्य बताइए- $2 \times 5 = 10$

16. पृथिवी के 98% भाग में जल है। (सत्य/असत्य)

17. अगरतला का रेखांश 91.2868° पू. है। (सत्य/असत्य)

18. जापान का **फ्यूजिमा पर्वत** ज्वालामुखी पर्वत है। (सत्य/असत्य)

19. भारत में राज्यों की संख्या 28 है। (सत्य/असत्य)

20. सोमदेव की रचना कथासरित्सागर है। (सत्य/असत्य)

सही जोड़ी बनाईए- $2 \times 5 = 10$

21. पृथिवी की जुड़वा बहन	(क) आई.एस.टी
22. चन्द्रमा	(ख) मंगल
23. लाल ग्रह	(ग) शुक्र
24. भारतीय मानक समय	(घ) मार्टिन बैहम
25. ग्लोब का आविष्कार	(ड़) उपग्रह

अतिलघुत्तरीय प्रश्न- $2 \times 10 = 20$

26. सौरमण्डल का सबसे छोटा ग्रह कौन सा है ?
27. अक्षांश किसे कहते हैं ?
28. लीप वर्ष किसे कहते हैं ?
29. वनस्पतियाँ किसे कहते है ?
30. किन्हीं आठ पुराणों के नाम लिखिए ?
31. पाषाणकाल को कितने भागों में विभाजित किया गया है ?
32. कालीबंगा नामक पुरास्थल किस राज्य मे स्थित है ?
33. उत्तरी अवन्ती की राजधानी का क्या नाम था ?
34. पुरुषार्थ कितने हैं ?
35. स्थानीय स्वशासन के तीन स्तरों के नामों का उल्लेख कीजिए।

लघुत्तरीय प्रश्न- $4 \times 5 = 20$

36. ग्रह एवं तारे में क्या अन्तर है ?
37. भारत के पड़ोसी देशों के नाम लिखिए।
38. सरस्वती नदी पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
39. पाश्चात्य काल गणना को समझाइये।
40. विविधता में एकता द्वारा देश को समृद्ध कैसे किया जा सकता है ?

दीर्घउत्तरीय प्रश्न– $10 \times 2 = 20$

41. लोकतान्त्रिक सरकार के प्रमुख तत्वों को समझाइए।
42. पञ्चायतीराज व्यवस्था को समझाइए ।

वेद भूषण परीक्षा /Vedabhushan Exam

वेद भूषण प्रथम वर्ष /प्रथमा- I प्रथम वर्ष कक्षा/छठीं

आदर्श प्रश्न पत्र / Model Question Paper

विषय -सामाजिक विज्ञान

सेट – B

सूचना- एन.सी.ई.आर.टी. एवं वैदिक ज्ञान परम्परा के आधार पर तैयार किया गया आदर्श प्रश्नपत्र

बहुविकल्पीय प्रश्न- 1×10 =10

1. नीला ग्रह.....को कहा जाता है।

(क) शुक्र (ख) पृथिवी (ग) मङ्गल (घ) चन्द्रमा

2. ऋतु परिवर्तन पृथिवी की.....गति के कारण होता है।

(क) परिभ्रमण (ख) परिक्रमण (ग) झुकाव (घ) उपर्युक्त सभी

3. भारत के उत्तर के पड़ोसी देश..... हैं।

(क) चीन और नेपाल (ख) पाकिस्तान और अफगानिस्तान

(ग) म्यांमार और बांगलादेश (घ) श्रीलंका और मालदीव

4. उपनिषदों की संख्या..... है।

(क) 18 (ख) 108 (ग) 52 (घ) 80

5. मानव सर्वप्रथम.....धातु से परिचित हुआ था।

(क) स्वर्ण (ख) पीतल (ग) तांबा (घ) जस्ता

6. गुप्त वंश के संस्थापक.....थे।

(क) वासुदेव (ख) श्रीगुप्त (ग) पुलिन्दक (घ) अग्निमित्र

7. भारत में मताधिकार की आयु..... है।

(क) 15 वर्ष (ख) 16 वर्ष (ग) 18 वर्ष (घ) 19 वर्ष

8. किसी भी ग्राम पंचायत में ग्रामसभा का आयोजन.....में होता है–

(क) 1 माह (ख) 2 माह (ग) 3 माह (घ) 4 माह

9. भारत में लगभग.....जनसंख्या गांवों में निवास करती है।

(क) 45% (ख) 55% (ग) 65% (घ) 75%

10. भारतीय संस्कृति का मूल आधार.....है।

(क) एकता में अनेकता (ख) अनेकता में एकता

(ग) एकता में एकता (घ) उपर्युक्त सभी

रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए- $2 \times 5 = 10$

11. पृथिवी अपने अक्ष पर..... घूमती है। $(360^0/15^0)$

12. करनूल की गुफाएँ वर्तमान ..... में स्थित है। (मध्यप्रदेश/आन्ध्रप्रदेश)

13. 26-50 वर्ष की आयु ..... आश्रम के लिए निर्धारित की गई थी। (वानप्रस्थ/गृहस्थ)

14. ग्राम पञ्चायत का प्रमुख ..... होता है। (पञ्च/सरपञ्च)

15.ग्रामीण क्षेत्रों में .....आजीविका का मुख्य साधन है। (कृषि/सरकारी सेवा)

सत्य/असत्य बताइए- $2 \times 5 = 10$

16. ज्वालामुखी पर्वत का निर्माण ज्वालामुखी से उत्सर्जित लावा से होता है। (सत्य/असत्य)

17. पाषाण काल में मानव पत्थरों से बने औजारों का प्रयोग करता था। (सत्य/असत्य)

18. मेगस्थनीज यूनानी यात्री था। (सत्य/असत्य)

19. सरकार कानून एवं संवैधानिक मूल्यों की रक्षा करती है। (सत्य/असत्य)

20. राज्यपाल राज्य का संवैधानिक प्रमुख होता है। (सत्य/असत्य)

सही जोड़ी बनाइए- $2 \times 5 = 10$

21. असम	क. लेह
22. लद्दाख	ख. ईटानगर
23. जम्मू कश्मीर	ग. दिसपुर
24. उत्तर प्रदेश	घ. श्रीनगर व जम्मू
25. अरुणाचल प्रदेश	ङ लखनऊ

अति लघुत्तरीय प्रश्न- $2 \times 10 = 20$

26. सूर्य ग्रहण किस तिथि को घटित होता है ?

27. वायुमण्डल की विभिन्न परतों के नाम लिखिए।

28. महाभारत में श्लोकों की संख्या कितनी है ?

29. प्रागैतिहासिक काल किसे कहते हैं ?

30. जनपद से क्या अभिप्राय है ?

31. कौटिल्य का मूल नाम क्या था ?

32. एक वर्ष में कितने अयन होते ?

33. ग्राम पञ्चायत के प्रमुख को क्या कहते है ?

34. हमारे देश में बड़े किसानों की संख्या लगभग कितने प्रतिशत है ?

35. विविधता शब्द का अर्थ क्या होता है ?

लघु उत्तरीय प्रश्न – $4 \times 5 = 20$

36. पूर्ण सूर्य ग्रहण किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित समझाइये।

37. कृषि से आरंभिक मानव को कौन-कौन से लाभ हुए ?

38. सरस्वती नदी पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

39. संस्कार कितने होते हैं, उल्लेख करो ?

40. सामाजिक सुरक्षा का क्या अर्थ है ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न- $10 \times 2 = 20$

41. अक्षांश और देशान्तर रेखाओं का विस्तार से वर्णन कीजिए।

42. सरस्वती-सिंधु संस्कृति की नगरीय विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

वेद भूषण परीक्षा /Vedabhushan Exam

वेद भूषण प्रथम वर्ष /प्रथमा- I प्रथम वर्ष कक्षा/छठीं

आदर्श प्रश्न पत्र / Model Question Paper

विषय -सामाजिक विज्ञान

सेट – C

सूचना- एन.सी.ई.आर.टी. एवं वैदिक ज्ञान परम्परा के आधार पर तैयार किया गया आदर्श प्रश्नपत्र

बहुविकल्पीय प्रश्न- $1\times10=10$

5. पृथिवी का आकार..... है।

(क) त्रिभुजाकार (ख) वर्गाकार (ग) गोलाकार (घ) आयताकार

2. स्थलमण्डल पृथिवी के.....भाग पर विस्तृत है।

(क) 27% (ख) 28% (ग) 29% (घ) 30%

3. शरद ऋतु का समय.....रहता है।

(क) मार्च-अप्रैल (ख) जुलाई-अगस्त

(ग) अक्टूबर-नवम्बर (घ) नवम्बर-दिसम्बर

4. भीमबेटका नामक पुरास्थल..... स्थित है ।

(क) उत्तर प्रदेश में (ख) बिहार में (ग) मध्य प्रदेश में (घ) राजस्थान में

5. मौर्यों की राजधानी.....थी।

(क) पाटलीपुत्र (ख) तौसाली (ग) तक्षशिला (घ) लुम्बिनि

6. गोवर्धन पीठ.....में स्थित है।

(क) द्वारिका (ख) बद्रीनाथ (ग) रामेश्वरम (घ) जगन्नाथपुरी

7. स्थानीय शासन से आशय..... है।

(क) गांव की सरकार (ख) राज्य की सरकार

(ग) केन्द्र की सरकार (घ) उपर्युक्त सभी

8. पञ्चायतीराज मन्त्रालय की स्थापना..... हुई।

(क) 1962 (ख) 1993 (ग) 1998 (घ) 2004

9. आयुष्मान भारत (प्रधानमन्त्री जन आरोग्य) योजना..... प्रारम्भ की गई।

(क) 23 मार्च, 2005 (ख) 23 सितम्बर, 2018

(ग) 23 मई, 2016 (घ) 23 अक्टूबर, 2019

10. राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में.....जन्मदिन मनाया जाता है।

(क) सरदार पटेल (ख) महात्मा गांधी

(ग) चौधरी चरण सिंह (घ) पं. नेहरू

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए- $2 \times 5 = 10$

11. पृथिवी का उपग्रह.....हैं । (टिटान/चन्द्रमा)

12. उपनिषदों को .....कहा जाता है । (वेदान्त/आरण्यक)

13. कालीबंगा नामक पुरातात्विक स्थल .....में है । (पञ्जाब/राजस्थान)

14. शुक्लपक्ष .....को समाप्त होता है । (पूर्णिमा/अमावस्या)

15. नगरपालिका का अधिकारी.....होता है । (कमिश्नर/कलेक्टर)

सत्य/असत्य चुनिए- $2 \times 5 = 10$

16. पृथिवी एक घण्टे में 30^0 अंश घूमती है। (सत्य/असत्य)

17. सरस्वती-सिन्धु संस्कृति एक ग्रामीण सभ्यता थी। (सत्य/असत्य)

18. भारत को आर्यावर्त नाम से जाना जाता था। (सत्य/असत्य)

19. लोकतन्त्रिक व्यवस्था में जनता का विशेष महत्त्व है। (सत्य/असत्य)

20. जलवायु का प्रभाव जैव विविधता पर पड़ता है। (सत्य/असत्य)

सही जोड़ी बनाइए- $2 \times 5 = 10$

21. स्टैच्यू ऑफ इक्वेलिटी	क. 15 अगस्त 1947
22. पं. जवाहरलाल नेहरू	ख. गार्गी
23. संविधान दिवस	ग. सन्त रामानुजाचार्य
24. वैदिक ऋषिका	घ. 26 नवम्बर
25. स्वतन्त्रता दिवस	ङ बालदिवस

अति लघुत्तरीय प्रश्न- $2 \times 10 = 20$

26. मानचित्र किसे कहते हैं?

27. जलवायु किसे कहते है?

28. राजतरङ्गणी किसकी रचना है?

29. मौर्य साम्राज्य के संस्थापक कौन थे?

30. सातवाहन वंश का सबसे प्रतापी राजा कौन था?

31. पञ्चाङ्ग किसे कहते हैं?

32. शासन के अंगों का उल्लेख कीजिए।

33. पञ्चायत सचिव के क्या कार्य है?

34. शिक्षा का अधिकार कानून कब लागू किया गया?

35. ब्रह्म समाज के संस्थापक कौन थे?

लघुत्तरीय प्रश्न- $4 \times 5 = 20$

36. पृथिवी के प्रमुख स्थल रूपों के नाम लिखिए।

37. शैल चित्र से क्या अभिप्राय है? सोदाहरण समझाइए।

38. वैदिक संस्कृति की आवास व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

39. राजतन्त्र से क्या आशय है?

40. नगरपालिका के कार्यों का उल्लेख कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न- $10 \times 2 = 20$

41. मङ्गल ग्रह पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

42. जिला पञ्चायत के कार्यों का उल्लेख कीजिए।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

द्वारा सञ्चालित एवं प्रस्तावित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - ४५६००६ (म.प्र.)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in